

 श्रीपद् बुद्धिसागरजी ग्रन्थपाळा ग्रन्थांक ८

द् बुद्धिसागरणा अन्यमाळा अन्याक ८ <u>क्</u>र

योगनिष्ठ मुनिराज श्री बुद्धिसागरजी कृत.

श्री परमात्म दर्शन

जिक्कासु सद्यहस्योनी सहायथी

^{छपाती मसिद्ध करनार,} श्रीच्यध्यात्म**ङ्गानप्रसारकमंम्**ख.

श्री " लक्ष्मी " मिन्टिंग मेस—अमदावाद.

वीर सं. २४३६ सने १९१०

किम्मत **0-**११-0

****<u>*</u>*********

बे बोख.

" ज्ञानिक्रयाभ्यां मोक्ष " ए मोक्षमार्गनुं दृष्टिविंदु छे तथापि घणा जैनो तेना खरा रहस्यने निह जाणतां एक तरफ वधु पढ़-णतो बीजा तरफ न्युन एटछंज निह पण अपेक्षा समजवाना ज्ञाननी खामीए घणी वखत डावो हाथ जमणाने द्वावे छे तेवी स्थिति जोवाय छे. आनुं कारण पूर्वाचार्योए द्रव्य ग्रुण पर्याय आदीनुं जे सुक्ष्मज्ञान प्रकारमुं छे ते ज्ञानमे समय अनुसारनां मनुष्यो समजी शके तेवी उत्तम शैलीथी सरळ भाषामां ग्रंथो तैयार करी जनसमाज आगळ जोइता प्रमाणमां रज्ञ निह थवानुं छे.

अपारं चोकस मानवुं छे के जैनधर्मनां सिद्धांतो प्रमाण अने युक्तिओथी एवां तो पवळ अने न्याययुक्त छे के जेम जेम ते तत्वो वधु फेळावो पामशे तेम तेम प्राचिन दृष्टि वधु खीळी नीकळशे,

अने जैनधर्मनुं क्षेत्र बहोळं थरो.

आ माटें मात्र जैनोज निह पण सर्वे छोकोना बोधार्थे जैमध-मैनां पुस्तको रचाववाथी अने सारी रीते वंचाववाथी अन्य छोको पण जैनतत्वनो छाभ मेळवशे केमके जैनधर्म मात्र जैनो माटेज नथी. गमे ते ज्ञाति होय पण तेनां सिद्धांतो अनुसार वर्चन राखनार जैन होइ शके छे. आवी भाव उपकारनी दृष्टि ध्यानमां राखी, का-ळने अनुसरी, तथापकारनो पयत्न करी परमपूज्य गुरुवर्य श्रीमद् युद्धिसागरजीए आवा तत्वमय ग्रंथो रच्या छे जे पैकीनो आ " परमात्मदर्शन" ग्रंथ छे.

आ ग्रंथ अमे उपर जणाव्युं तेवा प्रकारनी खामीने दुर कर-

आ ग्रंथमां बीजा अनेक विषयो साथे ज्ञान अने क्रिया बंनेनी भ्रथास्थित साबीती करी बताबा छ केमके बंनेना संमेलन बिना आत्मकल्याण दुर छे. षटद्रच्य, षटकारक, पंचसमवाय, नय निषेपा बीगेरेथी द्रच्य,क्षेत्र,काळ, भावने, अनुसरीने आ ग्रंथ लखायो ą

छे, जे अभ्यासीओने माटे आशिर्वाद्द छे. बल के आत्माभी मुल लड़ जनार छे. आखो ग्रंथ वांचनार पोतेज कबूल करशे के गुह्वर्य श्रीमद् बुद्धिसागरजीए आ प्रकारना प्रयासे करी जैनसमाज उपर महान उपकार की धोछे. तेओना आ रीते जैनकीम उपरज उपकार याय छे, एम निह पण तेओना ग्रंथोनी लेखन, अने काव्य शिलो, एवी तो मेम उपजावनारी छे के सर्वेद्शनवाळाओ तेओश्री रचीत ग्रंथो होंसथी वांचे छे एम अनुभव कही आपे छे. एट छंज निह पण तेओश्रीनां भजनपदो तो तेओश्री ज्यां ज्यां विचर्या छे, त्यां त्यां को इपण रीतना तफावत विना हमेशना माटे गवातांज रहे छे. आथी अन्य दर्शनीओ पण जैनधर्मने जाणता अने प्रीति करता थया छे. आ श्रं जनसमाज उपर जेवो तेवो उपकार छे ?

तेआश्री तरफना अंकुशना आधिने तेओश्री विषे इमारे जणा-वबुं जोइए छे ते जणावी शकता नथी, पण समाज तो कब् कर-ती जोवाय छे के, भेदाभेद अने मारामारीनी कोइपण चर्चामां न उत्तरतां पोते अने अन्य जीवा पोताना आत्मानुं कल्याण कइ रीते करी शके तेज मार्ग तरफ तेओश्रीनुं प्याण छे अने ते दिवसे दि-वसे चढतुं अने वधतुं जाय छे.

तेओश्रीना ग्रंथो संबंधी वधु विवेचनमां नथी उतरी शकता कारण तेओश्रीनुं मानवुं एम छे के दुनियां दर्पणरुपे वस्तुने वस्तुरुपे केम निह जोइ सके ? (बेशक गुणानुं रागनी दृष्टि तेमां गुरूप भाग भजवे छे.) तेथी अमो तेवा मकारनी तजनीजमां न उतरतां तेओ-श्रीनी कृतिना ग्रंथो जेम पने तेम समाज आगळ सारा स्वरुपमां (ओडी किंमते) रज करवा एज कर्त्तव्य समजी आगळ वधीए छीए अने गुरु कृपाथी मंडळ पोताना नामे १ वर्षमां ११ पुस्तको बहार पाडी शक्युं छे.

आ रीते मंडळ आगळ वधवामां जे फतेह पाम्युं छे तेमां गुरुश्री उपरांत मंडळने पुस्तको मगट करवाने द्रव्यनीमदद करनारा गृहस्थोनोपण हिस्सोछे.जे अमो जणाववा चुकी जवुंयोग्यधारतानथी.

अगाऊना ग्रंथोना सहायकोना नामो तेते ग्रंथो साथे ग्रंद्रित

3

थयेल हो. जेओ उपरांत मनकुर " परमात्मदर्शन " ग्रंथने मगढ करवामां नीचे मजब सहाय मळी छे.

- १५०) शेठ मोतीजी जेताजी पुनावालानी विधवा बाइ नाजुबाई
 - ७५) ज्ञेठ मोहनलाल ताराचंद. विजापुरवाळा.
 - ५०) शेठ रायचंद्रभाइ रवचंद. साणंदवाळा.
 - ५०) होठ वाडीलाल मगनलाल. अमदाबाद.
 - ५१) शेठ अमृतलाल वे शवलाल वादी सद्गत भाई अमृत-लालना स्मणार्थे तेमनी मातुश्री चंचळ ब्हेने अमदावाद.
 - ५०) बाइ हरकोरब्हेन श्री अमदावाद.
 - ३१) वकील मोहनलाल हेमचंद तेओना ची. भाइ सवाइ ना पुण्यार्थे श्रीपादरा.
 - २५) शेढ हाथीभाइ मुलचंद. श्री माणुसाः
 - ३०) ज्ञेड माधवलाल अमथालाल. श्री माणसा.
 - ३१) शेठ मोहनलाल करमचंद अमदावाद.

आवी रीते सहाय करनाराओनो तथा बीजा मददगार ग्रह-स्थोनो मंडळ आभार माने छे. अने तेओने पोताना द्रव्यनो आ रीते सदुपयोग करवा माटे धन्यवाद आपे छे.

मंडळनो उद्देश उपर जणाव्युं तेम जनसमाजमां तेओश्री रचित पुस्तको वधु वंचाय ते माटे सस्ती किंमते मगट करवानो छे, ते बजावे जाय छे. ते समाज पण जोइ शकी छे के बीजी कोइपण संस्थाओ करतां मंडळ पुस्तकोनी घणीज ओळी किंमत राखे छे, ते पण बीजां पुस्तको मगट थवाने उपयोगार्थे तेमज थोडीपण किंमत आपी पुस्तक खरीइतां ते उपर बहु भाव रहे छे ते अर्थे.

आपी पुस्तक खरीदतां ते उपर बहु भाव रहे छे ते अर्थे. मंडळ आशा राखे छे के गुरुवर्य पुस्तको तैयार करता रहे छे

तेज प्रकारे प्रगट कराववाने सहायको वधता जर्जा.

छेवटमां ध्यान खेंचवाने रजा लइए छीए के मंडळ मारफते आ रीते पुस्तक पगट कराववाने जरुर विचारशो.

संबाइ चंपागली हो। ली. बार संबत २४३६ पोस सुदी १०. गुरु श्री अध्यात्मज्ञान मसारक मंडळ.

परमात्मदर्शनग्रंथः प्रस्तावनाः

जगतमां प्रत्येक मनुष्यो धर्मनुं आराधन करे छे. प्रत्येक मनुष्यो धर्मना माटे इच्छा राखे छे. प्रत्येक मनुष्योने अनंत सुख प्राप्त करवानी तीत्र जिज्ञासा वर्ते छे. जन्म, जरा, मरणना दुःख-मांथी बचाव थाय ते माटे प्रत्येक मनुष्यो बुद्धचनुसार जपायो शोधे छे. अमर थवुं ते माटे अनेक मकारनी शोधों करे छे, आबी अमूल्य शोध करवानी कोने जिज्ञासा नहि होय ? अलबत सर्वने होय छै. आवी शोध माटे ज्ञानदृष्टिनी जरुर छ अने ते पण सर्वज्ञ हाष्ट्र होवी जोइए. आवी सर्वज्ञ हिष्टवाळा तीर्थेकरो मथम यह गया छे. या क्षेत्रमां चरम तीर्थकर त्रिशलातनय श्री महावीरस्वामी २४३६ वर्ष उपर यह गया छे. तेमणे केवलकानथी सर्व पदार्थी जाण्या तथा देख्या. मनुष्यो नित्य सुख माप्त करे तथा जन्म जरा अने मृत्युना दु:स्वमांथी छटे ते माटे तेओश्रीए आत्महान बताव्युं छे. सर्व प्रकारना जीव अने अजीव पदार्थीतुं स्वरुप बताव्युं छे. बानदर्जन अने चारित्ररुप मोक्ष मार्ग षताव्यो छे. नात जातनो भेद राख्या विना आत्मतत्त्वनी शक्तियो खीळववाना उपायो बता-व्या छे. साधु धर्म अने गृहस्थ धर्म एम वे मकारना धर्म बताव्या छे. अमर थवाने माटे आत्मधर्मनुं यथार्थ स्वरुप बतान्युं छे. सम-वसरणमां बेसी देशना देइ चतुर्विध संघनी स्थापना करी छे तेमना गणधरोप द्वादशांगीनी रचना करी, पश्चात स्थविरोए उपांगनी रचना करी. तेमनी पाटे जे जे आचार्यी थया. गीतार्थी थया. तेओए मकरणो ग्रंथो आदिनी रचना करी. मलेक आचार्योनो प्रस्त्य उदेश जगानाने अनुसरी गमे ते भाषामां सहेलाइथी मनुष्यो तस्य मार्ग समजी श्रके तेवा ग्रंथो अने तेवा मकारनो उपदेश आ-

(4)

पवानी हतो, ते रीतिने अधुसरी उमास्वाति बाचक, सिद्धसेन दिवाकरसूरि, हरिभद्रसूरि, श्री हेमचंद्र आचार्य श्री अभयदेवसूरि, यशोविजय उपाध्याय,आदि धर्मधुरंधर आचार्योए. अनेक मनुष्योनाः उपकारार्थे. संस्कृत भाषामां तथा मागधी माकृतादि भाषामां जपदेश दीघो छे तथा तेवा ग्रंथो बनाव्या छे. पूर्वोक्त आचार्योना ग्रंथो सूत्रोनी पेठे माननीय पूजनीय गणाय छे. श्री हेमचंद्र पश्चात् लोकोनी स्थिति विद्या संवंधी घटवा लागी. लोको मागधी अने संस्कृतमां पण अरुप समजवा लाग्या. त्यारे आचार्योए जमानाने अनसरी चालती गुर्जर भाषा आदियां रासो वंगेरे स्रार्या सं १३२७ नी सालमां सात क्षेत्रनो रास बन्यो छे. आ सात क्षेत्रनो गुर्जर मावानो रास छपावी सिद्ध कर्यु छे के जैनोमांथी गुर्जर भाषा ग्रुख्यताए पकाशी छे आ रास भजन संग्रह चोथा भागमां छपाब्यो छे. ते पहेलां पण गुर्जर भाषामां जैनाचार्योप काव्य छख्यां होय एम संभव थाय छे अने ते माटे शोध चाले छे. प्रथम तो गुर्जर भाषामांपय तरीके रचना करी उपदेश आप्यो पश्चात गद्यमां पण ग्रंथ बनावी उपदेश देवा मारंभ कर्यो. श्रीवीरे मरुपेली तस्बोनो संस्कृत, पाकृत, मागधी, गुजराती, हिंदुस्थानी वगेरे अनेक भाषामां हाल अवतार थएटो अनुभवाय छे. श्री वीरमभु मक्तिमां गया तो पण गंगाना प्रवाहनी पेठे तेमनी पाछळ तेमनो उपदेशेलो तत्त्वमार्ग पुरुष परंपरा अखंड वहेवा लाग्यो. हाल पण ते प्रमाणे जोवामां आवे छे.

संस्कृत भाषामां तथा मागधी भाषामां हाल प्रंथो बनाववामां आवे तो मायः दश हजारमां पांच माणस पण भाग्येज समजी शके संस्कृत तथा मागधीमां बनावेला प्रंथोने पण गुर्जर भाषामां समज्जावामां आवे त्यारेज लोकोना समजवामां आवे त्यारे गुर्जर आषामां प्रंथो बनाववामां आवे तो घणा लोको समजी सके प्रम

()

सदेवुं निर्विवाद छे. गुजरातमां रहेनार पुरुषो तथा स्त्रीओ भक्षे संस्कृतनो अभ्यास करे. इंग्छीश भाषानो अभ्यास करे तोपण २४ कलाको पैकी सर्व कलाकोमां गुर्जर भाषामां बोलीनेज सर्वने पोता हुं कार्य कर बुं पढे छे. मातृभाषामां जे उपदेश आपवामां आवेछे ते सहेजे समजाय छे. आम कहेवाथी कंइ संस्कृत अने मागधी भाषानी इलकाइ देखाडवामां आवती नथी. कहेवा हुं तात्पर्यार्थ ए छे के गुजरातीओने माटे गुर्जर भाषामां लेख लखी समजाववामां आवे तो विशेष उपकार थाय. आ न्यायने अनुसरी गुर्जर भाषामां लेख लखी.

आत्मतत्त्व संबंधी मान्यता दरेक दर्शनवाळाओनी भिन्न भिन्न छे. आर्थभूमिमां जैन, वेद अने बौद्ध आ त्रणनां पुस्तको विशेष जोवामां आवेछे. ग्रुसलमान अने स्त्रीस्ति लोकोतो ज्यारे आ देशमां आव्या त्यारे तेमना धर्मना पन्थोनां पुस्तको लेइ आव्या. दरेक दर्शनवाळा ईश्वर, कर्म अने आत्मादि तत्त्वो संबंधी भिन्न भिन्न मत जणावेछे. अने ते माटे पोतपोतानी युक्तियो जणावेछे.

षड्दर्शनमांथी कयुं तत्त्व खरुछे. ते युक्ति अने प्रमाणथी स-मजी शकायछे. श्री वीरमञ्जूष आत्म तत्त्व एवं सरस बतान्युंछे के ते माध्यस्थ अने ज्ञान दृष्टिवाळाने रुच्या विना रहे नहि.देवगुरु अने धर्म तत्त्वनुं स्वरूप सर्वज्ञ दृष्टिथी बताव्युंछे. आ ग्रंथमां श्रीविरमञ्जूष कहेळुं आत्मतत्त्व सूत्रानुसारे छख्युं छे. जिनागमोनुं दोहन करी देवगुरु धर्म तत्त्वादिनुं यथार्थ वर्णन करवामां आव्युंछे.

मथम आद्यमां सद्गुरुनुं मंगलाचरण कर्युंछे. पश्चात् गुरुनी केवी शक्तिछे ते जणाववा प्रदेशी राजा अने केशी कुमारनो संवाद देखाडी आत्मानी अस्तिता सिद्ध करीछे. पश्चात् ज्ञान अने कियानो संवाद प्रसंगानुसारे जणाव्योछे. पश्चात् योग्य अयोग्य श्रोतानां सक्षण जणाव्यांछे. पश्चात् ६८ मा पानाथी पड्द्रव्यनुं स्वरूप सम्जाव्युंछे. पश्चात् आत्मधर्म महत्ता दर्शावीछे. पश्चात् आत्म

(0)

धर्मनी महत्ता माटे क्षमा निष्कपटपणुं आदि सद्गुणोनी जरुरीयात बताबीछे पश्चात् पत्र १३३ माथी आत्मानी शोध कोइ विर्छा करेछे ने संबंधी एक बादशाह अने फकीरनी वार्ता आदी बागतुं हष्टांत जणाव्युंछे. पश्चात् पत्र १४६ माथी मतिश्चत आदि पंचका-नतुं स्वरूप दर्शाव्युंछे.

पश्चात् साधुनी आत्मध्यानादि क्रिया दर्शावीछे. पश्चात् आत्म स्वरूप दर्शाव्युंछे. पश्चात् अनुक्रमे पत्र १९० माथी भव्यात्माए दश प्रश्न संबंधी विचार करवो जोइए. तेनां नाम जणावी अनुक्रमे वर्णन कर्युंछे. ते प्रश्नोना सातमा प्रश्नना विषयमांज पत्र १७५ माथी कर्मराजा अने धर्मराजानुं युद्ध वर्णन कर्युछे. ते स्थिर चित्तथी वांचवानी जरुरछे. पत्र ३०३ थी आठमा प्रश्ननो विषय शरु थाय छे तेतुं पूर्णपेमे मनन करवुं जोइए. पत्र ३१५ माथी नवमा मश्ननो विषय शरे थायछे. पत्र ३३१ माथी आत्मा, कर्मनो तथा भोक्ता केवी रीतेछे तेनुं वर्णन कर्युंछे. पश्चात् सिद्धस्वरूप दर्शाव्युंछे. पश्चात् पत्र ३५७ थी ईश्वर जगत कत्ती नथी. तेम संबंधीनुं व्याख्यान कर्युक्रे. पश्चात् षट्स्थानकनी सिद्धि करी बतावीक्रे. आत्मसिद्धि करवामां अनेक जिनागमोना अबुसारे युक्तियो दर्शावछि. ते यु-क्तियोने जो मुखे करवामां आवे तो जैन धर्म तत्त्वोनी पूर्ण अद्वा याय. आत्मा कर्मनो नाश करी अनंत सुख प्राप्त करी अमर थाय छे तेज मुख्य मुद्दो ध्यानमां राखी तेना उपायो दर्शाव्याछे तेथी प्रत्येक मनुष्योनुं आ ग्रंथ वांचतां कल्याण थाय एमां कांइ संदेह नथी. परमात्मदर्शन ग्रंथ वांचनार अवश्य ज्ञान दर्शन चारित्र पामी मुक्तिमार्ग पामेछे. जे भव्य जीवो होय त्हेने आ ग्रन्थमां छखेळां तस्वोनी श्रद्धा थायछे.

आ ग्रन्थना प्रत्येक पानाना मुखपर मुख्य हेडींग छे तेथी बांचनारने प्रत्येक विषयनी सरलता बिशे. आ ग्रन्थमां छेछा दुहा तथा चोपाइयोनो अर्थ लख्यो नथी. पण कोइ भक्त पंडित पुरुष

(0)

सबसेष दुइ। तथा चोपाइयो उपर अर्थ पुरशे तो धर्मछ। भ माप्त करसे. समयना अभावे अवशेष दुइ। आदि उपर विवेचन थयु नथी. ते दुइ। ओ वगेरे सद्गुरुना पासे जे वांचशे ते विशेषतः अर्थ माप्त करी सकशे. जडवादियोगी सामे रक्षण तरीके आ ग्रन्थ उपयोगी थशे. आ ग्रन्थने माध्यस्थ दृष्टिथी वांचशे. ते सद्गुण रागथी तेनो यथार्थ तत्व रहस्य मेळवी शकशे.

आ ग्रंथ मूळ तरीके-श्री लोदरा गाममां आरंभ्यो हतो स्यांथी मेसाणे जई त्यां सं. १९६० नुं चोमास कर्यु. त्यां अशाह सुदी ५ ना रोज आ ग्रंथ पूर्ण कर्यो. पश्चात् तेज चोमासामां विवेचन जेटलुं लखायुं ले तेटलुं अत्र दाखल कर्यु ले: वाकीना दुहानुं विवे-चन, कोई भक्त शिष्य पूर्ण करशे

आ प्रन्थमां जे कंइ जिनाज्ञा विरुद्ध लखायुं होय ते संबंधी
मिध्यादुष्कृत हो. सज्जन दृष्टियी जे कोइ आ प्रन्थ वांचशे तहेने
अत्यंत लाभ माप्त थशे. ज्ञानिने आश्रवनां कारण ते संवररुपे परिणमेछे.अने अज्ञानिने संवरनां कारण ते आश्रवरूपे परिणमेछे तेम
योग्य जीवने आ प्रन्थ सम्यग्पणे परिणमशे. अने अयोग्य कुपात्र
मत्सरी दुर्गुजग्राहीने आ प्रन्थतुं वांचन, विपरीतपणे परिणमशे.
बेमां तेनी दृष्टि तेज मुख्य कारणछे.

पत्येक भव्यजीवो आ ग्रन्थ वांची अध्यात्मस्वरूपमां रमणता करी परमात्म स्वरूप प्राप्त करोः परमार्थ प्रति सर्वनी रुचि थाओः परमानंदने सर्व जीवो प्राप्त करोः सर्व जीवो मंगलपालाप्राप्त करोः एजशुमात्रीः ॐ शान्तिः शान्तिः शान्तिः

मुकाम-अमदावाद-झवेरीवाडो.

लि. मुनि. बुद्धिसागर. आंबळी पोळनो उपाश्रय.

॥ अथ परमात्मदुर्शन ॥

पंचशती प्रारभ्यते.

श्री संखेश्वरपार्श्वनाद्याय नमः

मंगसम्

गुरु स्तुति, दुहा.

सुरतरु जंगम तीर्थरूप, सद्गुरु साचा देव; त्रिकरण योगे तेइनी, जावे कीजे सेव. १

श्री सद्गुरुनी स्तुति कराय छे. अनादि काळथी जीव अज्ञान (अविद्या) थी बहिर् वस्तुमां आत्मपणाथी बुद्धि धारण करी अनंतत्रः दुःखराशि भोक्ता थयो अने बहिरात्मभावे परवस्तुने पोन्तानी मानी स्वस्वरुप भूल्यो एवा मृह आ जीवने शुद्ध स्वरूप ओळखावनार श्री गुरुमहाराज सत्य देवरूपे छे. मिथ्यात्व अने सम्यक्त्व स्वरूप समजावी शुद्ध मोक्षमार्ग योजक श्रीगुरुना समान बीजा देव नयी. मुक्ति रूप फळ देवामां श्रीगुरु कल्पद्यक्ष छे. अन्य कल्पद्यक्षो पौद्गिकिक मुखदाता छे. अने गुरुरूप कल्पद्यक्ष तो अनंत आत्मिक शाक्षत मुख समर्पे छे. जो के उपादान कारणरूप गुरु महाराज नयी तो पण उपादान कारणनी शुद्धिकारक तथा स-हायभूत निमित्त कारणरूप श्रीगुरुराज छे, ए कल्पद्यक्षनी माप्ति महा पुण्योदये थाय छे. गुरु जंगम तीर्थ छे, अन्यत्र के ज्यां श्री तीर्थकरादिनां कल्याणक थयां छे, ते तीर्थ स्थावर तरीके कहेनाय

(२) केशी अने प्रदेशींनी संवाद.

छे, ते तीर्थोनी यात्रा सेवा भक्ति करवाथी सम्वकृत्व निर्मल थाय छे. किंतु ते स्थावर तीर्थनी श्रद्धा ओळलाणकारक पृथ्वीतळ गम-नकर्ता श्री सदग्रु पत्यक्ष महाउपकारी छे। येनालंबनेनजीबो। भवांभोधितरतीति तीर्थः जेना आलंबने जीव संसार समुद्रने तरे छे ते तीर्थछे, श्री गुरु महाराजना आलंबने जीव संसार सम्रुद्र तरे छे, माटे गुरु तेज तीर्थ छे. गुरुरूप तीर्थनी सेवाभक्ति झटिति मत्यक्ष फलटा छे. श्री गुरुनी वाणीरूप गंगामां जे स्नान करे छे ते पोते उपार्जनकृत कल्मषोने गमावे छे. चक्षनी विद्यमानताए पण अन्य पदार्थोना निरीक्षणमां सूर्य चंद्र दीपकनी जहर पडे छे. तेम भन्यात्माओने पोतानं आत्मिक श्रद्धस्वरूप अवलोकनार्थे ग्ररु सूर्य सशान छे तेथी तेनी जहर पडे छे, विशेष ए छे के, सूर्य अंतरनी मकाश करी शकतो नथी.अने ग्रह महाराज अंतरना मकाशकारक छे. माटे आ सूर्य करतां पण विलक्षण अलौकिक गुरुरूप सूर्य छे, वृतीक सद्गुरुनी त्रिकरणयोगे अत्यंत भावे सेवा करवी, सेवा कीजीए ए कहेवाथी एम सुचव्युं के जेने मुक्ति पदनी इच्छा होय तेने सद्गुरुनो बहुमानथी विनय करवो. कारण के धर्मनुं मूळ वि-नय छे. अने विनय विना धर्मनी पाप्ति थती नयी, अने धर्मनी माप्ति गुरु विना थाय नहीं माटे श्रद्धा भक्ति बहुमान पूर्वक गुरुरा-जनो विनय करवो.

सुरतरुनी उपमाथी समजवुं के -गुरु अनंत आत्मधर्मना दानी छे.

आत्मधर्मत्तुं दान ते भाव अभयदान छे. पंचधादान छे. १ अभयदान, २ सुपात्रदान, ३ अनुकंपादान, ४ उचितदान, ५ की-चिंदान, ए पांचपां महाउपकारक अभयदान ग्रुख्य छे, दिधा अ-भयदानं द्रव्यतो भावतश्च. अभयदान वे मकारे छे. १ द्रव्य अभय-दान. २ भाव अभयदान. एकेंद्रियादियी ते पंचेन्द्रिय पर्यंत जी-

वोना प्राणोनं रक्षण करबं तेमनो कोइ घात करतं होय तो वचाववा तेने द्रव्य अभयदान कहे छे. दरेक जीवने जीववं भिय छागे छे. कोइने मरण शरण थवं भिय छागतं नथी. कहां छे के. मरण समो नाध्य भयं: मरण समान कोइ भय नथी, माटे माणीओने कोइ मारतुं होय तो अनेकरीत्या तेमनुं रक्षण करबुं. जीवनी दयाथी जीव तीर्थेकरनामकर्म उपार्जन करे छे, नरस्वर्गादि सुखसंपत्तिनो भोक्ता थाय छे. एक राजानी अणमानीती स्त्रीए चोरने फांसीनी शिक्षा थती अटकावी अने अन्य राणीओए लक्ष रुपैया खरची तेने पिष्टात्र जमाड्यां, किंतु चोरे अणमानीती स्त्रीनो अत्यंत उप-कार मान्यो. अने तेणीए छोडाव्यो त्यारे मुखी थयो, श्री श्रा-न्तिनाथना जीवें पूर्व भवमां एक पारेवानो जीव बचाव्यो तेथी अत्यंत पुण्य उपार्जन कर्यु. तेम भव्यत्माओए प्रत्येक जीवोनी दया करवी, कोइ जीवनी हिंसा करवी नहीं, मिथ्यात्वे पाप बुद्धिरूप पिशाचिकाना मेर्या केटलाक जीवो मत्स्य अज पश्यपंखीनां मांस भक्षण करे छे, मांस वेचे छे, मांस भक्षकनी अनुमोदना करे छे ते जीवो घोरकर्म ग्रही अति दारुण दुःखालय अधोगतिभाक् थाय छे अने आ भवमां पण कमीदये दुःखनी झाळमां फसाय छे, माटे मन बचन कायाए करी जीवनी हिंसा वर्जवी.

र भावअभयदान—भव्य जीवात्माओने तेना शुद्ध गुणोतुं दान आपवुं तेने भाव अभयदान कहे छे तद्द्विविधं=भाव अभयदान वे मकारे छे. १ स्वभाव अभयदान २ परजीवधर्म अभयदान एगेतानो आत्मा असंख्यातमदेशी छे अने ते मदशो अस्पी छे, कोइ काळे पण उत्पन्न थया नथी माटे अन छे, वर्तमान, भूत अने भविष्यत् काळमां मदशो जेवा छे तेवा ने तेवा रहे छे, माटे शाश्वता छे, ए असंख्यात आत्माना मदेशो बाळ्या बळता.

(*)

देशी अने प्रदेशीनी संवाद.

नवी, गाळ्या गळता नथी, एक पदेशे आत्मा कहेवाय नहीं, बे परेशे आत्मा कहेवाय नहीं, असंख्यात प्रदेशमयी आत्मा कहेवाय छे, जदरूप पुद्गळयकी आत्मानुं स्वरूप न्यारुंछे, अनंतझान, अनंत दर्शन, अनंत चारित्र, अनंत वीर्य, इत्यादि आत्माना अनंत गुणे छे, आत्माना एकेक प्रदेशमां अनंत धर्म रह्या छे, आत्मामां अनंत हुत्व अस्तिभावे रह्युंछे.

किंतु अनादि कालथी जीव पोतानास्वरुपनाअज्ञानथी परव-स्तुमां अहंभाव घारण करी, मिथ्यात्व, अविरति, कषाय अने योगथी पुट्गळ स्कंघोने अष्टकर्मनी वर्गणा तरीके परिणमावी वि-वित्र श्वरीरोने घारण करे छे, जीवनी अनादिकाळ मूळ वसति निगोद छे, निगोदना जीव वे मकारे छे. १ स्क्ष्मिनगोद २ बादर-निगोद. अनंत जीवो वने एक श्वरीर होय छे अने चतुर्दश्व रज्वा-स्मक (चउदराज) लोकोने काजलनी कुंपळीनी पेरे व्यापीने रहा छे, तेने सुक्ष्म निगोदीया जीव कहे छे.

ए सूक्ष्म निगोदीया जीवने मिथ्यात्व, अविराति, कषाय, अने योग रह्या छे. सदाकाळ ते दुःखना भोक्ता छे. त्रण प्रकारनां जे अहान छे, तेमांथी एक पण अहान टळ्युं नथी, तेनामां समजवानी कंद्र पण शक्ति नथी. ए सूक्ष्म निगोदना जीवोमां केटळाक भव्य जीवो अने केटळाक अभव्यजीवो छे. साधारण बनस्पतिनां जी-बोने बादर निगोदीया जीव जाणना, द्विमकारे निगादमां अनंतवः जन्म मृत्युना चक्रवेगे जीव भम्यो, त्यांथी भवितव्यतायोगे पृथि-बी, जळ, उवळन, वायु, प्रत्येक वनस्पतिनां क्षरीरो घारण करी मवस्त्रमण कर्यु, पण आत्मस्वरूपनो अवबोध थयो नहीं. दान ए प्रश्न-जल सरोवरमां भर्यु होय छे त्यारे हजारो पश्च पंसी मनुष्यादि तेमांथी जलपान करे छे, त्यारे जले पोतानुं दान बीजा- ना अर्थे शुं कर्युं ना कहेवाय ?

उत्तर-अन्य जीवो जलपान करे छे ते पोतानी सत्ताथी करे छे, जळपान अन्य जीवो करे तेमां जळना जीवो राजी नथी, बळपन करवाथी जळना जीवोनो नाश याय छे तेमां पोते राजी नथी. माटे ते दान कहेवाय नहीं. दीन्द्रियथी ते चतरिन्द्रिय पर्यत जीवो अभयदान पोते करी अकता नथी. पंचेंद्रियना चार प्रकार छे. १ देवता २ मनुष्य. ३ तिर्थेच. अने ४ नारकी. भुवनपति, ब्यंतर, ज्योतिष्क अने वैमानिक ए चार मकारना देवो द्रव्य तथा भाव अभयदान करी श्वके छे. सम्यक्तवधारकदेवो समिकतनी अ-पेक्षाए भाव अभयदान करी शके छे, कारणके समिकत पापेला देवताओ पोताना आत्पानं स्वरूप समने छे, पोताना आत्पाने पोताना समिकत गुणनं दान आपे छे तथा अन्यदेवो तथा पनु-ध्योन धर्मनी श्रद्धा करावे छे. माटे बीजाने माव अमयदान अर्पे छे. सर्व जातना देवताओनो मिध्यात्व गुणस्थानकथी ते समिकत गुणस्थानकनी अंदरमां समावेश थाय छे. बहु देवताओ धर्मभ्रष्टो-ने धर्ममां स्थिर करे छे. पण देवताओना करतां मनुष्यो अभयदा-नमां विश्वेष छे, कारणवे मनुष्यने वडद (चतुर्दश) गुण स्थानक छे, जे दान पामवाथी आत्माने कोइनो भय रहे नहीं एवं भाव-अभयदान संपूर्ण मनुष्य पामेछे, अज्ञानी जीवने सत्यासत्यनी समजण पडती नथी तेने सद्गुर त्रिजगद् दुःख दावानक मेघ संगान पर्य देवनाथी आत्मस्वरूप समजावे छे, जट वस्तुनुं स्वरूप समजावे छे, देवगुर धर्महां स्वरूप समजावे छे, नवतत्त्वनुं विशेष-रीत्या स्वरूप समजावे छे, अने अज्ञानी जीवने समजावे छे कें

(&).

केशी अने प्रदेशीनी संवाद.

अरे पुट्गलजेंठना भिश्चक तारी भूख पुर्गलपेंठथी कदी भागवा-नी नथी, तुं परवस्तुनुं ग्रहण करी सुखी यत्रानी नथी. पोताना घरमां अनंत धन छतां केम परगृहे भीक्षा मागे छे. तारुं घर ओ-ळख, तारो अखुट खजानो ताराथी दूर नथी, पर पुदगल चुंथतां तने लज्जा शं नथी आवती ? तारी ऋदि तारी अन्तर भरी छे. अने तेना अज्ञाने तुं दरिद्री थयो छतो अनंत दुःखने पामे छे, माटे तुं तारा आत्माने तारी ऋदिनुं दान आप, परमां केम फांफां मारे छें ? हे पामर प्राणी ! तें असत् वस्तुने सत् तरीके जाणी, अने सत् वस्तुने असत् तरीके जाणी तेथी भ्रांत थयो माटे इवे काया मायाथी तुं भिन्न छे. तारुं कोइ नथी कोइनो तुं नथी, तुं सर्वथी न्यारो छे एम अवबोध, ज्यां कोइनो संचार नथी एवो तं आत्मा छे जो तं तारा स्वरूपे रमे तो तृष्णा, काम, क्रोध, मोह स्वतः नाज्ञ पामे. मलीन जलमां जेम चंद्रनुं प्रतिबिंब बराबर पहतुं नथी तेम तारुं मनरूप जल ज्यां सुधी विकल्प अने संकल्प वहें मलीन छे तावतू तेमां आत्मरूपी चंद्रनुंमतिबिंब बराबर पढीशकतुं नथी, तं अज्ञाने पोताने भिक्षक माने छे, पण हे आत्मा तुं तो त्रिभुवन-वित छो. हे पामर प्राणी ! तारामां त्रण रत्न छे ते प्राप्त कर अने जो ते आत्माने मळ्यां तो तं सर्वोत्कृष्ट बने. जोने सिद्ध परमा-त्माओ, तेमने समये समये अनंत सुख छे तादृश अनंत सुख बारामां छे तेन दान तुं तारा आत्माने आप के जेथी कोइनो भय रहे नहीं. एम सद्गुरु महाराज पामर प्राणीने उपदेशदारा भाव अभयदान अर्पे छे. ए दान पाम्याथी कोइवार जन्म जरा मरण प्राप्त थत नथी. शुद्ध सिचदानंदनी छहेरीयो आत्मामां प्रगट छे. ए भावदान पामेला जीवो अनंत सुखन पाम्या, पामेले, अने पा• मश्च. अहो ! सदगुरुना समान जगत्मां मोटा कोइ दानेश्वरी नथी.

जेणे मिध्यात्वनो नाज करी सम्यक्त्वनुं दान आप्युं. एवा सट्गुरुनो कदापि काल उपकार वाळवा कोइ समर्थ नथी, धर्मनी श्रद्धा करावनार धर्मगुरुए अनंत जन्म मरणनां दुःख टाळ्यां, तेमनो उपकार क्षण पण वीसराय तेम नथी.

श्री प्रदेशी राजाने प्रतिबोधक केशी गणधर सदश सद्गुरु जाणवा. प्रदेशी राजा विळकुछ नास्तिक इतो तेनुं इत्तांत कथेछे.

श्वेतांविका नाम्नी नगरीमां प्रदेशीराजा राज्य करतो हतो ते नगरीना मृगवन नामना उद्यानमां केशीकुमार साधु परिवारे परिवर्ण, समवसर्या, धार्मिक नागरिक जनो भगवानने वंदनार्थे आन्वा लाग्या, गुरुए देशना आरंभी, ते अवसरे कांबोज देशथी अश्वो आव्या छे तेनी परीक्षाने माटे चित्र सारथीए राजाने विनव्यों, चित्रे रथ जोड्यो, लांबा वखत सुधी अश्वो दोडाव्या. अश्वो थाक्या त्यारे सगयसूचक चित्रे राजाने विनव्युं के स्वामिन् अश्वोने विश्वांति माटे दृक्षनी छायामां बेसाडवा जोइए एम कही राजा सह चित्रसारथि मृगवनमां आव्यो, त्यां आचार्य देशना देता हता त्यां जेम आचार्यनी शब्दध्विन संभळाय तेम आसन्न मुकाम कर्यो. पदेशी राजाए भव्य जनोने उपदेश देता एवा केशी गणधरने दीठा.

राजाए मनमां चिंतव्युं के अरे आ मृद शुं बोलतो हशे, अने अग्रस्थित एवा मृद मनुष्यो शुं सांभळता हशे अहो खरेखर वक्ता अने श्रोताओ जड छे, एम मनमां विचारी राजाए चित्रसारथी मित कहुं-

मदेशी-अरे सारथी! आ जगत्थी विचित्र वेषधारक कोण इसे? अने ते शुं बके छे? (0)

बेबी अने प्रदेशीनी संवाद

चित्र-हे महाराज श्री पार्श्वनाथ नामना त्रेवीश्रमा तीर्थंकरना पः रंपरागत शिष्यो छे अने ते देहथी जीव पृथक् कहे छे.

मदेशी-हे चित्र! ते केवा मकारनी युक्तिओथी शरीरथी भिन्न जीवनी अस्तिता कथे छे ?

चित्र-हे नरपते ! एनी मने मालुम नथी तेमनी पासे गमन करी श्रवण करीए तो मालुम पढे.

राजाए कहुं " चालो त्यारे तेमनी पासे, एम कही आचार्य पासे जइ स्थाणुनी पेठे विनयरहीत नांस्तिक शिरोमणि बेठो.

मदेशी—तमो कइ कइ युक्तिओथी शरीरथी भिन्न आत्मा मानो छो? केशी गणधर हे राजन्! ए प्रमाणे प्रश्न पुछवाने इच्छा राखे छे तो केम विनयनो भंग करे छे ?

मदेशी-शुं में असमंजस कर्धे ?

केशिस्रि-द्रस्थ एवा तें अमोने देखी मनमां एवं चितन्युं के आ मूढो मूर्वाओनी आगळ शुं असत्य वकेछे तें मनमां विकरप कयों ते सत्य के असत्य ए ममाणे स्रोरेनुं वचन सांभळी राजा चमत्कार पाम्यो.

मदेशी-पराभिमायने तमोए शाथी जाण्यो ?

स्री-पांच ज्ञानगांथी गारा विषे चार ज्ञान छे. तत्र प्रथमं
मितज्ञानं इंदियप्रणोदनोद्भूतं,। द्वितीयं श्रुतज्ञानं
तच्च श्रवणगृद्गित पदवाक्यैरर्थावबोधरूपं। तृतीयं
अवधिज्ञानं तचेन्द्रियकज्ञानव्यतिरिक्तमात्मनैव प्रत्यक्षकृतं रूपि द्रव्यगोचरं। चतुर्थमनःपर्यायज्ञानं
तच्च मनुष्यलोकवर्तिनां संज्ञिजीवानां ये मनः

पर्यायान् विचित्रमनोऽवस्थाः ताश्चात्मनैव प्रत्य-क्षीकृत्य ततोर्थापत्यातिश्चितितज्ञानं । एतानि च-त्वारि ज्ञानानि मम संति तेन परंमनोविकल्पितं अहंजानामि । यत्तु पंचमं केवलज्ञानं तत्र सर्वी-ण्येतानि चत्त्वारि ज्ञानानि लीयंते सूर्यप्रकाशद-न्यताराप्रकाशवत् तच ज्ञानं मम नास्ति ।। मतिज्ञान, श्रुतज्ञान, अवधिज्ञान, अने मनः पर्यायज्ञान ए चार मने वर्ते छे. तेथी मनः पर्यवज्ञाने अन्य जनोना अभिमायने हं जाणुं छं.

प्रदेशी-पोताना मनमां विचार करवा लाग्यों के अही आ महा-पुरुष छे, ज्ञानी छे, तेमनी साथे संभाषण लाभार्थे छे एम चिंती बेसवानी इच्छावाळा राजाए स्रोरिन कह्यं, हे स्वामिन् तमारी आज्ञा होय तो हुं बेसुं. स्रोरिए कह्यं, तमारी पृथ्वी छे जेम सुख थाय तेम करवुं.

राजा बेसी बोल्यो देह अने जीवनुं भिन्नत्व तमो कथो छो ते घटतुं नथी. आत्माने सुल दुःलनी अवस्थाना भेदो माटे पुण्य पापनी कल्पना करवी अने पश्चात् पुण्य पाप भोगार्थ प्रति परलोक गल्यागितनी कल्पना करवी ते परवक्ष प्रमाणथी विक् कर्द्ध छे. कारण के-मारो पितामह अत्यंत पापी हतो, तेनो मारा उपर अत्यंत क्लेह हतो, जो ते कहेवा प्रमाणे न-रकमां गयो होय हो तेणे अत्र आवी केम पापनो निषेध कर्यो नहीं ? कारण के त्यां अत्यंत दुःख मारे भोगवनुं पढे माटे, हे पुत्र तुं पाप मा कर हुं तो पापार्जनथी दुःखी थयो छुं एवो

(१७) केची अने प्रदेशीमा संवाद.

जवाप नरकमांथी आवी मारा पिताए केम कहा। नही ? माटे एवा व्यतिकरना अभावे हुं एम स्त्रीकारुं छुं के जीव देहतुं औक्य छे, कोइनुं पण परलोकगमन नथी.

केशी गणधर-हे राजन ! जो कोइ पुरुष तारी राणीने भोगवे अने ते तें जाण्युं तो तुं तेने कोइक दंड आपे वा नहीं ? मदेशी-तेने हुं घणी विडंबनाओं करी मारुं.

केशी - ते पुरुष जो एम कहे के मने क्षणवार मूको तो हुं मारा कुटुंबने शिक्षा आपी आवुं के हुं अकृत्य करवाथी अत्यंत दुःखी थयो छुं माटे तमारे कोइए अकृत्य करवुं नहीं तो तुं तेनु वचन अंगीकार करे ?

प०-कदी तेनुं वचन मानी छोडं नहीं. केबी०-त्यारे ए प्रमाजे तमारा पितामह पण नरव आवी क्षके नहीं, ए प्रथम प्रश्लोत्तर.

मदेशी—मारा पितामह कदापि आवी शके नहीं तेथी मारी पितझा असत्य ठरती नथी; मारी पितामही तमारा शाश्वननी अनुरा-गिणी हती ने धर्म कर्ममां सदा आसक्त हती तो ते तमारी मुक्तिए देवलोकमां गइ तेनो मारा उपर अत्यंत स्नेहहतो तो तेणीए अत्रे आवीने केम मितवोध कर्यो नहीं! अरे पौत्र तुं धर्म आचर, हुं धर्म मसादथी स्वर्गमां गइ छुं, अने तारा पितामहे तो पापना संचयथी नरक गति पामी एम तेणीए केम कह्युं नहीं, तेने तो अहीं आवतां कोइ अटकावी शकतुं नथीं, तो तेना व्यतिकरना अभावे मारी मिति सा सत्या छे. देहथी जीव भिन्न नथीं. एताहशी मिति सा मम सत्या.

केज्ञीगणधर-ज्यारे तें स्नान करी सुगंधिद्रव्यतुं शरीरे विलेपन

कर्यु होय अने अलंकार वस्नोधी शरीर अलंकर्यु होय ते वस्तेत चंडाल आवींने कहे के स्वामिन मारा विष्टाना घरमां क्षणवार आवी बेसो. एम कहे त्यारे तेनुं वचन तुं स्वीकारे के नहीं? मदेशी—त्यां जवुं तो द्र रह्यं पण तेनो संबंध पण हुं करूं नहीं? केशी—देवताओ निर्मल पवित्र विक्रियशरीर धारण करी अत्यंत-सुख भोगवे छे, मनुष्यो सात धातुथी निष्पन्न औदारिक श-रीरने धारण करनारा छे, मनुष्य लोकनो गंध पंचशत योजन उर्ध्व उछले छे, मरक्यादि अभावे चतुःशत योजन दुर्गध प्रसरे छे. यतः

चत्तारिपंच जोयण सयाइं! गंधोय मणुय लोयस्स ॥ उद्घं वचइ जेणं । नहु देवा तेण आवंति ॥ १ ॥ संकंति दिव्वपेमा । विसय पसत्ता समत्तकत्तव्वा ॥ अणहीण मणुअकजा। नरभवमसुइं न इंति सुरा॥१॥

इत्यादि विचारी जोतां तारी पितामहीनुं आवागमन असंभ-वित छे, मनुष्यभव संबंधी मोहना अभावे अने दुर्गधिस्थान-पणाथी तेनुं आवागमन थतुं नथी.

मदेशी-मारी पितामहीतुं अनागम हेत तमोए बुद्धिथी सिद्ध करीं किंतु में जीव देहनी अविश्वता घणी युक्तिथी साधी छे. माटे मारो पक्ष सत्य छे, में एक जीवता चोरने निःछिद्व कोठीमां घाळी उपर ढांकणुं दीधुं. पुनर् मृत्तिकादि द्रव्योथी छिपी. केटलाक दिन पश्चात् ते उघाडी मृत चोर देख्यो, किंतु तेना जीवने निस्सरवानो निर्गमन मार्ग कोइए देख्यो नहीं, त्यारे में जाण्युं आनी चैतन्य शक्ति आ देहमां लय पामी अने जो

(12°)

केशी अने प्रदेशीनो संवाद

विलय ना पामी होय तो जीव अन्यत्र जात, तो तेनो नीक-ळवानो मार्ग पण थएलो जणात, तेना जीवने नीकळवाना मार्गना अभावे मारी प्रतिज्ञा सत्य ले.

केशी—हे राजन् कश्चित् दुंदुभिवादक भूमीग्रह (भोंयरा) मां प्रवेशे अने पश्चात् भोंयरानुं मुख वंध करे, जरा पण छिद्र रहेवा दे नहीं, त्यां दुंदुभि वगाडे तो तेनो शब्द बाहिरना लोको सांभळे के नहीं ?

प्रदेशी-बाहिरना लोकोथी शब्द संभळाय.

केशी-ए दुंदुभिना शब्दने निस्सरवानो क्यांय मार्ग जणाय छे ? प्रदेशी-कोइ स्थाने जणातो नथी.

केशी-श्रोत्रथी ग्रहण थाय एवां शब्द पुर्गलोने निःसरवानो मार्ग जणातो नथी तो आकाशनी इव अरुपी आत्मानुं निर्गन मनद्वार कथंरीत्या पामी शकाय? गमे त्यां थइ आत्मा अरुपी माटे नीकळी शके छे. ते स्थूळदिश्थी अवलोकाय नहीं. इति तृतीय प्रश्लोत्तर.

प्रदेशी-हे भगवन्! आपनी बुद्धिनी युक्तिथी ए वात साधी पण निश्चयसाध्य थती नथी. चोरना कलेक्रमां कृमीयो उत्पन्न यया ते जीवो अछिद्रवाळी कुंभीना कया द्वारथी प्रवेक्या ? चोरने कंइ छिद्र नहोतां तेथी प्रतिज्ञा करुं छुं के विकारवाळं चोरनुं शरीर तद्रूपताने पाम्युं माटे मारी प्रतिज्ञा सत्यज छे.

केशी-हे राजन् भृशंविन्हतप्तायोगोलकमां विन्ह मवेश छे के नही? प्रदेशी-अयोगोलकमां विन्ह मवेशे छे.

केशी-त्यां छिद्रना अभावे अयोगोलकमां बन्हि प्रवेशनी उपलब्धि छे तद्वत् जीव पण द्वार विना पेसतो छतो केम अश्रद्धेयक थाय ? किंतु द्वार विना पण अरूशि आत्मानो प्रवेश थाय छे एम सद्दृ जोइए. (इति चतुर्थ प्रश्लोत्तरं)

पदेशी है भगवन तमारी युक्ति प्रमाणे तो समलक्षणयुक्त सर्व जीवो छे ते घटतुं नथी लक्षणनी साम्यताए सर्वमां सरखं बल होवुं जोइए? ते प्रत्यक्ष प्रमाण विरुद्ध छे जे कारण माटे बालके छोडेलो बाण नजीक पडे छे, अने तरुणे छोडेलो बाण दूर पडे छे. ए सर्व जीव देहनी ऐक्यताए घटे छे, लघु शरीरे लघुबल, मोटा शरीरे बल पण महत् माटे सर्व जीवो-मां लक्षण साम्यताए समबलत्व अयुक्त छे माटे मारी प्रतिक्षा सत्या समजवी.

केशी—कोइ बलवान् तरूण पुरुष प्रत्यंचा चढावी वाण फेंके ते ज्यां सुधी भूमि उल्लंघे. ते ज धनुष्य चढावी वालक वाण फेंके ते युवान पुरुष फेंकेला वाणे जेटली भूमि उल्लंघन करी छे तेटली भूमि आ उल्लंघन करे के नहीं?

पदेशी-ते बाण आसन्न भूमीमां पडे पण पूर्वीक्त पुरुषें फेंकेछं बाण तेना जेटली भूमी अवगाही शके नहीं ?

केशी-भला तेमां शो हेतु ?

मदेश्वी-साधन वैकल्य तेमां हेतु छे.

केशी-बालनुं शरीर निर्वल साधन छे धातुओना अपुष्टपणाथी, पृष्ट शरीर सबल साधन छे ते माटे सर्व जीवोमां लक्षणनी साम्यता अंगीकार करः (इति पंचम पश्चोत्तरं)

मदेशी-तमोए जीवोमां समलक्षणपणुं कहां ते असन् छे, कारण के युवान अने बालकनी शक्तिनी (पराक्रम) भिन्नता छे. बालकनी शक्ति अल्प छे, युवाननी विशेष छे, जो जीव एक सरस्वो होय तो पराक्रम पण एक सरखुं होवुं जोइए, परा-क्रममां भिन्नता छे माटे समलक्षणयुक्त जीवो कहेवाय नहीं अने ते विरोध माप्त थतां शरीरथी जीव भिन्न सिद्ध थतो नथी.

- केशीकुमार-एक पुष्ट अने मोढुं पंखी होय ते जेटला भारतुं उद्वहन करे तेटलो भार दुर्बल नाना पंखीथी उपडातो नथी. त्यां शरीर शक्तिरूप साधननो अभाव हेतु छे. मोटा पंखीमां शरीरशक्ति विशेष, नाना पंखीमां शरीरशक्ति अल्प तेथी तेना जेटलो भार उपाडी शकातो नथी. किंतु जीवो तो सर्व समलक्षणवंत छे, माटे समलक्षण जीवोतुं छे एम हे राजन् तुं जाण.
- मदेशी—हे भगवन में जीवता चोरने तुलामां जोख्यो, पश्चात् गळे पाशथी मारी नाख्यो, मरेलाने पश्चात् तुलामां अरोही जो-ख्यो तो पण मथम जेटला भारनो हतो तेटलोज रह्यो, टंक ममाण पण हीन थयो नहीं, तेथी में विचार्य के जो देहथी जीव भिन्न होय तो जीवनो अपगम थतां मृतक चोर झरीर करी हीन थवुं जोइए पणथयुं नहीं, तेथी सिद्ध ठर्युं के-जीव देहनी ऐक्यता छे.
- केशी—चामडानी धमणमां वायु पुरीने जोखनी, अने पश्चात् वायु काढी नांखी जोखनी, वायु पुरीने जोखेली धमण करतां वायु काढी नांखी जोखेली धमणमां वारु भारनी न्यूनता थाय छे ?

प्रदेशी-हे भगवन् ना भारमां कंइ न्यूनता थती नथी.

केशी-जो त्यां भार वधतो नथी तेम घटतो नथी तो अमूर्च आ-त्मानो देहमां शो भार होय? के जेथी जीव नीकळ्या पश्चात्

परमात्मदृष्टीन.

(1940)

चोरतुं शरीर भारमां घटे ? वायुरूपी छे, शरीरी छे, आत्मा अरूपी, अशरीरी छे, अन्यत्र गतिमां गमनकर्ता आत्मा सूक्ष्म शरीरी जाणवो. (इति षष्ठं प्रश्लोत्तरं).

मदेशी-एक चोरने में ककडे ककडा करीने जोयो, त्वचादि सप्त धातुओतुं निरीक्षण कर्युं मल मूत्र पण अवलोक्युं पण क्यांय जीव देखायो नहीं, माटे जीव देहनी ऐक्यता सिद्ध टरी.

केशी-हे राजन बनोपजीवि जनवत् तुं मूढ छे. मदेशी-कोण ते बनोपजीवि. इष्टान्त.

केशी∽जे काष्ट्र छेदन विक्रयथी स्वआजीविका निर्वहे छे,ते वनो-पजीवि पुरुषो कहाडी करवतादि उपकरणो लेइ तथा पका-ववानां अन्न लेड वनमां गया, त्यां तेओए एक पुरुषने कहां के अमो काष्टार्थे आगळ जइशुं, तुं आ सुकुं अरणितुं काष्ट अने आकडानुं काष्ट्र वेमांथी अग्नि उत्पन्न करी रसोइ पका-षजे, एम कही ते वनमां गया, पेलो पुरुष केटलोक वखत निद्राधीन थइ पश्चात् अरणीना काष्टना खंडोखंड करी अग्नि जोयो पण देखायो नहीं, तेष आकडाना लाकडाना खंडो-खंड करी जोयुं पण अग्नि दीठो नहीं, तेथी विलखो थयो. चरम महरे ते पुरुषो आव्या, अने आने कहेवा लाग्या के-रसोइ तइयार थइ छे ? त्यारे मृढ पुरुषे कहुं के अप्रि विना शी रीते रसोइ करूं ? त्यारे तेओए कहुं आ अरणि अने आकडाना लाकडामां अने अग्नि छे तेम कहुं हतुं. तेनु केम? त्यारे तेने कहां के-बन्ने जातिना काष्ट्रना खंडोखंड करी जोयुं पण अग्नि दीठो नहीं, त्यारे तेओए जाण्युं के, आ महा मुर्ख छे, पश्चात तेओए अरणिकना काष्ट्रने नीचे प्रकी, उपर सकं छाणं मुकी आकडाना काष्ट्रथी मथन करी अग्नि उत्पन्न

कशी भने प्रदेशीना संवाद.

(14)

करी ते वडे रसोइ पकावी. सर्वेए खाधुं, पश्चात् सर्वे पोताने घेर गया, आ दृष्टांतनी पेठे हे राजन ! तुं पण मूर्ख छे.

मदेशी-तभी निपुण, बहुविद् छो तो सभा समक्ष तुं मूर्व छे एम केम मने कहुं ? ए केहेवुं तमने अनुचित छे.

केशी-मनुष्य लोकमां हे राजन् केटली सभाओं छे?

मदेशी-राजसभा, गाथापति सभा, ब्राह्मण सभा, अने चोथी रूषिसभा जाणवी.

केशी-ते सभाओमां अपराध करे तेने दंड शो आपवो ?

प्रदेशी-राजसभा, गाथापति सभा, अने ब्राह्मण सभामां अप-राध करनारने अनुक्रमे मोटी छघु शिक्षा करवामां आवे छे अने ऋषिसभामां अपराध करनारने वाणीवडे तर्जना कराय छे.

केशी-हे राजन ! तुं जाणतो छतो मने केम उपालंभ आपे छे कारण के तुं कुगुक्तिवडे वारंवार मारी प्रतिक्षा सत्य छे एम कही वक्रपणुं धारण करे छे. माटे तुं अपराधी अमारो करेलो दंड युक्त छे (इति सप्तम प्रश्लोत्तरं).

" दक्षनी शाखाओं कंपवा लागी ते देखीने सूरि कहे छे.

केशी-आ वृक्षनां पांदडां डाळीओ कोण हलावतुं हशे ?

मरेशी-वायु इलावे छे, त्यां शो संदेह छे?

केशी-हे राजन् तुं वायु देखे छे?

मदेशी-ना किंतु वायु स्पर्श वडे मत्यक्ष देखाय छे पण चक्षुथी देखाती नथी.

क्रशी-वायु जेम त्वाय मत्यक्ष छे, तेम ज्ञान गुणवान् जीव मानस मत्यक्ष छे, एम निश्चय जाण. मदेशी-कुंथुओमां अने हस्तिमां शी रीते समपरिणामी जीव होय? शी रीते ते साचुं मानवुं, छघु स्थानमां छघुं वस्तुनुं अव-स्थान युक्त छे, मोटी वस्तुनुं मोटा स्थानमां अवस्थान युक्त छे

केशी-हे आयुष्मन्-प्रदीप प्रभानो दृष्टांत अत्र जण, दीपक मोटी शाळामां मृक्यो छतां तेटली सर्व शाळाने तेनो प्रकाश व्यापीने रहे छे, तेम-कुंभमां मूक्यो छतां ते कुंभनो ज उद्योत करेछे, तेम आत्मा जेवडा शरीरने अवगाधी रह्यो होय छे तेटला शरीरनेज चेतना गुणवडे द्योतन करे छे त्यां जरा पण शंसय नथी. इति.

प्रदेशी—हे भगवन आपे अनादि कालथी लागेली एवी मिट्यान्त टेव मारी आज टाळी आपना सद्भानरूप स्पेथी मिट्यान्त अंधकार द्र टळ्युं. हे भगवन मारी उद्धार करनार आप छो, इत्यादि स्तुति करी त्रा प्रही पोताना घेर गयो. बीजा दिवसे अत्यंत आडंबर सहीत भाव अभयदानरूप समिकत दाता गुरूने वंदन कर्युं, विशेष अधिकार रायपसेणी सूत्रमां छे. श्री महाबीर मश्रुप श्रेणिकराजाने भाव अभयदान अप्युं, श्री नेमिनाथमश्रुप श्री कृष्णमहाराजने भाव अभयदान अप्युं, तेना जेवो अन्य कोइ जगत्मां उपकार नथी, मांदे सद्गुरू भाव कल्यवृक्ष दृष्टांतने सार्थक छे, सुरनरनी उपमाथी दानगुण सर्वमां श्रेष्ट छे, अने तथी धर्मीत्पत्ति छे, एम जगावणं गुरूशीरूप जंगम तथिनी मापि दुर्लम छे, ग्रामानुग्राम विच्यांता सद्गुरूनी प्राप्ति दुर्लम छे, स्थावर तथि पण भूत तथिकरादिनुं स्मरण करावे छे, स्थावर तथि उपर जेवी भाव भक्ति श्रद्धा होय छे तादशी श्रद्धा भाव भक्ति जो सद्गुरू

(14)

उपर थाय तो आत्मा शिव्र परमात्मपद पामे, भाव तीर्थ पोताना आत्मा समजवो, अनंत गुग तेमां भर्या छे, जो तेनी यात्रा कोइ मुमुक्षु धारे तो अवश्य मुक्ति पद पामे. आत्मारूप मञ्जना दर्शनार्थम् जतां मथम चतुर्दश पगर्थायां रूप चौर गुग स्थानक उहुंवतां क्षपक श्रेणिरूप दोरी झाली आगळ चडतां बात्मा गुणठाणे चारवातीयां कर्मना संक्षपथी आत्माना अ संख्यातमदेशरूप महेलमां जत्राय छे, अने तेमां विराजित परमात्मानां साक्षात् कैवल्यचञ्ज्यी दर्शन थाय छे, पश्चात् आत्मा परमात्मनभुनां दर्शन करे छे, त्यारे अजीकिक स्वरू-पवाळी बने छे, अने त्यांने त्यां रहे छे. पश्चात् अघातिक परमात्मस्वरूप बनी स्वयमेव प्रकाशे छे. कर्म क्षपणथी यावत् भावतीर्थनी यात्रा थइ नथी तावत् सांसारिक भ्रमणमपंचमूलभूतरागद्वेषनी ग्रंथि छेदानी नथी तेनी प्राप्तिनां हेतु स्यावस्तीर्थ अने जंगमतीर्थ छे. जंगमती-र्थिती सेवा भक्ति श्रद्धा, नवन, स्तुत्यादिद्वारा भावतीर्थ दुर्शन थाय छे, यता पोतानो आकार जेवो होय तेवो आदर्शमां जीवायी भासे छे तथा जंगमतीर्थ स्वरूपग्ररूपद्वाराजना आलंबनथी यादक् आत्मानुं स्वरूप होय तादक देखाय छे. आत्मानो नकाश सूर्व तथा चंद्रथी थतो नथी, किंतु स्वीय आत्मानो प्रकाश सर्गुरुद्वारा थाय छे, पर्पुर्ग इसंगी आ-त्मा परभावी थइ भवभ्रमणामां भूल्यो, मोह मायामां झ्ल्यो, आत्मानी अनंत ऋदि इत्यो, पण गुल्नी यात्रा करतां पो-तातुं स्वरूप समजायुं, माटे गुरु समान अन्य तीर्थ स्वात्म निर्मळकारक नथी, गुरु तेज परम जंगमतीर्थ छे, गुरुनी सेवा तेज गंगा नदी जाणबी गुरुनी कुपाइछि तेज मारी

शुभ गति छे, ए प्रमाणे गुरु महाराज तीर्थरूप जाणवा, तीर्थ वे मकारनां छे. १ **लौकिक तीर्थ, २ लोकोत्तर तीर्थ.** वळी छोकोत्तर तीर्थ द्विधा छे, वळी तीर्थ वे भेदे छे, स्वतीर्थ अने परतीर्थ, वळी तीर्थ वे प्रकारतं छे, द्रव्यतीर्थ अने भावतीर्थ. वळी शुद्ध अने अशुद्ध, ए वे प्रकार तीर्थ छे. स्थावरतीर्थ करतां पण सद्गुरू विषे अधिक श्रद्धा मक्तिभाव जागन्ने, त्यारे नकी समजवुं, के आत्मानुं करवाण यने, धर्म-मद धर्मगुरुनी स्तुति पोताना आत्माने निर्मल करे छे, गुरुनो राग, भवस्त्रमण त्याग करावे छे, गुरुने तीर्थनी उपमा आ-पंतानो हेतु ए छे के गुरुराज संसार समुद्रमांथी भव्य जीवने तारे छे, एवा धर्म गुहराजनुं शरण मन वचन अने कायावडे याओ, ग्रहराजने सत्य देवनी उपमा आपवामां आवे छे, गुरु रूप देव तो पुण्य अने पापकृत्य स्वरुपने अवबोधे छे, अने भन्यात्माओ उपर गुरु देव सदा काल क्रपादृष्टि फेंके छे, अज्ञानरुप अंधकार कोइनार्था नाश पामे नहीं तेवा मिथ्यात्व अंधॅकारनो नाश गुरुमहाराज उपदेशद्वारा करे छे, गुरु तेज देव छे, श्री गौतम स्वामीना मनमां विद्यानो अहंकार हतो अने आत्मा छे के नहीं तेनी शंका हती, तेमनुं पण श्री महा-वीर गुरुए शंका टाळी चारित्र अर्पी हित कर्यु, देवताओ पण पंचमहात्रत धारी ध्याननिष्ट महाम्रानि गुरुने नमस्कार करी स्तवे छे, माटे गुरु तेज सापेक्षतः देव जाणवा, आत्मा-नी सिद्धि गुरुथी थाय छे सर्व शाश्वत सुखरुप मांगल्यमद गुरुराज छे, माटे आग्रमां स्तुतिरूप गुरुतुं मंगल कर्युं, आत्मा पोताने स्वयमेव जाणे छे ते दर्शावे छे.

" दुहा. "

तेने तेहिज ओळखे, अवर म ज्ञाता कोय, ज्ञाता तेहिज आतमा, नित्यपणे जग जोय. २

भावार्थ-आत्मा पोते पोताने ओळखे छे, आत्मा विना अन्य कोइ आत्मानो ज्ञाता नथी, सर्व पदार्थ ज्ञानवडे जे ज्ञाता छे, ते आत्मा जाणवो, आत्मानुं स्त्ररूप अन्यथा थतुं नथी, एज अव्भूत आश्चर्य छे. जगत् अवस्थितसर्व पदार्थी ज्ञानथी जणाय छे, अने स्वकीय शुद्ध स्वरूप पण ज्ञानथी जगाय छे, स्व परने ज्ञानमां विषयभूत करनार तेज आत्मा छे, आत्माथी भिन्न जड बस्तु-मां ज्ञान गुण नथी, ज्ञान गुण शक्ति अलौकिक छे, निगोदीया जीवोने पण आत्माना आढ रुचक प्रदेश निर्मेखा छे, ज्ञान त्यां चेतन अने चेतन त्यां ज्ञान सहा रह्यं छे, निमित्तना योगे आत्मा पोताने सायमेत्र अनायासे ज्ञानयी निहाळे छे, कोइ सिंहतुं बच्चुं नानुं धावणुं कोइ भरवाड पकडी लाव्यो. पेछं सिंहनुं बच्चुं बक-राना टोळा भे ुं रमशा फरवा लाग्युं, अने मनमां समजे छे के हुं पण बकरांना जेबुं छुं, मारी जाति अने बकरांनी जाति जुरी नथी, एम समन्तुं हतुं, प्रतिदिन ते सिंहबाल मोटुं थवा लाग्युं, एक दिवस बकरां सहित वाडामां ते बच्चुं बेठुं हतुं त्यारे एक सिंह आव्यो, पेछं सिंहनुं बच्चुं मनमां विचारवा लाग्युं के-अहो आ साम्रं प्राणी देखाय छे ते विचित्र छे, तेत्रं शरीर अने मारं शरीर मळतुं आवे छे हुं जे टोळामां रहुं छुं तेना शरीरनां लक्षण अने मारा शरीरनां लक्षण भित्र भित्र छे, आ साम्रं जे पाणी देखाय छे तेना सरखो हुं छुं, एम ज्ञान थनां एकदम वाडामांथी बहार नीकळी गयो अने सिंह समुदायमां भळयो, तेम आत्मा पोतातुं

स्वरूप स्वयमेव आलंबन योगे पामी परमात्मस्वरूपमय बने छे कह्युं छे के—

अज कुछ गति केसरी लहेरे, निज पद सिंह निहाळ; तिम प्रभुभक्तें भवि लहेरे, आतमशक्ति संभाळ अजित.

परमात्म स्वरूप ओळली तेनुं ध्यान करतां पोतानो आत्मा वण परमात्म रूप भासे छे, परमात्मा अने मारामां भेदभाव नथी, मलीन सुवर्ग समान संसारी भव्यात्माओनी स्थीति छे, अने शुद्ध कंचन समान सिद्धात्मानी दशा छे, मलीनतानी अपगम ध्यान-योगे थतां परमात्मरूप बनी त्रिश्चवन पदार्थ गुग पर्याय ज्ञाता बने छे, ज्ञातृत्वशक्ति आत्मार्था रही छे, जडमां ज्ञातृत्वशक्ति नयी, जड पदार्थ ज्ञेय छे, जेटला ज्ञेय पदार्थ तेट छं ज्ञान समन हुं, ज्ञेय पहार्थ अनंत छे, तेथी ज्ञान पण अनंत कहेवाय छे, अने ते प्रमाणे अनु-भवमां आवे छे, ज्ञातृशक्तिने। आधार चेतन (आत्मा) छे, आन त्मानो करी नाश थतो नथी, माटे नित्य छे, ययपि अविद्याना योगे अनेक शरीरो धारण करे छे तो पण पोताना स्वरूपने त्य-जरो नथी, अज्ञानी जीव एम जो कहेवा लागे के आत्मा नयी पण तेना वचनथीज सिद्ध थाय छे के आत्मानी अस्तिता छे तो ते जीव नास्ति एम कहे छे, अविद्यानी नाश थतां अवश्य यथात-ध्य सहेजे आत्मतत्त्व भासे छे, आत्मा अनंत सुखनो धर्मी छे, सुख दु:खनी चेठ्र आत्मानी मेरणाए थाय छे, इष्टानिष्ट ज्ञाता आत्मा छे, जो ए आत्मतन्त्र सम्यक् रीत्या ओळखाय अने तेनुं **झान थाय तो स्वानी पे**ढे सर्त्र जगत् देखाय, आस्मामां जे चित्तवृत्ति राखी चितवन करे छे ते पुरुषो आत्माने सहेजे ओळले छे अने अखंड सुख भोक्ता बने छे.

(२२)

भारमा स्वस्वक्रपमां समायने.

" दुहा. "

समाय तुं तारा विषे, तारु ताहरी पासः मारु मारु क्यां करे, घरतो परनी आशः ३

हे आत्मा तं तारा स्वरूपमां समाय छे, तारी गति सर्वना करतां न्यारी अने अनंत आनंद आपनारी छे, तुं कोइ अन्य पदा-र्थमां रहेतो नथी, प्रकाशयी तमः समृह यथा सर्वथा न्यारु छे, तेम अनंत शक्तिधारक चेतनथी सांसारिक स्वरूप सर्वथा न्यार छे. अवळी परिणतियोगे परवस्तने पोतानी मानी मनताना पासमां पडे छे पण सहजानंदी आत्मा विवेकथी तं विचार के-स्वमामां भासेलुं जगत जेम मिथ्या छ, तेम बाह्यबस्तु पण तारी नथी, चेतन तारी ऋदि ताराथी जरा मात्र भिन्न नथी, जेन मृगथी कस्तुरी भिन्न नथी तेनी दुंटीमांज रहेली छे, तेम आत्मानी ऋदि पोता-नामां भरी छे, परभात्मपद आत्मामां छे, आचार्यपणुं पण आत्मा-मां छे, तेम उपाध्याय, साधुपणुं पण आत्मामां छे, ज्ञान, दर्शन, चारित्र अने तप वीर्य आदि गुगो पण आत्मामां रह्या छे, अनंत स्रख पण आत्मामां छे, तो बहिरात्मभावे हे चेतन परनी आग्रा-थी मृढ बनी मारु मारु एम शुं चिंतवे छे ? परवस्तु तारी कडी थवानी नथी. एम निश्रय जाण, तारी ऋदि ताराथी न्यारी नथी. खोजे सो पावे. आ कहेवत आत्मामां योजवी. अनादि कालथी चेतन मिथ्यात्वयोगे स्वस्वरूपना अनुपयोगे परवस्तुने पोतानी मानी जन्म जरा मरण उपाधि पामी, किंतु हवे निर्णयपूर्वक जा-णवामां आव्युं के-परवस्तु अचेतन जड विशिष्ठ छे, हुं एना नथी, ए मारु नथी, हुं मारा स्वरूपे समायो छुं, हुं जे जे वस्तुओ चक्क-थी देखें छुं, घाणे सुंघुं छुं, जिन्हाए स्वादुं छुं, ते ते बस्तुओमां हुं नथी माराथी सर्व पदार्थ जणाय छे, तो एण ते पदार्थोमां हुं नथी. सर्व पदार्थो प्रकाश्य छे, अने हुं प्रकाशक छुं, मारी जे वस्तु नथी तेनी ममता हुं केम राखुं ? पुद्गलनी एंठ आ जीवे बहिरा-त्मभावे वा क्षुधावेदनीना उदये भक्षण करी पण ते पुद्गल अंते मांरुं नथी, एम निश्चय करी स्वस्वभावे स्थिर रहेवुं एवं हिताकांक्षा.

" दुहा. "

देखी आत्मस्वरूपने, जाण्यो पुद्गल खेल; न्यारो तेथी आतमा, चिदानंद ग्रणरेल ॥ ४ ॥

भावार्थ-परोपकृतिमान् श्री सद्गुरुद्वारा ध्याननी एकाग्रताए आत्मस्वरूप भार्युं त्यारे आ सांसारिक प्रपंच सर्व पुद्गल खेल जाण्यो, ते खेलथी आत्मा न्यारो छे अहो शुं आश्वर्य, सर्व सां-सारिक पदार्थो नाशवंत छे. अने आत्मा अविनाशी छे, आनंद, अने ज्ञाननो धारक आत्मा छे, आत्मस्वरूप बतावे छे.

पद.

चेते तो चेतावुं तनेरे, पामर प्राणी-ए राग.
आतम रूप देखुं आजेरे सकल सुख,
अचल अखंड योगी, अभोगी अशोगी भोगी;
स्वभावे ते नहीं रोगीरे-सकल सु॰ आत॰ १
देहमांहीं वसनारो, देहातीत मन धारो;
रूप रंग थकी न्यारो रे-सकल. आत॰ २
जाणे सुख दु:ख सहु, चेतन छे जग बहु;
व्यापी घट घट बहुरे-सकल॰ आत॰ ३
नाम टाम जेने नहीं, नहीं जाति भाति कही;
पोतानामां व्यापो रही रे-सकल॰ अत॰ ४

(44.)

निरंजन ।निराकार, ज्ञानदृष्टि आरपार; बुद्धिसागर सुखकार रे-सकछ०

आत० ५

परिपूर्णसुखरूप आत्मानुं स्वरूप-निर्विकार अखंड छे, आत्मतत्त्वमापक जीवोने कोइनी स्पृहा रहेती नथी. कोइ निंदा करे वा स्तुति करे तोपण हर्ष शोक रहित आत्मज्ञानी विचरे छे, राग द्वेषनी परिणित मंद पडे छे, समये समये आत्मिक सुख संतात बुद्धि पामे छे, तृष्णानुं मूळ छेदाय छे, परस्वभाव महित्त स्वयमेव विरमे छे, अने आत्मस्वभावमहित्दारा निहित्त सुखोद्भव थाय छे, देहमां वसतां देहातीत अवस्थानो भोगी आत्मा बने छे, काक-विष्टा सम पौद्गलिक विषय सुख लागे छे, परनिंदातो आत्मज्ञानीने गमती नथी, आत्मस्वरूपना ध्यानी पुरुषने जे सुख थाय छे ते अवाच्य छे, आनंदनो समुद्रज जाणे होयनी एवो अध्यात्म ज्ञानीनो आत्मा बने छे, आत्मज्ञानीनी दशा माप्त थया विना आत्मिक सुखनो अनुभव पमातो नथी, आत्मा परम पूज्य छे अं-तरात्मयोगी थइ परमात्मपदमय ध्यानथी थता अनहद सुख भोगी आत्मा स्वयमेव स्वस्वरूपी थइ रहे छे.

" दुहा. "

ध्यानथी दृष्टि फेंकुं ज्यां, त्यां सहु स्वरूपे स्थिरः शबु मित्र स्वप्तु भयुं, गइ अनादिकु पीर ॥५॥

भावार्थ-मन, वचन, कायानी एकाग्र आत्म स्वरूपे थतां जगत् विचित्र देखायुं, मथम ध्याननी पूर्वे सर्व जगत् हस्तिना क-र्णनी पेठे चंचल उन्मत्त लागतुं हतुं, ते हवे ध्याननी एकाग्रताए स्वस्वरूपे स्थिर थतां सर्व जगत् पोताना स्वरूपे स्थिर देखायुं, मारुं मन चंचल तो सर्व वस्तु चंचल अने मारुं मन स्थिर तो सर्व वस्तु स्थिर एम देखायुं तेथी सार लीधो के-मन जो आत्मामां रमे तो मोक्ष अने मनः परभावमां रमे तो भवश्रमणता, एनो निश्चय थयो, आत्मज्ञान विशेष थतां स्थिरता सर्वत्र भासे छे, कहुं छे के-

भासे आतम ज्ञान धुरि, जग उन्मत्त समानः आगे दृढ अभ्याससे, पत्थर तृण अनुमान ॥५॥

सारमां सार ग्राह्म, आराध्य आत्मा छे, ध्यानथी आत्मामां रमतां शत्रु मित्र स्वमनी पेठे भासे छे, अर्थात् शत्रु मित्र आत्म झानीनो कोइ नथी. अनादि कालनी लागेली कुटेव तो नाशी गइ अने शुद्ध चेतना प्रगट थइ, मिध्यात्वपणुं टळ्युं, आत्मानुं शुद्ध स्व-रूप प्रगट थतां सहजानंद प्रगटे छे, आत्मज्ञानीओ एवी दशामां रमे छे, तेमने पुनः पुनः नमस्कार थाओ.

" दहा. ^{''}

अहं बुद्धि परमां धरी, परमांही बंधाउं; अहं बुद्धि जो आत्ममां, तो हुं क्यां रंगाउं.॥६॥

परवस्तुमां अहंपणानी बुद्धि घारण करी कर्मरूप परवस्तुमां बंधा उं छुं, पण जो आत्मामां अहंपणानी बुद्धि यह एटळे आत्मा पोते हुं छुं अन्यमां हुं नथी, आवी बुद्धि थतां हुं आत्मा कोइयी क्यांय रंगतो नथी. अर्थात् कर्मे करी छेपातो नथी, जे महात्माओ आत्मामांज हत्ति राखे छे ते आत्मानी ऋदि पामे छे, परमां चित्तहित राखवायी अग्रुक दुष्ट अग्रुक छंपट अग्रुक वर्षी इर्यादि बुद्धि याय छे पण पोताना आत्मानी सत्तानु चित्तवन कर्मीयी पोतानुं स्वरूप मान्न थाय छे.

-(24)

गुरुने नमस्कार.

" gri. "

काल अनादि परिणभ्यो, आतम जडने संगः अशुद्ध परिणामे करी, करतो नाटारंगः ॥७॥ पोताना अज्ञानयी, पाम्यो दुःख अनंतः स्वपदज्ञानाप्ति प्रही, थयो सिद्ध भगवंत, ॥८॥

भावार्थ-अनादि कालथी जीव कर्माष्टक ग्रही औदारिकादि श्वरीर ग्रही जह संगे दुग्य पयोवत् परिणम्यो छतो अने ते कर्मना योगे पोताना आत्माना थयेला अशुद्ध परिणामे करी चतुर्गति रूप सं-सारमां जन्म जरा मरणनां दुःख ग्रही नाटारंग करतो फर्या करे छे, आत्मानो शुद्ध परिणाम थतां भव मर्पचनी बाजी नाश्च पामे छे, पोताना एटले आत्माना अङ्गानथी जीव अनंत दुःख पाम्योः श्वरीरने आत्मा मानी बहिरात्मभावे रमतो फरतो पोतानुं स्वरूप भूल्यो, दुःखनो समुद्द पोताना अङ्गानथीज माप्त थाय छे. पण सब्गुरु समागमे आत्मस्वरूप जाण्युं तेमां रमणता करी कर्मनो नाश कर्यो. अने मोक्ष स्थाननी माप्ति करी सिद्ध भगवंत थयो ए सर्व आत्महाननुं फल छे.

" दुहा "

जेनाथी निज आतमा, समजायो सुलकंद; त्रिकरण योगे भावथी, नमुं गुरू कमदंद्र.॥९॥

सुखकंद अनंतगुणिविशिष्ट आत्मस्वरूप जे गुरुना बोधथी समजायुं ते सद्गुरु महाराजना चरण कमछद्वयने भावथी मन व-चन अने कायाए करी नमस्कार करुछुं, आत्माने ओळखावनार गुरु छे, गुरु पण आत्मा छे अने श्रोता पण आत्मा छे, किंतु गुरुनो आत्मा ज्ञानवंत छे अने सेवक श्रोताजननो आत्मा निर्मछ नथी तेने जणावनार गुरु छे, उपदेशक धर्मतीर्थ छे, माटे गुरुनेज मोद्धं तीर्थ जाणवुं, मुदर्शना चरित्रमां चारण मुनिए चंद्रगुतरानाने महाफळ जाणी उपदेश आप्यो छे, सद्गुरु समान त्रिम्चनमां मोद्धं कोइ तीर्थ नथी. सद्गुरु मोद्धं तीर्थ छे एप मनमां श्रद्धा थतां सम्यक्त्वनी प्राप्ति थश्चे, दर्यमां गुरुनी मृत्ति स्थापन करी तेनुं एकामचित्रधी भक्ति पूजन ध्यान करवायी आत्माने अळौकित शांति थश्चे, अने दररोज एम ध्यान घरवायी पोताने साक्षात् सद्गुरु जाणे होयनी एम साक्षात् भासे थश्चे, अने गुरु माहात्म्यथी अनुभव ज्ञाननो प्रवाह वहन थश्चे, अने दुर्गुणोनो अवस्य नाश थतां मन त्रस्स थश्चे, अने आत्मा सद्गु-णधाम थश्चे.

" दुद्दा. "

सद्युरु वण भव दुःखनो, परिहारक निह कोय ॥ ते सद्युरु नित्य वंदीए, जन्म सफलता होय ॥१०॥

भावार्थ-भव दुःख अंतकारक सद्गुरु विना अन्य कोइ नथीं, ते सद्गुरुने प्रतिदिन वंदन करवाथी जन्मनी सार्थकता छे, घोर कर्म करनारा दुष्टननो पण गुरुना उपदेशथी गुरुता पामी शारी-रिक मानसिक दुःख संक्षय करी पंचमीगतिने पाम्या छे, पामे छे, अने पामशे-

" दुहा. "

साधन साध्यापेक्षथी, जे पाळे आचार; राग रोष मद जीतता, सफलो तस अवतार॥११॥ सगादिक त्यागी शमे, करशे आतम थ्यानः सम्यग् ज्ञान क्रिया थकी, थाशे ते भगवान्.॥१२॥

भावार्थ-ने भव्यात्वाओ पंच महात्रतादिनी आचार साधन साध्यनी सापेक्ष बुद्धिथी पाळे छे, अने राग रोपने जीते छे, तेनो आचार सफळ छे, अने ते दुनियामां जन्म्यो सफळ छे, क्रोध, मान, माया, खोभ, निंदादिनो जय करी श्रमभावे जे मुमुधुओ आत्यध्यान कर्शे, अने सम्यग्ज्ञान अने सम्यग्क्रियात्रं अवलंबन करशे ते पोते भगवान् थशे, कर्मपळना नाशयी आत्मा ते सिद्धात्मा थइ शके छे, किंतु अभव्यजीव सुक्तिपद पामी शकता नथी, कारणके अभव्यजीवीमां मुक्ति पामवा-नी स्वभाव नथी. अभव्य जीवोतुं उपादानकारण शुद्ध यह शकतुं नथी, भन्यजीवोत्तं खपादानकारण शुद्धमामग्री योगे थइ शके छे, संसारमां परिश्रमण करवानुं मुख्यकारणराग अने द्वेषभा-बकर्ष छे. नोकवायसहचारि भावकर्षमां छे, क्रोध, मान, माया, अने छोभनो राग द्वेषमां अंतर्भाव छे, सिख थता जीवोने राग द्वेष अनादि सान्त भांगे छे, अभव्यमीयने रागद्वेष अनादि अ-नंत भागे छे, रागअने द्वेषनी क्षय संत्रस्थी सर्वेथा थाय छे, बहिरात्मभावे राग द्वेषनो क्षय थतो नथी, ज्यारे अंतरात्मपणुं माप्त थाय छे, त्यारे राग द्वेषनो क्षय थइ शके छे. कधुं छे के-

राग देष के त्याग बिन, मुक्तिको पद नांहि; कोटि कोटि जप तप करे, सबे अकारज थाय॥१॥ रागद्वेषना क्षय बिना मुक्तिपद पाप्त थतुं नथी, राग द्वेषना स्थाग बिना कोटि कोटि जा तप करे तो पण छेले थतुं नथी, श्रूथम् आत्मस्त्रक्ष गुरुसमक्ष जाणवामां आहे, जहतुं स्थातध्य स्वस्प जाणवामां आहे पश्चात् जह अने आत्मानी भिष्मता मादुप परतां विवेस प्रगटे, विवेसथी आत्मतत्त्वआदेय छक्ष्यमां प्रहे, अने अजीवतत्त्व हेय जाणे पश्चात् आत्मा विचारे के—मारामां अनंत हान, अनंत दर्शन, अनंत क्षायिक चारित्र, अनंत वीर्य हो, हुं स्वतंत्र छुं, किंतु अनादिकाळथी राग द्वेषना योगे परतंत्र छुं, राग देष ए मार्ष आत्मस्त्रक्प नथी, एम विचारतां सर्वत्र सर्व माणी छपर तथा वस्तुओं छपर सममाव प्रगटे, दुनीयांनी सर्व वस्तुने श्रमभावे निरखे, राग देषनो क्षय श्रमभावे आत्मध्याने प्रवित्तां थाय अने सम्यग्ज्ञान अने कियाथी मुक्तियद मळे माटे जे म्रानिवरो रागादिकनो त्याग करी वायुनी पेठे अपतिबद्धताए विचरी स्वआत्महितमां छीन रहेशे, ते-क्षणिक आयुष्यनी सफळता करे छे.

" दुइा. "

को किरिया जह बोलता, तरशुं अम संसार; कर्मनाश किरिया थकी, सफलो अम आचार ॥१३॥ बहिर् कियामां राचता, अंतर्तत्त्व न भान; भूल्या भवमां भटकता, कियाजडी अज्ञान ॥१४॥

भावार्थ-कोइक कियाकि च नीवो एम माने छेके-अमी किया करवाथी संसार समुद्र तरी छुं, अमी जे किया कांडनो आचार आदरीये छीए ते कर्म नाश करशे, माटे किया सकछ छे, जे जे किया छे ते सकछ छे, यथा दोइन, मक्षणिक या, ते प्रमाणे पढि-छेइण (प्रति छेलन) आदि कियाओ पण कर्म नाश कर बाधी सकछ छे, ए प्रपाणे साध्य आत्मतत्त्वना अजाणपणे अंतर्किया जे ध्यानादिक मुंहर नहीं जाणवाथी क्रियाजड पुरुषो भवमां (30)

भटक्या, भटके छे, अने भटकशे, अने परमात्मगद केम पामी सके, साध्य सापेक्षताए क्रिया सफ्छ छे, एम एकांते बाह्मक्रियाथी जहात्माओ इष्टफ्छ जे मोक्ष ते पामी शकता नथी.

" दुइा• "

कोइ ज्ञानने मानता, ज्ञान सत्य जग सार; विना ज्ञान क्यां मुक्तिफल, ज्ञाने भवजल पार॥१५॥ एकांते एम जे प्रहे, करे कदाश्रह चित्त; आत्मतत्त्व पाम्या विना, होय न तत्त्व प्रतीत॥१६॥

केटलाक भव्यात्माओ ज्ञानने मुक्तिमद माने छे, आत्मतस्वना ज्ञान विना मुक्ति नथी, ज्ञानथी संसार समुद्र तरी शकायछे, आस्मतस्वना बोध विना जे भव्यो एकांते हृदयमां हट कदाग्रह धारण करी स्वेच्छाए प्रवर्ते छे, ते परमात्मपद पामी शकता नथी, आत्मतस्व पाम्या विना मोक्षनी प्राप्ति थती नथी.

" दुहा ["]

युवत्यंग निरख्या श्वकी, विषय तृपिं निह थाय; भोजनज्ञान थया श्वकी, भूख न भागे भाय ॥१७॥

भावार्थ-युवितना अंगनुं निरीक्षण करवाथी विषयिपुह्नोने विषयनी तृष्ति थती नथी, तेमन बरफी, दूरपाक, भिष्टाम भोज ननुं जाणपणुं मात्र थवाथी, उदरपूर्ति थती नथी, माटे तेनी किया कराय तो इष्ट फरूनी सिद्धि थाय छे, माटे कियानी मुख्यताए फरू सिद्धि छे।

इ।नवादी-हे कियावादी ! तमी कियाने फलदायक कहोछी ते युक्त नथी, किया करवाथी संसारनी दृद्धि थाय छे, रांधवुं,

परमारमदर्शन.

युद्ध करवुं, ए आदि किया छे तो तेथी मुक्ति नथी, किंतु कर्मबंध छे, माटे किया संसारद्योद्धेहतुभूत छे, माटे ज्ञान तेज सार छे, कर्मक्षय ज्ञानथी थाय छे.

कियावादी—किया थकीज मोक्ष छे, किया वे प्रकारनी छे, १ कमिकिया. २ धर्मिकया, जे कियाथी संसारमां परिश्रमण कर्खुं पढे अने आश्रवनुं ग्रहण थाय ते कमिकिया जाणवी, तेनो तो त्याग करवो योग्य छे. पण जेनाथी जन्म जरा मृत्युनां दुःत्व नाज्ञ पामे प्रवी धर्म कियाओ कही छे, ते क-रवी जोइए, कारण के तेनाथी कमेनो नाज्ञ थाय छे, किंतु ज्ञान थकी थतो नथी माटे क्रिका तेज मोक्ष मार्ग छे.

शानवादी—पर्भने माटे क्रियानी जरुर नथी, आत्मानी मुक्ति तो श्नानथी थाय छे, श्ररीरनी किया, वचननी किया शुं मोक्ष आपी शके १ ना नहीं. मननी किया विकल्परूप मोक्ष आपी शक्ती नथी, किंतु आत्मानुं ज्ञान थवाथी मुक्ति माप्ति छे, ज्यां ज्यां किया त्यां कर्मनो बंग समजवी, कारण के क्रिया जड छे तो तथी उत्पन्न थनार फळ पण कर्म जड़ छे, तो मुक्ति क्यांथी मळे १ माटे श्लानथी मुक्तिनी सिद्धता छे.

क्रियावादी—क्रियाने जह कही किंतु क्रियाथी जहनो नाश थाय छे, कारण के सजातियथकी सजातियनो नाश थायछे, इंटनी नाश मोगरथी एपछे, तेम कर्मछे ते जहछे तो तेनो नाश क्रियाथी थायछे माटे क्रियाथी नाश थवी तेज मोक्ष जाणबुं, ज्ञानथी कर्मनी नाश श्री रीते थाय १ माटे कर्म ना-श्रिका क्रिया जाणबी, मानसिक, वाचिक, कायिक क्रिया करवाथी कर्म नाश थायछे, माटे ते करवी जोइए अने क्रिया ज मोक्ष फळदाछे. कानवादी—तमोए जह थकी जहनो नाम थयो एम कहुं, ते युक्त नधी तमारा मत प्रमाणे तो एमज सिद्ध थायछे के पाप कर-वांधी पण कर्म नाम थाय, कारण के पाप पण जह छे अने कर्म पण जह छे माटे पापथी कर्मनो नाम थाय तो पथात दया, सत्य, तप करवानी भी जरुर होवी जोइए १ अने जो एम होय तो पापी जीवोनी भी मुक्ति थवी जोइए अने धर्मी अने पापी एवो भेद भाव पण असत्य थाय किंतु भाममां वीतराग भगवंते तो एम कहुं छे के पाप कृत्यथी कदापि मुक्ति मळती नथी, माटे ज्ञाने सत्य मानो. अने तेनाथी मुक्ति थायछे. कियाबादी—हे ज्ञानवादी ! तुं मारुं कथन समनी भक्यो नहीं, प्रतिपक्षी जहथकी पतिपक्षी जहनो नाम थायछे, कर्मनुं पति-पक्षी पाप नथी माटे पापथी कर्मनो नाम थतो नथी, पुण्य अने पाप ए वे परस्पर पतिपक्षी छे माटे पुण्यथी पापनो नाम थायछे. प्रथनी किया दुःखनामक छे माटे धर्मनी किया

ज्ञानवादी-पुण्यनी क्रियाथी कंइ कर्मनो नाज थतो नथी, कारण के पुण्य पण कर्मस्वरूपछे, तो पुण्यथी कर्मनी दृद्धि थाय पण कर्मनो नाज तो थतो नथी, माटे ज्ञानथीन मुक्ति थायछे एम मानवुं जोइए.

अवश्य करवी जोडए.

क्रियाबादी—भला ठीक पुण्यथकी कर्पनो नाश न थाय तोपण शाताबेदनीयकर्प बंधाय अने तेथी उत्तम कूळमां जन्म थाय धन, पुत्रादि ऋदि प्राप्त थाय तेथी सुल मळे ते पण क्रियानुं फल छे, अने तेथी अनुक्रमे कर्पनो नाश थाय माटे कियाकां-दनी साफल्यताले.

क्षानवादी-पुण्यथी शातावेदनीयकर्म वंशायछ अने तेनी भोग

भोगवना अन्तार धारण करतां जन्म जरा मरणनां दुःख माप्त थायछे, अने अन्तार धारण करतां पश्चात् ते भनमां बळी ननां कर्म बंधाय पण कर्म बंधनो पार आने नहीं, ज्ञानथी कर्मनो नाज्ञ थायछे माटे तेनो स्नीकार करनो योग्यछे.

कियावादी-अमो कियाथी कर्मनो नाश मानीये छीए ते सयुक्त छे, उत्तम अवतार आव्या विना धर्मनां कार्य थइ शकतां नथी, पिट छेहण, प्रतिक्रमण, प्रश्नपूजा, इत्यादि क्रियाओ पापनो नाश करे छे, अने नवीन कर्म प्रतिबंधकद्वारा आत्मा निः मीळ थतां श्रुक्तिनी प्राप्ति थायछे माटे क्रिया सफल छे.

क्रानवादी—धर्मनी क्रिया उत्तम कुळजन्म धनसंपत्ति आपनारीछे, पण तेथी कर्मनी दृद्धिछे. पिडलेहण, प्रतिक्रमण, प्रश्चपूजा, पण कर्मनो नाश करी शकती नथी, जरा स्क्ष्मदृष्टिथी विश् चारो के—झान विना क्रिया करवाथी शुं फल थइ शके? ज्ञानामिः सर्वकर्माणि, भस्मसात् कुरुतेऽर्जुन झान अग्रि सर्व कर्म बाळीने भसीभूत करे छे, माढे हट कदाग्रह त्यागी, झान मुक्तिपद मानवुं ते योग्यछे.

क्रियावादी—क्रिया विना ज्ञाननी उत्पत्ति थती नथी, ज्ञाननो अभ्यास ज्ञानने उत्पन्न करेछे, प्रथमथी कंइ ज्ञान होतुं नथी. विद्याभ्यास करतां करतां ज्ञाननो प्रकाश थायछे, सारमां समजवानुं के ज्ञानाभ्यासरूप क्रियाथी ज्ञान उत्पन्न थायछे तो क्रियाथी कर्मनो नाश थाय एमां कंइ शंका नथी, माटे क्रि-याथी कर्मनाश मानवो योग्यछे.

ज्ञानवादी~ज्ञान विना सर्वत्र अधारं, जे कर्मनो नाश करवानोछे ते कर्मतुं स्वरूप जाण्या विना कर्मनो नाश शी रीते थाय ? चैत्रने मेत्र नामना पुरुषे कबुं के, तारो चक्रवेग नामनो शतु

(३४) ज्ञान अने क्रियानी संवाद.

छे ते तने मारवा धारेछे, हवे जो चैत्रने चक्रवेग ओळखतो होय तो चैत्रनो घात करे, अन्यथा तेनो नाश करी शके नहीं. तेम दृष्टांतथी समजवानुं के-कर्मनो नाश करवे। ते कर्मनुं ज्ञान थया विना बनतो नथी माटे ज्ञानथी कर्मनो नाश मानवो जोइए.

कियानादी—फक्त वस्तुनु ज्ञान थवा मात्रथी फलनी सिद्धि थती नथी, एक माणसने भोजन करवानुं ज्ञान थयुं एण भोजननो मुख्यमां प्रक्षेप करे चावे त्यारे तेनी उदरपूर्ति थाय अने श्रुधा मटे, माटे कियाज फलपद छे. ज्ञान तो जाणवा मात्रछे, जेम कोइ तारु (तरनार) जळमां तरवानुं जाणेछे किंतु जलमां मवेश करी हाथ पग हलावे नहीं तो बुडी जाय तेम कर्मनुं ज्ञान थतां कर्म नाशकारक क्रिया नहीं कराय तो कर्मनो नाश थतो नथी, परंतु क्रियाकरणथी कर्म नाश थायछे.

इानवादी—तमारुं कथन ठीकछे, किंतु ज्ञान विना वस्तुनुं यथातथ्य स्वरूप जाणी श्वकातुं नथी, तो पश्चात् ते आदरी शकातुं नथी, मोदक बनाववानुं जाणे अने ते भक्षण कर्याथी
अम्रुक फायदो थायछे ते जाणी शकाय तो त्यार बाद करी
शकाय, जे वस्तुनुं ज्ञान नथी ते वस्तुनी क्रिया शी रीते करी
शकाय ?—हष्टांत तरीके जाणो के—कोइ मनुष्यने बीजा मनुध्ये कह्युं के शास्त्रमां आकाशगामिनी विद्या कहीछे, तेनुं ज्ञान
थाय तो आकाशमां उडी शकाय, त्यारे पेछा मनुष्ये शास्त्रनी
शोध करी आकाशगामिनी विद्या जाणी, त्यार बाद किया
करी आकाशमां गमन करवा छाग्यो. अत्र समनवानुं के आकाशगामिनी विद्यानुं ज्ञान थतां तेनी क्रिया थइ शके, माटे
हाननी मुख्यताछे, ज्ञान विना कोइ क्रिया थइ शके, माटे

कियाबादी—हे ज्ञानबादी! तमो मूळ हेतुथी विरुद्ध उतरोछो, तमारे विचारवुं के—ज्यां ज्यां क्रियाछे त्यां अवश्य ज्ञान रखुं होयछे, ज्यां साकर त्यां साकरनो रस, ज्यां केरी त्यां तेनो रस अवश्य होयछे, तेम ज्यां क्रिया होयछे त्यां अवश्य ज्ञा-ननी अस्तिताछे, माटे ज्ञाने जाणतां क्रिया करती वस्तत पण गौणभावे ज्ञान होयछे, मुख्यरूपे क्रियाछे, अने क्रियायी कर्मनो नाश थायछे माटे क्रिया तेज कर्मनाशकछे.

क्वानवादी—हे क्रियावादी तारुं वचन अयुक्तछे, ज्यां क्रिया होय त्यां ज्ञान होय एवी ज्याप्ति नथीं, फोनोग्राफ वाजींत्रमां क्रिया बोलवानीले, पण ज्ञान नथीं, आगगाडी (अग्निरथ) मां गमननी क्रियाले पण ज्ञान नथीं, माटे तारुं कथन अस-त्यले, वली जेना माटे तुं क्रिया करवानुं कहेले ते आत्मा तो अंते सिद्धपणुं पामी अक्रिय थायले, अने सिद्धमां क्रिया नथीं, अक्रियले, आत्माना घरनी क्रिया नथीं, तो ते क्रिया निष्कलले, सिद्धमां ज्ञानले, अने ते तो आत्मानो गुणले माटे क्रानथीं मुक्तिले एम जाण.

कियावादी-क्रिया आत्मा करेछे, माटे आत्मानीछे, शरीर कंइ क्रिया करतुं नथी माटे क्रिया प्रमाणीभूता कर्मक्षये जाणवी.

इत्तानवादी—आत्मा कंइ फक्त एकलो क्रियाने करतो नथी, शरीर-धारी आत्मा क्रिया करेले, अने ज्यारे शरीरनो त्याग करी सिद्धपद पामेले त्यारे क्रियापणुं टलेले, आत्मा संसारमां कर्मयोगे सुख दु:ख योगे त्रण प्रकारनी क्रिया करी शक्तेले, व्यवहार नये क्रियानो कर्चा आत्माले, निश्चयनयथी जोतां क्रियाकारक आत्मा नथी माटे आत्मानी क्रिया कही शकाय नहीं. क्रियाबादी—अग्नि लाकडाने बाली भस्मीभूत करी स्वयमेव शास्त (35)

ज्ञान शने कियानी संवाद.

(ओळसड़) जायळे, तेम क्रिया पन कर्मने बाळी पोतानी पेळे नाम पामेळे, माटे क्रियाथी मुक्तिळे.

झानवादी से पियतम, जहा विचारको तो मालुए पडके के - किर् याथी मुक्ति के एवं काथी जाण्युं. उत्तरमां कहेवं पडके के झानथी, झान न होय तो क्रियाने जाणी शकाय नहीं, तो पछी भी रीते करी शकाय? तमीए कखं के क्रियाथी मुक्ति छे आ वचन प्रज्ञाप मात्र छे, देखी. प्रसन्न चंद्र राजर्षि ज्यारे सूर्यना सामी दृष्टि राखी ध्यान करता हता त्यारे ते कोइ क्रिया करता नहोता, अने झान ध्यानथी क्षेत्रल्झान पाम्या, विचारों के त्यां कई क्रिया करता हता, कंइ नहीं, भरतरा-जाए आरीसा (आदर्श) भुवनमां भावना भावतां भावतां क्षेत्रल्झान उत्पन्न कर्युं, मरुदेवा माताए हस्ति उपर भावना भावतां केत्रल्झान उत्पन्न कर्युं त्यां कंइ क्रिया करी नथी, फक्त झानबडे कर्म खपावी केत्रल्झान पाम्या जीवो देखायळे, माटे झानळे तेज सत्ये छे.

क्रियावादी—हे ज्ञानवादी तमीए मसमवंद्र राजिं हुं हु हु नित ज्ञा-ननी सिद्धिने अर्थे आप्युं, ते ज्ञानने सिद्ध नहीं करतां क्रि-याने सिद्ध करे छे, मथम समजवं के ध्यानछे ते क्रियाक्षण्छे, ध्यानना चार मकारछे, आर्तध्यान, रौद्रध्यान, धर्मध्यान, शुक्कध्यान, ए चारमांथी मथमनां वे ध्यान दुर्गित अर्थे छे, काउस्सम्ममां मसम्भवंद्र ऋषिए मथम दुध्यीन ध्यातां नरक गति उपार्जन करी पश्चात् पश्चात्ताप पामी धर्मध्यानादि ध्यावतां कर्म खपावी केवलज्ञान पाम्या ते सुं कारण धर्मध्यान अने शुक्कध्यानक्ष्य क्रिया छे, बार भावना भा पण धर्मध्यानमां आवी, महदेवी माता अने भरतराजाए धर्मध्यानादि ध्यातां केवलज्ञान पाम्युं, माटे ते पण क्रियायीज, केवलज्ञान, मुक्ति आदि पाम्यांके. श्री विजयलक्ष्मीस्रीजीय पण कत्नुंके के ध्यानक्रिया मनमां आणीजे, धर्म शुक्त ध्यायीजेरे; इत्यादि, माटे क्रिया कर्म क्षय करीके.

ज्ञानवादी-हे क्रियामां राचनार, हजी तं पोतानो मत छोडतो नथी. मारा बचन उपर लक्ष आप, ज्ञान विना ध्यान थइ शकतं नथी जेनामां ज्ञान छे ते ध्यान करी शके छे, जुओ भरतराजा. जेनामां ज्ञाननो सर्वथा अभावछे त्यां ध्याननो अभावछे, जुओ, घट जडछे तेमां ज्ञान नथी, जो, ध्यानसुं ज्ञान न होय तो ध्यान शी रीते शके ? प्रथम ज्ञान अने पश्चात क्रिया, वळी समजबुं के ज्ञान विना जरा पग क्रिया थड शकती नथी, एक दिवसना जन्मेला बालकने पण स्तन पान प्रवृत्तिमां संस्कार बुद्धि कारण छे. स्रख द:खने पण जगावनार ज्ञानके, ज्ञान रुपराजानी क्रिया दासीछे, माटे ज्ञानना हुकन मगाणे किया थइ शकेले, ज्ञानरूप राजाना करतां क्रिया दासी मोटी कहेवाय नहीं. ज्ञान देखतुंछे, अने क्रिया आंधळी छे, ज्ञान विना चारित्र नथी, ज्ञान विना वै-राग्य थता नथी. ज्ञान विना देव ग्ररु धर्मने ओळखी शकाता नथी, अरे विचारो तो खरा, ज्ञानथीज आत्मा पण ओळ-खाय छे, पण किया ओळखी शकती नयी. ज्ञानथी बीजाना मननी बात जाणी शकाय छे, कोइ अंध पुरुष वनमां फरती फरे किंतु अंधपणाथी-खाडामां चालतां पण पडी जाय, तेना सामो वाय आवे तो कड़ दिशा तरफ जबुं ते देखी शके नहीं, अने जो देखतों होत तो दुःखथी बचे माटे ज्ञान ते देखता पुरुष समान छे अने क्रिया आंधळा पुरुष समान छे.

(36)

ज्ञान अने कियानो संवाद.

कहुं छे के-

ज्ञानी श्वासोश्वासमे, करे कर्मनो खेदः पूर्वकोड वर्षा लगे, अज्ञाने करे तेदः देश आराधक किया कही, सर्व आराधक ज्ञान.

इत्यादि विचारी जोतां ज्ञानथी कर्म नाज्ञ पामे छे. वळी स-मिकत पण ज्ञानथी उत्पन्न थाय छे, माटे ज्ञानना समान कोड नथी. ज्ञान वे प्रकारे छे, १ व्यवहार ज्ञान, २ निश्चय ज्ञान. गणीत. व्याकरण.ज्योतिष्य, वैदक, नाटक सायन्स आदिनं ज्ञान व्यवहार ज्ञा-नछे, एनाथी आत्मानुं हित एकांते थइ शकतुं नथी. षड्द्रव्य तेना द्रव्य गुण पर्याय सात नय,भप्तभंगी, स्वादादरीत्या आत्मानं स्वरूप उपयोगे जाणवं ते निश्चय ज्ञान छे,आत्मानं स्वरूप ध्यावं,व्यवहार अने निश्चयनयथी आत्मानुं स्वरूप जाणी आत्म स्वभावमां रमवुं तेनुं नाम निश्रय ज्ञान छे, ए ज्ञाननी पाप्तिथी कोटी भवनां कर्ष नाज पामे छे, माटे ते ज्ञान आदरणीय छे, ए ज्ञाननी प्राप्ति थतां पश्चात् राग द्वेषनो क्षय थाय छे, जे ज्ञानथी आत्मा परमात्म पद पामे ते ज्ञान-नी प्राप्ति पूर्व पुण्ययोगे थाय छे, तेनुं नाग सम्यग् ज्ञान छे, ए निश्चय ज्ञाननुं सट्हेतु श्री सट्गुरु महाराज छे, तथा वीतराग बाह्य छे, एनुं अवलंबन करवुं. वीतराग बाह्य कथित सम्यग क्रि-यानं अवलंबन करवाथी कर्म क्षय थाय छे, क्रिया वे पकारनी छे १ शुभ क्रिया २ अशुभ क्रिया, जे क्रियाथी पुण्य थाय छे, ते शुभ किया, व्यवहार नयथी आदरवा योग्य छे, जे क्रिया करवाथी पापार्जन थाय छे ते अशुभ क्रिया जाणवी. वीतराग भगवंते स-म्यग् क्रिया शास्त्रमां प्ररुपी छे, ते सम्यग् क्रिया जाणवी.

सद्गुर-सम्यग् ज्ञानथी सम्मग् किया जाणी शकाय छे मादे

क्वान पूर्वक क्रिया छेखे छे, ज्ञान क्रिया विना पांगळुं छे, अये क्रिया आंधळी छे, ए बेनो संगम थतां मुक्ति पामी शकाय छे. श्री तीर्थ-कर महाराजा त्रण ज्ञानना स्वामी छतां चारित्र अंगीकार करे छे, तपश्चर्या अंगीकार करे छे माटे क्रियानी जहर छे, ज्ञान अने क्रियाथी मुक्ति छे, माटे शास्त्रमां कहां छे के — ज्ञान क्रियाभ्यां मोक्षः ए सिद्धान्त वाक्यानुसार महत्ति करवी. मोक्षाभिलाषी भव्यात्मा-ओने द्रव्यानुयोग ज्ञान अत्यंत उपकारी छे, सम्यण् ज्ञानथी बिल-हारी छे. ज्ञानरूप सूर्योदय थतां भिष्यात्व अंधकारनो नाश थाय छे. जेम जेम आत्म स्वरूपनुं विशेष ज्ञान थतुं जाय छे, तेम तेम क्रोध, मान, माया, लोभनी मंदता थती जाय छे. ज्ञानदशा थया विना जीवनी मुक्ति थती नथी, आत्मज्ञानथी मुक्ति थाय छे.

शुष्कज्ञानीनां लक्षण कहे छे.

" दुहा. "

वाक् पडताए विद्वता, जन मन रंजन हेत; पोथी पुस्तक वांचतो, शाश्वत पद क्युं लेत ॥१८॥ अहं बुद्धि अभिमानथी, यावत् परमां थाय ॥ तावत् ज्ञानी को नहीं, पामे नहि शिव ठाय ॥१९॥

भावार्थ-मनुष्योनां मन खुशी करवाने माटे वाणीना वाचाल पणामां जेनी विद्वता समायी छे, एवी शुष्क झानी पोथी पुस्तक बांचतो छतो अने परने उपदेश आपतो छतो मुक्ति पद पामे नहीं, लोकोमां मारी विद्वता दर्शाववी, लोको मारी मशंसा करे अने हुं जगत्मां मिलद थाउं आ मकारनी इच्छाथी जे झाननां पुस्तको भगे छे, व्याख्यान वांचे छे, तेशा पुष्को मुक्तिपद पामी शकता नथी. आत्मभावे झान परिणमतां परमात्मपदमय आत्मा बने छे, जानधी मोधा.

श्रावकथी व्याख्यान वांची शकाय नहीं, कारण के ते संसारमां राची माची विषयस्य भोगवतो संसार असार जाणीने पणपडी रहा छे, अहंकारबुद्धिथी परमां अहंपणानी बुद्धि थायछे, हुं मोटो आ सर्व मारुं, मारा समान दुनियामां कोण विद्वान छे? एवा विचार थायछे त्यां सुधी निश्चयज्ञानीपणुं नथी, शुष्क झान्नीपणुं जाणबुं, एवा शुष्कज्ञानी परमात्मस्वरूप तरफ छक्ष आ-पता नथी अने बहिरात्मपणुं धारी मुक्ति स्थान पामता नथी। आत्मज्ञानी वं छक्षण कहे छे.

" दुहा. "

वैराग्वादिक ग्रण वृंद, आतममां प्रगटायः समभावे निरुषे सदा, परमातम पद पाय. ॥२०॥

भावार्थ-वैराग्य, संवेग, समता, सहनशाखता, निर्लोभता, आदि ग्रुण समूह आत्मामां प्रगटावे अने ग्रुणधारकआत्मा, श्रम-भावे शत्रुमित्र, कंचन, उपल, निंदक, वंदकादिने देखे, त्यारे पर-मात्म पदनी प्राप्ति धायले.

" दुहा. "

त्याग विसग विना कदी, थाय न आतम ज्ञान; आत्म ज्ञान विना कदी, पामें नीह शिव ठाण ॥२१॥

भावार्थ—संसारभंधन भूतपुत्रस्नीधनादिकना ममत्वरूप त्याग विना अने धैराग्य विना आत्मज्ञान थतुं नथी, अने आत्मज्ञान विना शिवस्थाननी माप्ति नथी, सारांशके—संसारनी मोह मालनो त्याग अने तिन्नस्थिरज्ञान वैराग्यथी सद्गुरु उपदेशद्वारा आत्मस्यरूप समजी आत्मस्यरूपमां लीन थायले, आत्मज्ञानीओने अंग्रुकमां अग्रुक दोषले, अमुक क्रोधीले, अमुक मारो शतुले, आवी

(89)

भावना थती नथी, ते तो एपज विचारेछे के जीवनो कोइ शत्रु मित्र नथी, तैम संबंधी पण नथी, पारकी निंदा करवी तेमां मने कंइ फायदो नथी, आत्मज्ञानीओ तो एम विचारेछे के-सर्व जीव कर्मना वशे जुदी जुदी सारी नटारी आधरणा करेछे, तेमां हुं सर्व ना आत्मानी निंदा करुं के शरीरोनी निंदा करुं, अलबत विवेकः थी विचारतां कोइ पण निंदाने पात्र नथी, ज्यां सुधी मनमां निंदा करवानी बुद्धि थायछे त्यां सुधी कोइ अपेक्षाए धर्मी नथी, तेम परनी निंदा करतो साधु वा श्रावक होय तो पण ते चंडाछ समान मनोवृत्तिथी जाणवी, शुब्कज्ञानी मुखथी आ संसार असारछे एम मुलयी पोकारेछे, पण संसारमां आसक्ति राली भवश्रमण करेछे, ग्रष्कज्ञानी चारित्र अंगीकार करी शकतो नथी, केटलाक आवको उपरथी त्याग विराग देखाडी संसारमां शहरनी पेठे आसक्ति धारण करेछे तेम ज्ञाननं फल विरति पाम्या विना स्वजन्म नि-ष्फळ ग्रुमावेळे. केटलाक जीवो उपरचोटीया वैराग्यथी दीक्षा अं-गीकार करी पूजा माननी लालचे गच्छमतना कराग्रहे नड्या छता आत्मस्वरूपका ज्ञान विना बहिरात्मपद पामता परस्पर एक बी-जानी निंदा करी टोळं भेग्नं करवानी बुद्धिथी, व्याकरण, न्याय आदि अभ्यास करी एक बीजानुं खंडन मंडन करेछे तेवा साध-ओ आत्मज्ञान पामी शकता नथी पण जे साधुओना हृदयमां सं-सारनी असारता वसी रहेलीछे, अने शांत मुलाकृतिथी विचरेछे. सदगुरूनं तथा गीतार्थ साधुनी संगति करेछे ते आत्मज्ञान पामी कर्म क्षय करी मुक्तिपद पामेछे, संसारमां वसतां त्याग विरागपणुं पामनं मुक्केळ छे, त्यागी अने वैरागीपणुं अध्यात्म दशावाळा मुनि-बरो पामी शके छे, अने आत्मामां अनंत सुख अनादि काळथी तिरोभावे रहांछे, ते पण आत्मानुभवी भव्यो जाणेछे, काया मा- याने आत्माथकी भिन्न जाणे ते पुरुषो तेनो त्याग करी शकें छे, संसार बळता अग्नि समान छे, संसारनां दरेक कार्यो जपाधिमय छे, संसारनी उपाधिमां वसतां आत्मानुं ध्यान यह शकतुं नथी, माटे संसारी जपाधि त्यागी सदगुरु उपदेश सांभळतो के जेथी वै-राग्य माप्त थाय, अने वैराग्य माप्त थतां गुरु महाराजने पूछी आरमानुं स्वरूप ओळखवुं, अने ते आत्मस्वरूप जाणतां तेनुं ध्यान धरतां कर्मनो नाश थायछे, माटे आत्मस्वरूपाभिकाषिओए त्याग अने वैराग्यनी माप्ति माटे मयतन करवो.

" दुहा "

योग्य होय ते आदरे, इठ कदाग्रह त्यागः वैराग्ये मन वासियुं, तस परमातम रागः ॥२२॥

भावार्थ-आत्मतस्य तथा तेनी प्राप्तिना अव्याभचारी हेतुओने भव्यात्मा अंगीकार करे आत्मतस्य जेनाथी पामी शकाय नहीं एवां साघनोमां हठ कदाग्रहपणानी बुद्धिनो त्याग होय, सब्गुरु महाराजा भव्यात्माओनी विचित्र प्रकृति जोइ जे साधनथी जेने फायदो थाय ते साधन व्रतादि तेने अंगीकार करावे, त्यारे अतिश्य प्रेमभक्तिथी गुरु वाक्यने शिष्य अंगीकार करे, आत्मार्थी जीव भवभयथी बीक पामतो विचारे के—जो दुर्धभ मनुष्यावतार पाभी स्वछंदाचारीपणे वर्तीश तो अनंत भवभ्रमण करवां पढशे माटे गुरुनी आहा मस्तके धारी मत कराग्रहनो त्याग करे अने संसार्शी अनित्यता विचारे—कर्मनुं स्वरूप मुक्षमदृष्टिथी विचारी सार्शी अनित्यता विचारे—कर्मनुं स्वरूप मुक्षमदृष्टिथी विचारी सार्शीश ग्रहे के—आ जगत्मां सम्यग्वमधी आत्महित छे, एम चिंतन करी जळपंकजवत् संसारभावधी न्यारो रहे, तेवा भव्यात्माओने परमात्मपद्देनो राग थाय किंतु संसारमां विष्टा शुकरवत् अहर्निश

विवेक्स्यी भून्य हृद्यवाळा, अने प्रवस्तुने पोतानी माना हर्ष शोक धारण करनारा रागांधवहिरात्मीयोने प्रमात्मपदनो राग यतो नधी, वैरागी, त्यागी, मत कदाग्रहवर्जित जीवो प्रमात्मपद्पामी शके छे. आ आत्मार्थीनुं छक्षण छे.

" दुहा_• "

समिकत जेगे अपिंद्यं, ते मोटा एक देवः निमित्त गुरु ते आत्मना, कीजे तेहनी सेव. ॥२३॥ त्यां त्यां यहनी बुद्धिशी, भटके जाणे रोझ: ग्रुरु गुरु शी वस्तु छे, नहीं करतो तस खोज ॥२४॥ घोळुं तेटऌं दुघ एम, तेवी ग्ररुमां बुद्धिः गुरुबुद्धि सर्वत्र जासः तस नहि आतम शुद्धि ॥२५॥ सेवे सद्युरु प्रेमर्था, चरणकमल आधीन; पामे ते परमार्थने, थावे ।शेवसुललीन. गरही। सद्युरु सम कोनो नहीं, भवमांहि उपकारः कामकुंभश्रीसद्युरु, भवजल तारण हार ॥२७॥ प्रत्यक्ष उपकारी ग्रह, परोक्ष जिनवर होय: एहवी बुद्धि प्रगटतां, धर्म योग्यता सोय. ।।२८॥ ग्रुरुश्रद्धाभक्ति विना, लागे नहीं उपदेशः भणवं सुणवं शास्त्रवं, ते पण हेत क्लेश. -112911 सद्ग्रह वचनामृत विना, तत्त्वस्वरूप न पायः सद्गुर सेवंतां थकां, समिकतरत श्रहाय. 113011

(44)

देव.

तारक बुध्धिथी ग्ररु, कथन करे उपदेशः श्रुप्धा भक्तिथी सुणी, आदर करो विशेषः ॥३१॥

भावार्थ-अनंतक रूणायोगे केवल परमार्थ बुद्धिथी अनंत भव दुः खबिल्ले देक कुटारसहम धर्ममूल भूतसमिक रूप रत्न जे सह्गुरुए अर्पण कर्युं ते गुरु मोटा देव समान छे, देव गुरु धर्मनी श्रद्धार्थी समिक्ति आत्मामां उत्पन्न थाय छे, देव वीतराग अष्टादम द्षण रहीत होय तेने स्वीकारवा.

यतः जिनेन्द्रो देवता स्तत्र, राग देष विवर्जितः हतमोहमहामलः, केवलज्ञानदर्शनः ॥१॥ स्रासुरंद्रसंप्रज्य, सङ्कतार्थप्रकाशकः मुल्लकर्मक्षयं कृत्वा, संप्राप्तं परमं पदं ॥२॥ जीवाजीवी तथा पुण्यं, पापमाश्रवसंवरीः बंधोविनिर्जरामोन्नो, नवतत्त्वानि तन्मते. ॥३॥ तत्र ज्ञानादिधमेंयो, भिन्नाभिन्नविवर्त्तिमान् कर्म शुभाशुमं कर्त्ता, भोक्ता कर्मफलस्य च ॥४॥ वैतन्यलक्षणो जीवो, यश्चेतद् विपरीतवान् ॥ अजीवःसः समाख्यातः पुण्यं सत्कर्मपुद्गलाः ॥५॥ इत्यादि

वीतराग शासनमां जिनेन्द्र भगवान देवछे, ते राग द्वेष रहित छे, जेंगे मोइरुप महामछनो सर्वथा नाश कर्योछे, अने जेपने केवछ ज्ञान अने केवछदर्शन साकार निराकार उपयोग तरीके भास्यांछे, वैमानिक अने भूवनपति आदिना चोसठ इंद्रोवडे जेनां चरण कमब

परमारमदर्शन.

(24)

पूजायांछे, एवा वीतराग देव जाणवा, वळी तीर्थेकर देव त्रिश्चव-नवर्त्ति धर्मास्तिकायादिक षट्द्रव्योना गुण पर्याय आदि सत्य पन दार्थीना प्रकाशकछे, जेवुं जगत्नुं स्वरूपछे तेवुं तेमणे केवछज्ञाने मकार्युंछे. असत्य जल्पनतुं तेमने कंइ प्रयोजन नथी, दयाळ अने उपकारीपणाने लीथे सत्य तत्तानी महपणा करीले, भरत, ऐरवत अने महाविदेह क्षेत्रमां तीर्थेकरोनी उत्पत्ति यायछे बीश स्थानक-मांतुं गमे ते स्थानक उत्कृष्ट परिणामयोगे आराधवाथी त्रिश्चवन आराध्य तीर्थेकरनामकर्म बंधायछे, अनादिकालसंगी रागद्वेव स्वरूप महामछ शत्रुनो जेणे सर्वथा नाश, स्वशुद्ध आत्मिकपरि-णामथी कर्योछे. एवा तीर्थंकर महाराजाने चोत्रीश अतिशय अनु-क्रमे उत्पन्न थायछे, स्वआचार कल्प अने भक्तिभरथी गमन करी प्रश्वनी प्रश्वता दर्शाववा माटे चतुर्निकायना देवता देवीओ प्रश्वने लोकालोक प्रकाशक केवलकान अने केवलदर्शन उत्पन्न यतां अ-कौकिक विचित्र मनहर देवताइ अष्टमहाप्रातिहार्य युक्त समवसरण नी रचना करेछे ते उपर बाह्य अने अंतर्छक्ष्मीवडे सुशोभीत त्रिज-गतारक तरणि, पांत्रीस वाणीग्रणधारक, परमपृज्य परमप्वित्र त्रयोदश गुणस्थानवर्ति श्री देवाधिदेव तीर्थंकर महाराजा वचना-तिश्चये युक्त देवता मनुष्यतिर्थेचोत्पन्न बार पर्षद अग्रे मधुर ध्वनि-थी बहिरात्मा, अंतरात्मा, परमात्मास्वरूप तेमन देवगुरू धर्म अने नवतत्त्व, षड्द्रच्यतुं स्वरूप, भव्योना कल्याणार्थे प्रकाशेछे, अने देशनान्ते साधु, साध्यी, श्रावक, श्राविका रूपचतुर्विधसंघनी स्यापना करेछे, तेमां सर्वथी मुख्य चतुर्विष संघमां मुनिराज छे, धर्मनी अपेक्षाए संघछे, बीतराग आज्ञा मुजब ज्यां प्रवर्तन नथी, ते संघ कहेवाय नहीं, मोहजनितश्रमणाए केटळाक श्रावकना कू-ळगां उत्पन्न यह श्रावको साधु साध्वी विना श्रावक वर्गनेज संघ

(४६) गुठ, अण तरवजी अहा करावे छे,

तरीके अज्ञानधी गणेछे, ए वर्तन वीतरामशास्त्रवही विरुद्धछे, साधना सत्तावीस अने श्रावकना एकवीस गुण पत्नी अहतात्रीय गुणयक्त संय कहेवाय छे. ज्ञान दर्शन चारित्रथी भिन्नाभिन अने व्यवहारनयथी शुभाश्चभ कर्मनो कर्ता तथा भोक्ता, चैतन्यछक्षण यक्तजीवतत्त्वनी परुषणा तीर्थकरे करीछे. जीवधी विपरीत अ-जीवतत्त्वन प्ररूपण तेमने कर्युंछे, एम नव तत्त्रनुं प्ररूपण कर्ता बीतराग देवछे, आयुष्य मर्यादा पर्यंत पृथ्वीतळ पावन करी अ-घातीयां कर्ष खपानी अग्ररीरी अनामी यह सिद्धस्थानमां पहेंचि सादि अनंति स्थिति अमरामर पद भोगवेछे, एवा देवने देव तरीके मानवा, वीतराग आज्ञाधारक पंचाचार, पंचपहाबत आ-राधक गुरुने गुरु तरीके स्वीकारवा, वीतरागकथीतमीक्षमार्ग स्वरूप धर्मने धर्मकपे स्वीकारवी, आ त्रण तत्त्रनी अद्धा गुरु महा-राजना उपदेश्वयी थायछे, माटे ग्रुरु महाराज समिकतदायक प्रबद्ध निमित्त कारणछे, तेमनेज गुरु तरीके सदा स्वीकारी तेमनी आज्ञा-नुसार चाछबुं विवेकशुन्य अज्ञानवासीत चित्तवाळी मृदपुरुष्ट परमार्थबुद्धिहीन जेटलं प्रवाही घोळं तेटलं दुग्य एवी अज्ञानताथी रोज पशुनी पेरे सर्व मुंडे(मां, सर्व धर्मापदेशकोमां गुरुबुद्धि धारण करेछे ते अज्ञानी स्वभात्मशुद्धि करी शकतो नथी अने भविष्यत काछे सदगुरूश्रद्धा विना करशे पण नहीं, आत्मतत्त्वज्ञ, अध्या-त्मोपयोगी गुरुनं आलंबन अनादिकालसंलग्नअज्ञाननो करेछे, सहजानंदी आत्मानुभव मंदिरमां म्हाळनार गुरु महाराज प्रत्यक्ष मारा उपकारीके, अने जिनेश्वर परोक्ष उपकारीके. एम विवेकदृष्टि जेने मत्यक्ष थर छे ते धर्म पामी श्रकेछ, गुह श्रद्धा अने श्रद्धान्तः करणयी गुरु भक्ति करवायी तेमनी उपकार भव्यात्माने छागेछे, अने श्रद्धा भक्ति विना उपदेश लागवो नथी, गुरुती श्राह्या

विना स्वयमेव शास्त्र वांचे तो पण यथायोग्य तत्व तेना हृद्यमां परिणमे नहीं, अने विपरीत परिणमे तो अपध्यसेवननी इव उप-देश निष्फल थाय.

परमार्थथी जोतां तारक बुद्धियी गुरुराज उपदेश अपेंछे, ते उपदेश विनयथी अति हर्षे श्रवण करी आदरवा योग्य आदरो, अने त्याज्यने त्यागो. सुगुरुमां गुरुबुद्धि थया विना उपदेश कंइ असर करी शवशे नहीं, ए निश्चय जाणबुं. अने गुरुए जिज्ञास अने श्रदाळने उपदेश आपवो, पात्र विना उपदेश लागतो नथी.

अज्ञानी मूढ पत कदाग्रही इगुहओनी संगतिथी जे लोकोनी बुद्धि विपरीतपणे परिणमीछे, तेमने उपदेशथी असर क्वचित् थाय छे, खारी भूमिमां पतितजलनी जेम निष्फल्लताछे, तेम खल भ-वाभिनंदी जीवोने उपदेशनी पण निष्फलताछे, जेनां नीचे छस्या प्रमाणे लक्षण होंय तेने उपदेश देवो योग्यछे.

- ? संसारनी अनित्यताए वासित चित्त होय.
- २ हुं कोणछुं? वयांथी आव्यो? वयां जइश्र शुं मारे कर्तव्यछे?
- २ हुं ते कोण ? हुं अने मारुं ते शुं ? ए जाणतों होय अथवा जाणवानी जिज्ञासा होय.
- ४ भवनो भय लागे एटले जन्म जरा मृत्युधी व्याप्ततंसार बळताओं समान छे तेमां पडीश तो वळी मरीश एवी जेने भय होय.
- ५ गुरु महाराजनी वाणी उपर पूर्ण विश्वास होय तेप मीति होय.
- ६ सत्य अने असत्यने समजी शकतो होय अने कदाग्रहीन होय.
- ७ गुरु महाराजना कथन। तुसार प्रवर्तनार होय.

(४८) योग्य अने अयोग्यश्रोतातुं सक्षण.

- ८ क्ष्यट हत्ति जेने होय नहीं, अने सदाचार प्रहत्तियुक्त होय.
- ९ छोकविरुद्धनो त्याग करनार होय.
- १० विनेय होय अने गुरुनी श्रद्धा सहीत सेवामां तत्पर होय. इत्यादि छक्षणो जेनामां होय ते उपदेश ग्रहनार उत्तम पात्र-भूत श्रावक वा ग्रुनिपणे पण शिष्यो जाणवा.

नीचेनां छक्षणवाळाओने उपदेश लागी शकतो नथी।

गाथा.

रत्तो दुठो मृढो--पुव्विवुग्गाहिओअ चत्तारि उवएसस्स अणरिहा अहवासएहिं परिवुज्जंति ॥१॥

- १ संसारनेज सार मानी तेमां अत्यासिक धरनार.
- २ हुं कोण छुं १ मारे शुं कर्तव्य छे १ तेनो पण जेने विचार थाय नहीं
- पापनां कार्यो करतां भय पामे नहीं,
- ४ जीवोनो घात करनार धुर्त शठ मूर्खपणुं जेनामां होय,
- ५ गुरुना दोषो जोनार, तेमनी निंदा करनार अने गुरुनी श्रद्धा तथा गुरुनो विनय बहुमानरहीत होयः
- ६ गुरुपहाराजनी वाणी उपर विश्वास, श्रद्धा, तेमज तेमना उपर भीतिरहीत होय.
- ७ हुगुरु अने सुगुरुनी परीक्षा करवानी जेनामां बुद्धि न होय.
- ८ कपटी, व्यसनी, तेमज निंदक होय,
- ९ कुगुरुना फंदामां फसाएल होय अने दृष्टिरागी होय.
- १० जेर्नु स्थिर चित्त न होय, जेम भगावे तेम भमे, विवेकशान्य हृदय होय.

परमात्मदुर्धन.

(88)

- ११ गुरु करता पोताने मोटो माननार, अने पोतानो कको खरो
- १२ उपदेश समजे नहीं अने गुरु उपर द्वेष करे.
- १३ अविनयी होय.

इत्यादि लक्षणयुक्त जीवो होय ते उपदेश देवाने योग्य नथी,
तथापि गुरुसंगतिथी तेवा जीवोने पण लाभ मळे, एकांत नथी,
आत्मज्ञानी गुरु महाराज अवसरना जाणळे, माटे स्वपर लाभार्थे
प्रवृत्ति करेळे, योग्य लागे तो उपदेश आपे अने अयोग्य लागे तो
उपदेश आपे नहीं, मौन धारण करे, ज्ञान, दर्शन, चारित्र वीर्यादि
गुगोमां ध्यानथी प्रवर्ते, सद्गुरु महाराजा सदा स्वतंत्र आत्मोपयोगपणे वर्तेळे, धर्मध्यान अने शुक्रध्यानना योगे आत्मा परमानंद
स्वरूपमां रमण करी तत्यद प्राप्त करे एम गुरुनी प्रवृत्तिक्रे, एवा
गुरुनी आज्ञासह वर्तेलुं.

" दुइा. ?'

त्याज्यने त्यागी ज्ञानथी, उपादेयशुं हेतः करता हरता कर्मने, शाश्वत पद झट लेत. ३२ द्रव्यकर्म ने भावकर्म, तेनो करी परिहारः समता संगे झीलतां, लहीए भवजल पार. ३३ स्वच्छंदाचारीपणुं, रोकी सद्युरु सेवः गुर्वाधीन मन्द्रं करी, पामो शाश्वत मेव. ३४ धन्वंतरिसमसद्गुरु, कर्ता कर्मनो नाशः उत्तम वैद्यनी उपमा, तेना श्रहण दास. ३५ (4.)

गुरुषी गुरुता.

मूळ विना निह वृक्ष जग, युरुगम वण क्यां ज्ञानः वांचो पोथी पत्र पण, नहीं टळे अज्ञान. ३६ भण बं गण बं मानधी, जन मन रंजन काजः आत्मळक्ष्यना ध्यान विण, लहे न शिव साम्राज्य.३७ किया कांड कपटे करी, करतो रंजे लोकः थुष्कज्ञान पण एकलुं, जाणो भविजन फोक. ३८ लाभालाभे सुल दुःख, शत्रु मित्र सम भावः उदासीनता चित्तमां, भवसागरमां नाव. ३९ निदो निंदक नेहथी, पूजो पूजक कोइः धूर्तो कहेशे ढोंगीए, समभावे सब जोइ. ४० अंतर्सृष्टिग्रणतणी, आतममांही अनुपः वांग्र बहु बोले सुणी, मनमां राखी चुप. ४१

भावार्थ-ज्ञानथी त्याज्य वस्तुने त्यागी आदरवा योग्य वस्तु स्वरूपज्ञानाधार आत्मा प्रति प्रीति अंतरात्मायोगे उत्पन्न थर छे एवा मुनिवरो आत्मानी साथे एकतान थी प्रीति करता छता कर्मनो नाश करी शदिति सिद्धि सौधमां प्रवेशे छे, हे आत्मा जेना योगे तारी अशुद्ध परिणिति थर्छ, एवं द्रव्यकर्म अने भावकर्मने स्वतः शुद्धपरिणितथी असंख्यातप्रदेशथी दूरकर, समताक्षीनी साथे ध्यान रूप सरोवरमां, क्रीडा करतां तुं भवपाथोधि सहेजे उत्तरी मुक्तिनगर प्राप्त करीश, एम मुनिराज ध्यानमां भावे, अष्टकर्मनो आत्मानी साथे जे बंध तेने द्रव्यकर्म कहे छे, अने राग देवनी परिणातिने भावकर्म कहेछे, आत्मस्बरूपमां रम्णता करवाथी द्रव्य-

परमात्मदर्भन.

(41)

कर्म अने भावकर्मनो नाश थायछे.

है शिष्य तुं परमात्मपदनी अभिलाषा राखतो होय तो स्व-च्छंदताचारीयपणुं टाळी गुरुना आधीन मन करी सद्गुरुनुं सेवन कर के जेथी शाश्वतपद पामीश, कर्मरोगनो नाश करणार्थम् गुरु धन्वंतरी वैद्य समान छे, तेमना दास थइएतो कर्मनो नाश थाय, वैद्य विना दवाओ पोताने फायदाकारक थती नथी, तेम गुरुनी आज्ञा मीति विना गमे तेटलां सद्वतो धारण करीए तो पण यथा-योग्य आत्महित थतुं नथी.

मूळ बिन वृक्ष क्यां ? अने गुरुगम वण आत्मज्ञान क्यां ? श्रावक वर्ग अविद्या तथा अविनयना योगे स्वयंगुरु बनी ज्ञानी गुरुनी अपेक्षा राख्या विना पोथी पुस्तक वांचे पण ते ज्ञान सत्य- ज्ञान तरीके थशे नहीं, पोतानी मेळे वांचेळा ज्ञानथी वैराग्यादि गुणो जोइएतेवा प्राप्त थशें थहीं अने शंकादि दोषोनुं निराकरण यशे नहीं. मुनिवर्गन पण गुरुगमद्वारा विनयमक्ति बहु मानथी ज्ञान ग्रहगुं योग्य छे, अने तदर्थम् योगवहनादिनुं शास्त्रमां अनंत मानी वीतराग भदंते भव्यात्माओना हितार्थे मरूपण कर्यु छे.

मानथी पूजावाना अर्थे जनमन रंजनार्थम् विद्याभ्यास करवो, श्रास वांचवां इत्यादि सर्व मोक्षहेतुभूत कार्य नथी, आत्माना हितने माटे भणवुं, गणवुं, वांचवुं, इत्यादि शुद्ध परिणाम थयो नथी त्यां सुधी शिव साम्राज्य पामी शकातुं नथी. बाह्यांडंबरी क्रिया-कांडना कपटथी देशोदेश विचरतो छतो मनुष्योने रंजे ते पण आत्मळक्ष्यना उपयोग विना व्यर्थ छे तेमज क्रियाने नहीं मान-नार, व्रतादिनो खप नहीं करनार जेने सत्यज्ञान थयुं नथी एवा वाक्ष्यद्वताथीज पंडित पद धारण करनार शुष्कज्ञानीनुं एकछं ज्ञान पण आत्महित पति थतुं नथी.

(५२) गुरुवी गुरुता,

काभ, अलाभ, सुल, दुःख, शत्रु, भित्र, जीवितव्य, मरणः आदि प्राप्त यतां जेतुं समचित्त छे अने सांसारिक पदार्थो पति उदासीनता जेना हृदयमां वर्ते छे एवा सद्गुरुष्ठनिवर संसारूप सम्रद्भां नाव समानके.

निंदक खुबीथी (बेलाशक) एवा मुनिवरनी निंदा करो, अने पूजक भावथी भले पूजो, धूर्ची भले ढोंगी कहे, पण एवा महात्मा सर्वने समभावे निरखे छे. बीजाना भला भुंडा कहे तेमां पोताने भुं?

इानिगुरुपहाराजा आत्मानी गुणखृष्टि अंतर्रेष्टि योगे नीहाळी ममुदित थायछे, आत्माना असंख्यातमदेशोछे, एकेक मदेशे अनंत द्वान, दर्शन, चारित्र, वीर्यादि गुगो सदा शाश्वत भावे रहाछे, वळी आत्मा पोतान। स्वरूपे रूपीछे, पुरुगलनी अपेक्षाए अरूपीछे, ज्ञानरूप उपयोगनी अपेक्षाए साकारछे, दर्शनरूप उपयोगनी अपे-क्षाए निराकारछे, वळी शाधत आत्मामां उत्पादव्यय अने ध्रुव समये समये वर्तेछे, वळी आत्मामां स्थित अगुरुलघु षहुगुणहानि दृद्धि करेछे, ए आत्मा पुदगल द्रव्य साथे मिलेछे तोपण ते थकी न्यारोछे. अनंत ऋद्धिनो भोक्ता मारा आत्मा विना परद्रव्यनी साथे मारे कंइ संबंध नथी, मारो आत्मा कर्मे अवरायोछे, पण ते ग्रुगो मारा नष्ट थया नथी, मारा आत्माना ग्रुगोने उपमा आपवी व्यर्थछे, अहो हुं आत्मा अखंडछुं, सर्व पदार्थनो हुं समये समये ज्ञाता छुं, त्रण अवनमां एवा कोइ पदार्थ नथी के माराथी अजाण्यो होय, हुं प्रकाशकछं, अन्य द्रव्य प्रकाश्यके, ज्ञाता अ-शाता ए हुं जाणुंछं, पण तेथी हुं न्यारो छुं, मार्ह स्वरूप वाच्या-नाच्य वैखरी भाषाथी छे, मारा अनंता गुणोछे तो इवे मारे पर-भावमां रमणता केम करवी ? एम विचारी आत्माना गुणो तरफ

पोतानी दृष्टि दीघीछे, जेणे एवा मुनिश्ररतुं श्वरण याओं. एवा मुनिवरो आत्मध्यान ध्याता आपस्वभावमां विचरेछे, वक्कादी: ओना धर्तींगों सांभळी मौन धारण करी सद्गुरुओं विचरे छे, कुमुरुख विषधरीनी कुदेशनारुप विषड्वालायी अज्ञान सर्व मनुष्में। प्रायः मुंब्राइ गयाछे, कोइ विरला आसन्न कालमां सिक्कियदः पाः मनारा महात्मओ वा तेमना अनुयायी शिष्यो सम्यग्मार्गे गमन करेले. "दुहा."

नाटिकयानी पेठ ज्यां, धर्मतणो उपदेशः अंतर्देष्टि ज्यां नहीं, तेनो मिथ्या वेष. ४२ अहो दुःषम कलिकालमां, विरला सुभग्ररु जोयः बाकी फट्यो राफडो, सर्पतणो अवलोयः ४३ केष गच्छ ममता प्रही, वळी कदाप्रह चित्तः मतमतांतरमां पड्या, दुर्गतिनारीमित्त. ४४

भावार्थ-अंतर्देष्टिना उपयोग विना नाटकीयानी पेठे ज्यां ध-

पंचित्रप ज्यां भेगां मळ्यां छे एवा आ कलिकालमां विस्ता शुद्ध मुनियो होयछे, बाकी लौकिक अने लोकोचर कुनुरूभोनो जाणे राफदो फुट्यो होय अने सपी फाटी नीकले तेनी पेढे फाटी नीकल्यां छे.

वेषनी ममता, गच्छनी ममता वळी कोइ मकारनो मनमां कदाग्रह राखी जे साधु राग द्वेषना उद्ये मतमतांतरमां रक्त थया छता, श्रद्ध मरुपणा भूछी पोतानी पुष्टिने माटे मोहांध बनी आ-त्मस्वरूपनुं भान भूछी परभावमां राचेछे, माचेछे तेवा कुगुक्ओ दुर्गति नासीना मित्र जाणवा.

(44)

गुरुषी गुरुता.

" दहा- "

जलि भरती ओटमांही, मत्स्यो आकुल थाय; तीरे आवे प्राण नाञ्च, गच्छतणो ए न्याय. ४५ शरीरपर ममता नहीं, करे शुं तेने देह; गच्छ वस्यो व्यवहारथी, अंतर्शण गण गेह. ४६

भावार्थ-समुद्रमां ज्यारे भरती ओट आवेछे, त्यारे जरुमवा-हना जोरथा मत्स्यो आकुल व्याकुल थायछे, तेमांथी कोइ कंटा-ळीने कांठे आवेछे, भरती उतरी जातां जल विना तरफडी म-रण पामेछे, वा धीवरो तेने पकडी लेछे, अने दुःलभागी थायछे, तेम गच्छ सिंघाडामां वसतो कोइ मुनि, आबी केवल आत्मनी वात सांभळी एकाकी विचरेछे, तो ते आत्महित करी शकतो नथी, माटे गच्छमांहीं वसीने आत्मसाधन करवुं, वैरागी, त्यागी गीतार्थ ज्ञानी पोतानी योग्यताथी आत्मस्वरूपना ध्यान माटे एकल वि-हारी थाय तेनो एकांत निषेध नथी.

जे मुनिवरोने शरीरपरथी आत्मक्कानना बलवेड ममताभाव उठी गयोछे, तो ते मुनिवरोने शरीर राग द्वेषनुं कारण यतुं नथी. तो पश्चात् व्यवहारथी गच्छमा बसेला तथा वसता एवा मुनियोने गच्छ उपर केम ममता थाय. अने केम गच्छ राग द्वेषनुं कारण थाय ? अलबत थाय नहीं. गच्छ एटले साधुनो समुदाय, समूह, तेमां क्कानीने केम मोह थाय ? अने अज्ञानी तो गच्छनो स्वीकार करे नहीं, तो पण शरीरपर ममता धारण करे. ज्ञानना अभावे संवरनां कारणो पण अज्ञानीने आश्चवरुपे परिणमेछे. जेनाथी बंषायछे, तेनाथी ज्ञानी छुटेले, माटे ज्ञानी गुरु मराराजा अंतर्मांथी संसार खेलथकी न्यारा रही वर्तेछे, ज्ञानिको भोग सबी निर्जराको हेतुहै=ज्ञानी भोग कहे तो पण तेथी निर्जरा था-यछे. ज्ञानीन कोइना मतिबंध नथी, राग द्वेषतुं जे कारण छागे तेनाथी दूर रही आत्मध्यान करेछे. श्री यञ्जोविजयजी ममुख सुगुरुओ जाणवा.

कपटी मुनिनुं लक्षण कहे छे.

" दुहा. "

मनभीतरनी ओरने, वर्ते बाहिर ओर; कहेणी रहेणी सम नहीं, ए पण चऊटा चौर. ४७

मनमं कंइ अने बाहिर आचरण कंइ कहेणी ममाणे रहेणी न होय, श्रावनी आजीजी करनार होय, कपटपणाथी वर्ते ते पण चउटानो चोर जाणवो, कदापि व्रतादि पाळी शकतो होय नहीं पण मरुपणा वीतरागमार्गना अनुसारे करे ते आराधक छे, पण कपटी तो विराधक छे.

" दुइ। "

योग्य जाणतां खोलता, पेटी:धर्म विशाल; सेवा साचा दीलभी, सदग्रह महा कृपाल. ॥४८॥

इानी गुरु महाराजा योग्य जीव जाणीने धर्म रत्ननी पेटी मनोहर विश्वाल खोले छे, अने तेना आत्मानुं कल्याण करे छे, भव्योने उपदेश द्वारा मोक्ष मार्ग दर्शावे छे, अयोग्य मनुष्यनी आगल मौन धारण करे छे, जे दृष्टिरागी न होय अने विनयी होय तेनी आगल योग्यता प्रमाणे अवसरे उपदेश आपेछे, एक सरखो उपदेश मत्येक मनुष्यने परिणमतो नथी, माटे योग्यनेज उपदेश देवो, मेचनुं जल, सीप, झाड, सर्प आदिना ग्रुखमां पड्युं

1 4 6)

गुरुनी दुर्कभवा.

पतुं भिन्न भिन्न परिणमे छे तेम अत्र पण द्रष्टांत जाणबुं.

कोइ एम कहें के - मुनिओए सर्वने उपरेश आपने अने उपरेश आपना माटे तो साधुपणुं अंगीकार कर्यु छे, अने न आपे तो अन्य कोण आपे ? तेने प्रत्युत्तरमां कहेवानुं के जिम सेनापित छक्करी सिपाइने तरवार खेळतां मारतां शीखने छे, पण जेनी योग्यता थइ नथी तेनां छचु बाळकने कंइ हाथमां तरवार (खड्ग) आपतो नथी, ने आपे तो बाळकनो नाश थाय तेम ज्ञानी ग्रुह योग्यता जेने प्राप्त थइ छे तेने उपदेश आपे छे. उपदेश्यमां पण पात्रना आधारे फेरफार रहे छे, केटळाक स्थाने संसारमां राचेळा माचेळा श्रावको विरातिधर्मना भाषणरूपे उपदेश आपे छे, पण तेमनुं वैराग्य त्याग विना सर्व अळेखे जाणवुं. गुरुना उपदेशियी जे वैराग्य थाय छेते अन्ययीथतो नथी. पंचमारकमां श्री तीर्थ- करादिना अभावे तथा पंचविषना योगे योग्य जीवो अल्प जाणवा माटे हे भव्यात्माओ मोक्षनी प्राप्त माटे निर्मळ बनथी सट्गुरुनुं श्ररण करो, अने ते फरमावे तेज श्रदाथी अंगीकार करशो तो परमण्द पामशो.

"·弦钉。"

वने बने नहीं हस्तियो, खुगे खुगे नहि देव; मुंड मुंड नहि ग्रुरुपणुं, जाणी सद्युरु सेव. ४९ विषय भीख भोगी नहीं, ब्रह्मचारि ग्रुणवंत; कपट बृत्ति त्यागी सदा, नमुं सद्युरु महंत. ५०

वन वन मति हस्तियो होता नथी, अने भरत ऐरवतनो प्रत्येक आरक्षमा कह तीर्थकरोनी उत्पत्ति थती नथी, ते प्रमाणे मस्तक मुंदावी रजोइरण मुहपत्ति झाछी छीधेछा गृहस्य जेवामां सर्वमां कंड् गुरुपणुं होतुं नथी, जीव अजीवतुं स्वरूप जाणे नहीं अने दुःख-गर्भित वैराग्यथी साधुवेष ग्रहण करी राग देवना फंदमां फसाय, हसे, तोफान करे, क्षेत्र करे ते सर्व बुगुरुओजाणवा, जे महात्माओ विषयभिक्षाना भोगी नथी, ब्रह्मचारीछे, क्षमादि ग्रुणवंतछे, अने कपटवृत्तिनो जेणे त्याग कर्योछे अने जे गाडरीयानी पेठे चालता नथी तेवा सब्ग्रहने हं पुनः पुनः नगस्कार करुं , बाकी वेष धरवा मात्रथी हुं १ माटे परीक्षा करी आत्मतत्त्वना उपयोगी गुंदनुं श्वरण करबुं, एकगुरुनी आज्ञा ममाणे वर्त्तवुं, पतिव्रतानी पेठे माथे एक धर्मिद गुरु होय, एक गुरुनी मिक्त अदायी शिच्यंश्रा-वक सद्गुणधाम बनेछे, अनुभवधी जोतां एम जो न वर्तीय तो संपूर्ण धर्म पामी शकाय नहीं, कोइ गुरु कंइ कहे अने कोइ गुरू कंइ कहे, हवे बेमांथी कोनी आज्ञा मामवी, जेवो जोइए तेवो ए-कथी अधिक गुरुओपर भक्तिभाव, रहे नहीं, घणा पका अनुप्रवीभोने आ वाक्य सत्य लागरी, नहीं छागे तेंनुं भाग्य, बाकी अन्य सुसाधुओ मानवा पूजवा योग्यछे तेमनी भक्ति करकी अने सदुपदेश सांभळवो. आ वात गुरुत्रत ग्रहणनी अपेक्षाएछे.

" दुहा "

धर्मरत जेथी मुदा, लही उं एर रसाल; शरण शरण तेनुं सदा, अवर म झंलो आळ ॥५१॥ भटकी एर एर वंदीया, शिर पटक्युं सोवार; ज्यां त्यां माथुं नॉमियुं, लह्यों न किंचित् सार ॥५२॥

भावार्थ-जेनी पांसंथी धर्मरस्न समेजी समकित ग्रहण करी, हर्षवहे ते गुरुनुं सदा मन वचन अने कायाए करी शरण अंगी-

आत्मार्थि शिष्यकक्षण.

('séi)

कार करं छुं, अने भन्यात्माओ करो, अन्य आळ पंपाळ झंखो नहीं.

कुगुरुओमां गुरुनी बुद्धि धारण करी वांद्या, तेमना चरणे शतवार शिश पटक्युं अने इराया ढोरनी पेठें ज्यां त्यां माथुं घा-त्युं अने माथुं नमान्युं पण सार कंइ पाम्यो नहीं, अने ते प्रमाणे वर्तवाथी आत्महित थवानुं नथी।

यत:

अगीयथ्य कुसीलेहिं, संगं तिविहेण वोसिरे ॥ मुख्खमग्गंसिमे विग्घं, पहंमि तेणगे जहा ॥१॥

अगीतार्थ अने कुशीलियानो संग त्रिविवे नोसिरावनो, पंथमां चोरनी पेठे मोक्ष मार्गमां विद्य करनाराछे.

" gei. "

एम अनंता भव भमी, पाम्यां दुःख अपारः सद्युरु स्हेजे ओळख्या, तार तार मुज तार ॥५३॥

भावार्थ-एम अनादिकालथी कुगुरुनी संगतियोगे आत्माना अञ्चाद परिणामे, चतुर्गत्यात्मक संसारमां अनंतिवार भ्रमण करी विचित्र श्वरीर धारण करी ताडन तर्जन, क्षुषा, तृषा, रोग, शोक, वियोगादिथी अनंत दुःख लक्षुं, इवे भवितन्यतायोगे सद्गुरुने ओलख्या, जीव आनंद पामी, गुरु विश्वासथी कहें छे के हे गुरु तुं मने तार तार, तार तार ए शब्द पुनः पुनः कथनथी संसार भय साथे मुक्ति मार्गनी अति आकांक्षा जणावी, आत्मार्थी ध्यानी समकित दाता धर्मगुरुनी आज्ञा प्रमाणे वर्तश्चं.

" परपात्मांचिं सुरुभक्त शिष्योतुं कक्षण कहेछे. "

" दुहा. "

यरु विनयी भक्ति घणी, श्रद्धा ए मन स्थिरः शिवपद अर्थी साइसी, मनमां आते गंभीर ॥५४॥

ग्रहनी विनय पन बचन अने कायाथी करवामां तत्पर होय. यथाशक्ति भावथी अत्यंत भक्ति गुरुनी करनार होय, गुरुक्त तत्त्वने विषे जेनी श्रद्धा स्थिरपणे होय वा गुरुना देखीला इर्ष्यावाळा तथा तेपना मतिपक्षी क्रगुरुओ तथा कुभक्ती आहुं अवछं समजावे, गुरुना दोषो देखाडे कुयुक्तिथी गुरु महाराजे कहेलां तत्त्वनुं खंडन करे, बळी एम कहे के-एनामां शो भळीबार छे, एतो कंइ जाणतो नथी. कपटीछे, एप पोतानी मरजीमां आवे तेम बोले पण तेथी सुशिष्योनी गुरु उपरनी श्रद्धा जरा पात्र पण कभी थाय नहिं, चल्रं सुवर्णने जेम जम गाळीए तेम तेम दिप्तिमंत थाय तेम गुरु भक्त शिष्योनी श्रदा उछटी वधती जाय, अने गुरुओनी संगतिथी श्रद्धा उठे तो पीतळ समान भक्तो जाणवा, एवा भक्तो ४ चार गतिमां भटक्या. भटकेछे, अने भटकशे, श्रद्धा वे पकारनी छे, हळदरना रंग समान अने अन्य मजीठ समान, हळहर समान श्रद्धानो कारण पाम्याथी नाज थायछे, माटे गुरु उपर मजीठना रंग समान श्रद्धा थवी जोइए वळी श्रद्धाना वे भेदछे. १ प्रशस्य अद्धा, अने २. अपशस्य अद्धा ते प्रत्येकना पण वे भेद छे, इस्टर्स रंग समान, मजीठ रंग समान, बळी छौकिक ग्रुरु अने छोको तर ग्रहनी श्रद्धा जाणवी.

वळी श्रद्धा वे प्रकारनी छे, व्यवहार नय ग्रुरु श्रद्धा,-व्यव-हार नयथी गुरु अनेक प्रकारनाछे, पापनी विद्या शिखवे ते पाप

(१०) योंग्य अने अयोग्य अस्तोनुं सक्षण.

गुरु, आजीविकानी विद्या शिखने ते आजीविका गुरु, पण ए गु-हुआं व्यवहारथी छे, धर्मनुं स्वरूप समजाने ते व्यवहारथी शुद्ध गुरु जाणना, अस्ति नास्ति भेदोन्दे करी आत्मानुं स्वरूप सम-जाननार धर्मगुरु समान अन्य कोई गुरु नथी. बीजा गुरुओने तो अनंतिनार जीन पाम्यो, पण तथी आत्महित थयुं नहीं, अने समिकित मगटयुं नहीं, पण धर्मगुरुयोगे समिकितनी श्रद्धा थई, माटे श्रमगुरु समान कोई गुरु नथी, व्यवहारनयथी सत्यमग्रस्य धर्म-गुरु श्रद्धा जाणनी. आदरना छायक छे. निश्चय नयथी पोतानो आत्मा गुरु जाणनो, गुरुनी श्रद्धा भक्तिमां खामी तेटलीज धर्ममां खामी समजनी.

मोक्ष जिज्ञासु अने ते माटे उद्यम करनार शिष्य होय, धर्म-कार्यमां साहासिक विक्रमराजानी पेटे होय, बीकण ना होय तमज़ कोइथी दबाय नहीं, कोइना तेजमां अंजाइ जाय नहीं. बळी मनमां अति गंभीर होय, एउछे गुरुए कहेळ वातो हित वचनो पोताना मनमां राखे अने गुरुना दोष अन्य आगळ बोळे नहीं, गुरुनो बिश्वासी होय, श्रद्धा अने विश्वास ए वे मोटा गुणळे, गाडरीया मवाहथी गुरुनाम धरावनाराओं क्ळाचारमां आसक्त जीवो गुरुनी गुरुता जाणी शकता नथी। एवं शिष्यनुं ळक्षण कहां.

युरुभक्त शिष्योतुं छक्षण.

" दुहा. "

वैराग्ये मन वाळीयुं, वार्या विषय कषायः धीरज जस सुरगिरिसमी, वश जश मन वन काय५५

भावार्थ-संसारनी अनित्यता भावी पन जेतुं वैराग्यरंगमां भड़्यंडे. अने जेणे विषय कषायने यथाशक्तिए वार्याछे अर्थात्

बिह्नय कवायनी परिणित जेनी मंद थहुछ, आत्मामां रहेल धर्ममां खेल मन वळ्युंछे, बाकी सांसारिक कार्यमां जेनुं चित्त लागतुं नथी, अने सांसारिक कार्य करेछे तोपण ते थकी न्यारो रही छुखा परिणामे करेछे, मेरुपर्वत सम जेने धेर्यता प्रगट थहुछे, देव-वार्या पण डगायो दगे नहीं, एवे। धेर्यवंत होय, मन वचन अने कायाना योग जेना वशवति थयाछे, एवा गुरुभक्तशिष्यो भवनो पार पामशे

" दुहा. "

समता चित्त अंगी करी, अदेखाइनो नाश; करता ग्रुरु भक्तो सदा, पामे शिवपुर वास ॥५६॥ ग्रुरु आज्ञाए चालतो, करे न आज्ञालोप; शिक्षा ग्रुरु देतां सदा, कदी करे निह कोप ॥५७॥ ग्रुरु सेवामां रत सदा, ग्रुरु ग्रुरु भक्ताश; ग्रुरु अवगुण दाखे नहीं, ते ग्रुरु भक्तो खास ॥५८॥

भावार्थ-ने शिष्योए समता पोताना मनमां अंगीकार करीछे, छोभादिक अवगुणोनी भंदता थइछे, अने अदेखाइनी नाग्न जेणे कर्योछे, गुणिनी अभिदृद्धियो जेना मनमां इर्ष्या थती नथी, अथवा गुहमहाराज कोइ शिष्य उपर विशेष प्रीति राखे पण तथी अन्य शिष्यनी अदेखाइ करे नहीं, गुहमहाराजना जेटछा भक्तो होय तेटछा उपर पोताना प्राण पाथरे, एवा गुह भक्तो आ तोफानी दुनियामां रह्या छता पण अंतरंगथी न्यारा रह्या छता गुहनी भक्ति द्वारा ज्ञान पामी अनंत सुखसमय सिद्धि सौथ पामे. मुमुस्नु शिष्य गुह आज्ञामां धर्म मानतो गुहनी मरजी प्रमाणे चाछे, मन, वच्छ

आस्मार्थि शिष्यकश्रण.

(53)

अने कायाने गुरुनी आज्ञा मरजी अनुसार पवर्तावे, कदी गुरुनी आज्ञानो छोप करे नहीं, विपरीत मार्गमां अज्ञान, प्रमाद, मति-भ्रमथी चाळतां ग्ररु भक्तोने ग्ररु महाराज शीखामण आपतां क्रोध थाय नहीं, गुरु प्रत्यक्ष होय वा परोक्ष होय तो पण देवनी पेठे तेनुं सदा ध्यान करे, परोपकारनी स्मृति लावे. अने गुरुनी भ-क्तिमां शिष्य सदा आसक्त रहे, अने गुरुना गुणोनो सर्वनी आ-गळ प्रकाश करे, कोइ गुरुनी निंदा सांभळवाना करतां पृथ्वीमां पेसी जबुं सारुं, कोड एम कहेशे के ग्ररुमां दोषो होय तो केम गुरुने मानवा ? अत्र समजवातु के अन्यना कहेवाथी दोषोनी शंका काववी नहीं, दोषो होय तो पण ढांकवा, उपकारीना उपकारतुं छक्षण ए छे के कोड़ कर्म उदयनी प्रबळताथी गुरू अवळा मार्गे चाछे तो गुरुभक्त बुद्धियुक्तिपयत्नथी ठेकाणे छावे. पण पाण जतां तेमनी अन्यना आगळ निंदा करे नहीं, निंदा करवाथी कंड फायदो थतो नथी माटे परोपकारहाशिष्य, गुरुना अवगुण प्रकाशे नहीं, गुरुद्रोही गुरुनिंदक कुशिष्यने आत्मज्ञान सबद्धं परिणमतुं नथी. अरिइंतनी स्त्रतिथी जेटलो लामले. तेटलो गुरुनी स्त्रतिथी काभ जाणनो. दीक्षादायक पण धर्मगुरु होयछे, उपर कहेलां छक्षणो जेनामां होय तेने गुरुभक्तो जाणवा, यवा गुरुभक्तो संसार समुद्रनो पार पामी श्रकेछे, सत्य असत्य धर्मनी परीक्षा करनार पण शिष्य होवा जोडए. तेम देवनं छक्षण पण जाणनार अने क्कदेवने परिहरनार शिष्य होवा जोइए, अन्यथा कुगुरुमां गुरुनी बुद्धि धारण करी भवपाञ्चमां सपडाय माटे शिष्य सुगुरुना परीक्षक होय ते मुक्तिपद पामे.

'' दुहा_• ''

विधिए सदगुरु वंदता, निंदे अवग्रण नीजः

क्षणे क्षणे गुरु देखतां, राखे मनमां रीज ॥५९॥ अनुभव पिचशी कह्यो, विनय तणो अधिकार;

गुरुभक्तो विधि पूर्वक त्रिकाल सद्गुरु वंदन करे, अने पोन् तानामां रहेला दोषो गुरु आगळ निंदे, के जेथी ते दोषोनो झाटीत नाज्ञ यह ज्ञके. जेटलीवार गुरुने देखे तेटलीवार मनमां आनंद पामे.

विनयनो विशेष अधिकार अस्मदीयकृतअनुभवपंचविंशति नामक ग्रंथमां कह्यो छे.

ते रीते जे चालहो, ते लेहो भवपार ॥ ६० ॥

ते कम मनाणे जे चाळशे ते भन्यात्मा संसार समुद्रनो पार पामश्चे, अमुक मार्च कल्याण करशे के अमुक पृत्रुं जेतुं अस्थिर चित्तं छे, ते गुरुनो विश्वास पात्र यतो नथी.

" दोहा. "

रमणिक रामा देखतां, त्रेमी मनमां प्यार; तेह्यी अधिको सद्गुरु, शिष्य तणो निर्धारं ॥६१ ॥

शोळ शणगारे अलंकत नवयौवना सुंदर अंगवाळी स्नी उपर सरुण प्रेमी पुरुषनो जेटलो राग होयले, ते थकी अधिक सद्गुरु उपर प्यार शिष्यनो होय तो शिष्यनुं कल्याण थाय. अने गुरु भक्तोनुं कल्याण थाय, अन्यथा आत्मिहित थवुं सुरुकेलले, आ रहस्य अनुभवधी अवबोधना योग्यले, मूर्कात्माओने माटे आ लखाण नथी, दुःखाब्धिभवनो नाश करवाने जे तत्पर थयाले, अने जेमने तत्त्व रहस्य प्राप्त करवुंके तेने माटे आ लखाणले. वं-चक, अस्थिरिचित्तवाळा प्रयंची, कृतगुणने नहीं जाणनारने सद्गुरु तत्त्वरहस्य बतावता नथी. रासभने शकरा अवगुणकारीले, सपने दुग्धपानसद्दश अयोग्यने तत्त्वोपदेशक्चे, योग्य अने अयोग्यनी प-रीक्षा करवी गुरुमहाराजना हस्तमांछे, विडालना उदरमां खीर टकती नथी तद्वत् अयोग्यना हृदयेधमतत्त्व टकतुं न**ी. अविनयीने** गुप्तधर्मतत्त्वरहस्य आपदुं आत्महितकर यतुं नथी.

संप्रति काले धर्मतत्त्वनो उपदेश शाक भाजीपालानी पेठे योग्य अयोग्यनी परीक्षारहीत दृष्टिगोचर थायछे, तेथी वाक्कलेश वा अल्पफलनी प्राप्ति थायछे, खेडुत पण भूमीनी परीक्षा करी वाववा योग्य धान्यकाले आवेछे, तो धर्मरूप बीज योग्यायोग्यनी परीक्षा कर्या विना कालविना कोइपण मनुष्यना दृदयमां रोपंतुं, ते अनुचित्त, चिंतनीयछे. जगत्मां मनावा पूजावानी लालचे जग-त्ना प्रवाहमां पढेला गुरुनाम धरावनाराओ गमे तेम उपदेशआपी भोळा जीवोने फसावी पोताना वशमां करी लेइ राचेछे, माचेछे, त पोतानुं तथा अन्यनुं यथायोग्य भर्लुं करी शकता नथी. सद्गुरु स्वतंत्रछे, योग्य होय तेहने उपदेश आपे, अन्यथा मौन रहेछे.

कुयुक्ति करनारा अने पोतानी पंडिताइ जणावनारने सद्गुरु अंतकरणथी उपदेश आपता नथी, तेमज ग्रहना वचन उपर वि-श्वास नथी तेनी साथे ग्रहजी माथाक्रूट करता नथी. पत्थर उपर कमल उमे तो अविश्वासीने ग्रहनो उपदेश लागे. ग्रहना उपदेशथी वच्चमां पोतानु डहापण चलावनार ग्रहभक्त कही शकाय नहीं, हालना कालमां ग्रहभक्त थवुं ग्रुव्केल्लेले, केटलाक पत्थर समान कुगुहओले, पोते संसार सग्रद्रमां बूडे अने स्वआश्रितोने बुडाडे, संसार सग्रद्र तरवामां केटलाक पांदडा समान ग्रहओले, अने केटलाक वहाण समान ले, एमजाणी सद्गुहतुं अवलंबन करवुं ए परमार्थ ले.

परमास्मदर्भन.

(44)

" दुहा "

समिकतदायक सद्युरु, तेन्नं निहं मन भानः परोपकारी बुद्धि वण, ते भटके अज्ञान. ॥ ६२॥

समिकत दायक सद्गुरुना उपकारनुं जेने भान नथी ते पर् रोपकृतिथी अजाण सम्यकत्वनो सार फल पामी शके नहीं, उप-कार बुद्धिनी विकलताए गुरुना विनयना अभावे राखमां घी होम्या जेवुं थाय ते संसार समुद्रनो पार पामी शके नहीं.

" दुहा. "

समिकतदायक यरु अने, दीक्षा यरुमां भेदः अंतर रिव खजुआ समो, खिशिष्य मनमां वेद. ६३ दीक्षा दायक महामुनि, धर्मयरु जग जोयः समजे समज सानमां, करो न संशय कीय ६४

भावार्थ-सम्यक्त्व दायक धर्भगुरु अने दीक्षा गुरुमां घणो भेद छे क्यां, रिव अने क्यां खद्योत एटलो अंतर हे सुशिष्य मनमां जाण. दीक्षा पदायक गुरु बाहुलताथी धर्मगुरु होइ शके छे. कारण के-धमप्राप्ति जेनाथी थइ होय ते दीक्षा आपे तो ते होइ शके छे, समजु सानमां समजशे शंसयनुं कंइ प्रयोजन नथी. धर्मगुरुनो उपकार कोइ पण रीत्ये वले तेम नथी.

" दुहा. ^{''}

एवा ग्रुरुने सेविए, थइए सद्ग्रण धामः ग्रण धारी शिष्यो लहे, शिवपुरनो विश्राम. ६५ सद्ग्रणधाम भूत ग्रुरुपद्पंकज सेवतां अनेक ग्रणधाम भूत

(६६) गुरुमी गुरुता.

शिष्यो थाय, अने गुगधारी शिष्यो शिवपुरतो विश्राम छइ शके छे, सद्गुणी थनारने प्रथम गुरुती आवश्यकताछे, दुष्पंथथी सुपंथे लावनार गुरुमहाराज्ञ होने गुरु नथी ते पोते गुरु थइ शकतो नथी.

" दुझा. "

सहस्र सूर्योदय हुवे, चंद्र उगे शतवारः दीपक करो हजार पण, अंध न जुवे लगार. ६६ ज्ञानी सद्युरु जो मले, अतिशय दे उपदेशः मूरुषने लागे नहीं, उलटो थावे क्केश. ६७

भावार्थ-सहस्रगमे सुर्यो प्रकाशे, हजारवार चंद्रनो उदय थाय, हजार दीपक सळगावो, पण जे अंधपुरुषछे ते जरा मात्र पण देखी शकतो नथी. तेम मूर्खात्मा मोहांध जडपुरुषने झानी सट्गुरु मळे अने अतिशय उपदेश आपे तोपण मगशैलीया पाषाणनी पेठे जरा मात्र असर थती नथी. उलटो मूर्खने क्रेश थायछे, अने सद्गुरुने पण वाक्क्रेश अवशेष फल जाणवुं.

" दुइा. "

जडताए जड थइ रहे, ग्रहमां क्रग्रह बुद्धिः रासभपुच्छ ग्रही इव, करे न आतम शुद्धि. ६८ सद्यहनो विश्वास नहि, क्रग्रहनो विश्वासः अज्ञानी पश्च आतमा, सर्व दुःखनो वास. ६९

भावार्थ-आत्मस्वरूपनी अज्ञानताए जड जेवो यइ जइ दृष्टि-रागयी तथा मोहांधपणाथी गुरूस्वरूप समज्या विना कुलनी म-र्यादाए गुरूपणु मानतो अज्ञानी जीव गुरुमां अगुरूपणुं मानेछे, अने अवळी परिणितयोगे कुगुरुमां गुरु बुद्धि धारण करेछे, ते पोनतानी कुटेबने गद्धापुच्छ प्रहनारनी इव भवश्रमण दुःख राशि पामतां सदगुरुनो उन्देश लागतां पग पोतानी हट मुकतो नथी. तेवो अज्ञानी जीव पोताना आत्मानी शुद्धि करी शकतो नथी. जेने सद्गुरुनो विश्वास नथी अने कुगुरुना वचननो विश्वासछे, ते अज्ञानी पशु आतमा सर्व दुःखनुं पात्र बनेछे, अवळी परिणितियोगे अवळा मार्गे भवितव्यतायोगे गमन करेछे. तेवा जीवने योग्यतानी माप्ति विना उपदेश पण छेशभूत थायछे, राजा, दीवान, शेट, लक्षाधिपति होय पण योग्यता विना सद्गुरुनो उपदेश असर करतो नथी.

" दुहा. ^{''}

तर्कशक्ति जेनी घणी, वाणी जस गंभीरः मोक्षाशा मनमां वशी, धर्मकार्यमां धीरः ७० एवा शिष्यो पामशे, अनेकान्त सुपंथः गुरुगम ग्रंथो वांचीने, थाशे महानिग्रंथ. ७१

भावार्थ-जेनी तर्कशक्ति घणी होय, अने वाणी गंभीर होय, खप पडे तेटलुं बोले, मोक्षाशा जेना मनमां वशी होय. अने धर्म कृत्यमां मेरवत् अडगद्वित्त होय, गुरुनां वचनो वज्रना टांक-णानी पेठेज जेम जेना हृदयमां कोतरातां होय, एवा सद्गुगी शिष्यो स्याद्वाद अनेकांत मार्ग पामशे. अने रवच्छंदाचारीपणुं तथा अहंपणुं त्यागीने गुरुगम ग्रंथोने वांची धारी श्रावकपणुं अंगीकार करशे. अथवा शक्ति परिणामयोगे निग्रंथ अवस्था ग्रहण करशे, योग्यता पोतानी केटलीले अने कया ग्रंथो वांचना योग्यले. ते गुरुमहारान जाणेले माटे तेमना फरमानेला ग्रंथो वांचना

(90)

गुहनी गुहता

एवीं हिताकांक्षा धारवी.

" दुहा_• "

सदा महानिष्रथथइ, पाळे पंचाचारः पंचमहात्रत पाळता. शुद्ध धरे व्यवहार. ७२ निश्चय आत्मस्वरुपमां, रमता रहे निशदीनः गुणपर्याय विचारने, करवामां लयलीन. ७३

भावार्थ-द्रव्यथी धन धान्यादि नविषय परिग्रह त्यागी भा-वयी राग देषनो त्याग करी निर्ममत्त्वपणे वायुवत् अमितबद्ध-पणे सदा विचरे, व्यवहारथी पंचमहात्रत. अने ज्ञानाचार, दर्शना-चार, चारित्राचार, तपः आचार अने वीर्याचारने पाळे, आदरे, निश्चयनयथी पोताना आत्मस्वरूपमां निश्चदिन मुनिवर रमे हवे प्रसंगतः मथम षड्द्रव्यन्नं स्वरूप वतावेळे.

१ धर्मास्तिकाय द्रव्य-चलण सहावो धरमो,=चालताने सहाय आपवानो गुण धर्मास्तिकायनो छे, ते अजीवद्रव्य छे, अरुपी, अचेतन, अक्रिय, चलनसाह्यगुण तेनो जाणवो. माछलुं पाणीमां तरे छे तेनो ए स्वभावछे, पण पाणी तेने साह्यकारक छे. धर्मास्तिकायना असंख्याता प्रदेशो छे, प्रत्येक प्रदेशमां उत्पातव्यय थया करे छे, द्रव्य स्वरूपथी ध्रुवपणुं असंख्याता प्रदेशोमां अनादि अनंतमे भागे छे. अगुरु लघुथी प्रत्येक प्रदेशमां षड्गुण हानि दृद्धि थया करे छे. धर्मास्तिकायद्रव्य अन्यद्रव्यमां परिणमतुं नथी. अने अन्य द्रव्यना गुणोनुं घातक नथी, केवल ज्ञानव डे धर्मास्तिकाय द्रव्य देखी शकाय छे. अन्य जीवोने केवलीना वचननी श्रद्धा गम्य छे, धर्मास्तिकायना को इपण प्रदेशनो नाश थतो नथी, एक ठेका- जिथी अन्य स्थाने तेना प्रदेशो जता नथी, लोकाकाशमां व्यापीने

परमात्मदर्शन.

(49)

रहेळे, धर्मास्तिकायने कोइ उत्पन्न करनार नथी, के अक्रुमाँ यूळमां ज्यां त्यां धर्मास्तिकाय व्यापी रह्यंछे, तेनामे वर्णगेध रस अने स्पर्श नथी. समये समये अनंता जीवोने तथा अनंत पुदगलमय परमाणुओने गमनमां साहाय्य आपेले. पदेशे पदेशे अ-नंता गण अने अनंता पर्यायछे. पोताना स्वरूपे धर्मास्तिकाय अस्तिरूपेछे. अने परस्वरूपे नास्तिछे. प्रदेशे प्रदेशे अनंत स्वगुणनी अस्तिता समये समये परिणमी रही छे, तेमन धर्मास्तिकायना प्र-त्येक प्रदेशे अनंत परइव्या परक्षेत्र, परकाल, अने परमावनी ना-स्तिता परिणमीले. तेमज महेशे महेशे अनंत पर्यायनी समये समये अस्तिता जाणवी. तेमज धर्मास्तिकायना असंख्यात मदेशमांसमये समये परद्रव्यना अनंत पर्यायनी नास्त्रिता परिणमी रही छे, जे समयमां अनंत निजगुणनी अस्तिता तेज समयमां अनंत परगुणनी नास्तिता जाणवी. जो धर्मास्तिकायमां परद्रव्य, गुणपर्यायनी ना-क्तिता न रहे तो अन्य द्रव्यरूपे धर्मास्तिकाय परि गमे अने द्रव्य द्रव्यनो भेद रही शके नहीं, माटे स्वगुण स्वग्रव्यनी अस्तिताना समयमां परद्रव्यनी नास्तिता मानवाथी मत्येक द्रव्य पोताना स्वरू । परिणमे, अस्तिपणुं धर्मास्तिकायमां रह्यं के, ते पग अवक्त-व्यक्ते, अने अनंत नास्तिपणुं रह्यं हे, ते पण अवक्तव्य हे, एक शब्दनो उज्ञार करतां असंख्याता समय व्यतीत थायछे, तो एक समयमां स्थित अस्तिता अने नास्तितानं कथन अशक्यके, ज्ञानबंदे जाणी वैखरी भाषाथी तेत्रं स्वरूप कही शक्षातुं नथी, थोडुं कही शकाय छे, जेटलुं जाणवामां आवे तेटलुं वैखरी वाणीथी कही शकातुं नथी. माटे वक्तव्यावक्रव्यपणुं तेमां जाणबुं. इत्यादि विचारतां सप्त भंगी उत्पन्न थायछे, बळी धर्मास्तिकाय छे ते द्रव्यपणे नित्यछे,

(७०) श्रीयुरु षड्द्रव्यनुं ध्यान धरे छे.

अने उत्पाद, व्ययनी अपेक्षाए अनित्य छे, द्रव्यार्थिक नयनी अ-पेक्षाए धर्मास्तिकाय शाश्वतछे, अने पर्यायास्तिकनयनी अपेक्षाए धर्मीस्तिकाय अशाश्वतछे, धर्मास्तिकाय श्रेयछे, पण तेनामां ज्ञाता-पणुं नथी, जड छे माटे.

२ अधर्मास्तिकाय-स्थिर रहेवामां साहत्य्यदायक ग्रुण अधर्मा-स्तिकायनो छे, मनुष्य मार्गमां चालतां थाके छे, त्यारे झाड जेम तेन बेसवामां सहाय्यकारक छे. तेम अधर्मास्तिकार्यनी साहाय्यथी जीव पुद्गल स्थिर थाय हे, ए द्रव्यना चारगुण छे, अमूर्त, वर्ण, गंध, रस, स्पर्श थकी रहित, जीवत्वथी रहीत माटे अचेतन, वि-भाविक क्रिया रहित माटे अक्रिय, निश्चयनयनी अपेक्षाएतो स-क्रिय छे, स्थिर पदार्थने साहाय्य करे छे, माटे स्थिर साहाय्यगुण अधर्मास्कािय असंख्यात प्रदेशमयी छे. लोकाकाशमां व्यापीने रहां छे, अनादि कालथी छे, माटे तेनो उत्पन्न कर्ता कोइ नथी, कोइ पण काले तेनो अंत नथी, माटे अनंत छे, अवर्मास्तिकायना पत्येक परेशमां अग्रह लघुथी समये समये पहुगुण हानि दृद्धि परिणमी रही छे, अधर्मास्तिकाय चर्म चक्षुथी देखी शकातुं नथी. अधर्मास्तिक।यना चार गुण छे, रुप रहित माटे अमूर्त, अचेतन एटले जीव रहीत, अक्रिय एटले विभाविक क्रिया रहीत, अने स्थिर सहायगुण ए चारगुण अनादि अनंतमे भांगे अवर्मास्तिका यमांछे, समये समये अनंत जीवोने तथा पुर्गलोने स्थिति सहाय आपे छे, एकेक प्रदेश अनंता गुण पर्याय रह्या छे. अधनास्तिका-यद्रव्यमां रागुण पर्यायनी आस्तिताछे, परगुण पर्यायनी नास्तिता छे. द्रव्यत्वनी अवेक्षाए दरेक अधर्मास्तिकायना प्रदेशो एक सम्खा छे, कारण के दरेके पदेशमां द्रव्यत्वपशुं रह्युं छे, किंतु अगुरुछघुथी थतीषड्गुगहानिवृद्धि प्रदेश प्रदेश प्रति भिन्न भिन्न परिण्मी

परमाध्मदर्घन.

(00)

रही छे. ते अधर्मास्तिकायना पदेशमां अनंतगुणनी हानी छे, त्य। अनंत गुणहानी मटीने असंख्यात गुणहानि थाय छे, संख्यात गुणहानि होयछे, त्यां अनंतगुण हानि थायछे, एम असंख्याता **भदेशोमां ष**ङ्गुण हानिद्वद्धि समये समये भिन्न भिन्न परिणमवाथी सर्व प्रदेशो अपेक्षाए एक सरखा नथी, एक स्थानथी बीजे ठे-काणे प्रदेशो गमन करता नथी. माटे प्रदेशो अचल छे, वली प्रदे-शना कडका थता नथी, माटे अखंडछे. अधर्मीस्तिकायमां जाण-वानो ग्रुण नथी माटे जडछे, पोताना स्वरूपे अधर्मास्तिकायमां अनंत शक्तिछे, तेनी केवली भगवान्ना वचनथी श्रद्धा करवी. आ द्रव्य लोकाकाश्यमां व्यापक छतां कोइ द्रव्यना गुणनुं घातक नथी। अने ते अन्य द्रव्यमां परिणमतुं नथी, पोताना स्वभावनो त्याग करतुं नथी. अधर्मास्तिकायने पुण्य पाप छागी शकतुं नथी, पर-द्रुव्यनी साथे परिणम स्वभाववाळा जीवद्रव्यने पुण्य पाप लागी शकेछे. अधर्मास्तिकाय द्रव्य जाणी शकायछे, माटे अधर्मास्तिकाय मकाश्यछे, अने ज्ञान मकाशक छे, अधर्मास्तिकाय ज्ञेयछे, अने जीव ज्ञाताछे, द्रव्यार्थिक नयापेक्षया अधर्मास्तिकाय ज्ञाश्वत छे. पर्यायार्थिक नयापेक्षया अधर्मास्तिकाय अज्ञान्त्रत छे, अन्य द्रव्य साथे परिणमतुं नथी. माटे अधर्मास्तिकाय अपरिणामीछे, अधर्मा-स्तिकाय द्रव्यरूपे नित्य छे. अने पर्यायरूपे अनित्य छे, अनंत अस्तित्व धर्मथी युक्त अधर्मास्तिकायछे. आ द्रव्य जाणवा योग्यछे, अने ते आदरवा योग्य नथी फक्त ते द्रव्यतुं स्वरूप ज्ञानदृष्टिथी जणायछे, आत्मानी साथे तेने कंइ संबंध नथी. एकेक पदेशे अनंत धर्म अनंतगुण अनंतपर्यायनी अस्तिता छे, अने अधर्मास्तिकायना एकेक मदेवमां परद्रव्यना अनंतधर्म अनंतग्रुण अने अनंतपयार्थनी नास्तिता व्यापी रहीछे, पत्येक पदेशमां रहेला धर्मनी अस्तिता

(७२) भी गुरु वस्त्रवनु ध्याम धरेखे.

तथा परधर्मनी नास्तितानी अपेक्षाए सप्तभंगी उत्पन्न थायछे, जेम जेम सम्यग् ज्ञान थतुं जायछे, तेम तेम उपयोगनी एकाग्रताए वि-शेष ज्ञान थतुं जायछे.

३ आकाशास्तिकाय-अधर्मास्तिकायादिकने अवगाहना आ-प्वानो स्वभाव आकाशनोछे, आकाशना वे भेदछे, १ लोकाकाश अने २ अलोकाकाश, जेमां छ द्रव्यनी स्थीति छे, ते लोकाकाश जाणवुं, जेमां आकाश सिवाय अन्य पदार्थनी स्थीति नथी तेने अलोकाकाश कहेछे. तेना चार गुण छे, अरूपी एटले रूपाहीत, आकाशनुं काळुं, पीलुं, घोळुं, नीलुं, श्वेतआदि रूप नथी.

प्रश्न-आकाशतुं चक्षुथी जोतां काळं रूप देखायछे, अने तमे केम ना कहोछो ?

उत्तर—आकाश साम्रं देखतां जे कालीमा देखाय छे ते कंइ आ-काशनी कालीमा नथी. किंतु पुद्गलद्रव्यनी कालीमाछे, माटे आकाशनुं रूप नथी.

पश्च-निर्भेळ जलथी परिपूर्ण स्थिर सरोवरमां आकाशनुं पतिर्विव पडेछे, देखो, सरोवर माटे आकाशनुं रूप मानवुं जोइए.

उत्तर-विशेष सूक्ष्मबुद्धिद्वारा परीक्षा करतां अववीधाशे के आकाशनुं प्रतिविंव सरोवरमां पडतुं नथी, अने सरोवरमां जेनुं प्रतिविंव पडेछे ते पुर्गलद्रव्यछे, तेमां जोतां मालुम पडेछे के-वाइळां विगेरेनुं प्रतिविंव सरोवरमां देखायछे, साकारनुं प्रतिविंव पडेछे, निराकारनुं प्रतिविंव पडतुं नथी, छ द्रव्यमां एक पुर्गल द्रव्य साकारछे, बाकीनां पांच द्रव्य निराकारछे, साकारछे, साकारनुं साकारने विषेज प्रतिविंव पडेछे, आकाश निराकारछे माटे तेनुं प्रतिविंव पडी शकतुं नथी.

प्रश्न-आत्माने विषे अन्य द्रव्य भासेछे, त्यारे आत्मामां अन्य द्रव्यन्नं प्रतिबिंव पड्या विना केम भासे ?

उत्तर–दर्पणमां मुखनुं प्रतिबिंब जेम भासेछे, तेम आत्मामां अन्य पदार्थीनां प्रतिबिंब पहतां नथी, ज्ञान गुण पोतानी शक्तिथी सर्व पदार्थीने जाणेछे, तेथी सर्व पदार्थीनां प्रतिबिंब आत्मा-मां पहतां नथी. ए उपस्यी सिद्ध थायछे के-आकाश अरुपी छे, अचेतन एटले जीवरहित, विभाविक कियारहीत आकाश जाणवं. केटलाक मतवादी एम मानेले के-आकाशथी जलनी उत्पत्ति थइ पण ते मंतव्य नथी. कारण के-आकाश निराकार अक्रियछे अने तेनाथी कोइ पण पदार्थनी उत्पत्ति यती नथी, जळादिक साकारछे, अने आकाश निराकारछे, माटे निरा-कारथी साकार वस्तुनी उत्पत्ति थइ शके नहीं, वळी आकाश अनादि कालनुं छे, अने कदी तेनी अंत आववानी नथी माटे अनंत छे. माटे आकाश्वनो बनाबनार कोइ नथी. बळी आकाशनो उत्पन्न करनार कोइ होवो जोइए, एम कोइ कहे तो विकल्प के-आकाशरूप कार्यनुं उपादान कारण कोण ? अने निमित्त कारण कोण ? प्रथम पक्ष-आकाशनं उपादान कारण इश्वर जो कहेशी तो ते संभवतो नथी, कारण के इश्वर ज्ञानवान् छे, अने आकाश जडछे, इश्वरनी ज्ञान गुण आकाशरूप कार्यमां आववी जोइए, पण तेम नथी, माटे इश्वर आकाशनं उपादान कारण कहेवाय नहीं, अलबत आ-काशनुं उपादान कारण कोइ नथी। जेने उपादान कारण नथी तेने निमित्त कारण पण नथी इश्वर आकाशन्नं निमित्त कारण नथी. आकाश अनादि कालथी स्वयंसिद्ध छे, आ-काञ्चमां अवगादना ग्रुणछे, तेथी अन्य द्रव्योने रहेवा माटे

(**)

षड्ववंय स्वरूप.

अवकाश आपेछे. आकाशना एकेक प्रदेशे अनंता धर्म, अ-नंता पर्याय रहा छे. आकाश द्रव्यना प्रत्येक प्रदेशी द्रव्यत्व पणायी एक सरलाछे, अने प्रत्येक प्रदेशमां अगुरु छप्रयी पहुगुण हानि वृद्धि समये समये थइ रही छे तेनी अपेक्षाए एक सरखा नथी। आकाशमां स्वद्रव्य स्वक्षेत्र, स्वकाल, अने स्वभावनी अपेक्षाए अस्तिपणुं छे. अने परद्रव्य, परक्षेत्र, परकाळ अने परभावनी अपेक्षाए नास्तिपणुं छे. आकाशमां परद्रव्यनी जे नाहितता ते पण अहितपणे छे. परद्रव्यनी ना-स्तिता अस्तिपणे आकाशद्रव्यमां न रहे तो अन्यद्रव्यनी अस्तितानो नाश थाय अने अन्यद्रव्य कहेवाय नहीं, जे स-मयमां स्वद्रव्यादिकनी अस्तिता छे तेज समयमां परद्रव्यादि-कनी नास्तिता छे. अस्तिता अने नास्तिता वैखरी वाणीयी कही शकाय सर्वथा माटे अवक्तव्य छे. इत्यादि विचारतां सप्तभंगी उत्पन्न थायछे. आकाश्चमां जाणवानी स्वभाव नथी. माटे जडछे. वळी तेना प्रदेशना कडका थता नथी माटे अ-खंडछे, ज्ञानगुणे जणायछे माटे ब्रेयछे, छोकाछोक न्या-पी आकाशद्रव्य छे. जलमां थलमां ज्यां त्यां अवपी-पणे आकाशद्रव्य व्यापीने रहुंछे, आत्मग्रुणीतं घातक आ-काश्वद्रव्य नथी. अने ते अन्य द्रव्यर्भा संयोगपणे परि-णमतं नथी. अन्य द्रव्यो तेनामां रहेक्के. माटे अन्य द्रव्य आ-धेय छे. आकाश द्रव्य आधार छे. आकाशद्रव्यना स्कंध, देश, प्रदेश, केवलज्ञानथी जाणी शकायले, आत्माना एक प्रदेशमां ज्ञाननी एवी शक्ति छे के-आकाशद्रव्यना अनंता गुण-अनंता पर्याय, अनंत धर्म एक समयमां जाणी श्रकेछे. ४ पुर्वकास्तिकाय-वर्ण, गैध, रस अने स्पर्श यकी युक्त पु-

र्गक्रद्रव्यक्ते, तेना चारगुणके मुर्च अचेतन जीवपणायकी ष्टके मळवा विखाव।रूप प्रद्गरूपरमाणु अनंतछे. परमाणु बाळयो बळे भेदाय नहीं, परमाणु दर्शन चक्षु अगोचर जाणवं. द्विपरमाणुं संयोगी स्कंधने द्विपदेशी स्कंध कहेछे. अनंत परमाणुं संयोगी स्कंध इष्टिगोचर थायछे, ते व्यवहार परमाणु कहेवायछे. ानिश्चयनये तो स्कं धक्यायछे. एक परमालुनां एक वर्ण एक गंग एक रस अने बे म्पर्भ रह्याछे, परमाणुयी बनेला केटलाक स्कंघो चक्षुयी देखाय पण हाथमां पकदाय नहीं, केटलाक स्कंथोनो स्पर्श ग्रहाय किंद्र चक्षुयी देखाय नहीं जेम वायु. केटलाकनो गंधग्रहाय पण चक्कुग्राह थइ शकतां नथी जेम कस्तुरीना पुरुगळ स्कंशो विगेरे. एम विचित्र स्वभावयुक्त पुद्गलस्कंधो थायछे. अने विचित्र पदार्थ बनेछे. प-भात् विलरी जायछे. यावन्त पदार्थी चर्मचक्षुथी ब्राह्मछे ते सर्व पुर्गळ छे. केटलाक पुर्गल स्कंबो चर्मचक्षुयी पण अग्राह्य छे, पण पुद्रक द्रव्यक्ते. कर्म पण पुद्रक अंधकार तथा मकाश द्रव्यछे. पंचधा औदारिकादि शरीर पण बादर पदार्थना ज्ञानथी सुक्ष्म पदार्थ स्वरूप अनुपाने पत्थर मृत्तिका आदि सर्वे पुद्रल द्रव्य जाणवां. एकेंद्रियथी यावत् पंचिद्रि जीवोष पुद्गन्न स्कंथोने शरीरपणे प्रदी स्व-सत्तामां की थाले, ते सर्वपुद्ध बद्रव्य छे, पुद्ध बद्धव्य गुणोने आच्छादन करेछे. पुद्र इद्रव्यरूपी छतां जीवद्रव्यने बाधा करेछे.

पश्च-जीवनी अनंति शक्ति छै, तेने पुद्रल डब्य शुं करी शके ? इतर-अधुना कर्षधारक जीवोनी अनंति शक्ति तिरोभावे सत्तामां वर्ते छे, किंतु आविभीवे शक्ति पगट यह नथी अनादि का-

षड्द्रस्य स्वरूप.

स्थी आत्माने कर्म छाग्युंछे, तेथी अनादिकास्त्रथी आत्मानी शक्ति तिरोभावे वर्तेछे. जो आविर्भावरूपे शक्ति थर होय तो कर्मनुं कंइ जोरि नथी, माटे कर्मना योगे जीवनी शक्ति अवराइछे, जेम सूर्यने वादळां आच्छादन करेछे तो सूर्यना प्रकाशनुं आच्छादन थायछे, प्रकाश ढंकाइ जायछे, किंतु यदा वादळां विखराइ जायछे त्यारे प्रकाश स्वच्छ पडेछे. एम आत्मा अने कर्म विषे जाणवुं आत्मा सूर्य समान छे, अने कर्म वादळां समानछे, दृष्टांत एक देशी जाणवुं.

पश्न-अरुपी आत्माना गुणोनो उपघातरूपी कर्मथी शी रीते यइ शके? उत्तर-ब्राह्मी औषधिरूपी, अरूपी बुद्धि दृद्धिमां उत्ते करे मिदरा रूपी छतां ज्ञानीना अरूपी ज्ञानतुं आच्छादन करी प्रथिष्ठ बनावेछे, तथा रीत्या आत्माना असंख्यात प्रदेशे छागेछां ज्ञाना वरणीयादिक कर्मरूपी अरूपी आत्मगुणोनी आविभीवतातुं आच्छादन करेछे.

विषयांतरथी निष्ठत थइ पुद्धल द्रव्यतुं स्वरूग कथतां अन्य प्रश्न करेले.

प्रश्न-पृथ्वी, पाणी, वायु विगेरेनी उत्पन्न कर्त्ती इश्वरछे, अने तमे तेने केम अन्य स्वरूपे कथोछो.

उत्तर-पृथ्वी, पाणी, वायु विगेरेनो कर्ता इश्वर नथी. अनादि कालयी ते वस्तुओं इश्वर अरूपी निरंजनले तेनाथी रूपी पृथ्वी आदि जगत् बनी शकतुं नथी, सर्व द्रव्य पोतपोताना स्वभावे वर्त्तेले. पुद्रल द्रव्यमां जाणवानो स्वभाव नथी माटे जहले, प्रत्येक परमाणुमां उत्पात, व्यय, अने ध्रुवपणुले. वर्ण, गंध, रस अने स्पर्शनी परावर्त्तना प्रत्येक परमाणुमां थायले. पुद्रल द्रव्यमां स्वगुण, स्वध्म, स्वपर्यायनी अस्ति- ताछे. परव्रव्य, परधर्म, परपर्यायनी नास्तिता पृद्ध व्रव्यमां छे. जे समयमां अस्तिताछे, तेज समयमां नास्तिताछे. अस्ति-ता अने नास्तिताचुं स्वरूप वक्तव्या वक्तव्य रूपेछे. पुद्ध व्रव्य चतुर्देश राजलोकमां व्यापीने रहुंछे. पुद्ध परमाणुआ अनंताछे. पुद्ध व्रव्यने आ जीवे शरीर, आहार, इंन्डि-यादिपणे अनंतिवार ग्रहण कर्युं अने मृक्युं पण पुद्ध व्रव्य कोइ काले आत्मानुंथयुं नथी अने थवानुं नथी एनुं विस्तारथी स्वरूप गुरुमुख्यी धारवुं.

५ काल-कालना त्रण भेद छे, अतीत काल, अनागत काल अने वर्त्तमान काल, कालनो समय अति स्ट्रम छे, सर्व द्रव्य उपर कालनी वर्तना वर्ती रहीं छे, काल द्रव्य आत्मगुणोत् च्रांतक नथी।

६ जीवड्रव्यास्तिकाय—जीव द्रव्य अरूपीछे, श्रीरधारी जीव व्यवहारनयथी हपी कहेवाय छे. जीव चेतन छे, पोतानुं स्वरूप निश्चयनयथी अक्रिय छे, अने बळी निश्चयनयथी पोताना धर्मनी क्रिया जीव करेछे, माटे जीव सिक्रय छे, व्यवहारनयथी जीवकर्मनी साथे भळ्यो छतो परद्रव्ययोगे गमनादिक किया करेछे माटे सिक्रय छे. जीवड्रव्य अनंत छे. जीवना वे भेद छे. एक संसारी अने सिद्धना जीवो संसारी जीव पण अनंतछे, अने सिद्धना जीवो पण अनंत छे, ज्ञान, दर्शन, चारित्र, वीर्य, उपयोग ए जीवनुं छक्षणछे. जीवमां खकीय द्रव्य, क्षेत्र काळादिकनी अन्स्तिता छे, परद्रव्यादिकनी अनंत अस्तिता अने परद्रव्यादिकनी अनंत अस्तिता अने परद्रव्यादिकनी अनंत अस्तिता अने परद्रव्यादिकनी अनंत अस्तिता अने परद्रव्यादिकनी अनंत नास्तिताछे, स्वद्रव्यादिकनी अनंत अस्तिता अने परद्रव्यादिकनी अनंत नास्तिता समये समये जीवड्रव्यमां वर्ते छे. द्रव्याधिक नयथी जीव शाश्वतो छे, अने पर्यायार्थिकनयथी जीव अक्षाश्वतो

पङ्ग्रस्य स्वरूप.

(96)

छे. जीवमां चत्पाद, ज्यय अने धुनपणुं ज्यापीने रहुं छे, जीवना असंख्याता मदेश छे, एकेक मदेशे अनंतहान, अनंतहान, अनंतहारे, अनंतहारे हो हो जाणवापणुं एक आत्माना मदेशमां रहुं छे तो असंख्याता प्रदेशनी तो वातज शी कहेवी? निश्चयनये स्वगुणा-दिकनो कर्ता आत्मा जाणवो, ज्यवहारनपथी कर्मनो कर्ता आत्मा जाणवो, ज्यवहारनपथी कर्मनो कर्ता आत्मा जाणवो, ज्यवहारनप, अनुप्वित व्यवहार, अनुप्वित ज्यवहार, अनुप्वित ज्यवहार, अनुप्वित ज्यवहार, विजो असद्भूत ज्यवहार एक द्रव्याश्रित ते सद्भूत ज्यवहार अने जे परिवियनो आश्रय करे ते असद्भूत ज्यवहार नय जाणवो.

प्रथम सद्भूत व्यवहारना ने भेदछे, एक उपचरित सद्भूत इयवहार अने बीनो अनुपचरित सद्भूत व्यवहारनयः सोपाधिक गुण गुणीनो भेद देखाडेः जेम जीवस्यमतिक्वानं. अत्रमतिक्वान सो-पाधिक गुणछे, अने जीव गुणी तेनो भेद देखाड्यो, ते उपचरित प्रथम भेद जाणवोः

तथा निरूपाधिक गुण अने गुणीना भेदे बीनो अनुपचरित सद्भूत व्यवहार जाणवोः जेम जीवस्य केवछज्ञानम् जीवनुं केवछ ज्ञान, अत्र केवछज्ञान निरूपाधिक गुणछं, अने जीव गुणी छे, माटे निरूपाधिकपणे गुण गुणीना भेदे बीजो भेद जाणवोः

असर्भूत व्यवहारनयना वे भेद छे, एक उपचरित असद्भूत व्यवहार, अने बीजो अनुपचरित असद्भूत व्यवहार जाणवी.

मथम भेद असंश्लेषितयोगे एटके करिएत संबंधे होयछे, जेव

आ देवदत्तनुं धनछे, अत्र देवदत्त अने धनने उपर उपरनो संबंध छे, स्वस्वामीभावरूप किल्पत संबंध छे, ते माटे देवदत्तनुं धन कहेतुं ते उपचारथी जाणवुं. तथा देवदत्त अने धन ए वे एक द्रव्य नथी, माटे ते धननो आरोप देवदत्तने विषे असद्भूतछे ए उपचरित असद्भूत व्यवहार जाणवो. आत्मानी साथे कर्मसंश्लेषपणुंछे, एटछे आत्मानी साथे कर्म, तथा देहना संश्लेषपणाना (जोहावा वा मळवा) ना योगे अनुपचरित असद्भूत व्यवहार जाणवो.

आत्मानी साथे अष्टकर्मनो संबंधछे ते धन संबंधनी पेठे क-रिपत नथी. वळी औदारिक—वैक्रिय, आहारक, तैजस अने का-मेण शरीरनो आत्मानी साथे संबंधछे ते पण धन संबंधनी पेठे करिपत नथी. विपरीत भावनाए निवर्ते नहीं, जावज्जीव रहे तेमाटे ए अनुपचरित अने कमीदिक भिन्न विषय माटे असद्भूत जाणवो.

अनुपचरित असद्भूत व्यवहारनये जीव कर्मनो कर्ता जाणवो, अने उपचरित असद्भूत व्यवहारतः गृह धननो कर्ता जाणवो, तथा स्वजाति उपचरित असद्भूत व्यवहारे पुत्र पुत्रीनो कर्ता जीव जाणवो. पुत्र पुत्री पोतानी जातिनां छे, पुत्रादिक जीवनां नथी तेम छतां जीवनां कहेवां ते उपचार, पुत्रादिक जीवनां नथी तेम छतां जीवनां कहेवां ते उपचार, पुत्रादिक पोतानाथी भिन्नछे माटे असद्भूत जाणवो. विजाति उपचरित असद्भूत व्यवहारे धनादिकनों कर्ता जीव जाणवोः धन विगरेनी जीवना करतां छदी जातिछे एटछे ते पुद्गछ जातिछे, माटे विजाति धनादिक जाणवुं, धन विगरेनो कर्ता जीवने कहेवों ते उपचार छे, कल्पितपणुं छे, धनादिक पोतानाथी भिन्न द्रव्यछे माटे असद्भूतपणुं तेमां जाणवुं.

स्वजाति विजाति उपचरित असद्भूतव्यवद्दारनग्रतः नगरादिकनो कत्ती जीव जाणवो. जीव, अजीव बन्नेनी समास (00)

आत्मार्थि शिष्यकक्षणे.

तेमां थयो. अञ्जदानिश्चय नये राग देवनो अञ्जद स्वभावे जीव कर्चा जाणवो.

शुद्धनिश्रयनये स्वकीयनिरुपाधिकज्ञानदर्शनादिक गुणोनो कर्त्ता जीव जाणवी.

आत्मानुं केवळ्ज्ञान ते शुद्ध सद्भूत व्यवहार जाणवो, धर्म अने धर्मोना भेदथी ए व्यवहार थयो, तथा मितज्ञान, श्रुतज्ञान, आत्मानुंछे एम कहीए ते अशुद्ध सद्भूत व्यवहार जाणवो.

परद्रव्यनी परिणति भळवाथी द्रव्यादिकमां नवविध उपचा-रथी असद्भूत व्यवहार थायछे.

१ द्रव्ये द्रव्योपचार, २ गुणे गुणोपचार, ३ पर्याये पर्यायो-पचार ४ द्रव्ये गुणोपचार, ५ द्रव्ये पर्यायोपचार, ६ गुणे द्रव्यो-पचार, ७ पर्याये द्रव्योपचार ८ गुणे पर्यायोपचार ९ पर्याये गुणो-पचरि. एनुं स्वरूप कहे छे.

- ? द्रव्ये द्रव्योपचार-क्षीरनीरन्यायवत् जीव पुद्गळ साथे मर् ळ्यो छ माटे जीवने पुद्गळ कहीए ए जीवद्रव्ये पुद्गळ द्र-व्यनो उपचार जाणवो.
- २ गुणे गुणोपचार—भाव छेश्या ते आत्मानो अरूपी गुणछे तेने जे कृष्ण नीलादिक काळी लेश्या कहीएछीए ते कृष्णादि पुद्गल दृष्यना गुणने। उपचार करीएछीए ए आत्मगुणे पुद्गल गुणने। उपचार जाणवी, इति गुणे गुणोपचार.
- रे पर्याये पर्यायोपचार-अश्वहस्ति ममुख आत्मद्रव्यना असमान जातीय द्रव्यपर्याय तेने स्कंघ कहेळे, आत्मपर्याय उपरे पुद्रळ पर्याय जे स्कंघ तेनो उपचार कहीए छीए ते पर्याये पर्यायोपचार.
- ४ द्रच्ये गुणोपचार—हुं गीरवर्णछुं एम बोळतां हुं एटले आत्म द्रच्य अने गीरपणुं ते पुद्रलतुं उत्त्वळतापणुं, आत्मद्रव्यमां

- गौरहर जे पुद्र छनो गुण तेनो उपचार कर्यो माटे द्रव्ये गु-
- 4 द्रव्ये गुणोपचार-हुं गौरवर्णछुं एम बोलतां हुं ते आत्मद्रव्य अने देह तो पुद्गल द्रव्यनो सामान्य जातीय पर्याय जाणवो.
- ६ गुणेद्रव्योपचार-यथा दृष्टांत ए गौर देखायछे, गौरतारूप पुद्गल गुण उपरे आत्मद्रव्यनो उपचार ते गुणे द्रव्योपचार.
 - ७ पर्यायेद्रव्योपचार-देहने आत्मा कहेवो त्यां देहरूप पुद्गल पर्यायने विषे आत्मद्रव्यनो उपचार कर्यो ए सातमो भेद जाणवो.
 - गुणेपर्यायोपचार -मित्रज्ञान ते पंचइंद्रिय अने मनोजन्य छे माटे शरीरज कहीए अत्र मित्रज्ञानरूप आत्मग्रणने विषे शरीररूप पुद्गल पर्यायनो उपचार कर्थो.
 - ९ पर्यायेगुणोपचार—शरीर ते मितज्ञानरूप गुणजछे अत्र शरीररूप पर्यायने विषे मितज्ञानरूप गुणनो उपचार करायछे, ए नवम भेद व्यवहारनये अनेकथा जीव व्यवहरायछे, निश्चय नये सर्व जीवनी सत्ता एक सरखीछे. सर्व वस्तुथी जीव व्यारोछे, अनादि कालथी आत्मानी अगुद्ध परिणितयोगे आत्मा कर्मादिक ने ग्रहेछे, यथा मिदरापानथी स्तुज्ञ मनुष्यनी बुद्धि फरी जायछे, तेम कर्मनायोगे आत्मा परस्वभावमां राच्यो माच्योछे, यदा उपयोगनी एकाग्रताए स्वध्यानमां आत्मा रमे तदा कर्मादिकनो नाश थायछे. जे रूद्धिने माटे जीव फांफां मारेछे, ते रूद्धि आत्मामां समायीछे. आत्मा पोतानुं स्वरूप ज्ञानवडे जाणेछे. आत्माना समान कोइ उत्तम वस्तु नथी, आत्मा आदेय, आर्राध्य पूज्यछे. आत्मानी ऋदि आत्मस्वरूपना ज्ञानथी माप्त थायछे. त्रण जगत्नो स्वामी आ मत्यक्ष देखाता शरीरमां रहेलो

आत्माछे, तेना करतां चमत्कारी बीजी कइ वस्तुछे? सुरमणि, कामकुंभ, कामचेनु पण आत्माना आगळ हीसाबमां नथी. आत्मा तेज परमात्माछे. आत्मा ते निश्चययो विचारतां पोतानो सुरुष्ठे, स्याद्वाद रीते आत्मानी ओळखाण कोइ भाग्यवंत पुरुषने थायछे, आत्मानुं स्मरण करवुं. महत्ति मार्गमां महत्ति त्यां सुधी थायछे के ज्यां सुधी आत्मानुं ज्ञान तथा रमण नथी, आत्मानुं स्वरूप ज्यां सुधी जाण्युं नथी, त्यां सुधी प्रवर्धमान सुणठाणानी माप्ति थती नथी कहुं छे के—

आया सामाईअ आया सामाइयस्स अहे; वळी कहुंछे के-

जे एगं जाणइ, से सब्वं जाणइ; जे सब्वं जाणइ, से एगं जाणइ ॥१॥

एको भावः सर्वथायेन दृष्टः सर्वभावाः सर्वथातेन दृष्टाः सर्वभावाः सर्वथायेन दृष्टाः एकोभावः सर्वथातेन दृष्टः २

यथातथ्य एक आत्मानुं स्वरूप जेणे जाण्युंजे, तेणे सर्व द्रव्यनुं स्वरूप जाण्युंछे. कारण के—ज्यां सुधी भव्यात्मा आत्मानुं स्वरूप जाणतो नथी तावत् अन्य द्रव्योनुं स्वरूप जाणी शकतो नथी, सर्व शास्त्रनी रचना पण आत्मज्ञान थकीछे. सर्व शास्त्रकारो आत्मानी स्तुति करेछे.

स्तोत्रम्-

अनंतदेवेश जगिनवास, त्वमक्षरं त्वंपुरुषः पुराणः त्वमव्ययः शाश्वतधर्मगोप्ता, त्वमस्य विश्वस्य परंनिधानम्१ भावार्थ-हे आत्मा तुं अनंतक्षे. तारो कदी अंत नथी, तुं आत्मा देवतानो पण स्वामीछे-चतुर्दश रज्वात्मक लोकमां तारी स्थितिछे. तुं असंख्यात प्रदेशमयी छे, त्यारा प्रदेशो क्षरे तेम नथी. तार्ह स्वरूप नाश पामवातुं नथी. माटे तुं अच्युत अने अक्षरछे, अनादि कालनो तुं आत्माछे, तुं अव्यय स्वरूपछे. सनातन शुद्धधर्ममय तुंछे, भव्या-त्माओने मोटामां मोदुं निधान तुंछे. तुंज परमेश्वररूपछे. आम पोते द्धनिराज शरीरमां व्यापी रहेला आत्मानुं ध्यान करे.

" दो**हा.** "

नव तत्त्व षड् द्रव्यना, ज्ञाने छे उपयोगः अनंत ग्रणनी रूद्धिनो, कर्त्ता नित्यज भोग. ७४ भोगी निह परभावनो, आत्मस्वरुपे ध्यानः ध्यान निहं परभावनुं, देखे चरण निधान. ७५

भावार्थ-जीवतत्त्व, अजीवतत्त्व, पुण्यतत्त्व, पापतत्त्व, आश्रव, संवर, निर्जरा, बंध, ने मोक्ष ए नवतत्त्वनुं द्रव्य अने भावथी जेने ज्ञान थयुंछे, अने षड्द्रव्यनुं द्रव्य, क्षेत्र, काल, भावथी ज्ञान जेने थयुंछे, ते ज्ञानी जाणवा नवतत्त्वनो षड्द्रव्यमां अंतर्भाव थायछे. षड्द्रव्य विनाजगत्मां अन्य कोइ पदार्थ नथी, षड्द्रव्यमां पण एक आत्मद्रव्य पोतानुंछे. आत्मद्रव्यनी श्रद्धा थवी मुश्केलछे. कोइक तो आत्माने जळ पंकजवत् सर्वथा अलिप्तमानी व्यवहार निश्चयनयना ज्ञान विना एकांत मिथ्यात स्वरूपे आत्मानुं ध्यान करता समिकत विना चतुर्गत्यात्मक संसारना त्रिविध तापोने पुनः पुनः प्राप्त करी विवेक श्रन्यताए प्रथिलनी पेठें कृत्याकृत्यने नहीं गणता मोहनीयना उदये नरभवनी निष्कलताए संसारना चतुर्शितिलक्ष जीवयोनिना मन्वाहमां रोग शोकथी पीडाता चक खाता तणायछे, जेटला विद्वानो मुख्यातवंत थया, थायछे, अने थशे ते सर्व ज्ञानना मताप थकी

आत्मज्ञान महत्ता.

अने ते ज्ञान आत्मद्रव्यमां रहुंछे, दुनीयामां जेटलां शास्त्रछे ते आ-त्मामांथी नीकळ्यांछे. अभ्यासादिक ज्ञाननां साधनछे, अनंत गुणोनो भोक्ता आत्माछे, आत्मानी ऋदि सदाकाल आत्मामां रहीछे, आत्म ऋद्विनो कदापि नाश थनार नथी. निश्चयनयथी जोतां आत्मा परा-भावनो भोगी नथी. आत्मार्थी परभावनुं ध्यान निवारी स्वशृद्ध आत्मस्वरूपतुं ध्यान करे तो चरणनिधान देखे, क्रियाकांडथी भग-बढाजा डोळघाळ कपटीओ अज्ञानी जीवने पोताना फंदमां फसावी धर्मना विश्वासमां फसावी पोते पण अज्ञानमां बुहे छे, अने अन्योने पण बुडाहे छे, सिंहना पराक्रमनो अभिमानथी पोतानामां आरोप करनारो शंगाल क्यां सुधी कपट दृषि चलावी शके. आत्मज्ञान तेज धर्मछे. तेज आदेयछे, अधुना पंचविषना योगे क्षेत्रमां कृष्ण पक्षीण जीवोनी बाहुल्यताए गीतार्थना, सद्गुरुना समागम तथा विश्वास विना अने भवाभिनंदीपणाना त्याग विना अश्रभ व्यवहारना त्याग विना मुम्रुश्चना योग्यगुणो विना अज्ञानी जीवो ज्यां त्यां दृष्टिरागनी अंधताए विवेकनयनशून्य थया छता उपर उपरथी धर्मनामे टीलां टपकां करता अने करम विवाह पसंग रासभ प्रशंसाना आचरणमां पोतानी वाहवाहमां कृत कृत्यता सम-जनार अज्ञानी जीवा सद्गुरुनी वाणी विषना प्याला समान छेखवी, क्रगरुनी वाणी अमृतना प्याला लेखवता, कुधारामां सुधारानी बुद्धि माननार, अस्थिर चित्तवाळा पामर प्राणीओ आध्यात्मिक शास्त्रोना क्रान विना अने देवगुरु धर्मनी श्रद्धा विना स्वच्छंदाचारीपणाने ळीश्चे आत्मप्रशंसा अने परग्रणापकर्षताए अज्ञानश्रद्धाए तत्त्व वास्या जाणे होयनी ? एम संसारमां पराभव महत्तिथी स्वआयुष्य पूर्ण करी नृभविचेतामणि रत्नसमान हारी नरकादिक गतिना

मेमान थइ आधि ब्याधिनी दुःख श्रेणि परंपराने पामेछे.

अत्मार्थि जीव स्वपरवस्तुनो विवेक करी हेयज्ञेय उपादेय समजी गुणठाणानी परिणित समजी व्यवहार निश्चयनयतुं स्वरूप गुरुगमद्वारा समजी वैराग्यनी तीक्ष्णताए सद्गुरु आज्ञाभिक्त विनययोगे
सालंबन अने निरालंबन ध्याननी अभिलाषाए अंतःकरण शुद्धिपूर्वक स्पाद्वाद आत्मिक धर्मनुं आराधन करतो जल पंकजवत् वर्तन चलावतो व्यवहारमां वर्ते , परभाव महित्तिमूलरागद्वेषमहा
मल्लेखेदक आत्मस्वभावपरिणितिमां वर्तता भव्यात्माओ ज्ञान
ध्यानयोगे क्षयोपश्चमभावे वा उपश्चम भावे मोहनीय कर्मनो उच्छेद
करी समिक्ति पामी स्वल्पकालमां कर्मक्षय करी केवलज्ञानादि
संपदा पामी चउदम्रं गुणठाणुं आयुष्य मर्यादाए उल्लंघी सादि अनंति स्थिति पामी अनहद आनंददायक शाश्वत शिवसुख स्वरूप
मुक्तिधाम पामी शक्रेखे. समये समये जीव सात वा आठ कर्म बांधे
छे, स्वभावमां रमे तो कर्मबंध टलेखे, माटे आत्मतत्त्वनी पाप्ति अर्थे
सद्गुरु वचनामृतनुं विनयमिक्तयोगे पान करन्नं एज हिताकांक्षा.

" दुहा. "

अलंड अक्षय शाश्वतुं, देखी आतम रूपः चित्ते चमक्यो आतमा, अरे हुं तो महा भूप.७६

भावार्थ-अखंड, अक्षय, शाश्वतस्वरुप पोतानुं पोते आत्मा देखी चित्तमां चमक्यो अर्थात् आश्वर्य पाम्यो, अने कहेवा लाग्यो के-अरे हुं तो महाभूपछुं, अग्वापि पर्यंत में पोताने अज्ञानी जाण्यो, हुं गरीब छुं एबी मने भ्रांति हती पण हवे ए भ्रांति चाली गइ, हुं निर्धनछुं एम हुं पोताने मानतो हतो पण जाण्युं के-मारा आत्मामां अनंत धन रह्यंछे, तेनी संमित काले खबर पडी, चक्रवर्ति आदि

(24)

भारमञ्चान महत्ता.

राजाओने हुं महाभूप तीरके स्वीकारतो हतो पण हवे आत्मानुं स्वरूप ओळखतां माछम पड्युं के इंद्र, चंद्र, नागंद्र करतां पण आ शरीरमां व्यापक आत्मा मदाभूपछे. एनी मभुताइने कोइ पामी क्षके तेम नथी. खी पुत्रादिकपर जेटली ममता थाय छे तेटली जो आत्मा उपर ममता थाय अने तेनुं ध्यान करवामां चित्त लागे तो आत्मा परमात्मस्वरूपने पामे. बहिरात्मिसाधुओने शिष्यो करवा उपर जेटली चाहनाछे तेटली जो आत्माना उपर चाहना थाय तो परमात्मपद अवश्य पामी शकाय. बाह्यधन तो मळेछे अने पापना उद्ये विणशी जायछे पण आत्मानुं अंतर्धन कदापि काळे नाश पामी शकतुं नथी. दुनीयाना मवाहमां जे तणायछे ते आत्मिक लक्ष्मी पामी शकता नथी—घणा भव कर्या, घणां शरीर छोड्यां, पौद्रगिलक माया सर्व नाश पामी किंतु त्रणे कालमां आत्मा चेतन स्वभावेज वर्तेछे माटे आत्मा शावतछे, वांचवा अगर कहेवा मात्रथी नहीं पण ते अनुभवगम्यछे.

" दुइा. "

रझळ्यो हुं परदेशमां, लहियां दुःख अनंतः शुभ देखी निजदेशने, शान्त थयो शिवकंत. ७७

भावार्थ-पोताना आत्माना असंख्यात प्रदेश ते पोताना प्रदेश जाणवा अने पृथ्वीना जे देश ते पुद्गलास्तिकायळे, पुद्गलास्तिकायळे, पुद्गलास्तिकायळे, पुद्गलास्तिकायळे, पुद्गलास्तिकाय द्रव्य जडळे, पृथ्वीना प्रदेशोने पोताना प्रदेश मानी प्रदेशमां रझळ्यो, श्रुधा पिपसाए ताडनतर्जन छेदनभेदन आदि आत्माए अनंत दुःखो सहन कर्यी, अने नाना प्रकारनां शरीरो धारण कर्यी पण दुःखनो अंत आव्यो नहीं, पण हवे सद्गृहयोगे आत्मानुं स्वरूप काणतां पोतानो देश ओळ्ख्यो अने आत्मा स्वितनो स्वामी शान्त

थयो, ध्यानथी आत्मा अने परमात्मानो मेद टळेछे. कहुंछे के-आत्मनोहि परमात्मनियो भूद्भेद बुद्धि कृत एव विवादः; ध्यानसंधि कृद्मुंव्यपनीय द्रागभेदमनयोर्वितनोति.१

आत्मा अने परमात्मामां भेद बुद्धिनो विवाद अर्थात तेमां पंडितना विवादरूप झघडा हता तेने ध्यानरूप संधि ध्यानी पुरुषे जलदीथी बेतुं अभेदपणुं करी ध्यानमां आत्मा अने परमात्मानो अभेट थाय एटले ध्याननी सिद्धि जाणवी. ध्यानीने पौद्गलिक देश उपर क्यांथी ममता होय. निंद्रामां शुन्यतानी पेठे ध्यानी पुरुष रागद्वेषशुन्य थायछे, खरुं स्रुख ध्यानी पुरुष जाणेछे, शब्दज्ञानियो भल्ने व्याकरण न्यायना वाक्पंडितपणाथी इदंभवति इदं न भवति इत्यादिथी भौळा स्रोकोनी रवे. किंत आत्मिक स्रख मळतं नथी. भ्रमजाल अने निरर्थक बाह्याचारनिंदकी थड़ मनुष्य जन्म हारेछे. एवा शब्द ह्मानीओने स्वदेशनी मन्नता थवी मुक्केलके, शब्दहानियो खंडनमंड-ननी संकल्प जाळमां पडी आत्मिकसुख पाप्त करता नथी, तेमतुं परदेश पर्यटन बंध थवातुं नथी; बाह्य क्रियाकांडनी खटपटमां शब्दब्रानीयो मतभेद चलावी परस्पर राग द्वेष करेछे, तेमनुं क-ल्याण मत कदाग्रहत्वथी थवुं दुर्छभछे. स्वदेश अने परदेशनुं ज्ञान नथी त्यां सुधी जीव मिध्यात्वी जाणवो. आत्मतत्त्वतुं ज्ञान थाय त्यारे मनुष्य जन्म छेखे जाणवो, खरेखर आत्मज्ञ महाश्वयो आत्मा-नी तात्त्विक शांतताने पामेछे; उपर उपरनी हलदरना रंग समान जे शांतता ते अंते टकी शकती नथी. केटलाक जीवो उपस्थी बगनी पेठे कपट्टतियी शांत देखायळे, अने अंतर्मा कपटयी भरेला होय छे, केटलाक जीवो उपरथी देखतां शांत जणाता नथी अने अंतर्मां खरेखर शांत होयछे, केटलाक जीवो उपरथी पण शांत होयछे अने

आस्मज्ञानं महत्ता.

अंतर्मां पण शान्त होयछे, केटलाक अंतर्थी शांत होता नथी अने उपरथी पण शांत होता नथी. शांत।वस्थानुं सुख आत्मज्ञानीयो पाम्या, पामेछे, अने पामशे.

'' दुहा. ''

परपुद्गलना देशने, मान्या मारा देश; तेनी ममताए करी, ब्रहिया पुद्गल वेष. ७८ ठाम ठाम हुं भटिकयो, चार गति दुःख खाण; त्यां पण ममता देशनी, कीधी ग्रणनी हाण. ७९

भावार्थ-पौद्गलिक देशने पोताना मानी राग द्वेषथी कर्म ग्रहण करतो छतो विचित्र प्रकारनां शरीर धारण कर्यो, नाना देहो धारण करी दु:खनी खाणभूत चार गतिमां ठेकाणे ठेकाणे चेतन भटक्यो, अने ज्यां ज्यां उत्पन्न थयो त्यां पण देशनी ममता धारण करी पोतानुं भान भूली आत्मगुणनो तिरोभाव कर्यो, आ मारुं घर, मारुं क्षेत्र, मारी पृथ्वी, आदिना अभिमानथी रुशिया जापाननी पेठे हजारो जीवोनो नाश थयो तेनुं कारण परपौद्गलिक देशनी ममताछे, अज्ञानी जीवो स्वदेशाभिमानमां एम. ए. सुधी भण्या होयछे तो पण अज्ञान प्रवाहमां तणाइ जायछे. पोतानो देश कयो छे ते गुरुभक्तो निश्रयतः जाणी शक्छे. मन बाह्य विषयमां धावे छे, तावत जीव कर्मनी राशि अशुद्ध परिणामे ग्रहेछे, गुजरात, बंगालादि देशो माराछे अने हुं एनोछुं, आ राज्य मारुंछे अने हुं एनोछुं, आ कुटुंब मारुंछे, अने हुं एनोछुं, एवी बुद्धि यावत् थायछे तावत् जाणवुं के-चेतन जडता अनुभवेछे, आत्मा अने परमात्म स्वरूपनुं ज्ञान थाय तेने ज्ञान कहेछे. अने आत्मा अने परमात्मानी ध्यानयागे अन्यता थाय तेने विज्ञान

उत्तश्र-

अन्य शास्त्रेऽपि क्षेत्र क्षेत्र ज्ञयोर्ज्ञानं, तज्ज्ञानं ज्ञानमुच्यतेः विज्ञानं चोभयोरैक्यं, क्षेत्रज्ञ परमात्मनोः १

स्वकीय अज्ञानथी आत्मा भटकायछे, अने पोताना ज्ञानथी कर्म विम्रक्त आत्मा बनेछे, आत्मानो उद्धार आत्मान करी शकेछे, आत्मानुं उपादान कारण आत्माना गुणोछे, उपादाननी शुद्धि अर्थे भव्य जीवो निमित्त हेतु अवलंबी परमात्मपद पामेछे, अभव्य जीवोमां उपादान कारणनी शुद्धि थाय तथा मकारनो स्वभाव नथी. निमित्त कारण तो पामेछे, किंतु अभव्य जीवमां भव्य स्वभाव नथी, तथी उपादान कारण शुद्ध थतुं नथी भगवद्गीताना छटा अध्या-यना पांचमा श्लोकमां कहुंछे के-

श्लोक.

उद्धरेदात्मनात्मानं, नात्मानमवसादयेत्, आत्मेवद्यात्मनो बन्धु, रात्मेव रिपुरात्मनः १

आत्मा उद्धारवो पोते, आत्माने मारवो नहिः वंधु पोतेज पोतानो, पोतेज रिषु छे सहिः १

आत्मा स्वशुद्धपरिणामयोगे पोते पोतानो उद्धार करेछे अधीत परमात्मपद पामेछे, इपुरुषो कहेछे के-आत्माने भव्यात्मा-ओए मारवो नहीं, पोताना आत्मानो घात करवो तेना समान पाप नथी, अध्यात्मगीतामां कहुंछेके-

स्वग्रण रक्षणा तेह धर्म, स्वग्रण विध्वंसना ते अधर्म; भाव अध्यात्म अनुगत प्रवृत्ति, तेहथी होय संसार छित्ति.१ आत्माना अनंत गुणो कर्मयोगे ढंकायाछे, तिरोभावे रहाछे, तेनु रक्षण करवुं एटले ते अनंत गुणोने आविर्भाव करवा, कर्मशबुधी अवरावा देवा नहीं तेनुं नाम धर्मले, धर्मना चार भेदले, १
नामधर्म, २ स्थापनाधर्म, ३ द्रव्यधर्म, ४ भावधर्म, कोइनुं धर्म एवं
नाम आपवुं ते नामधर्म, कोइ पण वस्तुमां धर्मनो आरोप करवो ते
स्थापनाधर्म, धर्मना हेतुओनुं अवलंबन करवुं ते द्रव्यधर्म वा उपयोग श्रुन्य जे धर्म ते द्रव्यधर्म जाणवो, आत्मानी उपयोगताए नयनिक्षेपा सप्तभंगीथी आत्मानुं अनेकान्त स्वरुप जाणी श्रद्धा करवी,
तेनुं रक्षण करवुं तेनुं नाम भावधर्म जाणवो.

ते भावधर्म आत्मामां रह्योछे, शुद्ध, सत्य, अखंड, अक्षयरूप भावधर्म अरुपीछे अने ते भव्य जीवोने पाप्त यायछे, समिकतवंत जीवने भावधर्मनी प्राप्ति थायछे, भावधर्म विना सर्व क्रिया नि-ष्फल जाणवी.

द्रव्यधर्मना वे भेदछे, छौिकक द्रव्यधर्म बीजो छोकोत्तर द्रव्य-धर्म, छौिकक द्रव्य मिथ्यात्वतुं कारणछे, भावधर्म सापेक्ष छोकोत्तर द्रव्यधर्म परमात्मपद साधक निमित्त कारणछे, आत्मीयगुणोतुं रक्षण ते धर्म, अने आत्माना गुणोनो नाज्ञ करवो एटछे आत्माना गुणो तिरोभावे वर्ताय तेम रागद्वेषयोगे ज्ञानावरणीयादि कर्म ग्रहण कराय तेतुं नाम अधर्म जाणवो, नाम अध्यात्म, स्थापना अध्यात्म, द्रव्य अध्यात्म अने भाव अध्यात्म ए चार ४ निक्षेपाए अध्यात्म जा-णवुं. आद्यनां ३ त्रण अध्यात्म अनुपयोगी जाणवां, भाव अध्या-त्मथकी कर्मकलंक नाज्ञ पामेछे. माटे भाव अध्यात्म अनुगत मृहत्ति थाय तो तेथी संसारनो उच्छेद थायछे, माटे ज्ञानी पुरुषो कहे छे के आत्माने मारवो नहीं, आत्मानी जो अग्रद्ध परिणित थइ तो आत्माए आत्माने मार्यो कहेवायछे, आत्मा पोते पोतानो वंधुछे, एम कहेवाथी सिद्ध थयुं के पोतानुं भक्षं करवा पोते आत्मा समर्थ हे, राग देवने आत्मा जीते तो आत्मा कंधु समान हो, सगा सहोदर कंधुनी ममताथी आपणा पोताना आत्माने राग देव लग्म्या हे ते दूर थता नथी, माटे वीजाने वंधु तरी के मानवा ए तो संसार व्यवहार नी करण नाहे, व्यवहारिक कार्योमां सहोदर वंधुनी जहर हो, किंतु आत्मा परमात्मस्व रूपमयथाय तेमां तो आत्माज पोते वंधु हो, त्यां अन्य हुं कां हो वाहतं नथी, राग देवना मवाहमां आत्मा अशुद्ध परिणामथी वहें हो तो आत्मा पोते पोतानो शतु हो एम जाण हो, आत्मा परभाव त्यागी म्वभावमां रमे तो आत्मानो कोइ शतु नथी, आत्मा विना आत्मानो शतु अन्य कोइ व्यवहारथी करणना मात्र जाण वो. राग देवे संसारमां राच हुं माच हुं, तथा आत्मानी अज्ञानताथी मिध्यात्व परिणातिए करी आत्माने परमात्मय पामवामां आत्मा शतु भूत हो, यावत् जीव समिकत पाम्यो नयो अने मिध्यात्व भावे रमो परने पोता हुं माने हे तावत् तास्विक सुख पामी शकतो नथी, माटे आत्मिक अन्स ल्यातमदेशमां ध्यान देवें.

" दुहा. "

धर्माऽधर्माऽकाशना, प्रदेश हान न लेश; पुद्गलना जे देश छे, दे अज्ञानी क्लेश. ८०

धर्मास्तिकाय, अधर्मास्तिकायना प्रदेशयी आत्मग्रणोनी हानि छेशमात्र पण थती नथी, पण पुद्गल स्कंघो अज्ञानीने क्लेश आपेछे

धम्मा धम्मा गासा तिन्निवि ए ए अणाइया। अपज्जवसियाचेव सन्वद्धं तु वियाहिया.

धर्म, अधर्म अने आकाश ए त्रण द्रव्य अनादिकालनां छे अने अनं छि १४ चउदराज ोक व्यापि धर्मीस्तिकायछे, अधर्मास्तिकाय

(९२) आत्मधर्म महत्ता.

पण चडद राजलोक न्यापीले, आकाशास्तिकाय लोकालोक न्यापी छे. अग्रद्ध परिगति योगे आत्मा पुद्गलास्तिकायना स्कंथोने ज्ञा-नावरणीयादि अष्टविधकर्मराशिरूप बनावी ग्रहण करी संसारमां परिश्रमण करेले.

आत्मा शुद्धस्वरूप जोतां अरूपीछे, छतां रूपी एवा कर्मथी आत्माना अनंत एणो जुं आच्छादन थायछे, आत्माना एकेक प्रदेशे अनंति कर्मवर्गणाओ लागीछे, किंतु आत्माना आठ रूचक प्रदेशे कोई कर्म लागतुं नथी ते आठ रूचक प्रदेश सिद्ध समान सदाकाल निर्मल अनादि कालनाछे, ए आठ रूचक प्रदेशे पण जो कर्म लागे तो जीव जुं जीवलपणुं चाल्युं जाय. रूचक प्रदेशनो एवो स्वमावछे के तेने कोई कर्म लागी शक नहीं, जेम जेम एकेंद्रियादिक भव जुं उड़ंघन करी उच्च गतिमां आवे छे तेम तेम तरतमयोगे सामान्य अमित हान श्रुतहाननी प्राप्ति थाय छे.

शिष्यपश्च-आत्माना असंख्यात प्रदेशी शी रीते कहेवाय ? असं-ख्यात प्रदेश कहेवाथी आत्माना असंख्यात भाग थया त्यारे आत्माना खंड थया अने अखंड आत्मा कहेवाशे नहिं माटे आत्माना असंख्यात प्रदेशो कहेवा ते शीरीते=

सद्गुरु-आत्मा असंख्यातप्रदेश मळी कहेवाय छे, असंख्यात प्रदेश कहेतां आत्माना असंख्याता भाग थइ शकता नथी। कारणके प्रदेशो एक एकथी जुदा पडता नथी, प्रदेशो बाळ्या बळता नथी, छेग्रा छेदाता नथी, हण्या हणाता नथी। केवली केवली समुद्वात करे त्यारे आत्माना प्रदेशो लोक प्रमाण वि-स्तारे छे छतां पण प्रदेशो एक मेकनी साथे नित्य संबंधथी संबंधित छे। तथी असंख्यात प्रदेशे मळी आत्मा कहेवामां कोइ जातमुं दूषण नथी आवतुं, आत्माना प्रदेशो अरूपी छे, तथी असंख्य प्रदेशात्मक आत्मा पण अरूपो कहेवायछे. आत्माना खंड कोइनाथी पाडी शकाता नथी, अने कोइ काले खंड थता नथी. माटे अखंड आत्मा कहेवायछे, असंख्यातप्रदेशो कल्पना मात्र नथी पण ते सत्यछे. कल्पना मात्र कहेवामां प्रत्यक्ष प्रमाण नथी, अनुमान प्रमाण नथी, उपमान प्रमाण पण नथी. अने आगम प्रमाणमां तो आप्तमुख्य श्री सर्वज्ञ वाक्य प्रमाण कहे-वायछे-श्री सर्वज्ञ भगवंते कग्नुंछे के-लोगागासतुल्लाअप्पएसा माटे लोकाकाश्चा जेटला आत्माना प्रदेशके एम सत्य श्रद्धा करवी.

प्रश्न-कोई एक गिरोलीनी पुंजडी कपाइ जई त्यारे एक तरफ पुंजडी कूदे छे. उछ ले छे, अने एक तरफ धड उछ ले छे त्यारे जीव बेमां समजवों के एकमां ?

उत्तर-पुंजडी अने घडमां एम बेमां आत्माना असंख्य प्रदेशो है। वायी बेमां अपेक्षाए जीव कहेवाय छे. केटलाक प्रदेशो पुंजडीना भागमां रहेला होयछे तथी ते हाले छे पग घडना भागमां ते सर्व प्रदेशो भली जायछे त्यारे पुंजडी हालती नथीं ते समये घडमां जीव कहेवाय छे ए उपरथी सिद्ध थाय छे के आत्माना प्रदेशोथी एवो बनाव बने छे, स्क्ष्मबुद्धि अने गुरुगमधी आ ह्यान्त मनन करतुं. ज्ञा-नावरणीय कर्म सर्व जीवने एक सरखुं होय तो सर्व जीव एक सरखा ज्ञानबाला होवा जोइए पग ज्ञान एक सरखुं होतुं नथी माटे ज्ञाननुं प्रतिबंधक ज्ञानावरणीय कर्म जीव जीव पत्थे भिन्न भिन्न नाना प्रकारनुं होयछे. तथी नेना क्ष-योपश्चम भावे में के जीवन भिन्न भिन्न प्रकारनुं ज्ञान थाय छे. उपाधि भेदे ज्ञानावरणीय ही अहकर्म आत्माना अह गुणोनु आच्छादन करेछे. अहकर्मना नाशथी अह गुणो आविसी । थायछे, ययपि जो के कर्म बलवान्छे तथापि आत्मा ज्ञानयोगे स्वस्त्ररूपमां रपे तो क्ष-णमां कर्ममो नाश करी शकायछे. भग बद्गीतामां पण कहां छे के-अध्याय चोथो श्लोक ३७ मो.

यथेथांसि समिद्धाऽमि, भीरेमसात् क्रस्तेऽर्जुन. ज्ञानामिः सर्व कमाणि, भरमसात् क्रस्ते तथा. ३७ निह ज्ञानेन सहशां, पावित्र मिह विद्यते, तत्स्वयं योग संसिद्धः कालेनात्मिन विंदति. ३८ अपिनेदसि पापेभ्यः, सर्वेभ्यः पापकृत्तमः सर्वज्ञानप्रवेनेव, वृजिनं संतरिष्यसि. ३७

भावार्थ-महामेरुना ओळंघनारने वालुका जेम लंध्यके, अप्नि काष्ट्र समूहने बाळी भस्म करेछे तेम ज्ञानरूप अप्नि सर्व कर्मोने बाळी भस्म करेछे आत्मातुं अनेकांतपणे यथातथ्य ज्ञान थाय तो कर्मनो नाम थायछे. परम पुरुषार्थ साधन ज्ञान समान कोइ नथी, अपवित्रने पण ज्ञान पवित्र करेछे, माटे ज्ञान सद्द्य अन्य कोइ पवित्र नथी, ज्ञानी सर्व पापनो नाम करेछे, हुं आत्मा परमात्मा स्वरूपछुं एम स्वसत्ताने भन्यात्मा ध्यावेछे.

मोटामां मोटुं पाप करनारो तुं होइश तो पण हे अर्जुन तुं ज्ञान नौकाथी सर्व पाप तरी जाइश एम कृष्ण कहे छे.

शिष्य-आ ठेकाणे तमो केम भगवद् शीतानो दाखडो आपोडो ? कैन-जैनधर्म एक देशी नथी पण सर्व देशीड़, जैनोमां जेम ज्ञानतुं महात्म्य कथ्युंडे, तेम गीतामां पणड़े ते जणाववा माटे साक्षी आपीछे.अन्य शास्त्रना श्लोकोने समिकती जीव अनेकान्तनयनी अपे-क्षाए ग्रहण करी समिकत रूपे परिणमावे छे, एक शरीर त्यागी अन्य शरीर धारण करवानु कारण कंइ पण होवुं जोइए. ते कारण कर्मछे, अने कर्म आत्माथी भिन्नछे, भिन्नछे त्यारे ते चैतन्य नथी, विपरीत जड द्रव्य सिद्ध ठर्युं, माटे तेनो पुद्गलास्तिकाय द्रव्यमां अंतर्भाव थायछे. लोहचुंबक पोतामां रहेली शक्तिवडे जेम से यने पोतानी भणी खेंचेछे तेम आत्मा अशुद्ध परिणितियोगे स्वमायोग्य पुद्गलोने राग द्वेषयोगे कर्मरूपे ग्रहण करेछे. अने कर्मथकी चार गितनां दु ख जीव पामे छे. नैश्वयिक शुद्ध आत्मिक स्वरूप ध्यावे अने आत्म ने सर्व थकी न्यारो माने अने परवस्तु उपरथी अहंममलभाव उठाडे तो सिद्ध बुद्ध परमात्म स्वरूपमय आत्मा थाय.

" दुँही "

वर्ण पांच जेमां रह्या, गंध देशय ज्यां खास;

षांचे रसनी स्थीति ज्यां, स्पर्श आठनो वासः ८१
एवा पर्यायो रह्या, तेहिज पुद्गल द्रव्यः;
व्याप्युं लोकाकाशमां, कत्ती निह् कोइ भव्यः ८२
काल अनादिथी रह्यं, रहेशे काल अनंतः;
नित्यानित्यपणे सदा, रूपी द्रव्य कहंतः ८३
भावार्थ-पांच वर्णः, वे गंधः, पांच रसः, अने आठ स्पर्शक्प
पर्यायो जेमां रह्याछे, तेने पुद्गलद्रव्य कहेछे, ते लोकाकाशमां
व्याप्युंछे, पण अलोकाकाशमां पुद्गलद्रव्य नथीः, पुद्गलद्रव्य अनादिकालथीछे, अने अनंत काल सुधी रहेशे, द्रव्यार्थिक नये पुद्गलद्रव्य नित्यछे, अने पर्यायार्थिक नये पुद्गलद्रव्य अनित्यछे,
पुद्गल द्रव्यरूपीछे.

(98)

आस्मधर्म महत्ता.

" दहा. ^{>>}

घटपट वस्तु जे दिसे, ते सहु पुद्गल जाण । ते आतमथी भिन्न छे, शास्त्र वचन प्रमाणः पुद्गल देशे म्हालतां, मार्यो चेतन जायः तेमां ममता मानता, मरी मरी दुःख पाय-पृथ्वी थइ निह कोयनी, कोटी करे उपाय; लक्ष उपायो लेखवे, नहि आकाश झलायः पुद्गल वस्तु कारमी, घर हाटां ने म्हेल; सोनुं रूपुं धन सहु, पुद्गलना छे खेल. 60 दृष्टा पुद्गलनो सदा, सुख दुःखनो जे जाणः वास वस्यो पुद्गल विषे, आतम ग्रणनी खाण ८८ पुद्गल जे देखाय छे, तेथी चेतन भिन्न; कर्त्ता चेतन कर्मनो, परपरिणति रस पीन आत्माऽसंख्य प्रदेश छे, प्रति प्रदेशे ज्ञानः अनंत जिनवर भाषियुं, छति पर्याये जान विशेष सामान्ये करी, दो भेदे उपयोगः असंख्यात प्रदेशथी. वर्ते निजयुण भोग. अस्ति धर्म अनंतनो, भोगी आतम रायः नास्ति धर्म अनंत त्यांय, समय समय वर्ताय. ९२ .उज्ज्वल आत्मप्रदेश छे, समता रस भंडार; तेनो कर्ता आतमा, शुद्धनये निर्धार.

परमात्मदर्भन.

(99)

वसतां तेह प्रदेशमां, रमतां समता संगः सुलसागरमां उछ्छे, हर्षानंद तरंगः ममता पर परदेशनी, भागी जागी ज्योतः सहजे आत्म स्वरूपनो, थयो महा उद्योत-भिन्न जाति पुद्गल तणी, मारी तेथी भिन्न; भिन्न जातिशुं संग इयो, तेथी थइयो खिन्न. संग अनादि कालथी, तेने मानी मित्र; राग देषना योगथी, प्रहियां देह विचित्र. दुग्धनीरसंयोगवत्, आतम पुद्गल संग; थये। अनादि कालथी, करतां कर्म कुढंग. तेथी अवळी परिणते, कत्ती कर्म कहाउ: सवळी परिणति योगथी, शुद्ध निरंजन थाउ. ९९ पुद्गल खाबुं पहेरबुं, पुद्गल वसति महेल; वास वसी तेमां मुधा, मानी सुखनी स्हेल. १०० रमुं हवे शुं बाह्यमां, जेनी कूडी चाल; संगे तेनी माहरे, थवुं पडयुं बेहाल. १०१ मित्र नहि ते माहरो, अवळो तास सहाव; हाय हाय तस संगयी, बनिया एह बनाव. १०२ भावार्थ-आ प्रत्यक्ष घट पट दंडादि वस्तु चक्कषा विषय गोचर

भावाथ-आ प्रत्यक्ष घट पट दडादि वस्तु चक्कुषा विषय गाचा थायछे. ते पौद्गलिक वस्तु जाणती. अने ते आत्म द्रव्यथी भिक्का छे, एम श्री तीर्थकर महाराजा शास्त्रमां कथे छे.

आंस्मजीन महसी.

(40)

पृथ्वी आदिक रूपे स्थित उपवन, गिरि, वस्नादि, गुजरात, पंजाब, इंग्लांड, युरोप, अमेरिकादि देशोमां मारापणानी दुांदियी राची माची तल्लीन बनी तेमां म्हालतां चेतन मार्यो जायले, देश, मृह, धनादिकमां मारापणानी बुद्धि धारतो मृत्यु पामी पुनः पुनः तद्यत वासना योगे जन्म धारण करी आधि व्याधि खपाधिनां दुःखो पामेळे. हे चेतन शुं तृष्णा जाळमां फसायछे ? स्वभावाभा-वरूप अज्ञानतमः राशिमां विवेक नयन शुन्यात्मा अत्र तत्र ऐहिक सुखनी भ्रान्तिए भ्रमण करतो, मनोराज्यनी संकल्प विकल्प श्रे-णिए चढवो छतो धूम्र द्वन्द ग्रहण पुरुषवत् क्षणिक तुच्छ सर्वदा जड पृथ्वीने पोतानी मानी तद्ये सहस्रशः जीव घातक बनी शोफा-पुरुषवत् स्वमहत्वतामां अन्य भव्यात्माओने पर्वताराहण पुरुष दृष्टिवत् छघु गणी पारमार्थिक तत्त्व शुन्यात्मा क्षणिक तुच्छ स्वा-र्थमां राची परवस्तुमां ममतानो दृढ भाव संकल्पी रात्री दिवस तिल्र• पीलक यंत्र वृषभवत् असदाचरणोमां स्वकाल अज्ञानी पशुवत् नि-र्गमेक्ने, पोतानाथी अत्यंत भिन्न पृथ्वी कोइनी थइ नथी, अने थवानी नथी मारी मारी मानशी ए केवल भ्रांतिछे, लक्ष उपायो करतां पण आकाश हायमां झाली शकातुं नथी. तेम कोटि उपायो करतां पण पृथ्वी देश, घरवार पोतानां थवानां नथी, देश, घरने जीव मुकी परभवमां चाल्यो जायक्रे, जे घर हाट म्हेळ बंधावतां रक्षण करतां चेतने जरा पण शांति छीधी नहीं, ते घर हाट मूकी मरण समये जीव टगमग जोतो जीववानी सहस्रशः आशाओं करतो पण परभवमां चाल्यो जायछे, साथे कोइ पण वस्तु आवती नथी, ज्यां जे वस्तु हती ते त्यांने त्यां रही, अनंता भव कर्या पण कोइ बस्तु साथे आबी नहीं, तो आ भवमां तुं कइ बस्तु पोतानी साथे छंडू जड़श ? हा अलबत कोइ पण वस्त पोतानी साथे आवनार

तथी, पौद्गलिक वस्तु उपर शो राग अने द्वेप करवो ? केटलीक वस्तुओ मले के अने केटलीक वस्तुओ नाश पामे छे, सगां संविधी वर्गनी मीति पण स्वार्थना लीधे क्षणिक छे. खरी वस्तु आत्मा छे, बाब पदार्थीमां मारापणानी बुद्धि थाय ले परमात्मपद पामी शकाय. आत्मतत्त्वमां मारापणानी बुद्धि थाय ले परमात्मपद पामी शकाय. घर हाट महेल आदि पौट्गलिक वस्तु कारमी छे, सुवर्ण, रुपुं, मोती, हीरा आदि सहु धन जे कहेबाय छे ले कारमुं छे, हे जीव तेमां तुं शुं ममता धारण करे छे ? जेनो संयोग तेनो अवस्य वियोग थवानो छे, पूर्वीक्त पुद्रलनो हृष्टा अने सुख दुःखनो झाता आत्मा देहरूप पुद्रलमां वस्यो छे, अनंतगुणनो धणी आत्मा छे, पांच मकारना शरी-रथी आत्मा भिन्न छे, पर परिणितमां लीन थए छो चेतन व्यवहान रथी कर्मनो कर्जा जाणवो.

आत्माना असंख्याता प्रदेशके, प्रत्येक प्रदेशे अनंतु ज्ञान श्रॉ जिनवरे कछुंके. आत्मामां अनंत धर्मनी अस्तिता रहीके, तेमज आत्मामां अनंत धर्मनी नास्तिता रहीके, अस्ति अने नास्ति धर्म समये समये आत्मामां वर्तेके, सत्ताए संसारी जीबोना प्रदेश नि-मैळ सिद्ध समान जाणवा अने ते समता रसनो मंडारके, शुद्धनम् यथी स्वज्ञानादिक गुणनो कर्त्ता आत्मा जाणवो.

आत्माना असंख्यात प्रदेशमां रमतां असंख्यपदेशका आत्मा पोते पोताना स्रारूपे स्थिर थतां अने शत्रु मित्रपर समपणुं ते का समता साथे रमतां क्षणे क्षणे अनंत अनंतगणुं सुख थायछे, आत्म स्वरूपनो स्ववीर्यध्याने उद्योत थतां परपरदेशनी ममता नष्ट थइ अने नाण्युं के—पुर्गळनी जाति माराथी भिन्नछे, अने हुं तेथी भिन्नछुं, तो मारे पुर्गळ जातिथी शो लाभ ? अने तेनो संग केम करवो जोइए ? अरेरे हुं अनादि काळथी तेनी संगतिथी खिन्न थयो.

(100)

भारमञ्चान महत्ता,

वळी पुद्गलने शत्रु तरीके छतां मित्र तरीके मानी राग देवना योगे विचित्र देहो ग्रहण कर्यो.

हवे आत्मा अने पुद्गल स्वरूप कर्मनो परस्पर कोना जेबो संयोग थयो ते कहेछे=क्षीर नीरवत=दुग्ध अने जळना संयोगनी पेठे.

ने देखायछे ते पुद्गलद्रव्य हे चेतन तारुं नथी अने तुं तेनो नथी तेम छतां तुं केम तेमां मारापणानी बुद्धि धारणकरछे, ज्यां सुधी चेतननी अवळी परिणितिछे त्यां सुधी संसार जाणवो, स-बळी परिणात थतां कर्मनो क्षय क्षणमां थायछे, अने आत्मा शुद्ध निरंजन परमात्मपद माप्ति करेछे.

पुद्गलनुं भोजन तरीके तथा पुद्गलनुं पाणी तरीके खान पान करवं, तथा वस्न तरीके पहेरवुं, पण पुद्गल जाणवुं, स्थान, पा-सादरूप पुद्गलद्रव्य जाणवुं. फोगट आत्माए पुद्गलमां वसी सु-स्वनी सहेल भ्रांतिथी मानी.

हवे हुं पुद्गल द्रव्यमां केम राची माची रम्रं? तेनी संगतिथी मारी खराब अवस्था थइ, मारा अनंत ग्रुणोनो पुद्गलद्रव्य घा-तक्क माटे ते मारो मित्र नथी, कारण के मारा करतां तेनो अ-वळो स्वभावछे, मारो चेतना ग्रुणछे तो तेनो जड ग्रुणछे, अरेरे तेनी संगतिथी आ संसारमां परिश्लमणकरतां विचित्र बनाव बन्या.

" दुहा. "

चार गतिना चोकमां, लख चोराशी बजार; त्यां बहु जन्म मरण करी, पाम्यां दुःख अपार १०३ पुद्गल संगे राग छे, पुद्गल संगे रोग; रुचि अरुचि पुद्गले, पुद्गलनो छे शोग. १०४

101)

घर पुद्गलनी लालचे, लडाइ करता लोक; राजन साजन मोटका, जन्म गमावे फोक १०५ विरोधिनी मित्रता, करतां निज ग्रण हाण; अज्ञानी मृढातमा, रणना रोझ समान चुंथी पुद्गल एंडनें, रमतो तेनी संग; विष्टाना कीडापरे, धरतो कर्म छढंग १०७ भ्रमित थइ भूली गयो, अविचल आत्मस्वरूपः अशुद्ध परिणतिथी अरे, पडियो भवजल क्प् र०८ चेत चेत ज्ञर आतमा, शुद्ध स्वरूप निहाल; आ संसार स्वरूप सङ्घ, परगट माया जाल. १०९ अधुना भ्रान्ति छोडीने, देखो अंतर्दृष्टि, अंतर्द्दष्टि देखतां, प्रगटे निजयण सृष्टिः तिरो भाव निजऋद्धिनो, आविर्भाव प्रकाशः परमातम पद ते कह्यं, ते पदनो इं दास-ते पद जेणे ओळख्युं, तेमां जेनुं ध्यानः साधुपद तेणे प्रद्धं, तेनुं शुःधुं ज्ञान. ११२ तत्पदना उपयोग वण, चाले जे व्यवहार; घाणी वृषभ तणीपरे, मटे नहीं संसार-813 राचो नव रस ज्ञानथी, काव्य करो को लाख: तत्पदना जपयोग वण, घी रेडो ज्युं राख- ११२

आत्मज्ञान सहस्ता.

तर्क नरक गाति दीय, जेने नाहे निज भानः शब्दशास्त्रथी भिन्नछे, आतमपद ग्रणवास् ११५ कथा पुराणी बहु करे, जन मन रंजे भाट, वाद वाघरी घेरछे, धर्म विना सहु वातः ११६ कियाकांड निव मुक्ति दे, जो नाई आतमभान, आत्मोपयोगी साधुने, धर्मिकियाः ग्रणखाणः ११७

भावार्थ-चतुर्गति संबंधी चतुरिशति लक्ष जीवयोनिमां आ प्रत्यक्ष शरीरिनिष्ठनीवे जन्म मरण करी अनंत दुःख पाम्पां.

पुद्गल ममता वा अरूचिथी जीवनी परिणति रागद्वेषमय
यह जायके, रूचि अरूचि पण पुद्गलना संबंधेके, पुद्गल संबंधे
होक थायके, देशधनादिक पुद्गलनी लालसाए दुनियाना जीवो
सहस्रशः जी होना माणनी आहुति युद्धाप्तिमां होमेके. रूशिया,
जापान, विगेरे युद्ध करेके ते पग पुद्गलनी लालसाथी जाणती.
महमद गीजनीवत् त्र्यो पुद्गल लालसामां रक्त बनी श्लोका
पुरूषवत् स्वमहत्वनी श्रमणामां भूली तत्त्व विवेचन विवेकश्रन्थ
अंतःकरणवालाओ अजागल स्तनवत् स्वआयुष्यनी निष्कलता करेके.

पुट्गल द्रव्य आत्मग्रुग विरोधी छे, तेनी मित्रता करतां स्व-कीय गुणनी हानि थया विना रहेती नथी, पुट्गलथी पोताने भिन्न नहीं माननार अज्ञानी मृदात्मा रणना रोज्ञ समान ज्ञान-शुन्य जाणवो.

आहार, पाणी आदि पुर्गलने अनंता जीवोए भोगव्युं तेज पुर्गलने आ जीव भक्षण करेछे, अनंता सिद्ध भगवंतीए संसारा-वस्थामा अनंता भव करी पुर्गल स्कंधोने स्वाधा, पीधा, विकी तेज पुद्गल द्रव्यने अभव्यादि जीवोए पण पोताना भोगमां ग्रह्मा माटे पुद्गल सर्व जीवोनी वमन करेली ऐंट जाणवी. ते ऐंटने हे जीव! तें अनंतिवार चूंथी, हाल पण चूंथेछे, भविष्यकाले पण कोण जाणे शुं थशे ? हजी तुं केम चेततो नथी, तारी अनंति ऋदि तारी पासेछे ते मूकीने तुं ऐंट चुंथे ते तारी ओछी अज्ञानना! अरे जीव तुं जरा मात्र पण शरमातो नथी, शुं तने भिक्षकनी पेटें पुद्गल ऐंट चुंथवाथी तृप्ति वळवानीछे ? ना कदी नहीं, जेटला पुद्गल ऐंट चुंथेछे ते गमे तो इंद्र, चंद्र, नरेंद्रादिक होस तो पण भिखारीना सरखा जाणवा.

प्रश्न-हे सद्गुरु! त्रयोदश गुणस्थानवर्ति श्रीतीर्थकर केवली पण

आहार पाणी ग्रहण करेछे तेथी ते पण शुं भिक्षुक जाणवा ? उत्तर—हे शिष्य—श्री त्रयोदश गुणस्थान वर्त्ति तीर्थकर महागंजे मोहनीय, अंतराय, ज्ञानावरणीय, दर्शनावरणीय, ए चार ४ कर्मनो सर्वथा क्षायिक भावे क्षय कर्योछे, वेदनीयादिक चार अवातीयां कर्म अवशेष रह्यांछे, क्षुधा लागवी, तृषा लागवी ए वेदनीयक ने विषयछे, मोहनीय कर्मना अभावे क्षुधा वेदनीयना उद्ये क्षुधा श्रांत्यर्थम् गृहभाटकवत् आहारादिक जुं ग्रहण करेछे, तेथी पुद्रल अंठ चुंथी कहेवाय नहीं, ममताभावे आहारादिक जे ग्रहण करेछे ते पुद्रल अंठ चुंथनारा जाणवा.

मुनिराजो के जे स्वस्वभावमां रमनारा अने परस्वभावना त्याग करनारा कदाग्रह त्याग करनारा श्रन्न मित्र सम दर्शक अध्यात्मनिष्ठ चित्तवृत्तिवंतो पुद्रछने माटे श्रुधा तृषा शांतिने माटे आहार पानादि ग्रहण करेछे, पण तेमां राचता नथी तेथी ते पुद्रग्णास्त्री अंड चुंयनारा जाणवा नहीं, मेवा मिष्टास्न आदि भक्षण करतो नथी पण ते भक्षण करवानी जेना मनमां लालसाई , अने

आत्मज्ञान महत्ता,

www.kobatirth.org

(308)

- ते मिष्टान्नमां राचे माचेछे तेने पुद्रल अंठ चुंथनार जाणवो.
- बाह्यभी स्त्री भोगववानुं पचल्लाण कर्युछे, पण अंतरमां स्त्री भोगववानी लालसा वनी रहीछे तो ते स्त्री भोगवनारज जाणबो. जो एम न मानीये तो घणा दोषो आवे.
- प्रश्न-कोइ बहुचराजीनो फातडो (पुरुष पण स्त्रीनो वेष पहेरनार)
 छे ते स्त्री कायाए करी भोगवतो नथी तो शुं ते ब्रह्मचारी
 कहेवाय के नहीं ?
- उत्तर-जो फातडाना मनमां श्ली भोगववानी इच्छा बनी रही छेतो ते व्यभिचारी जाणवी. कारण के रागथी कर्म बंधायछे, ते राग तो मनमां श्ली उपर बनी रह्यों छे माटे ऋजुसूत्र नयना मते व्यभिचारी जाणवी.
- प्रश्न-कोइ ठेकाणे एम कहुं छे के-मन जाय तो जाणे दो, मत जाने दो शरीरः बिन चढावी कामठी, क्युं लगेगा तीर. १ आ उपरथी सिद्ध थायछे के मन कदापि आडुं अवछं जाय तो हरकत नथी किंतु शरीर जवा देशो नहीं, कारण के शरी-रथी कर्म बंघायछे, माटे शरीरथी ब्रह्मचर्य पाने तो शुं ब्रह्म-चर्य कहेवाय नहीं ?
- उत्तर-ए कथननो सार ए छे के मनमां कदापि स्त्री भोगववानी इच्छा थइ पण हे भव्य शरीरथी स्त्री भोगवीश नहीं, कारण के तेथी एक तो कर्मबंध, ताडन तर्जन, निंदा, अवहेलनादि विशेष दोषो प्राप्त थशे, ते जणाववाने माटे अने वळी जाणवुं के-मनयोगनी साथे काययोग भले तो विशेष कर्मबंध थाय, तेथी एम शिक्षा वाक्य लख्युंछे.
- प्रश्न-कोइ माणसे मनमां एम चिंतच्युं के मारे विष खाबुं अने अन्य मनुष्ये विष भक्षण कर्युं, ए वे भध्ये कोने वधारे हानि

थाय ? तथा एक नुष्ये-का ाए करी लाख मनुष्य मार्श अने एक मनुष्ये मनमां चिंतवना करी लाख मनुष्य मार्थी तेमां विशेश दोष कोने लागे ?

उत्तर-कायाए करी विष भक्षकने विशेष हानि थाय कारण के ते मनोयोगथी चिंतनपूर्वक विष भक्षण करे छे, अने तेथी ते मृत्यु पामे छे. मनोयोगथी तेटली हानि थती नथी माटे प्रायः थोदो दोष जाणवो. कायाए लक्ष मनुष्य मारनारनी साथे मनोयोग भलेलो छे, तेथी विशेष दोष लागे तथा फक्त मनमां चिंतवनाथी लक्ष मनुष्य मारनारने तेना करतां थोडे। दोष लागे. प्रसन्न चंद्र राजर्षिए मनमां युद्ध करवाथी घणां कर्म उपान्धी तथी कर्मबंधमां मननी मुख्यता जाणवी, मननायोगे अन्यमहित्त थाय छे, मनमां विकर्ण संकर्ण थाय नहीं तेने माटे ध्याननी अग्यता छे, घणां कर्म ध्यान करवाथी नष्ट थाय छे.

श्री यशोविजयजी उपाध्यायजी कहे छे के

श्लोक

यत्र गच्छति परं परिपाकं, पाकशासनपदं तृणकल्पं ॥ स्वप्रकाशसुखबोधमयं तद्,ध्यानमेव भव नाशि भजध्ये १

भावार्थ — ज्यां ध्याननी परिपक्तता थएछते मुनिराज इन्द्रनी पद्वीने पण तृणखळां बरोबर जाणे, गणे, मारे पाताना आत्माना स्वरूपतुं प्रकाशक एवा ध्य नथी दुःखनी भ्रान्ति दळे छे, अनुभ-बयी भासे छेके — ध्यानिवना आत्मिकसुखनो अनुभव थतो नथी, केवळ सुखतुं निधान छे, तथा ध्यानथी आत्मानुं शुद्ध ज्ञान मगटे, माटे हे भव्यात्माओ! सुनिवरो! तमोए बाह्य उपाधिने स्यागीछे तो राग्रेषमोहादिक अंतर उपाधिथी भरपूर एवो जे चार

्(ंर्ड+६`) आस्त्रधर्म सहसा.

गतिरूप संसार तेनो नाश करनार जे ध्यान तेने सेवो, तेनो आदर करो, तेना उपर राग धरो. अने ध्यानवंत पुरुषोनी संगति करो के जेथी मित श्रुतशाननी स्फूर्ति थाय जे ध्यानतुं अवलंबन करतां मसस्रचंद्र राजर्षि कर्मग्रंथी छेदी मोक्षे गया ते ध्यानतुं अवलंबन करवायी मतुष्य जन्मनी साफल्यता जाणवी.

श्लोक.

आतुरैरपि जंहैरपि साक्षात्, स्रत्यजाहि विषयाननुरागः ध्यानवांस्तु परमद्यनिदर्शी, तृप्तिमाप्य नतमृच्छति भूयः २

भावार्थ-कामातुर अने जड पुरुषोवडे पण कारण पामी पंचेदियना विषयो त्यजायछे. जेमके-कोइने श्ली भोगवबीछे पण केद-त्वानामांछे, तथी छखे विषय त्यागे. कोइ रोगी दवालावाना मसंगे चरी पाळेछे, तथी शाकादिकनो छखे त्याग करेछे, पण ते विषयनो कारणीभृत जे राग तेनो नाश थतो नथी. राग दशा त्यागबी दुर्घटछे. किंतु ध्यानवंत पुरुष तो मात्र परमात्म स्वरूपने देखनारछे तथी ते ध्यानमां तृप्ति मानी पुद्रल वस्तुने न्यारी गणी बात्म स्वरूपमां मन्न थयो छतो अत्वंत आनंद भोगवेछे, तेवीध्याव दशा पामी फरीथी विषयनुं मूल कारण रागदशाने वांछता नथी, कारणके ध्यानीने विषयमां थती जे सुखनी भ्रांति ते टलीछे तथी राग थाय नहीं.

श्लोक.

यानिशा सकलभूतगणानां, ध्यानिनो दिनमहोत्सव सएषः । यत्र जाप्रति च तेऽभिनिविष्टा, ध्यानिनो भवति तत्र सुष्ठिः सर्व प्राणीने निद्रामां जे रात्रि जायके, ते रात्रि ध्यानदश्चावंत स्निने दिवसना महोत्सवरूपके, अहो ध्यानिनी केटली उत्तमता तेतुं सुल अनुपमके. अने संसारी जीव विषयमां लीन यह जे वेलाए जागेके ते वेळा ध्यानवाळा सुनिराजने शयनरूपके, एमां केटलो भेदके ते विचारवो.

श्लोक.

नध्यते न हि कषायसमुत्यैर्मानसैर्नततभूपनमित्रः अत्यनिष्टविषयैरापि दुः लेध्यानवान् निभृतमात्मनिलीनः १

भावार्थ-ध्यानवान पुरुष रागद्देषरूप कषाय जिनत मन्धी वंधातो नथी. ध्यानीने नृपतितित आवी नमस्कार करे तोपण तेतुं चित्त डोळातुं नथी, अर्थात् तेना मननी स्थिरता पूर्वना जेवी बनी रहे छे. अत्यंत अनिष्ट विषयना दुःखे पणनिश्चळपणुं छोडे नहीं तेने आत्मामां लीन जाणवो.

श्लोक.

स्पष्टदृष्टसुलसंभृतमिष्टं, ध्यानमस्तु शिवशर्मगरिष्ठं । नास्तिकस्तु निहतो यादेन,स्यादेवमादि नयवाङ्मयदंडात्

भावार्थ-स्पष्टदुष्टसुखे भर्यु एवं इष्ट ध्यान ते मोक्षना सुत करतां पण अधिकछे, पग ज्यांसुधी शास्त्रना दंड थकी नास्तिक भावने अतिशयपणे हण्यो नथी त्यां सुधी नथी, पण नास्तिक भावे रहित जे ज्ञान ते मोदुंछे.

श्लोक.

ज्ञातेद्यात्मिन नोभूयो ज्ञातव्यमवशिष्यते । अज्ञानंपुनरेतस्मिन् ज्ञानमन्यन्निरर्थकम् ॥१॥

(१०८) आतमधर्म महत्ता.

जेने आत्माने जाण्यो तेने पुनः किंचित् अन्य जाणवातुं रंगुं नथी, अने यावत् आत्माने जाण्यो नथी तावत् अन्य सर्व जाण्युं निर्श्वक छे.

श्लोक,

नवानामिष तत्त्वानां, ज्ञानमात्मप्रसिद्धयेः येनाजीवादयो भावाः स्वभेदप्रतियोगिनः १ नवतत्त्वतुं ज्ञान पग आत्वज्ञान पगट करवाने माटेडे, कारण के अजीवादिक जे भाव ते पण आत्मज्ञानवडे ज्ञमायछे.

.श्रोक.

एक एवहि तत्रातमा, स्वभाव समवस्थितः । इस्मान्दर्शनचारित्र, लक्षणप्रतिपादितः १ प्रभा नैर्मल्यशक्तीनां, यथा रत्नान्नभिन्नताः इस्मान्दर्शनचारित्र, लक्षणानां तथात्मनः २ आत्मनो लक्षणानां च, व्यवहारो हि भिन्नता। पष्ठयादिव्यपदेशेन, मन्यते न तु निश्चयः ३ घटस्यरूपमित्यत्र, यथा भेदो विकल्पजः। आत्मनश्च ग्रणानां च, तथा भेदो न तात्विकः ।

त्यां आत्मा एक पोते स्वस्वभावपणे रह्योछे, ते आत्मा ज्ञान दर्शन, चारित्ररूप लक्षणे करी युक्तछे.

रत्ननी कांति अने निर्मलता शक्ति कंइ रत्न थकी भिन्न नथीं तेम ज्ञान, दर्शन, चारित्र लक्षणथी आत्मा भिन्न नथी. आत्मा अने आत्मानुं लक्षण ए वे व्यवहारे जुदाछे ते षष्टी विभक्तिना व्यपदे-श्रायी मनायुखे किंतु निश्चयुथी नहीं.

पश्माश्मदर्भन.

(108)

जेम घट अने घटनुं रूप तेनो भेद विकल्प मात्रके ते ममाणे आत्मा अने आत्माना गुणोनो भेद तास्विक नथी.

श्लोक.

वस्तुतस्तु ग्रणानां तद्भूपं न स्वात्मनः पृथक् आत्मास्यादन्यथानात्मा, ज्ञानाद्यपि जडं भवेतु॥

भावार्थ-वस्तुतः जोतां गुणोतुं अने आत्मातुं रूप जुदुं नथी यदि भिन्न कथीए तो आत्मा ते अनात्मा थाय ज्ञानादिक पण जह थाय.

श्लोंक.

मन्यते व्यवहारस्तु, भूतग्रामादिभेदतः । जन्मादेश्व व्यवस्थातो, मिथो नानात्वमात्मनां । न चैतन्निश्चये युक्तं, भूतग्रामो यतोऽिष्वेलः नामकर्मप्रकृतिजः स्वभावोनात्मनः पुनः ।

जन्मावस्था बाल, युवान, दृद्ध, स्त्री, पुरुष, नपुंसक आदि मेदथी आत्माओतुं विचित्रपणुं व्यवहारनयवाळो मानेछे, पण ए बात निश्चयनये जोतां युक्त नथी अर्थात् सत्य नथी, ते नय एन कहें छे के-जीवने सर्व अवस्था नामकर्मना स्वभावथी प्रगटेछे पण ते आत्मानो स्वभाव नथी.

श्लोक.

जन्मादिकोपिनियतः परिणामो हि कर्मणाः न च कर्मकृतो भेदः स्थादात्मन्यविकारिणि

(११०) शासमधर्म महत्ताः

निश्चयनयथी जोतां जन्म जरा मरणादिक परिणाम ते आ-त्मानो नथी पण ते कर्मनो परिणामछे माटे अविकारी आत्माने विवे कर्मनो बास्तविक संबंध नथी.

श्लोक.

यथा तैमिरकश्चंद्र, मप्येकं मन्यते द्विधाः अनिश्चयकृतोन्माद स्तथात्मानमनेकधा

भावार्थ-जेम तिमिर राग बाळा एक चंद्रने बे तरीके मानेछे तेम निश्चयनयना ज्ञान विनानो उन्मादक माणी आत्माने अनेक मकारे मानेछे.

श्रोक.

व्यवहारविमूदस्तु, हेतूंतानेव मन्यते । बाह्यिकयारतस्त्वान्त स्तत्वं गूढं न पश्यति १

भावार्थ-व्यवहारनयमां रक्त विद्वातमा परपर्यायने पोताना फलहेतु मानेछे माटे जेतुं मन बाह्य क्रियामां रक्तछे तेवा माणी ग्रह्म तक्त्वने देखी शकता नथी.

श्लोक.

अज्ञानी तपसा जन्म, कोटिभिः कर्मयन्नयेत्। अन्तं ज्ञानतपो युक्तं, तत्क्षणनैव संहरेत्॥

कानिवना एककोटि भवसुधी अज्ञानी जेटलां तप करे ते तपमां जेटला कर्मनो क्षय न थाय तेटला कर्मोने एक क्षणमां ज्ञान सहित तपश्चर्याए खपावे.

श्लोक.

तद्ध्यानं सा स्तुतिर्भक्तिः सैनोक्ता परमात्मनः । पुण्यपाप विद्वीनस्य, यद्भुपस्यानुनितनं ॥

शरीररूपलावण्य, वप्रछत्रध्वजादिभिः। वर्णितेर्वीतरागस्य, वास्तवीनोपवर्णनाः॥

पुण्यपापरहित परमात्माना स्वरूपतुं चितवन करबुं तेने ध्यान कहेबुं अने स्तुति तथा भक्ति पण तेज जाणवी.

पण शरीरना वर्ण लावण्य-वम, छत्र ध्वजाओथी परमात्माओने करी परमात्माने वखाणवा एवी जे स्तुति ते वस्तुतः बास्तविक स्तुति मथी.

व्यवहार स्तुतिः सेयं वीतरागात्मवर्तिनां; । ज्ञानादीनां ग्रणानां तु, वर्णना निश्चयस्तुतिः ॥ पुरादिवर्णनात् राज, स्तुतिः स्यादुपचारतः । तत्त्वतः शौर्यगांभीर्ध्य धैर्धादि ग्रणवर्णनात् ॥

श्री तीर्थकरना शरीरादिक नुं वर्णन करवं एवी जे स्तुति ते व्यवहारे जाणवी. अर्थात् ते व्यवहार स्तुति जाणवी. पण वीतराग परमात्माना झानादिक गुण मशंसवा अने ते गुणो पोताना आत्मा-मां सत्ताए रह्या छे एम जाणी तेनुं ध्यान करवुं. तेज खरी स्तुति छे परमात्म स्वरूप हुं छुं, एम सतत हुढ निश्चयथी चिंतववुं ते निश्चय स्तुति जाणवी.

जेम देश नगरादिकना वर्णनथी राजने वखाणेला ते उपचारे स्तुति जाणवी अने राजानुं बल गांभीय्य धैर्यादिक गुणोनुं वर्णन ते निश्रय स्तुति जाणवी.

श्लोक.

पुण्य पाप विनिर्मुक्तं तत्त्वतस्त्वविकल्पकं । नित्यं नहा सदा ध्येयमेषा शुद्धनयस्थितिः ॥

आत्मधर्म सहत्ता.

षुण्य पाप रहित अने तस्वयी जोतां निर्विकस्य एको शास्तत आत्मा ध्यान करवा योग्यछे. भव्यात्माओए तेतुं ध्यान करवुं एकी शुद्धनयनी स्थिति जाणवी. ए ध्यानयी घातिकर्मनो पण सहजमां क्षय थायछे.

आत्मध्यानीने क्रोधादिक शत्रुओ उपद्रव करी शकता नथी, अदेखाइ पण थती नथी. आ स्थळे क्रोधादिकतुं वर्णन करेले. क्रोधादिकतुं स्वरूप.

आत्माना गुणोनो घातक क्रोधहर चंडालके, क्रोधहरि अभि हृदयने बालेले. तथा शरीरने तपावेले. वळी क्रोधथी चित्तनी नि-र्मछता नाश पामेछे अने मन शान्त बहु बखते थायछे. कोइ महा-त्माने कोइ शिष्ये पश्च कर्यु के हे पूज्य, हुं क्रोधथी क्यारे मुक्त थाउं ? त्यारे मत्युत्तरमां जणाच्युं के समताने आदरे त्यारे. क्रोधरूप अग्नि धर्मद्रक्षने बाळी भस्म करेछे, ग्रुग्रुश्चए धेर्य धारणकरी उपजता क्रोधने सहनशीलताथी जीतवो. जे मनुष्यना हृदयमां क्रोधरूप अप्रि रहेछे ते अपवित्र जाणवो. मनुष्य ते गंगाना जलमां स्नान करे तो पण क्रोधदोष गया विना पवित्र थतो नथी. मनुष्य ज्यारे अन्यना उपर क्रोधायमान थायछे त्यारे कर्म क्रोध करनारना उपर क्रोधायमान थायछे, क्रोधरूप चंडाळ छिद्र जोइने हृदयमां प्रवेश करेक्टे, कोइ वखत तो तेन्नं एटलं जोर थायछे के ते क्रोधना उदये मनुष्य घणा जीवोने मारी नांखेछे. क्रोध बुद्धिनो शत्रुछे. स-मतासागरमां क्रोध वडवानल समानछे, क्रोधरूपी अपि हृद्वयम्। मगट थायछे त्यारे तेनी धूमाडो ज्ञरीरमां मसरेछे. क्रोधनुं कारण परस्वभाव रमण जाणवुं, परवस्तुमांथी मारापणानी बुद्धि टळी आ-त्मस्वरूपमां जेनुं मन लीन थयुंछे तेवा महात्माओना हृद्यमां क्रोध-रूप अफ़्बास करतो नथी. कारण के तेमना इत्यमां समक्षकप

गंगा नदी सदा वहा करेछे. त्यां मलीनता रही शकती नथी. आहार, बस्न, स्थान, धन, अपमानथी क्रोध उत्पन्न थायछे, आहारादिक उपर ममता थवाथी तेनुं कोइ हरण करे तो क्रोध उत्पन्न थायछे. मीति ज्यां होय त्यां पण क्रोध करवाथी थायछे. वैर क्रोधने क्षमाथी जीतायछे. अदेखाइ संतोषथी जीतायछे. क्षमाथी क्रोधरूप अग्नि शान्त थायछे.

यतः श्लोक.

क्षमा नाथः क्षमा तातः क्षमा माता क्षमा सहते। क्षमा लयश्च लक्ष्मीश्च, क्षमा शोभा क्षमा शुभं. क्षमा श्लाघा क्षमाचारः, क्षमा कीर्तिः क्षमा यशः क्षमा सत्यं च शौचं च, क्षमा तेजः क्षमा रितः क्षमा श्रेयः क्षमा पूजा, क्षमा पथ्यं क्षमा हितं । क्षमा दानं पवित्रं च, क्षमा मांगल्यमुत्तमं. ₹. क्षमा बुल्यं तपो नास्ति, न संतोषात् परं सुलं। न मैत्री सदद्यं दानं, नास्ति धर्मो दयासमः Ø. कामक्रोधसमेतः सन् किमरण्ये करिष्यति । अथवा निर्जितावेतौ किमरण्ये करिष्यसि. सकपायस्य चित्तस्य, कषायैः किंप्रयोजनं । अथवा निष्कषायत्वं, कषायैः किप्रयोजनं. Ę किमरण्येरदांतस्य, अदान्तस्य किमाश्रमैः । यत्र यत्र वसेदांतः, तदरण्यं स आश्रमः

क्षमाथी आत्मोद्यति,

कमा खड्गं करे यस्य, दुर्जनः किं करिष्यतिः अतृणे पतितो वन्हिः स्वयमेवोपशाम्यति

क्षमा एज भव्यात्माओनो नाथ जाणवो, माता पिता मित्र समान पण क्षमा जाणवी. क्षमा एज मोटी शोभाछे. क्षमा एज कीर्त्ति जाणवी. कारण के जेनामां क्षमा नथी अने क्रोधे करी धमधमाय-मान सदा रहेके. तेनी कीर्त्ति जगमां थती नथी. क्षमाथी कीर्त्ति उत्पन्न थायछे. क्षमा तेज सत्य जाणवं. क्रोधीमां सत्य क्यांथी होय. क्षमा एज मोटी पवित्रताछे. क्षमा विना स्नान पण लेखे नथी. दान पण छेखे नथी. क्षमा रहीत साधु होय तो ते नामनो साधु जाणवो, ज्यां क्षमा नथी त्यां गंभीरता रहेती नथी. क्षमा एज मोई तेजछे, सुखकारक आनंद्यदा पण क्षमाछे, जे क्रोधी होय ते आ-नंद क्यांथी पामे ? क्रोधीना अनेक वैरियो दुनीयामां होयछे तेथी क्रोधीने निरांते उंघ पण आवती नथी. वळी क्रोधी मनुष्यनो कोइ मित्र पण होतो नथी. कारण के ज्यां त्यां क्रोधधी तेना उपर अधीत जलनी दृष्टि थया करेछे, क्षमा कल्याणकारीछे, जे मनुष्यमां क्षमा नथी ते पोताना तथा परना आत्मानो घातक बनेछे. क्षमा मोटी पूजाछे. कर्परूप रोगथी रहीत थवा माटे क्षमा पथ्यछे. क्षमा एज मोहं हितछे. क्षमा ए मोहं दानछे. जेनामां क्षमाछे ते पोताना आ-त्माने ज्ञान दर्शन चारित्र गुणोनुं दान आपेछे. क्षमा तुल्य अन्य कोइ तप नथी. क्रगड ऋषिए क्षमारूप तपथी आत्महितनी सिद्धि करी. श्री वीरभगवाने क्षमावडे अनेक उपसर्गी सहन कर्या, श्री मेतार्यप्रनिए क्षमायी आत्महित साध्युं. श्री स्कंधकसूरिना शिष्योने वाणीमां वाली पील्या पण तेमणे क्षमाथी कर्म शत्रुनो पराजय करी. आत्मिक लक्ष्मी माप्त करी. समरादित्य केवळीए साधु अवस्थामां श्रमाए करी घोर उपसर्ग सहन कर्या. श्रमाधारक अनेक मुनिवरोए परमात्मपद माप्त कर्युं भविष्यत् काले पण करहो, अंतरमां क्रोधरूप अप्रि सळगी रह्योछे अने बाह्यथी छठ अहम विगेरे करे तोपण आत्महित यतुं नथी. क्रोध नरकतुं बारणुंछे. क्रोध फणीधर सर्प समानछे ते क्षमारूप नागदमनी औषधीथी वश थायछे. क्षमाना समान तप नथी, संतोष समान सुख नथी. दया समान धर्म नथी.

काम अने क्रोध सहीत जे प्राणीछे ते जंगलमां जोगी यह वास करशे तो पण शुं थयुं ? अलबत कंइ नहीं. अयवा जेणे काम क्रोध जीत्याछे ते अरण्यमां जह शुं करशे ? अलबत कंइ नहीं. काम क्रोधनो ते जय कर्योछे तो तुं अरण्यमां जह शुं करीश ? जेनुं चित्त काम क्रोधादिक कषाय सहीतछे तो तेने कषायलां वस्न पहेरवावडे करी शुं ? अथवा जो चित्तमां काम क्रोधादिक कषा-यनी उत्पत्ति नथी तो तेवा पुरुषने कषायलां वस्न पहेरवाथी शुं ? अर्थात् कंइ नहीं.

जेणे इंद्रियो दमी नथी तेने अरण्य थकी शुं ? तथा अदांतने आश्रमोवडे करी शुं ? अर्थात् कंइ नहीं. जेने इंद्रियीने जीतीछे एवो दान्त पुरुष जे ठेकाणे वसे ते अरण्य तथा आश्रम जाणवुं. माटे भव्यात्माओ क्षमा धारण करो. क्षमा रूप खह्म जेना हाथमांछे तेने दुर्जुन शुं करशे ? अर्थात् कंइ नहीं, तृण विनानी जगाए पढेलो अंगारो पोतानी मेळे शान्त थइ जायछे, तेम आपणा उपर अन्य पुरुष क्रोध कर्यो पण आपणे क्रोध करी शुं नहीं अने क्षमा राखी शुं तो अन्य पुरुष आपणा उपर वरसावेलो क्रोध पोतानी मेळे शान्त थशे.

श्लोक.

कोधान्धाः पश्य निघंति पितरं मातरं ग्रहम् । सुहृदं सोदरं दारा नात्मानमपि निर्घृणाः ॥ १ ॥

(१९१) क्षमाथी आसोज़ति.

हे भव्य देख क्रोधान्ध जीवो पिता माता अने गुरुनो पण नाश करेछे तेमज मित्र सहोदर स्नी तथा पोताना आत्मानो पण निष्ठुर पुरुषो क्रोधवशे घात करेछे. माटे क्रोधने त्यामी क्षमा भा-रण करवी, भव्य प्राणी क्षमा धारण करी सामायक समभाव स्वरूप करे आत्मा अने आत्माना गुणो ज्ञान दर्शन चारित्रादिक मुंस्वरूप सन्मां विचारे-

यतः श्लोक.

नचात्मनः पृथक् ज्ञाना, दि त्रयं विद्यते कित्त । ज्ञानादि त्रयं मेवात्मा, नास्य क्वापि परा भिदा ॥१॥ आत्मानमात्मना वेत्ति, मोहत्यागाद्य आत्मिन । तदेव तस्य चारित्रं । तज्ज्ञानं तच्च दर्शनम् ॥१॥ आत्माथी पृथक् ज्ञानदित्रिक नथी, ज्ञानदित्रिक खरूप आत्मा के, न्यवहारथी तेनो भेद जाणवो.

श्री इरिभद्रसूरियोगपदीपमां सामायिकतुं लक्षण कहेछे.

श्लोक.

अतीतं च भविष्यं च यन्न शोचित मानसं । तत् सामायिक मित्याहु, निर्वातस्थानदीपवत् १ निस्संगं यन्निराकारं, निराभासं निराश्रयं । पुण्यपापविनिर्मुक्तं, मनः सामायिकं स्मृतं ॥२॥ गते शोको न यस्यास्ति नैव हर्षः समागते । शबु मित्र समं चित्तं, सामायिक मिहोदितं ॥३॥ भावार्थ अतीतकालमां जे थइ गयुं, आपणा संबंधी वा परसं-वंशी तेनो विकल्प संकल्प करे नहीं, वा अतीतकाल संबंधी कोइ बात याट करे नहीं. सारांश के अतीतकाल संबंधी शोक करे नहीं. देग अविष्यकाल संबंधी स्व अने पर आश्रयी विकल्प संकल्प करी चोक करे नहीं. विकल्प संकल्प रहीत आत्मानी स्वउपयोगे अव-्रस्थीत-तेने सामायिक कहेछे कोनी पेठे ते दर्शावेछे, बायु रहीत ्टीबानी ज्योतिनी पेठे टीवाने वाय लागतां ज्योति चंचळ शायले. ेतम आत्मामां पण विकल्प संकल्प थतां आत्मा चंचल यह परस्व-भावमां पडेछे. माटे एकाग्रचित्ते स्थिरपणे एक आत्मस्बरूपमां उप-योग राखवो ते साम।यिक जाणवं मनमां कोइ पण वस्त चितवची नहीं, मननी साथे कोइ पण वस्तुनो संग थाय नहीं. अर्थात मन अन्य वस्तुना संगधी रहीत होय, कोइपण वस्तुनो आकार मनमां चिंतववो नहीं, मनमां कोइ पण वस्तुनो आभास रहे नहीं. कोइपण वस्तुना आश्रय रहीत मन निराश्रित होय, मन पुण्य अने पापना व्यापार रहीत होय, मनने आत्म स्वरूपमां लीन करी देवुं, जेम भरउंघमां कोइ पण वस्तुना व्यापार रहीत बाह्यथी देखतां ज-णायछे, तेम भरउंघनी पेठे पस्वस्तुने भूली अखंड निर्मल आत्म स्बरूपमां आत्म स्वभावे जागवुं, अने परस्वभावनी चिंतवना करबी नहीं अने तेने सामायिक कहे छे.

गतकाल, गतअवस्था, गतवम्तु आदिने विषे मनमां शोक श्वाय नहीं, अने आवतो काल, आवनार भावीकाले वस्तुना इह संयोग तेनो मनमां हर्ष थाय नहीं, अने शत्रु तथा मित्र उपर समिचत होय एवी जे आत्मानी अवस्था तेने सामायिक कहे छे. आ उपरना श्रण श्लोको कथाकोष ग्रंथमां कहा छे. जे भन्यात्माओने क्षमाव हे तथा समपणे सामायक वर्ते छे तेमने क्रोधादिक शत्रुओ पराभव करी शकता नथी.

भव्यात्माए मुक्तिपद्नी चाहना राखतां अदेखाइनो नाशक

(116)

श्रदेखाइनी नाश करवी.

रवो जोइए. अदेखाइ रूप नागण हृदयमां पेसतां आत्माना गुणो इणायछे. परना गुणो सांभळी तथा परजीवनी कीर्त्ति सांभळी पाणी विचारे छे के-हाय, हाय ते माराथी वधारे वलगायछे लोकोमां तेने वधारे मान मळेछे, एनी जो भूल काढुं वा एना उपर कंड् कलंक चढे तो ठीक थाय एम पाप विचार करी लोकोनी आगल निंदा करे. खोटां कलंको चडाववां. ए सर्व फलछे. नागण कदापि कोइने करहे तो सारी पण अदेखाइरूप नागिणी जे पाणीने इसेछे तेनुं आ भवमां तथा परभवमां पण खराव थायछे, अदेखाइ ज्यां सुधी हृदयमांछे त्यां सुधी आत्मज्ञान थतं नथी. वकील वकीलनी साथे अदेखाइ, साधु साधुनी साथे अदेखाइ, वेपारी वेपारीनी अदेखाइ, शोक शोकने अदेखाइ पायः रहेवानो संभवछे, माटे आत्मार्थी पाणी मनमां विचारे के-सर्व प्राणी, पोतानां कर्मयोगे ज्ञाता वा अश्वाता भोगवेछे. कोइनी कीर्ति थाय तेमां मारे शा कारणथी अदेखाइ करवी ? जेवां कर्प ते ममाणे यश वा अपयश थया करेछे, तेमां मारे शुं ? यश वा अपयश, मान वा अपमान ए कंइ आत्मिक वस्तु नथी हुं आत्मा तेनाथी भिन्नछुं, हं कर्मयोगे कोइ वावत राजी थयो ते वावत याचकोए कीर्त्ति गाइ, पण तेमानं आजे कंइ नथी. वळी कोइ भवमां अपमान पण घणां थयां हशे पण तेमां नुं हाल कई नथी. जे पोतानी वस्तु नथी तेमां अहंभाव संकल्पी वे.म रति अरति करवी जोइए, कहुंछे के-

कवहिक काजी कबहिक पाजी, कबहिक हुआ अपभ्राजी, कबहिक जगमें कीर्त्ति गाजी, सब पुद्गलकी बाजी. आप स्व० १

धवलकोठ श्रीश्रीपालनी अदेखाइथी अंते मरण पाम्या अने दुर्गतिमां गया. धवलकोठे अदेखाइथी शुं शुं कृत्य कर्यु नथी, दुनी-यामां अदेखाइ करनारनी पडती थया विना रहेती नथी. अदेखा- इथी निंदा कपट हिंसा, असत्यादि दोषो उत्पन्न थायछे, विशेषे शं कहेबुं ? आत्मार्थी पुरुषे अदेखाइनो नाश करवो तेनो नाश करवा संत पुरुषोनी संगति करवी.

जे पुरुषने मानदशा होयछे ते मानी कहेवायछे, मानी पुरुष छत्य अछत्यने विचारतो नथी, तथा तेने जरा पण श्वान्ति मळती नथी अने ते विद्या धन पामी शकतो नथी, लघुताथी प्रभुता थाय माटे लघुता भावी माननो नाश करवो. रावण दुर्योधनादि पुरुषोए मानथी दुःखराशि प्रहण करी. गमे तो राजा होय. करोडाधिपति होय तोपण मान दशा ज्यारे छूटे त्यारे कल्याण थायछे, बाहुबल मुनिवरने मान केवलझानमां विद्यकारक थयो. अने ज्यारे मानदशा छोडी त्यारे केवलझान उत्पन्न थयुं श्री यशोविजयजी उपाध्याय मान नामना पाप स्थानकनी सङ्गायमां कहेछे के— विनयश्चत तपशील त्रिगण हणे सवे,माने ते ज्ञाननो भंजक होय भवोभवे; छंपक छेक विवेक नयणनो मानछे, एहने छंडे तास न दुःख रहे पछे.

इत्यदि विचारी भव्य पुरूषोए मानद्ञा त्यागी आत्मस्वरूप-मां आयुष्य गाळवुं. मायास्वरूप कथाकोश ग्रंथे आ ममाणे छे. माया परित्याग महो विधाय, सदार्जवं साधुजना विधत्ते यथैहिका मुष्मिक कामितानां, सिर्द्धिभवदःपरमार्थशुद्धा यतः श्लोक.

दंपती पितरः पुत्राः सोदय्याः सहदो निजाः । ईशा भृत्यास्तथान्येऽपि माययाऽन्योऽन्य वंचकाः ॥१॥ सर्वे जिम्हं मृत्युपद मार्जवं ब्रह्मणः पदं । एतावान् ज्ञान विषयः प्रलापः किं करिष्यति. ॥३॥

समग्र विद्या वैदुष्येऽ, धिगतासु कलासुच । धन्यानामुपजायेत । बालकानामिवार्जवं 11511 अज्ञानामपि बालानां, आर्जवं प्रीतिहेतवे । कि पुनः सर्वे शास्त्रार्थ परिनिष्ठित चेतसां. 11811 श्रुताब्धि पारमाप्रोपि । गौतमो गणभृद्धरः अहो देशक इवाश्रोषीत आर्जवाद्भगवद्भिरः 11411 अशेषमपि दुःकर्म रुज्वा लोचनया क्रिपेत्। क्रुटिलालोचनां कुर्वन् अल्पीयोपि विवर्धयेत् 11811 काये वनसि नित्तेन समंतात् कुटिलात्मनां। न मोक्तः किं तु मोक्तः स्यात् सर्वत्रा क्रटिलात्मनां ७ तपः क्रिया ज्ञान विचक्तणा अपि। कौटिल्यमेकं न परित्यजंतः॥ दुर्योनि दुःखानि लभांति ते नराः। साध्वी यथा वीरमतीति नाम्नी.

अहो आ जगत्मां जे खरेखरा गुणोथी साधुजनोछे ते कप-टना त्याग करी सरलताने धारण करेछे, आ भव अने परभव संबंधी इच्छित कार्योनी सिद्धि सरलताथी थायछे. अने परमार्थथी विचारतां धर्मनो अधिकारी पण निष्कपटी भव्यात्माछे. बीओ पि-ताओ, पुत्रो, मित्रो सहोदरो, स्वामीसेवक आदि मायावढे परस्पर वंचक जाणवा. मृत्युने देनार (मृत्युपद) कपट जाणवुं. सरलता ब्रह्मसुं स्थान आत्माने हितकारकछे. समप्रविद्याएकरी विद्वान होय अने सर्वकछानो वेत्ता होय तोपण कपटनो त्याग थवो मुश्केछछे. धन्यछे एवा पुरूषोने के नानां भोळां बाळकोनी पेठे सरछताने धारण करेछे.

जेने तत्त्वतुं ज्ञान नथी एवा वालकोनी सरलता पण प्रीति माटे थायछे तो जे सर्व ज्ञास्त्रार्थना पारंगामीछे, एवा पंडितोनी सरलता आत्माने विशेष हितकारी थाय तेमां शुं कहेवुं ?

श्रुतज्ञाननो दरियो एवा गौतम गणधरे पण सरलताथी भग-वाननी वाणी सांभळी अहो केवी आश्चर्यता ?

सरलपणे आलोचना करवाथी घणां कर्मने पाणी खपावेछे. क्रटिलताथी आलोचना करतो अल्प पापी होय तो पण पाणी पापने वधारेछे, जेनी कायामां मनमां वचनमां कुटिलताछे, एवा जीवो उत्कृष्ट तप तपे, आकरी क्रिया करे, वैराग्यरंगमां झील्या होय एवा देखाय तोपण तेनो आत्मा कर्परहीत थइ मोक्षपद पामतो नथी, मायाए रहीत जीवोनो मोज थायछे एमां संदेह नथी. विचित्र प्रका-रनां तप अने विचित्र प्रकारनी धर्म संबंधी क्रिया अने ज्ञानमां विचक्षण एवा पुरूषो पग एक समग्रदुःखमूलभूता कुटिलताने सेवता दुर्योनिमां उपजी विचित्र प्रकारनां भयंकर दुःखोना भागी थायछे. जेम वीरमती नामनी साध्वी कुटिलताथी दुःख पामी तेम कपटी पुरुषो पग धर्म विषयमां कुटिलता करी चतुर्गतिरूप संसा-रमां परिश्रमण करेछे, माटे आत्मार्थि पुरूषोए मने करी वचने करी तथा कायाए करी कुटिलतानो त्याग करवो, निष्कपटी मन-व्यने धर्म परिणमेछे. उदायीराजानो घातक बाह्यथी साधु अने अत्यंत विनयवंत एवो विनयरत्न कुटिलताथी मरी नरकमां गयो, हेम तेनी पेठे जे धर्माचारमां बाह्यशी जुदां आचरण अने मनमां जूदं एम करको ते धर्मरत्न पामी शकको नहीं अने दुःखना भागी थको. भावधर्मनी प्राप्ति कोइ विरला जीवोने थायछे. द्रव्य धर्म तो कपटी पण आदरेछे, आत्मज्ञानी समिकती जीवने भावध-र्मनी प्राप्ति थायछे, सारांश के मायानो त्याग करशे ते परमात्मपद पामवाने योग्य थको. श्रीयशोविजयजी उपाध्याय कहेछे के-

श्लोक.

दंभेन व्रतमास्थाय; यो वांछित परंपदं ।
लोहनावं समारुद्या, सोऽब्धेः पारंपियासित ॥१॥
केश लोचधरा शय्या, भिक्षा ब्रह्मब्रतादिकं ।
दंभेन दुष्यते सर्व, त्रासेनैव महामणिः ॥२॥
सुत्यजं रस लांपट्यं, सुत्यजं देह भूषणं ।
सुत्यजाः कामभोगाद्या, दुस्त्यजं दंभसेवनम् ३
स्वदोष निन्हवो लोक, प्रजास्यात् गौरवं तथा ।
इयतैव कदर्थ्यते, दंभेन व्रत बालिशाः ४
अहो मोहस्य माहात्म्यं, दीक्षा भागवतीमापि ।
दंभेन यद् विलुंपंति, कज्जलेनेव रूपकं ५
आत्मोत्कर्षात् ततोदंभात्, परेषां चापवादतः।
बध्नाति कठिनं कर्म, बाधकं योग जन्मनः ६

कपट्यत्तिथी पंचमहात्रत ग्रही जे जीवो परमपद्ने वांछे छे, ते जीवो लोहनी नावमां बेसी समुद्रनो पार पामता इच्छता होय तेम जाणवा.

केशनुं छंचन करनुं साधुने सहेल छे, सूर्यसामी दृष्टि राखी आतापना लेशी सहेलके, पृथ्वीने विषे शयन करनुं, सज्जानो

परमारमदर्शन.

(123)

त्यान, गृहे गृहे भिक्षा मानवी, काम विकारने जीती ब्रह्मचर्य पा-ळबुं आदि सर्व सहेलछे किंतु साधुने कपटनो त्यान करवो मुक्के-लक्षे. सर्व वत, तप कियादि कपटयी दुषित थायछे. जेम सुंदर निर्मल मिने डाघलागवाथी तेनी कांति मंद थायछे तेनी पेठे अव समजबुं.

रसतुं छोलवीवणुं सुले त्यागी शकाय, देह भूषण वण त्यागी शकाय. कामभोगादिने पग सुखे त्यागी शकाय. पग कपटनो त्याग करवो घगो विकरछे. जेम जेम विद्वत्ता दृद्धि पामे तेम तेम आत्म उपयोगी शुन्य मुनि कपटमां पातानी विधानी उपयोग करे छे कपटभाव त्यागवांथी सुख थायछे, कोइ प्राणी मान पूजानी लालचे उपरथी बाह्य चारित्र शुद्ध पाळे, पंचसमितिनी बाह्यथी खा करे, त्रम ग्रुप्तिने। बाह्यथी सारी रीते खा करे. उपरथी एवे। वैशाग्य जणावे के लोको तेना उपर फीटा फीटा थड़ जाय पण अंतरमां आत्मानो उपयोग होय नहीं अने अभ्यंतर निर्मेल परि-णाम न होय पोताना गच्छनो मतनो पक्ष सबल करवानी ला-स्रसा बनी रही होय, आत्मा अने परमात्मानुं स्वरूप शुं छे ? तेनो तो विचार पण करे नहीं, व्याख्यान वाणीथी हजारी जीवोने रं-जन करे, बोलवानी कला एवी होय के जयी विचारा ग्रुग्ध जी-बोने वश्व करी दृष्टी रागीया करे, एवी साधु कपट्यतिथी परमात्म स्वरुप पामी शकतो नथी.ज्यारे साधुनी पूर्ण आवी स्थाति छे तो अल्पन्न संसारना खाडामां पतित श्रावकत्रगीतो भाग्ये कप-टनो त्याग करी शके. कपट रुप काळो नाग जे भव्यना हृदयमां पर निंदा, स्वमहत्वता, परापकर्षस्य फणीवडे करी सहीत वसतो होय ते प्राणी दुःखनी परंपराने पामेछे. अल्पज्ञ पुरुषो कपटीयोना कपटने पारखी शकता नथी, जे मुनि बाह्य क्षणिक मान पूजा की-र्तिनी लालचे श्राक्त आगळ ठिकठाक आचरण देखाडी रंजन

(148)

सरकता.

करे ते श्रावकनी आगळ एवं बोलेके ते भद्रिक महामुनि तेमने जाणे पण पातानामां कंइ होय नहीं.

श्री चिदानंदजी महाराज कहेछे के-कथनी कथे सह कोइ, रहेणी अति दुर्रुभ होइ: जब रहेणीका घर पावे, तब कहेणी छेखे आवे. १

निष्कपटी अने कपटी साधुओनी परीक्षा करवी दुर्घटछे, महा बुद्धिना धणी एवा अभयकुमार सरखा कर्ष्टी वेदया श्राविकातुं कपट जाणी शक्या नहीं, तो बारुजीबोई शुं कहेवुं ? जेने मान पूजा कीर्तिनी लालच गइछे एवा पुरूषोने धन्यछे, विवेकी सुज्ञ पुरूप इंसनी पेठे कपटी अने निष्कपटी साधुओनी परीक्षा करी देखे, कपटी एम घारेछे के हुं अन्यने छेतरुं छुं पण कपटथी तेना आत्माने कर्म छेतरी पोताने वश करेछे ते जाणी शकतो नथी. आखी दुनीयामां कपटजाळ मोह राजाए पाथरीछे तेमां मनुष्या-दिक रूप माछलां विचारां अंतर्ना अज्ञाने सपडायछे. अने विविध दुःख पामेछे, जेने खरेखरुं निज आत्मानुं ज्ञान थायछे ते कपट-जाळने छेदी नाखेछे, निष्कपटी पुरूषोनी वाणीमां द्विधाभाव रहेतो नथी, निष्कपटी मनुष्य जेवुं होय तेवुं कहेके. कपटीनी द्वत्ति काक सदृशक्चे. पोताना दोपने गोपवनार लोक पोतान्नं गौरव मान पूजा जेम थाय तेम दंभथी आचरण करेछे, अही केटली अ-ज्ञानता ? जेनो अंते त्याग करवानोछे तेनामां मंद्रावं ए बाछजी-वोतं लक्षणछे. पाणी मनमां परमार्थबुद्धिथी विचारे तो कपट करवानं कंइ कारण नथी. एम विश्वास थाय. गुरुमहाराजने पण कपटी शिष्यनो विश्वास आवतो नथी. ज्ञानी ग्रहराजनी पासे जड कोड माणी कपटथी पच्छा करे तो ते तरत जाणी छेछे. अने तेथी पृच्छकने अयोग्य जाणी मौन धारेछे, कपटी एवं जाणीने कपट

करेछे के, हुं युक्ति रचुं छुं, हुं कळा करूंछुं, हुं बोछुंछुं, ते अन्य कोइ जाणतुं नथी. पण याद राख के प्रथम तो कपटने जाणनार तारा शरीरमां रहेछो तारो आत्माछे. बीजुं सिद्ध भगवंत झाने करी तारुं कपट जाणी रहाछे, कोनाथी छानुं तारुं कपटछे. हे मूर्ख जीव! तुं चार घडीना चांदरणानी पेठे आ दुनीयामां थोडों काछ रही परभवमां चाल्यों जनारछे, तारा शरीरनी खाख थइ जशे, हाडकांना चूरेचूरा थइ जशे. करेछां कर्म परभवमां भोगववां पडशे. तुं तारी मेळे विचार तो तारा आत्मा न्यायाधीशनी पेठे न्याय करी आपशे, कपट विनानी तारी केटळी जींदगी गइ? तेनो विचार कर-तारुं कपट कदापि तुं अत्र छानुं राखीश पण परभवमां केम छूटीश? राजा, राणा, शेठ, गरीव आदि सर्व कपट करशे तो ते तेनुं फळ भोगवशे. पोताना आत्माने सुबुद्धि-थी प्रक्ष करों के हे आत्मा तने कपट विपछे? त्यारे आत्मा तर-फथी विचार थशे के कपट करनुं ते महापाएछे.

अहो मोहराजानुं भाहात्म्य तो जुओ के प्राणी श्री तीर्थक्र-रोक्त भागवती दीक्षाने पण काजळें करी चित्रामणनो जेम लोप थाय तेम कपटे करी लोपी नाखेळे.

पोताना आत्मानी वडाइ करे, घणुं कपट धरे अने पारका अवर्णवाद बोले तथी माणी कठीन कर्म बांधेले, तेवा पुरुषो योगी-ना जन्मने बाध करनाराले. ते शुद्ध चारित्र पामी शके नहीं. श्री यशोविजयजी उपाध्यायजी "माया" विषे कहे ले के—

> नममास उपवासीया खणो संताजी। शीत लीए कृश अन्न यणवंताजी॥ गर्भ अनंता पामशे खणो संताजी।

संरहता.

जे छे माया मंन ग्रणवंताजी ।। इसादि वांची आत्मार्थी पुरुषे कपटनो त्याग करवो. श्लोक.

जैनेर्नानुमतं किंचित् निषिद्धं वा न सर्वथा। कार्ये भाव्यमदंभेने त्येषाज्ञा पारमेश्वरी. १ अध्यात्मरतचित्तानां, दंभः स्वल्पोपिनोचितः छिद्रलेशोऽपि पोतस्य, सिंधुं लंघयतामिव. २

तीर्थंकरे एकांते आज्ञा पण करी नथी तेम सर्वथा निषेध पण नथी कर्यो, तो पण जे कार्य करवुं ते कपट रहीतपणे करवुं, एवी पारमेश्वरी आज्ञा सत्य मानशी. जेम वहाणमां छिद्रनो छेश होय तो पण समुद्र तरवामां योग्य नथी तेम अध्यात्मने विषे जेनुं मन रंगा-युंछे, तेने जरा पण कपट करवुं ए योग्य नथी.

स्याद्वाद रीते आत्मस्वरुप जाणवाथी कपट हित्ते त्याग थक्के. दगा, प्रपंच, छळभेद, एक बीजानी निंदानो त्याग करी एक आत्मस्वरुपमां रमण करनार जे मुनिवरोछे तेने सहश्रशः वंदन थाओ. बाकी जे छळ भेद प्रपंच विकल्प संकल्पे करी भरेला नाम धारी साधुओ वा श्रावकोथी आत्महित द्र जाणवुं.

> लोभ स्वरूपं. श्लोक=योगवासे.

आकरः सर्वदोषाणां, ग्रणप्रसनराक्षसः । कंदो व्यसनवल्लीनां, लोभः सर्वार्थबाधकः १ धनः हीनः शतमकं, सहश्रं शतवानपि । सहश्राधिपतिः लक्षं, कोटिं लक्षेश्वरोऽपि च

परमात्मदेशन.

कोटीश्वरो नरेंद्रत्वं, नरेन्द्रश्चऋवार्तेनां ।	
चक्रवर्ती च देवत्वं, देवोऽपींद्रत्व मिच्छति.	্হ
इंद्रत्वेपिहि संप्राप्ते, यदीच्छा न निवर्त्तते ।	
मूले लघीयांस्तलोभं, शराव इव वर्धते	8
हिंसेव सर्व पापानां, मिध्यात्वमिव कर्मणां ।	•
राजयक्ष्मेव रोगाणां, लोभः सर्वागसां ग्रहः	4
अहो लोभस्य साम्राज्य, मेक छत्र महीतले ।	
तखोपि निधिं प्राप्य, पादैः प्रच्छादयंति यत्	६
अपिद्रविणलोभेन, ते घित्रिचतुरिंदियाः ।	
स्वकीयान्यधि तिष्टंति । प्राग् निधानानि मूर्च्छ	या७
भुजगगृह गोधाख मुख्याः पंचेंद्रिया अपि ।	
धनलोभेन लीयंते निधानस्थानभूमिषु	C
पिशाचमुद्गलपेत भूतयक्षादयोधनं ।	
स्वकीयं परकीयं वाप्यधितिष्टंति लोभतः	
भूषणोद्यान वाप्यादौ, मूर्च्छितास्त्रिदशा अपि ।	
च्युत्वा तत्रैव जायंते । पृथ्वीकायादि योनिषु	१०
प्राप्योपशान्त मोहत्त्वं, क्रोधादि विजये सति ।	
लोभांशमात्र दोषेण । पतंति यतयोऽपिहि	रङ्
लोभाद् प्रामादिसीमान मुद्दिश्यगत सौहदाः	
प्राम्यानियुक्ता राजानो । वैरायंते पुरस्परं	१२

((११८) छोम पापनुं मूळ जाणीने तेनी ध्याग करवी.

आरभ्यते पूरियतुं, लोभगतों यथा यथा।	
तथा तथा महिचेत्रं, मुहुरेषो विवर्धते	१३
लभिस्यक्ता यदि तदा, तपाभिरफलेख	
लोभस्यक्तोनचेत्तर्हि, तपोभिरफ्लैरलं	38
लोभमूलानि पापानि, रसमूलानि व्याधयः	
स्नेहमूलानि दुःखानि, त्रीणित्यत्त्का सुखीभवः	१५

सर्व दोषतुं स्थान लोभछे, गुणनो ग्रास करवाने लोभ राक्षस समान छे. व्यसनस्य वल्ली कंदभूत लोभ जाणवो. एम सर्वार्थनो बाधक लोभ जाणवो. निर्धन सो स्पीयाने इच्छे, अने सो स्पीया मळे हजारनी इच्छा, अने हजारनो अधिपति थये लाखनी इच्छा थाय. लक्षमळे करोडनी इच्छा थाय कोटीश्वर तृप रुद्धि चाहे, राजा चक्रवर्तिनी पदवी इच्छे अने चक्रवर्ती देवतानी ऋद्धि चाहे छे. देवताने इंद्रनी पदवानो लोभ रहे छे. एम मूलमां लघु अने अंते दृद्धिने पामनार लोभ शरावनी पेठे जाणवो.

पापनुं मूळ हिंसा अने कर्मनुं मूळ जेम मिध्यात्व, अने रोगोने विषे जेम राजरोग (क्षयरोग) सर्व रोगनुं मूळछे. तेम लोभ सर्व प्रीपनो गुरु छे. अहो लोभनुं साम्राज्यतो जुओ. पृथ्वीने विषे एक छत्र लोभनुं राज्यछे, दृक्षो पगनिधानने पामी मूळीए करी संताडे छे.

द्रव्यना लोभमां द्वीन्द्रियादि जीवो पण सपडायाछे पूर्व भवना निधान उपर मूच्छावडे अधिरोहण करे छे

सर्प, उंदर, गिरोली प्रमुख पण धनना लोभमां पूर्व भवनी मुर्जीना योगे फसायछे. अने निधानना उपर वास करेले.

भूत मेत पिशाच यक्षादिक पण धनना अधिष्ठाता तरीके रहे छे, अहो लोभनी केवी सत्ताके देवताओं सरखा पण धनादिकनी मूर्छाए नीच योनिमां अवतरे छे. मोटा मोटा मुनिवरों के जे उपशा- न्तमोह गुणठाणे कोधादिकने झीती चढचाछे तो एण तेमने स्रोभ धको देइ पाडी नाखेछे.

लोभथी राजाओ ठाकोरो विगेरे गामनी सीमोनी तकरारमां इरसाल क्षेत्र करी वैर धारण करी लडी मरेछे, जुओ प्रत्यक्ष रुशीया अने जापान देश लोभना कारण माटे मोटी मोटी हाल लडाइओ करी अने तेमां लाखो जीवोनो संहार थयो.

लोभरूपी खाडाने पूरवा माटे जेम जेम प्रयत्न करीये छीए तेम तेम दृद्धि पामेछे. अहो केवुं आश्चर्य ?

लोभ त्याग्यो तो तपवहे पण क्षुं ? अर्थात् लोभना नामशी तप तपवानी कंइ जरुर नथी अने कदापि जो लोभ हृदयमां छे तो तपश्चर्यावहे करीने शुं ? अर्थात् कंइ नहीं. लोभ मूल भूत पाप कृत्य जाणवां, रसमूल भूत व्याधियो जाणवी. स्नेह मूल दुःखो जाणवां, एटले स्नेहयी सर्व दुःखो उत्पन्न थायले, माटे हे पाणी ए त्रण वस्तुओनो त्याग करी तुं सुखी था.

लोभथी कपट थाय लोभथी जीवहिंसा थाय, लोभथी असत्य वचन बोलवुं पड़े, लोभथी चोरी करवातुं मन थाय, लोभथी कृत्य अकृत्यतुं भान रहे नहीं. लोभथी लज्जा दूर रहे, लोभथी धर्मनाश पामे, लोभथी विवेकनो नाश थायछे. लोभी पुरुषने सुखे निद्रा पण आवती नथी, लोभी पुरुष गरज बखते गथेडाने पण बाप कहेले. लोभी भी पुरुष सदा पारकुं खराब चाहेले, लोभी पुरुष मातापिताने पण लेतरेले, लोभी पुरुष साधु पुरुषनुं पण अपमान करेले, मम्मण शेड जेवा लोभी पुरुषो परभवमां पण सुख पामी शकता नथी, आ दुनीयामां लोभी पुरुष थुं शुं लृत्य करी शकता नथी, लोभी पुरुष धनने माटे अन्यनो घात करेले तेनुं मरण इन्लेले, जुओ लोभ बशे धवल शेट श्री श्रीषाल राजाने मारवा माटे गया, पण खोदे ते पडे

(१६०) छोभस्वरूप.

तेनी पेठे पोते मरण पाम्या अरे दुर्गतिमां गया. लोभथकी सागर रोट समुद्रमां बुडी मरण पाम्या. लोभथी पुत्र पोताना पि-तानो राज्यने माटे घात करेछे, करावेछे, वांछे, लोभी पुरुषनी पासे लाखो रुपैया होय तो पण सुखे उंघी सकता नथी, लोभी पुरुष पापकर्मथी जरा मात्र पण डरतो नथी. साधुओने वस्त्र पात्र शि-च्यादिकनो लोभ होय छे. ज्ञानी पासे तेंमांनुं कंइ नथी. ज्ञानी बस्न पात्रादिक राखे छे छतां ने उपर मोह राखतो नथी. झानी मनमां एम विचारे छे के हुं कइ वस्तुनो लोभ करुं. जे वस्तुनो छोभ थाय छे ते वस्तुक्षणीकछे अने मारी नथी, राज्य धन, कुदुंब, पुत्र, पुत्रीओ, घर, हाट, बस्न, विगेरे वस्तुओ आत्मानी नथी अने आत्मानी साथे आवनार पण नथी. फक्त अज्ञानताए जीव परव-स्तुने पोतानी मानी तेना लोभमां विचित्र दुःखो पामेछे. मरी गया बाद सर्व वस्तुओ ज्यां इशे त्यांनी त्यां रेहेशे. माटे अरे जीव जरातो विचार!! पृथ्वी,घर, हाट,राज्य, छक्ष्मी मुकी घणा मनुष्यो चाल्या गया तेम तुं पण एक दिवस सर्व मूकीने चाल्या जवाना, जे का-यामां सार्ह सार्ह मिष्टाच तुं भरेछे, जे कायामां तुं वस्योछे, जे कायावडे तुं हाली चाली अकेछे, जे कायाने तुं न्हवरावे धोवरावेछे ते काया पण अंते तारी थवानी नथी. तो तुं छोभ शा माटे करेछे ? धूमाडाना बाचक भरवा जेम नकामाछे ते परवस्तुने पोतानी मानी होभ करवो ते पण खोटोछे. खारुं जल पीवाथी जेम तृप्ति वळती नथी तेम छोभ करवाथी शान्ति सुख मळतां नथी. माटे अमृत स-मान संतोष गुणनुं हे जीव तुं सेवन कर के जेथी शान्ति सुख मळे.



परमात्मदर्शन संतोषमहिमा.

(131)

संतोष स्वरूपः

श्लोक=कथाकोष ग्रंथे.

यथा नृणां चक्रवर्ती, सुराणां पाक शासनः
तथा ग्रणानां सर्वेषां, संतोषः परमोग्रणः
संतोषग्रक्तस्य व्यते रसंतुष्टस्य चिक्रणः
तुलयासंमितोमन्ये प्रकर्षः सुल दुःलयोः
किमिंद्रियाणां दमनैः किं कायपरपीडनैः
ननु संतोष मात्रेण सिक्स्रीसलमीक्षते
यत् संतोषवतां सौष्यं, तृणसंस्तारशियनां ।
कतत् संतोषवंध्यानां तुलिकाशायिनामपि

जेम मनुष्णेमां चक्रवर्ती देवताओमां जेम इंद्र, तेम सर्व गुणोमां संतोष मोटामां मोटा गुणछे. संतोष युक्त यतिना जेटखं इंद्र चंद्र नागेंद्रने पण सुख होतुं नथी. इंद्रियोना दमन करवावहे करीशं, कायाने पाडवावहे शुं? संतोष मात्रवहे ग्राक्तिश्ची ग्रुखनुं निरीक्षण थायछे. तृणना संथारा उपर श्चयन करनार एवा संतोष वाळा ग्रुनिवरोने जे गुखछे ते गुख संतोष वंध्य तूछिकामां शयन करनार तृप गृहस्थोने होतुं नथी. संतोषी नर सदा ग्रुखी जाणवो. असंतोषि पुरुषने संतोषी एवा भिश्चक जेटळुं पण गुख होतु नथी. संतोषीने चिंता होती नथी संतोष कल्पहक्ष समानछे. संतोष अन्तह्द आनंददायकछे. संतोषी पारकानो उपकार करवा समर्थछे. असंतोषी मरीने परभवमां पण गुख पामतो नथी. संतोषी मोटो धनवान जाणवो. संतोषमां जे गुखछे ते गुख अन्यत्र नथी. आन

(134) निन्दानी त्याग करवी जोइए.

त्मज्ञान थया विना तात्त्विक संतोष थतो नथी माटे आत्मज्ञान क-रतां सर्व दोषो नाश पामशे. चक्रवर्ती सरखा मोटा राजाओ पण छक्ष्मीनो त्याग करी सुखी थया.

आत्मार्थी भव्योए पारकी निंदानो त्याग करवो, कारण के निंदक चंढाल की. निंदक मोटो पापी के. नाम देइने निंदा करे तो अधम जाणवो. परमां भूल होय पण तेना पूंठे निंदा करवाथीं कंइ फायदो थतो नथी. पापमां शक्तिवाला पुरुषोने निंदा करवाशी स्वभाव के. गंगाजल मां स्नान करनार होय, अडसठ तीर्थनी यात्रा करे किंतु जो ते निंदक ले तो ते अपवित्र अने दुष्ट जाणवो, बहा-दूर पुरुषो निंदा करता नथी. निंदक कागडाना करतां पण भूंडो ले. अदेखाइथी निंदा उपत्र थाय ले अने निंदाथी कलेश उपत्र थाय ले अने ते सामा पुरुषना जाणवामां आवे तो परस्पर वैर बंधाय ले, निंदक आभवमां तथा परभवमां पण दुःख पामे ले, निंदा करवाथी मित्रनी मित्राइ पण तूटे ले.

जो तमे गुणी थवाने चाहताहो के मनुष्यनी घोळी बाजू तरफ हिष्टियो. पण काळी बाजु तरफ हिष्टियो नहीं, हालना वखतमां कोइ सर्व गुणी नथी, कोइ पुरुषनी कोइ निंदा करे तो तेने मनमां एम विचारवुं के भले ए निंदे. हुं जो सारो मनुष्य छुं तो तेनी निंदाथी मारे थुं ? निंदकना उपर मारे केम क्रोध करवो जोइए ? सामा मनुष्यनुं हित इच्छवुं होय तो तेना गुण गावा. कोइ निंदक निंदा करे तो उलटुं निंदकनामां जे गुण होय ते आपणे वखा-णवो पण खराब लागणीथी सामु तेनुं बुरुं करवा प्रयत्न करवो बहीं. कोइ आपणा उपर दृष्टता करे तो पण आपणे तेनी तरफ युभ भावना राखवी, तेनु सारुं करवा थुभ संकल्प करवो एम करवाथी सामो बुरुष अंते दृष्टतानो त्याग करशे आ नियमवो अनु-

परमात्मदर्शन.

(183)

भव करवाथी खातरी थशे.

आत्मज्ञानीओ कोइनी पण निंदा करता नथी तेओ तो आ-त्म स्रूवपमां तल्लीन रहेछे. परना तरफ दृष्टि देता नथी अने कदापि उपकारने माटे परतरफ दृष्टिछे तो पण आत्मिहितथी अ-न्य प्रदृत्ति करता नथी.

कोइ विरला जगत्मां आत्म तत्त्वनी शोधमां स्वकाल निर्गपन करेछे, अने कोइ विरला परमात्पपदने पामेछे, सत्य तरफ पायः दुनीया पृष्टति करती नथी पण असत्य तरफ करेछे ते उपर एक दृष्टांत म्रुसलमानी धर्ममां मगट थयुं छे ते एवा रीते के कोइ एक महान् पादशाहना वख-तमां एक फकीरे प्रश्न कर्यों के-हे पादशाह आ सब खलक बुरे रस्तेपर कयं चल रही हे? त्यारे एना उत्तरमां पादशाहे फकीरने विज्ञाप्ति करी कहुं के-अ।पकुं मेरा मुकामपें दो वर्षतक रहेना चाहिए. जब आपका सवालका जवाब में देनेकुं शाकिमान होडंगा—आ उपरथी फकीर बावा त्यां रह्या के तुरत पादशाहे पोताना राज्यमांना तमाम अमीर उमरावोने बोलावी हकम आ-प्यो के-अमारा खजानामांथी तमाम लक्ष्मी खर्ची एक महा मोटो बाग बनाववो जोइए ने ते बागमां तमाम सृष्टिनी सर्व वस्तुओ प्रगट करीदेवी. बाद तमाम जगत्मांनी सर्व प्रजाने ते वाग जोवा बोलाववी. ने तेमनो तमाम खर्च तेमनी जग्यापर पहोंचाडचा सुधी नो आपणे करवो जोइए. आवा प्रकारनो हुकम मळतां सर्व कचेरी मंडळे तावडतोब आखी पृथ्वीमां रहेला तमाम कारीगरोने बोला-व्या ने तेमना कह्या प्रमाणे असंख्य जातनां साधनो पुरां पाडवा लाग्या. जे उपरथी बसे कोसनी वचमां जनीन पहाड समुद्र नाना प्रकारनां तमाम दुनीयामां रहेलां पशुपंखीओ तथा अदारगार

(१३४) आत्मानी शोध माटे बाद्धाडे बनावेक बाग.

वनस्पति, मेवानां झाड, विचित्र प्रकारनां अमृल्य वस रह स्व।हिर भातभातनां पक्वात्र, बागमां फरवाना मनोहर लताना मंदपोवाळा रस्ता, ठेकाणे ठेकाणे सुंदर वेश्याओ नाटक करे तेम गोठवण थइ, स्थळे स्थळे विचित्र प्रकारनां नाटकां. तेमज खेलाडुओनी गोठवण थइ, साकरीयां पाणी, गुलाबजल लोकोना उपभोगने माटे तैयार क-राव्यां. अनेक तरेहना जानवरोना तमासानी रमतनी गोठवण थइ. बाग जोनाराने बेसवाने माटे अनेक खुरशीओ आदिनी सगवड थड़ बागमां संदर सरोवरो हवा खावाने माटे बंधाव्यां अने ते सरोवरनी आसपास चारे तरफ लीमडा ववराव्या घटा करावी, ठेकाणे ठेकाणे पाणीना फुंबारा मूकी दीधा, विषेश शुं ? अपरं-पार तेनी शोभा बाह्य जगत्नी वस्तुओथी बनावी दीधी, अने रा-जवर्गे पादशाहने खबर आपी. पादशाहे जगतमां एवी जाहेरात खबर आपी के-मारा बसो कोश्चना बागना मध्यभागमां एक महे-ल में रचावेलो छे. ते महेलमां अप्रुक दिवसे बपोरना त्रण वागे हुं एक कलाक संताइ रहीश, तेवामां जे पुरुष मने शोधी काढशे तेने हुं मारी तमाम पादशाही आपी देइश. एवी रीतनी जाहेर खबर दुनीयामां फेलावी दीधी. टरावेला दिवसे तमाम लोको बा-दशाही बाग जोवा आव्या. तमाम प्रजा बाग जोवा मशगुरू कोड फुलनां बाढो जोवा लाग्या. कोइ वाघसिंहादि ओने जोवा लाग्या, वेटलाक शोखीन तळावनी शोभा जोवा लाग्या अने ठंडो पवन खावा लाग्या, नाटक जोवाना रसीया ना-टक जोवामां लीन थया. मेवाना रसीया मेवा खावा लाग्या. कोइ पुरुषे बीजा पुरुषने कहुं के-भाइ चालो आपणे बादशाहने न्नोधी काढीए, त्यारे सामा पुरुषे जवाब आप्यो के-तं तो चेल्लो थयो छे, शुं राजा ते महेलमां संताय ? एने एतं राज्य व्हालूं छे.

माटे आपने तो वेश्याओनो नाश जीवामां आनंद मानीशं-कोइ व्याकरण शासना विद्वाने नैयायिकने कहां - हे नैयायिक तुं बादशा-ह महेलमां संताणो छे ते वातने खरी वात माने छे के खोटी त्यारे नैयायिके कहुं के-बादशाह वाक्यं प्रमाणं वा अप्रमाणं वा, तस्य बाक्यं सत्यं वा असत्यं वा. एतत् कार्यस्य किं प्रयोजनं, इदृशं पूर्व न भूतं, कदापि बादशाह गांडो थयो हशे, कदापि महेलमां तेने क्रोधवा जतां बादशाह मारी नांखे तथा वळी एक एवी शंका थाय छे के-बादशाह महेलमां छे तेयां शुं प्रमाण ? पत्यक्ष प्रमाण प्रत्यक्ष विरुद्ध छे. अनुपान प्रमाणमां कोइ हेतु अन्यभिचारी सिद्ध थतो नथी. उपमान प्रमाण पण सादृश्यना अभावथी बाधितछे. आ-गम प्रमाणनी पण अत्र सिद्धि थती नथी, माटे अमो तो बादशाहने शोधवानुं बंध राखी आ मत्यक्ष देखाती वस्तुओ जोवामां आनंद मानीशं. त्यारे व्याकरणशास्त्रवेत्ताए कहं सत्यं सत्यं भवतां कथनं पादशाह वाक्यं प्रमाणीभूतं मया न ज्ञायते-कोइ स-गां संबंधीनी वातो करवा लाग्या, बागनी मनोहरतानी एवी ख़बी हती के पगले पगले विचित्र जोवानुं मळे, खावानुं मळे, के-टलाक तो द्वक्ष तळे सुइ गया, केटलाकएक बीजाने वस्तुओ ओळ-खाववा लाग्या, बेटलाक रुपैया खर्ची टीकीटो करावी तमासा जोवा लाग्या, केटलाक एम विचारवा लाग्या के बादशाह बुद्धिमान् छे, तेनी ओछी माया नथी ते एवो संताणो हशे के आपणा हाथमां आववो मुस्केलछे, माटे आपणा करता होइए ते करो. केटलाक एम चिंतववा लाग्या के ज्यारे आ बागमां पण एवी भूलवणी चुकवणी छे के आपणे भूला पडीयेछीये तो बादशाहना महेलमां तो बहु भूछवणी चुकवणी हरो के जेथी शोधवाने बदले आपणे भूला प-डीए तो अतोभृष्ट ततोभृष्ट थइए. केटलाक संदर परीओ देखी तेमां

बादशाहनी शोध.

(\$\$R)

मोह पाम्या. केटलाक रागरागणीना तानमां गुलतान थया. केट-लाक व्यापार करवा लाग्या, केटलाक विषयनी वातोकरवा लाग्या केटलाक एम चिंतववा लाग्या के आ वागमां सदा रहेवानुं थाय तो ठीक. एम सर्वजन बागनी मोहमायामां फसाया. कोइए बादशाहने शोधी कहाडवानो प्रयत्न कर्यों नहीं, एवामां एक डाह्यो पुरुष हतो तेणे विचार्यु के-खरेखर आ जगत्नी तमाम पजा गांडीने मूर्ख छे, केमके ते जोवामां मशगुल थइ पडी पण तेमनामां एटली सम-जण नथी के प्रथम बाग जोवाना करतां बादशाहने शोधी कहाडवो जोइए बादशाहने शोधी काढे तो आ सर्व बाग तथा बादशाही तेने मळे, माटे आपणे तो प्रथम बादशाहने शोधी काढवो जोइए एम निश्चय करी आ पुरुषे महेल तरफ प्रयाण कर्यु. कोइ वस्तु तरफ दृष्टि दीधी नहीं, अंते महेलमां गयो, बादशाह-ने शोधी काढ्यो, के तरत बादशाहे एक हजार तोप फोडावी मान साथे पोतानी बादशाही तेने हवाले करीने तरत पेला फकीर बा-वाने पादशाहे कहुं के-फकीर साहेब देखों। ऐंसी दुनीया दिवा-नीकी रीति है के सब खलक ज़ुटा बाग देखनेमें मशगुल हुई, लेकीन कीसीका ध्यान मेरी शोध तरफ नहीं आया. सारांश के एवी रीते आ दुनीयाना जीवो असत्य मोहमायाथी जगतमां फ-सायाछे. मोहमायानी त्याग करी जिनाज्ञा सत्य मानी पोतानी कायारूपी महेलमां अनंत शक्तिमान् अनंत सुखभोक्ताः एवा आन त्मारूपी बादशाह रहेलोछे तेने शोधवा ध्यान लगाडे तो जीव पोते परमात्मा बनी त्रण जगतनो स्वामी थाय. संसाररूप बागमां सर्व जगत मोहमायाथी फसायुंछे, कोइ विरला पाणी आत्मज्ञानने माटे सदगुरुतं संसेवन करेछे, जेम झांझवाना पाणीधी तृषा शान्त थती नथी तेम संसारनी मोहमायाथी आत्माने ज्ञान्ति मळती नथी, संसारनी सर्व खटपटने त्यागी आत्मस्वरूप पाप्त करवं. एज

परमात्मदुर्शनः

(130)

सारमां सारछे. पुनः पुनः मनुष्यभव मळवानो नथी, गयो वस्तत पाछो आवनार नथी सद्गुहनां वचन हृदयमां उस्यां नथी एम लागेछे, जो उस्यां होत तो संसारना पदार्थोमां मन जाय तही, हे चेतन तुं क्षणमां सारां सारां भोजन जमवानी इच्छा करेछे पुनः स्नीविषयाभिलाषे तुं वहेछे पण समजतो नथी के स्नीना उपर मोह पामवानुं शुं कारण ? स्नीनुं शरीर सात धातुथी भरेखंछे, स्नीनी कायामांथी मळमूत्र लींट वहा करेछे, एना शरीरमां जरा पण पविन्त्रता देखाती नथी। परसेवो, मेल, मस्तकना कशमां जू विगेरे मत्यक्ष देखायछे माटे हवे तुं वैराग्य लावी ब्रह्मचर्य व्रत धारण करः

ब्रह्मचर्य स्वरूप

श्लोकः

विन्हिस्तस्य जलायते जलिनिधः क्रत्यायते तत्वणातः मेरुःस्वरुप शिलायते मृगरिष्ठः सद्यः क्ररंगायतः; व्यालो मार्य ग्रणायते विषरसः पीयूष वर्षयतं, यस्यांगेऽिषल लोक वल्लभतमं शिलं समुन्मिलिति १ ऐश्वर्यस्य विभूषणं सजनता शोर्यस्य वाक् संयमो, ज्ञानस्योपशमः श्रुतस्य विनयो वित्तस्य पात्रे व्ययः, अकोधस्तपसः क्षमा प्रभावितः धर्मस्य निर्व्याजता, सर्वेषामिष सर्वकारणिमदं शीलं परं भूषणं.

तथा गाथा

शीलं कुल आहरणं, शीलं रूवं च उत्तमं जयइ; शीलं चिय पंडिचं, शीलं विय निरूवमं धम्मं. १

वहाचर्य स्वरूप महिमा.

(854)

तथाच श्री हेमस्रारेपादाः प्राणभूतं चारित्रस्य, परब्रह्मेककारणं; समाचरन् ब्रह्मचर्यं, पूजितैरापि पूज्यते. २

तथा च दश्यमांगे श्री पश्च व्याकरणे यस्य ब्रह्मचर्यस्य नामानि गुणाभेवमुच्यंते तथाहि जंबू एत्तोय बंभचेरं उत्तम तव नियम णाण दंसण चरित्त सम्मत्त विणयमृत्वं गुणप्पहाणजुत्तं हिमवंत महत तेय मत्त पसध्यं गंभीरं थिमितमञ्जं अञ्जव साहुजणा चरितं मोल मम्मं विसुद्धं सिद्धिगति निलयं सासत मन्वाबाहं अपुण भवं पसध्यं सोमं शुभं सिव मयल मरूलर करं जित वरसा रिव्खियं सुसाहस्सिहियं नवरि मुणिवरेहिं महा पुरिस धीर सूर धम्मिय धितिवंताणय सया मुविमुद्धं भव्वं भव्वजण समुचिणं निसंकियं निभ्भयं नित्तुसं मिरा-यासं निरुवल्लेवं निव्वुइ घर नियम निप्पकंपं तव संजग मूल दलि-यजेमां पंचमहव्वय सुरिक्खियं समिति गुत्ति जाणवरं कवाड सुकय-रख्खण दिण्ण फलिह सण्णद्धोध्ययिअ दुग्गतिपहं सुगतिपह देसमां च लोगुत्तमं च वयमिणं पडमसर तलाग पालिभूयं महा सगडअर तुंब भूअं महाविडिम रुख्ख खंधभूतं महानगर पागार कवाड फलिह भूअं रज्जपिणद्धोव इंदकेड़ं विसुद्धणेग गुणसंपिणद्दं, जम्मिअ भ-माम्मि होइ सहसा सन्वसंभग्गसद्धिय महिय चुण्णिय कुश्रिहा तप-छड पडिअ खंडिय परिसंडिय विणासियअं विणयसील तव नियम गुण समूढं तं वंभं भगवंतं गहगण णख्खत्त तारगाणं वा जहाउछपति मणिमुत्त सिलप्पवाल रत्त रयणागराणंव जहा समुद्दो वेरुलि उन्वेव जह मणीणं जह मउडो चेव भूसणाणं वध्याणं चेवख्खोम जुअलं अर्रविंद चेव पुष्फ जेहं गोसीसंचेव चंदणाणं हिमनंता चेव ओस-हीणं सीतो आचेव निम्मग्गाणं उदहीस्र जहासयंभूरमणो रूअगवरो चेव मंडिल अपघ्वपाण पवरे ऐरावणी इव कुंजरागं सीहोन्व ज-

परमाध्यक्षांन,

(444.)

हामिगाणं पवरो पन्नगाणं चेव वेणुदेवे धरणे जणपण इंद्राया कणाणं चेव बंभलोए सभासु अजह भवे सुहम्मो दितीसु लबस्त मगासन्वपवरा दाणाणं चेव अभयदाणं किमिराओ चेव कंवला-णं संघयणे चेव वज्जरिसभे संदाणे चेव चउरंसेझाणेसुअ परमसु-कझाणं णाणेसुअ परम केवलं सिद्धं लेसासुअ परम सुक्वलेसा तिध्यकरो जहचेव सुणीणं वासेसु जहा महाविदेहे गिरिराणांचेव मंदरवरे वणेसु जहा नंदणवणं परंच दुमेसु जह जंबू सुदंसणा वी-सुजसा जीसे नामेण अयं दीवो तुरगावती रहवती नरवती जहवीसु ते चेव राया रहिए चेव महारह मते एवं अणेग गुणा अहीणा म-बंति एकम्मि वंभचेरे जम्मिअ आराहि अं वयमिणं सचं सीलं तवो ओय विणओय संजमोय खंती सुत्ति तहेव इह लोइअ पारलोइय जसोकित्तिय पव्वओय तम्हा निहुएण बंभचेरं चरिअव्वं सव्वओ विसुद्धं जावजीवाए. इत्यादि महिमा ब्रह्मचर्य व्रतनो कहाो छे.

" दुइा. "

आतम सुलनी: चाहतों, विषयेच्छा परिहारः विषयेच्छा मनमां घणी,तो शुं ? आतम विचारः । आत्म स्वरूपे ध्यानतों, विषयेच्छानों नाशः प्रतिपक्षी वे धर्मनों, नहीं एकत्र निवासः । वे साथ वर्ते नहीं, वर्ते त्यां छे दंभः भोगज कर्माधीनधीं, त्यां शुं होय अवंभः । दुर्गधीनी कोषछीं, मळमूत्रे भरा देहः कान्ता काया एहवी,अपवित्रतानुं गेहः । रंग रूप लोहा सह, श्रवे अशुवी नित्यः मोह करे शुं जीवडा, समज समज तुं चित्तः ५ भोग रोगः सममानतो, स्वप्ने पण नहीं आशः अनित्य आ संसारमां, क्यांथी तेनो वासः ६ दुर्लभ आत्मस्वरूपनी, वातो करवी सहेलः किंतु आत्म स्वरूपनी, प्राप्तिछे मुस्केलः ७

निंदा, आलस्य, असत्यादि दूषणो निवारी निःसंगी थइ आ-त्म तत्त्वनी खोज करनार आत्मतत्त्व पामी शकेछे. आत्मतत्त्वनी बातो करबी सहेलछे पण आत्म तत्त्वनी प्राप्ति थवी सुश्केलछे. कोइ विरला पाणी आत्मा उपर रुचि करेछे.

आ चेतन अज्ञानयोगे भ्रमित थइ कदापि चळित थइ जाय छे. एवं आत्म स्वरूप भूली गयो तथी परवस्तुमां मोह पाम्यो, अशुद्ध परिणत्तिथी औदारिका, वैक्रिय आहारक, तेजस, कार्मणादि श्रीरो धारण करी तेना योगे ताडन तर्जन छेदन भेदनादिक दुःखो छहां, हवे जो तने सुखनी आशा थइ होय तो हे आत्मन चेत चेत समय चाल्या जायछे मनना मनोरय मनमां रहेशे, सद्गुरु संगे रही आत्म स्वरूप समज अने तेना ध्यानमां रहेतां आश्रवतुं द्री करण थशे. अने अंतर तत्त्वोपयोगे संवरनी प्राप्ति थशे तारुं स्वरूप तुं देखे एटले तारो मोक्ष थशे.

> श्री देवचंद्रजी पण कहेछे के-" दुहा "

तत्त्वते आत्म स्वरूपछे, शुद्ध धर्म पण तेहः परभावानुग नेतना, कर्म गेहछे एहः १ तजीपर परिणति रमणता, भज निज भाव विश्वद्धः

(181)

आत्म भावथी एकता, परमानंद प्रसिद्धः र स्याद्वाद ग्रण परिणमन, रमता समता संगः साधे सुद्धानंदता, निर्विकल्प रसरंगः ३ मोक्ष साधनतणुं मूळ जे, सम्यग्दर्शन ज्ञानः वस्तु धर्म अववोध विणुं, तुस खंडण समानः ४ आत्मवोध विणुं जे किया, तेतो बालक चालः तत्वार्थनी वृत्तिमं, लेजो वचन सभालः ५

इत्यादिथी पण आत्मज्ञाननी खास जरुरछे, आ जगतमां राम देवव्यापी गयोछे ने आत्माना अज्ञानने लीवे जाणवी. आ शरी-रमां रहेला आत्माना सरखा अन्य शरीरोमां पण रहेला आत्माओछे चुम जो जाणवामां श्रद्धा पूर्वक आवे तो कोइ दुःख कोइ जीवने आपे नहीं, अने कोइ जीवना उपर कोइ जीव वैर राखे नहीं. आ-त्मज्ञानी सर्व जीवने सिद्धसमान गणे तो पछी कया जीवनी साथे ते विरोध करे ? अलवत कोइ जीवनी साथे ते विरोध करे नहीं. ए बातनो अनुभव करवाथी मालम पडशे, आत्मिक शुद्धानंद पण त्यारे अनुभवमां आवशे. राग देवथी जेनु मलीन छे तेने सुख म-ळतं ननी. जगतमां तान्विक मुखना भाका आत्मज्ञानी मुनिवरोछे. तेमने स्वी नथी. पण समता रुपस्री भावथी जाणवी. राजाओ शेठी-बाओ, वकीलो, दाक्तरो, ज्यारे ताप आदिना निवारण माटे छत्री धारण करेछे तो तेना बदले आत्मज्ञानी सुनिवरो क्षमारूप छत्रीने धारण करेछे. अपारूप छत्रीथी क्रोधरूप ताप लागतो नथी, अने अदेखाइरूप उष्ण प्रवन तो जरा मात्र लागतो नथी। वळी मोहरूप मेघनी दृष्टिथी पहेलं तष्णारूप पाणी तेने क्षमा छत्रीयी बीली श-

(१४२) भारमज्ञानी राजाधी पण अधिक सुसीके.

कायछे, अन्य राजाओ पादशाही ज्यारे एक देश वे देशना मालिक होयछे त्यारे म्रनिराज तेना करतां पण अधिक पोताना आत्माना असंख्यात प्रदेशना मालीक होयछे. ज्यारे अन्य राजाओ घणी लक्ष्मी भेगी करेले. त्यारे मुनिराज आत्मानी ज्ञान दर्शन चारित्र लक्ष्मी भेगी करेछे. तफावत एटलो के राजानी लक्ष्मी खोटी, भणिक छे अने म्रुनिनी लक्ष्मी सत्य अने अचल अखुटछे, राजा पादशाहने मनवचन कायाए करी संतोष रहेतो नथी. त्यारे मुनिने मनवचन कायाए करी संतोष रहेछे. राजा ज्यारे तृपादिक शत्रुओनी साथे युद्ध करेछे, त्यारे मुनीश्वर रागद्वेषरूप शत्रुओनी साथे युद्ध करेछे, राजाओ ज्यारे वागमां क्रीडा करेछे त्यारे मुनीश्वरो धर्मध्यानरूप वागमां क्रीडा करेछे-धर्मध्यानरूप वाग केवो छे ते कहेछे-धर्मध्यानरूप बागनी चारे तरफ उदासीनतारूप वाड करेली छे. ज्ञानरूप कूपधर्म ध्यानरूप ्यागमां शोभी रहेलोछे. संवेगादिक वनस्पति त्यां खीली रहीछे.त्यां मुनिराज स्थिर चित्तरूप आसन उपर बेसी विचरेछे. ते बा-गनी शोभा अनहद्छे. तेनी सुगंधीथी अनेक जातना रोगो नाम पामेछे. ए बागनी अंदर श्रुद्र पाणीओ पवेश करी शकतां नथी. जेनी याग्यता होय ते त्यां जह शकेछे. जगतनी मोह मायामां फ-साएला प्राणीओने ते बागतुं सुख थतुं नथी, बळी ए बागमां एक चारित्ररूप महेल शोभी रह्योछे. तेनी अंदर जन्म जरा मरणनां दुःस नाशक अनेक औषधो रह्यांछे तेना मुनीश्वर उपयोग करी शकें छै. अने ते औषधोतं भक्षण करी अजरामरपद पामेछे. वळी ते बागमां रहेला ज्ञानकूपमांथी मुनिश्वर जलपान करेले. ज्यां परोपाधिरूप ता-पता आबी शकतो नथी. बळी ते बागनी असंख्यात मदेशरूप ज-बीन स्वच्छ निर्मलक्षे. मनीवरनी साथे श्रद्ध चेतना रहेके. बळी वे मनीचर आत्मा अने परमात्मानी अनयतारूप भागने कायारूप स- खमां घूंटी मनरूप प्यालाथी पीवेछे. तेथी शुद्ध चेतनारूप नीशो मुन्नियर महाराजने एवो चढे छे के ते वस्तते अगम निगम दर्शीय छे. अने ते समये शरीर अने शरीरीज पण भान रहेतुं नथी अने ते वस्तते अनहद आनंद थायछे. आवा मुनिराजने मुख थायछे ते अनंत छे. श्री यशोविजयजी उपाध्याय अध्यात्मसारमां कहेछे के—

श्लोक.

कान्ताधर सधा स्वादात, यूनां यज्जायते सुलं । विंदुः पार्श्वे तदध्यात्म शास्त्रस्वादसुलोदधेः १ अध्यात्मशास्त्र संभूत-संतोष सुल शालिनः गणयंति न राजानं नश्रीदंनापि वासवम्. २

भावार्थ-स्नीना अधर रूप अमृतना स्वाद्यी युवान पुरुषोने जे सुख थायछे तेतो भ्रमणा मात्र छे, तात्त्विक सुख नथी, ते सुख तो अध्यात्म शासना स्वाद्यी उत्पन्न थयेछं दरिया समान सुख तेनी आगळ बिंदु समान छे. अध्यात्म शास्त्रथी उत्पन्न थयेछं सं-तोष रूप सुखना भोक्ता जे पाणी छे ते पाणी राजाने तथा धनदने तथा इंद्र सरखाने पण छेखामां गणता नथी.

श्लोक.

रसी भोगावधिः कामे, सद्भक्ष्ये भोजनावधिः अध्यात्म शास्त्र सेवाया रसो निखिध पुनः

कामने विषे भोगवतां सुधी रसछे, मिष्ट भोजनने विषे जम-वाना वखत पर्यत मधुरपणुंछे. पण अध्यात्म शास्त्रनी सेवानो जे रस ते तो निरविध छे. कारण के अध्यात्मशास्त्रनो रस पारंभ कालभी मांडीने मतिदिन दृद्धि पामेछे. ते रस कोइ वखत बद्दलातो

नथी. ज्यारे आत्मानंदी मुनिराजने अत्यंत मुख थामछे त्यारे सिद भगवंतीने अनंत सुख छे तेमां शुं कहेवुं ? अनुभवधी सुखनी म ्तीति थायछे. वळी मुनीश्वर उपर कहेला एवा बागमां सदाकाल बास करेछे. तेमने कोइ जातनी स्यूहा नथी आवा मुनींद्रना बाग-नी तोले राजा वा शाहकारोना वाग आवी शकता नथी. राजाने तो मनुष्य सेवेछे किंतु मुनीश्वरने सुर असुर इंद्रादिक पण सेवेछे. राजाने परशतु थकी भय रहे छे. किंतु मुनीश्वरने जय होतो नथी. राजानी पासे अनेक सुभड़ो होयछे त्यारे सुनीश्वर रूपी राजानी पारे क्षमा, वैराग्य, ज्ञान, दर्शन चारित्रादि अनेक सुभटो हायछे. राजानी लक्ष्मी जन्मांतरमां साथे आवती नथी. पण मुनींद्रनी लक्ष्मी तो परभवमां साथे आवेछे अने मोक्षमां पण साथे रहेछे, राजा थी-ताना देशमां पूजायछे, अने मुनींद्र तो ज्यां विचरे त्यां पूजायछे. राजा वैभव छतां दुखी थायछे, अने आत्मज्ञानी मुनीश्वर ता वैभव विना पण अंतर वैभवथी सुखी रहेछे, राजाने पोताना राज्यथी संतोष रहेतो नथी. अने मुनींद्रने तो सदा संतोष छे. राजाने आ भवमां तथा परभवमां क्रेश सहन करवो पडेछे, अने मुनीश्वरने आ भव तथा परभवमां सुखनी प्राप्ति थायुछे, राजा संसारमां प्रवृत्ति करेछे. त्यारे मुनीश्वर पद्वत्तिनो त्याग करेछे, राजा हाथी उपर वेसी बखतरथी शोभा पामतो तीक्ष्ण भालाने धारण करेछे त्यारे ग्रुनीश्वर संवेग रूप हाथी उपर बेटा थका ब्रह्मचर्यरूप बखतरथी शोभा पा-मता ध्यानरूप तीक्ष्ण भालाथी रागद्वेष रूप शत्रुनो शिरच्छेद करेछे. मनीश्वरने तो कोई शत्रु नथी. किंतु व्यवहारथी शत्रुनी कल्पना जाणवी. पोते पोताना आत्म स्वभावमां रमेछे एटले स्वतः साग देवनो क्षय थायछे, राजाने जरापण शांति मळती नथी, अने मुनी-श्वरता सटा शान्तिमां रहेछे. राजा ज्यारे बाह्यवस्त उपर ममता राखेछे त्यारे मुनीश्वर अंतर्धन उपर ममता राखेछे. क्यां मेरू अने क्यां सरसवनो दाणो, क्यां सागर अने क्यां तळाव, क्यां रात्रि अने क्यां दिवस एटलो तफावत आत्मज्ञानी मुनीश्वर अने राजा बच्चे जाणवो. दुनियामां आत्मज्ञानी मुनिसद्ध अन्य कोइ मुखीं नथी, शेठ, वकील, बारीष्टरादि लोको तत्त्वथी विचारतां सत्य मुखे भोगवता नथी. सत्य मुखनी प्राप्ति तो आत्मज्ञानीने थायछे. अंतर्हिशना अभावे बाह्यदृष्टिजीवो सत्य मुखनो अनुभव करी शकता नथी. आत्मज्ञानी मुनि सदा निर्भय रहेछे, अहो ते जीवता जीवन्मुक्तनी द्याने अनुभवेछे. आत्मज्ञान विना खंडनमंडननी विद्वताथी आत्मिहत थतुं नथी. दुनीया ज्यारे परपरिणतिमां म्हालेछे त्यारे मुनीश्वर स्वपरिणतिमां महालेछे.

आत्मवत् सर्वभूतेषु यः पश्यति स पश्यति

आ वाक्यनो अनुभव पण आत्मज्ञानी मुनीश्वर करी शकेछे. भुष्कज्ञानी जीवो वाक्पदुताथी आत्मज्ञानीनो डोळ भछे बतावो पण तेना अनुभवथी थतुं सुख ते पामी शकता नथी. आत्माना केवल ज्ञानादिगुणोनी पाप्ति आत्मार्थिने थायछे.

संसारी जीवने ज्ञान दर्शन चारित्रादिक ऋदि सर्व तिरोभावे छे. ते तिरोभाव ऋदिनो आविर्माव थाय, तेज आत्मानुं परमात्म पद जाणवुं. ते परमात्मनो हुं दास एटळे उपासकछुं ते परमात्मपद जेणे ओळख्युं अने परमात्मपदमां जेनुं एकाग्र चित्तथी ध्यान वर्तेळे. तेने साधुपद ग्रह्यं एम जाणवुं. अने शुद्धज्ञान पण ते पाम्यो एम जाणवुं. नाम, स्थापना, द्रव्य, भाव ए चार निक्षेपे साधु जाणवा.

कोइनुं साधु एवं नाम ते नाम साधु, स्थापना करीए ते स्था-पना साधु तथा जे पंचमहात्रत पाळे क्रियानुष्टान करे शुद्ध आहार प्रहण करे पण ज्ञान ध्याननो जेवो उपयोग जोइए तेवो उपयोग न

(386)

ज्ञानंस्वरूप,

होय ते द्रव्य साधु जाणवा. जे भाव संवरपणे मोक्षनो साधक थड़ भाव साधुनी करणी करे ते भाव निक्षेपे साधु जाणवा.

कोइ जीवनो ज्ञान एहवो नाम ते नामज्ञान तथा जे पुस्तकमां अझररूपे लख्युंछे ते स्थापना ज्ञान, अने उपयोग विना सिद्धान्तनो मणवो अथवा अन्यमितनां सर्व ज्ञास्त्र भणवां तथा शरीरादिक ते सर्व द्रव्यज्ञान. अने नवतत्त्वनो नय निक्षेपाए जाणवां अने आत्मतत्त्व आदर्खं ते भावज्ञान जाणवुं. ए आगमसारमां कणुंछे. शुद्ध ज्ञाननी माप्ति पंचमकालमां कोइक महा पुरुषने थायछे. ज्ञानना पंच मकारछे. १ मितज्ञान, २ श्रुतज्ञान, ३ अवधिज्ञान, ४ मनः पर्ववज्ञान. देविद्धं वाचक कहेछे के-पाट. से किंतं महनाणं दुविहं महनाणं पन्नत्तं तंजहा स्रयनिस्सियं च अस्रयनिस्सियं च सेकिंतं अस्यविस्सियं अस्रयनिस्सियं अस्रयनिस्सियं विषद्धं चउविह पन्नत्तं तंजहा उप्पत्तिया वेणह्या कमिया परिणामिया बुद्धि चउविह एन्नत्ता.

भावार्थ-मित्रज्ञान वे मकारेछे. श्रुतनिश्रित मित्रज्ञान, बीजुं अ-श्रुतिनिश्रित मित्रज्ञान. प्रायशः श्रुतज्ञानना अभ्यास विना सहज क्षयो-पश्चमवशे जे उत्पन्न थाय तेने अश्रुतिनिश्रित कहे छे ते चार मकारनुंछे. उत्पादिकी बुद्धि, वैनियकी बुद्धि, पारिणामिकी बुद्धि तथा कर्मजा बुद्धिः

पोतानी मेळे उत्पन्न थाय ते औत्पातिकी बुद्धि अने गुरूनो विनय गुश्रूषा सेवा करतां आवे ते वैनयिकी बुद्धि, कर्म करतां उपजे जे ते कार्मिकी बुद्धि अने परिणामते दीर्घकालनुं पूर्वापर अर्थनुं अवलोकन करतां उपजे ते पारिणामिकी बुद्धि.

पूर्वश्रुत परिकर्मित मितना उत्पादकालने विषे शासार्थ पर्याली-सन करतील जे उत्पन्न थाय तेने श्रुतनिश्रित मितज्ञान कहें छे. तेना चार मकारछे. अवग्रह, इहा, अपाय अने धारणा तेमां अवग्रह के भेदे छे. व्यंजनावग्रह, अर्थावग्रह. किमिदं एटले आ शुंछे ? एवो (अव्यक्त) अमगट ज्ञानरूप अर्थावग्रह थाय छे. तेनी पूर्वे अत्यंत अव्यक्ततर (अति छानुं जे ज्ञान) होय छे तेने व्यंजनावग्रह कहे छे. वंजणवग्गहच उहा = एटले व्यंजनावग्रह चार मकारे छे. ते नी वे मुजब - मणनयण विणिदिय च उक्ता = मन तथा नयन ए वे विना वाकी नी चार ४ इंद्रियोने आश्रयी चार भेदे छे. श्री नंदी मूत्र पाट. से किंतं वंजणुग्गहे च उव्विहे पन्न ते तंजहा, सो इंदिय वंजणुग्गहे घाणिदिय वंजणुग्गहे, रसे हिय वंजणुग्गहे, फार्सिदिय वंजणुग्गहे श्रीत, घाण, जिव्हा, स्पर्शेन्द्रिय व्यंजनावग्रह जाणवो. मन तथा नयन ए वे इंद्रियो अमाष्यकारि छे. च श्रुरिन्श्य छे ते विषय देश मित जाइने देखती नथी, तेम मान्न अर्थ दुं अवलंबन करती नथी, तेम मन्न पंजनावृं पण जाणवुं.

आ कंइपणछे ? एवं अनिर्धारित सामान्यरूप अव्यक्तपणे अर्थनं जो प्रहण तेने अर्थावप्रह कहेंछे, ते पांच इंद्रियो अने मने करी छ प्रकारनोछे. श्रोतेंद्रियार्थावप्रह, चश्चरिंद्रियार्थावप्रह, घाणेंद्रियार्थावप्रह, रसनेंद्रियार्थावप्रह, स्पर्शनेंद्रियार्थावप्रह तथा मानसार्थावप्रह अवप्रहगृहीत वस्तुने विषे जो धर्मनी गवेषणा करवी एटछे आ स्थाणुछे ? अथवा पुरुषछे ? तेमां पण हाल संध्याकाल छे अने महा अरण्यछे, वळी सूर्य पण आथम्योछे, माटे पुरूष नथी. इत्यादि व्यतिरेक धर्मनुं निराकरण करवं. अने एने पक्षीओ भजेंछे. वब-मांथी वांकुछे, अने कोटर सहितछे. इत्यादिक अन्वय धर्मनो अंगी-कार करवो, एवं जे ज्ञान विशेष तेने इहा कहेंछे. ए पण पंच इंद्रियो अने मने करी छ प्रकारेछे. तथा इहित वस्तुने विषे आ निश्चये करी स्थाणुज्ञ , एवो एक कोटिना निश्चयरूप जे बोध तेने

(180)

मतिज्ञानस्वरूपं.

अपाय कहेके. स्थाणुरेवायं इत्यात्मकरूपो अवायः तथा निश्चित वस्तुने विषे अविच्युतिपणे अथवा स्मृतिपणे अथवा वासनापणे जे धारण करबुं तेने धारणा कहे छे. ते पण पंचइंद्रियो अने मने करी छ प्रकारे छे. एम छने चारे गुणतां चोवीस भेद अने व्यंज-नाग्रहना चार मेळवतां २८ अद्वावीश भेद मतिज्ञानना जाणवा एमां चार भेद अश्वत निश्रितना मेळवतां बत्रीस भेद थाय छे. तथा जाति स्मरण पण अतीत कालना संब्री पंचेंद्रियना संख्याता भव देखे. मतिब्राननोज ते भेद जाणवो. श्री आचारांग सूत्रनी टीकामां जातिस्परण ज्ञानने धारणानो भेद कह्यो छे-यतः त्वाभिनिबोधिक ज्ञान विशेषमिति. कोइ जातिस्मरणं सभामां घणा पुरूषो बेठाछे ते वखते शंख, तथा भेरी, रणशिंगुं, आदि वाजीत्र वागवा लाग्यांश्रोताजनोए सर्व वाजित्रनो शब्द सम-काले सांभळ्या छतां सर्वनी क्षयोपशमनी विचित्रताथी अधिक न्यनादिक सांभळवामां आवेछे जेमके कोइने ते शंख भेरी आदि वाजींत्रनो बब्द भिन्न भिन्न सांभळवामां आवेछे तेना जाणवामां एम आवे के अम्रक भेरीओ आटला शंख वागेछे एम जणाय तेने बह कहेछे. १ कोइने मात्र वाजीत्र वागेछे एम जणाय अबह जाणवो. २ तथा ते शब्दर्मा कने मधुर मंदत्वादि बहुपर्यायोपेते जे शंखादिक ध्वनि पृथक् पृथक् घणा प्रकारे सांभळवामां आवेछे तेने बहुविध कहीए. ३ कोइने एक वे पर्यायोपेत ते ध्वनि सांभळ्यामां आवेछे ते अबहु-विध जाणवो. ४ कोइकने तुरत ते नाद सांभळवामां आवे छे ते क्षिम जाणवो. ५ कोइक विचारी विचारी घणी वार पाछळथी जाणे ते अक्षिम जाणवी. ६ ध्वजारूप छिंगेकरी जेम देवकुँछ ओळखायछे तेम लिंग सहित जाणे तेने निश्रित कहेंछे. ७ कोइ उक्त प्रकारे छिंगरहीत जाणे तेने अनिश्रित कहेछे. ८ कोइने शंसयरहीत संभळायछे तेने असंदिग्ध कहेछे. ९ कोइने शंसयसहीत संभळायछे तेने संदिग्ध कहेछे. १०

कोइके एक वेळा सांभळी ग्रहण करी लीधे लं ते सदा सर्वदा स्मरण रहे पण वीसरे नहीं तेने ध्रुव कहे छे ११. अने कोइक एकवार ग्रहण करे लं सर्वदा स्मरणमां रहे नहीं तेने अध्रव कहे छे. १२. एवी रीते बार भेदे ज्ञान थाय छे तेने पूर्वीक अहावीश भेदोथी गुगतां त्रणशेंने छत्रीश भेद मितज्ञानना थाय. तथा तेमां अश्रुत निश्चितना चार भेद मेळ शिए तो त्रणसेने चाळीस भेद मितज्ञानना थाय छे. अर्थावग्रह एक समय प्रमाण छे. इहा अने अपाय अंतर्ग्रह में प्रमाण छे. धारणा संख्यात असंख्याता काल सुधी छे अथवा द्रव्यक्षेत्र काल भावथी मितज्ञान चार प्रकार हुं छे.

मितिज्ञानी आदेशथी सर्व द्रव्य जाणे पण देखे नही. क्षेत्रथकी सर्व क्षेत्र लोकालोक जाणे पण देखे नही. कालथकी आदेशे सर्व काल जाणे पण देखे नही. भावथकी आदेशे सर्व भाव जाणे पण देखे नही.

श्रुतज्ञान स्वरूप

श्चतज्ञान चौद तथा वीश प्रकारनुंछे चौद भेद कहेछे-

गाथा.

अरुव्हर सन्नी सम्मं, साईयं खळु सपज्जवसियं च । गमियं अंग पविष्ठं, सत्तविष् ए सपडिवरूवा १

श्रुतज्ञानस्वरूप.

भावार्थ-अक्षरश्रुत, अनक्षरश्रुत, संद्रीश्रुत, असंद्रिश्रुत, सम्य-क्श्रुत, असम्यग्श्रुत, आदिश्रुत, अनादिश्रुत, पर्यवसितश्रुत, अप-र्यवसितश्रुत, गमिकश्रुत, अगमिकश्रुत, अंगमिश्रुत, तथा अंग बाह्यश्रुत, ए चौद भेद जाणवा.

१ अक्षरश्रत-अक्षरश्रुतना त्रण भेदछे संज्ञाक्षर, व्यंजनाक्षर तथा लब्ध्यक्षर. तेमां पथम संज्ञाक्षर-अदार प्रकारनी लीपी, तथाहि-इंसलिवी, भूयलिवी जरुख।तह रख्खसीय बोधवा। उड्डी जवणी तुरुकी कीरी दवडीय सिंधविया १ माल विणी निंडनागरि लाडीलवी पारसीय बोधव्वा। तह अनीमित्तयिलवी चाणकी मूलदेवीय. २ वीजो व्यंजनाक्षर प्रकार ते अकारथी हकारपर्यंत बावन अक्षर ग्रुखे उच्चारवारूप जाणवो ए बन्ने प्रकार यद्यपि अज्ञानात्मक तथापि श्रुतना कारण होवाथीं उपचारे करी ए वे प्रकारने श्रुतक्षाननी संज्ञा आपीछे.

३ अब्द अवण तथा रूप दर्शनादिक थकी अर्थ परिज्ञान गर्भित जे अक्षरनी उपलब्धि रूप लब्ध्यक्षर श्रुत जाणवुं, करपल्लवी आदि-के जेथी अक्षर संख्यानुं ज्ञान थायछे तेनो समावेश लब्धि अक्षर श्रुतज्ञानमां जाणवो.

२ अनक्षरश्चत-शिरकंपन, इस्तचालन प्रमुख तथा समझ्याए करी गमनागमनादिक मनना अभिनायनुं जे परिज्ञान तेने जाणवुं. यथा कोइ मनुष्य कोइ मनुष्यने पृच्छा करे के भाइ बाहेर जावुं छे के ? तेनो मत्युत्तर मुखथी नहीं देतां मस्तक हलावीने अथवा हाथवती ज्ञान करीने पोतानी नामरजी जणाववी. पूछनारने तेना मनना अभिमायनुं परिज्ञान (जा-णपणुं) थाय तेने अनक्षरश्चत कहें छे.

परमात्मवर्धन.

(141)

३ त्रीजं संबीश्वत संज्ञा त्रण मकारनीछे १ दीर्घकालिकी, २ हेतुवादोपदेशीकी, तथा दृष्टिवादोपदेशिकी.

केम करवुं ? हवे केम थशे ? इत्यादिके करी अतीत तथा अन्तानत घणा कालनी घणा काल पर्यंत विचारणा करवी ते दीर्घ-कालिकी संज्ञा जाणवी. तात्कालिक इष्ठ अनिष्ट वस्तु जाणीने महित्त करवी ते हेतुवादोपदेशिकी संज्ञा. क्षयोपशम ज्ञाने सम्यग् दृष्टिपणुं होय ते दृष्टिवादोपदेशिकी संज्ञा जाणवी. विकलेंद्रिय असंज्ञीने हेतुवादोपदेशिकी संज्ञां अंचेद्रियने दीर्घकालिकी संज्ञाले. कारण के ते विचार चिंतवना करी शकेले, समकिती जीवने दृष्टिवादोपदेशिकी संज्ञा जाणवी. मन तथा इंद्रियोधी उत्पन्न थयेलें जे ज्ञान तेने संज्ञीश्चत कहेले.

- ४ मन विना मात्र इंद्रियोए करी थयेछं ज्ञान ते असंज्ञीनुं श्रुत जाणवुं.
- ५ पक्षपात विना कोइ विषयना स्वरूपने जे यथार्थ जाणबुं तेने सम्यक्श्रुत कहेछे, अईत् प्रणीत आगमने सत्य मानबुं पक्ष-पात विना ते.
- ६ यथावस्थित बोधना अभावथी मिथ्यादृष्टिए अईत्मणीत अथवा मिथ्यादृष्टि मणीत वाक्यादिकनुं जाणवुं एटले पक्ष-पात ममुख बुद्धिए करी कोइ विषयना स्वरूपने यथार्थ न जाणवुं तेने असम्यक्श्रुत कहेले.
- ८ श्रुतज्ञान सादि पर्यवसितछे, तेमज अनादि अपर्यवसित पण छे.
- १० द्रव्यथी एक पुरुष आश्री लड्डए तो सादि सवर्यवासितछे, अने घणा पुरुषो आश्री लड्डए तो अनादि अपर्यवासित पणछे. सेत्रथकी भरत तथा श्रेरवतने विषे ज्यारे तीर्थंकरनो तीर्थ

श्रुतज्ञानस्वरूप.

बर्ते खारे द्वादशांगी रूप श्रुत होय छे, अने ते तीर्थनो विच्छेद थवाथी ते श्रुतनो पण विच्छेद थाय छे. तेथी ते सादि सपर्यवसित जाण बुं. महाविदेहमां तीर्थनो विच्छेद श्रुतनो पण विच्छेद थतो नथी तेथी तथां अनादि अपर्थवसित श्रुत जाण बुं. काल थी। उत्सिर्णिण तथा अवसर्पिणीमां चोथे तथा पांचमे आरे श्रुत इति होय अने छ छे आरे विच्छेद थाय छे तेथी सादि सपर्यवसित जाण बुं. महाविदेह क्षेत्रमां ए बुं काल चक्र नहीं होवाने लीधे त्यां श्रुत इति पण अनादि अपर्यवसित जाण बुं.

भावथी-भन्यसिद्धिआ जीवने ज्यारे सम्यक्तवनी प्राप्ति थाय छे त्यारे आदि अने केवलझाननी प्राप्ति थायले त्यारे अंत होवाथी सादि सपर्यवसित श्रुतकान जाणवुं.

- ११ अग्यारमुं गमिकश्रुत ते ज्यां सूत्रना सरला आछावा आवे ते जाणबुं. दृष्टिवाद सूत्रमां जाणबुं.
- १२ बारम्रं अगमिक श्रुत अणसरखा अक्षरोना आछावा होय ते जाणवुं.
- १३ तेरमुं अंग मविष्ट ते द्वादशांगीरूप जाणवुं.
- १४ चौदम्रं अंग वाह्यश्चत ते आवश्यक तथा दशवैकालिक जा-णबुं तथा श्चतज्ञानना वीश भेद पण कर्मग्रंथ विगेरेथी जाणी लेवा.

अवधिज्ञान स्वरूप.

अनुगामी, वर्धमान, प्रतिपाति, अप्रतिपाति, हीयमान, अर्ननुगामी ए छ प्रकार गुण प्रत्यय अवधिज्ञानना छे. उक्तंच. नन्यध्ययने "तं समासओ छिन्वहं पत्रक्तं तंजहा आणुगामियं अणाणुगाभियं, बहुमाणयं, हीयमाणयं, पिडवाइ, अपितनाइ.

- १ प्रथम जे ठेकाणे अवधिज्ञान उत्पन्न धयुं होय ते ठेकाणुं मू-कीने बीने देशांतर प्रमुख जाय त्यां लोचननी पेठे जे साथे आवे तेने अनुगामिक अवधिज्ञान कहेले. ज्यां पुरुष जाय त्यां साथे आवे ते.
- २ बीजुं जे ठेकाणे रह्यां अवधिक्षान उत्पन्न थयुं होय ते स्थानके आवे तेवारेज होय. पण अन्यत्र स्थाने जाय तेवारे साथे न होय तेने अनुनुगामि अवधिक्षान कहें छे.

से किंतं णाणुगामीयं आहीनाणं ओहीनाणं तंजहा नामएगेइ
पुरिसेगममहं जोइठाणं काउं तस्सेव जोइठाणस्म परि पेरं तेसुपरिहिंडमाणे परिहिंडमाणे परिघोलमाणे तमेव जोइठाणं पासइ अनध्थगए न पासइ एतमेव अणाणु गामियं ओहिनाणं जध्येव समुपउजइ तथ्येव संखिज्जाणि वा असंखिज्जाणि वा जोयणाइ पासइ
न अन्ध्थ्य.

भाष्यकारोप्याह-अणुगामित अणुगच्छः गच्छंतं लोयणं जहा जहा पुरिसं इयरोज नाणु गच्छः ठियप्पश्चन्त्रगच्छंतं-इति.

- ३ त्रीजं जे दृद्धि पामे तेने वर्द्धमानअवधिज्ञान कहे छे, जेमके श्राम्यातिअग्निमां जेम जेम बलतण नाखीये तेम तेम वधती ज्वाला थायछे तेनी पेठे यथायोग्य मशस्त अतिपशस्ततर अध्यवसायने लीने पूर्वावस्थाधी ते उत्तरोत्तर समय समय वधतुं वधतुं जाय तेने वर्धमान अवधिज्ञान कहे छे अर्थात् मथम उपनती वखते अंगुलन असंख्यातमा भाग जेट छं क्षेत्र जाणे देखे पश्चात् वधतां वधतां यावत् अलोकाकाशने विषे लोक जेवडा असंख्यातां खांडवां देखे.
- इ चोयुं पूर्वे अभ परिणामवशे घयुं उपजे पश्चात् सथाविध

अवधिशानस्यरूप,

सामग्रीनो अभाव थयाथी पडता परिणामे करी हानि पामे तेने हीयमान अवधिज्ञान कहे छे.

- ५ पांचग्रं संख्याता असंख्याता योजन उत्कृष्टपणे यावत् समग्र स्रोक देखीने पण पडे एटले जे आव्यं जाय तेने प्रतिपाति कहेले.
- इं जे उत्पन्नथया पछी भीणताने न पामे ते लोक समग्र देखीने अलोकना एक प्रदेशने देखे ते अमितपाति ज्ञान जाणवं. ते ज्ञान आव्यं जाय नहीं.
- प्रश्न-हीयमान अने प्रतिपाति ए बन्नेनां लक्षणो तो सरखांछे तेम छतां जुदां बताबबान्नं शुं कारणछे ?
- उत्तर-पूर्वावस्थाथी हळवे हळवे घटतुं जाय एटले क्षीणताने पामे ते हीयमान कहेवायछे अने जे विध्मात मदीपनी पेटे एक कालने विषेज निर्मूल थायछे ते मतिपाति कहेवापछे. अवधिज्ञानना असंख्यात भेदछे, वळी अवधिज्ञानना चार मकारछे तथा चाह.

तंसपासओ चउन्तिहं पन्नत्तं तंजहा दन्त्रओ वित्तओ कालओ भावओ दन्त्रओणं ओहीनाणी जहन्नेणं अणंताइं रुविदन्ताइं जाणइ पासइ उक्कोसेणं सन्त्र रूविदन्त्राइं जाणइ पासइ, खित्तओणं ओही-क्नाणी जहन्नेणं अंगुलस्स असंखेज्जभागं उक्कोसेणं असंखिज्जाइं अलीए लोयप्पमाण पित्ताइं खंडाइं जाणइ पासइ कालओणं ओहि-क्नाणी जहन्नेणं आवलियाए असंखिज्जभागं उक्कोसेणं असंखि-ज्जाओ उस्सप्पिणी अवसप्पिणी अतीयं च अणागयं च कालं जाणइ पासइ भावओणं ओहिन्नाणी जहन्नेणंवि अणंते भावे जाणइ पासइ उक्कोसेणं वि अणंतेभावे जाणइ पासइ सन्त्रभावाणं अ-णंतभागं.

अवधिज्ञानी द्रव्यथी जवन्ययणे अनंतारूपी द्रव्यने जाणे देखे

उत्कृष्टपणे सर्वरूपी द्रव्यने जाणे देखे ते द्रव्यथी अवधिज्ञान.

क्षेत्रथी जवन्यवर्णे अंगुलतो असंख्यातमो भाग जाणे देखे जने उत्कृष्टपणे अलोकाकाकाते विशे लोक प्रमाण असंख्यातां खांडवां जाणे देखे.

कालथी अवधिज्ञानी जघन्यवर्णे आविलिकानो असंख्यातमो भाग जाणे, देखे अने उत्कृष्टथी असंख्याती उत्सर्व्यिणी अवसर्व्यिणी पर्यत अतीतकाल अनागतकाल जाणे देखे ते कालावधि ज्ञान.

भावयी अवधिज्ञानी जघन्यपणे अनंतभावने जाणे देखे अने उत्कृष्टथी पण अनंता भावने जाणे देखे ते भावावधिज्ञान जाणवुं.

मनःपर्घ्यवज्ञानस्वरूपं.

मनःपर्यव ज्ञानना वे भेड्छे. एक रुजुपति, बीजो विशुलपति अम्रुक पुरुषे घट चिंतव्योछे एम सामान्यपणे मननो अध्यवसाय महे ते रुजुमति जाणबुं.

तथा अमुक पुरुषे घट चिंतव्योछे ते द्रव्यथी सुवर्णनोछे, क्षेत्रथी पाटलीपुरनोछे. [कालथकी शीतकालनोछे, अने भावथी पीतवर्ण सुकुमाळ द्रव्यादि विशेष ग्राहिणीमति तेने विपुलमति ज्ञान कहेंछे.

अथवा मनःपर्यवद्गान ४ चार मकारनुंछे, द्रव्य, क्षेत्र, काल तथा भावधी उक्तंच तं समासओ च उव्विहं पत्र तं तं नहा द्व्वओ खे-त्तओ कालओ भावओ. द्व्वओणं रिडमइणं ते अणंतपएसिए खंवे जाणइ पासइ ते चेव विउलमइ अप्भहियतराए विमल तराए जाणइ पासइ.

भावार्थ-द्रव्यथी रुजुमित अनंत प्रदेशी अनंता स्कंध जाणे देखे अने विपुलमित तेहिज स्कंध कांइक अधिकेरा विशुद्धपणे जाणे देखे, क्षेत्रयकी रुजुमित नीचे रत्नपभा पृथ्वीतुं श्रुलक मतर लगे अने उंचुं ड्योतिषिना उपरीतल लगे तीर्च्छुं अदिद्वीप वे संग्रुद्र पन्नर कर्मभूमि त्रीन्न अकर्मभूमी अने छण्णन अन्तरद्वीपने विषे संग्री पंचेद्रिय पर्याप्ताना मनोगत भाव जाणे देखे अने वियुलमित तेहिन संग्र अदी अंगुले अधिक देखे अने वियुद्ध देखे. कालयकी जधन्यपणे इंजुमित पत्योपमनो असंख्यातमो भाग अने उत्कृष्टपणे अतीत अनागत जाणे देखे. अने वियुलमित तेथी अधिक अने वियुद्धतर जाणे देखे. भावथकी रुजुमित अनंताभाव जाणे देखे. अने वियु-लमित तेथी अधिक जाने वियु-लमित तेथी अधिक जाणे देखे.

केवलज्ञानस्वरूप.

केवलज्ञान उत्पन्न थतांज समकाले सर्व पदार्थीना द्रव्य क्षेत्र काल तथा भाव जाण्यामां आवी जायले, तथा दीढामां आवी जायले, माटे केवलज्ञान एक प्रकारतुं ले

आत्मानुंछे, केवलज्ञानमां मतिज्ञानादिनो अंतर्भीव थायछे, आत्मज्ञानी समकिती ग्रुनिने शुद्ध ज्ञाननी माप्ति थायछे.

आत्मस्वरूपना उपयोग विना ने संसारमां चाले है तेनी तिछ पीलक यंत्र द्वपनी पेठे संसारनी पार आवती नथी.

काव्यना नवरस ज्ञानिथी राची अने लाखो काव्य करो किंतु आत्मपदना उपयोग विना अन्य सर्व राखमां घृत सींचननी पेठे निष्कळ जाणवुं. तर्कशास्त्र पण आत्मतत्त्वना उपयोग विना मिथ्याभावे परिणमेळं नरकादिक गति भ्रमण हेतुभूतछे. व्याकरण ज्ञास्त्रथी पण आत्मपद भिन्नछे.

सारांशके-व्याकरण शास्त्र भणतां छतां पण जो आत्मानी अव्वित्वाण थइ नहीं तो तेथी शुं थयुं ? अलवत आत्मतत्त्व झानमां व्याकरण हेतुभूतछे पण आत्मतत्त्वना रस्ता उपरदोराय तो लेखे श्रायः स्माकरणभणीने वाद्विवाद मिथ्या करवाथी वैरविरोध कसे-

(140)

मनी उत्पत्ति थायछे. मारा जेवो कोण विद्वान हे ? समामां मने कोण जीतनार हे ? इत्यादि आभमानना आवेशमां सपडाइ जवा- यहे. माटे व्याकरण शास्त्र भणीने पण आत्मत्त्व जिज्ञामु थर्चुं. एज परमोपदेश रहस्य हे, आत्मतत्त्व जाणतां रागद्वेष क्रोध मान माया होभ विगेरेनो नाश थाय हे. वैरिवरोध कदाग्रहनो आत्म- तत्त्व जाणतां नाश थाय हो. जेना अज्ञानथी संसारनी मायामां हपटावानुं थयुं अने जेना ज्ञानथी अनंतकाल पंथत चतुर्गत्यात्मक संसारमां जडवत् स्वचेतना नष्ट मायः थइ परिश्रमण करत्नं पडयुं तेनुं जो ज्ञान थाय तो संसारनी उपाधिथी मुक्तज थाय अने अ- त्यद्भूत अनहद शुद्ध अखंड निर्मल शास्त्रत आत्ममुख अनुभ-वी शकाय. पोतानुं ज्यां अज्ञान त्यां रागदेष अने पोतानुं ज्ञान थतां स्योद्यथी अंधकार जेम स्वतः नाश पाये हे तेम रागदेष स्वतः नाश पाये हे.

अन्यदर्शनियो पग आत्मतत्त्व ग्रंगान करे छे ते नीचे प्रमाणे छे.
फकीर फकीर क्या कहो, फकीर जगत्का पीर;
फकीरसें तो इंट निकाला, पूर्ण रुप अमीर.
मन मारे तन वश करे, सोधे सकल शरीर;
दया धर्मकी कफनी पहेरे, आप रूप फकीर.
वेद वेद श्रुं कहो, वेद छे धर्म तारो;
बेदथी वस्तु छे न्यारी, अखंड तरखलो मारो
छवा देखी तळाव देखा, न्हाया देवकी कुंड;
गोळकी गंगडीके उपर, मख्खीकी बहोत हे जुंड, श्रु

उफामें तो साहेब देखा, सुरत तुरतसें जपनाः प्र हा कहुं तो हे नहीं, ना कह्या न जायः; हा ना के भितर, कीडी साकर खायः ६ शास्त्र भण्यो पुराण भण्यो, वेद तो मने खटक्योः; अनंतरूपे प्रभुजी मारो, आकाशमांहि चटक्योः ७ जोगी जंगम सेवडो, सन्याशी दरवेशः; बक्ष सामे प्रभुजी दीठा, वृत्ति आतमदेशः ६ बगर पाणीना तळाव मांहि, खील्युं कमळनुं फूलः; बत्ती विना अजवाळुं आपे, झगझगति तेनी ग्रल९ रत्नाकर सागर मांहे, गागर फूटी जायः; पाणी मांहे पत्थर लडे, अगम निगम परखायः १०

आवां अनेक भजनपद अन्य मतावलंबीयो गायछे, किंतुं ए-कांते तेनो अर्थ करवाथी जेवो जोइएतेवो सम्यग् लाभ थतो नथी.

अनेकान्तमत ज्ञाता आत्मार्थि अवळाने पण सवळा तरीके परिणमावेळे.

आत्मझ।नने माटे पयत करवो ते अति उपयोगीछे.

कथा मात्र कहेवाथीज जो आत्महित थतुं होत तो पुराणी-ओ बहु कथाओ कहेछे माटे तेमतुं तो कल्याण थवुं जोइए किंतु तेथी कल्याण थतुं नथी. आत्मतत्त्वतुं ज्ञान नथी तो एक उदर पोषक कथाथी शुं थाय? अलगत् कंइ नहीं मतुष्योना मनतुं रंजन करवाथीज जो धर्म थाय तो भाट चारण, नाटकीआ विगेरे जनमनरंजन करेछे ते मने धर्म थवो जोइए परंतु समजवातुं के आत्मधर्म समज्या विना अने आत्मार्थिपणाना गुणो मगट्या विना जनमनरंजनताथी पोतानी वाहवाहमां आत्मधर्म साधी शकातो नथी. माटे भव्यात्माओए कीर्ति, वाहवाह जनमनरंजनता मित छक्ष्य नहीं देतां आत्मधर्म उपर छक्ष्य देवुं. आत्मधर्म मित जेनी दृष्टि ते माणी त्रण अवनमां पूज्यताने पामेछे, व्याख्यान द्वारा जनमनरंजनपर ध्यान आपवुं ते अयोग्यछे. भव्यात्माओ आत्महित भी रीते करे ते उपर छक्ष आपवुं. अने तेवा शुद्ध अंतः-कर्णना अभिमायथी उपदेश देवो ते स्वपर हितकारकछे.

परस्पर क्लेकोत्पादक वादयी कंइ आत्महित यतुं नथी.
गाली देवीने लेवी एवो वादतो वाघरीना गृहे पणले परमार्थ श्न्य वादयी कायक्लेकादि मात्र फलले. आत्मतत्त्व रमण तथा
आत्मक्कान विना सर्व वात निष्फलले. व्याकरण, न्याय, वादादि
आत्मतत्त्वमां उपकारकले माटे तेमनुं स्वरूप जाणी तेमां रमण
करे तो वादादि सफलले. दीर्घ आयुष्यना अभावे अवश्य क्कातव्य
आत्मतत्त्वनुं अवलंबन करी रागादि दोषोनो नाक्ष करवा
प्रयत्न करवो ए हित शिक्षाले.

आत्मानुं ज्ञान जो नथी तो किया कांडथी पण मुक्ति थती नथी, आत्मस्वरूपना उपयोगी मुनिराजनी सर्व किया गुणनी खाण जाणवी, तदेतु, अमृत क्रियाना अधिकारी मुनीश्वरछे.

अध्यात्मसार ग्रंथे स्होक.

अपुनर्वधकस्यापि, या किया शमसंयुता । चित्रा दर्शन भेदेन, धर्मविष्ठक्षयाय सा १ अशुद्धापि हि शुद्धायाः कियाहेतुः सदाशयात् । ताम्रं रसानुवेधेन, स्वर्णत्वमिष्णच्छति २

(tto)

आंश्ममी रमणता कर.

समभाव सहित विचित्रदर्शनभेदे अपूनर्वधी जे चोधं गुगठाणुं तेनी जे किया ते पग ययपि धर्मना विद्यते नारी छे, तो पण भला आशय थकी अग्रद किया करे ते पण शुद्ध कहेवाय जेम ताम्र रसानु वेये सुवर्गताने पामे है, तेम अत्र समजबुं, अन्बीडन्य किया, विषक्ति गा, गरलकिया, तहेतुकिया, अमृताक्रिया ए पंच मकारनी किया जाणवी. तेमांनी आग्र त्रण क्रिया त्याज्य जाजबी. तद्धेत. अने अमृत क्रियानी पाप्तिथी मुक्ति थाय हे, अनेकान्त मार्गमां कदाग्रह करवो नहीं, समयसिंधनं विद्यही मकलावं ते व्यर्थ छे, मतकदाग्रहग्रस्तपना जीवोनी रागद्वेषयोगे सर्व क्रिया दु:खतुं धान एटले स्थान छे, स्त्रात्मोत्कर्ष मान पूजा कीत्तिने पाटे परात्मापकर्षकारक क्रियावादी स्वात्महित निरपेक्ष क्लाने लीघे साधन साध्य बुद्धि शुन्यताथी परमात्म पर साधी इकतो नथी, सापेक्षपणे व्यवहार निश्चय पूर्वक जिनाज्ञा सहित्र तद्वेत अग्रत क्रियान अवलंबन करीने भव्यात्माओ अखंड निर्मल शाश्वत सरवमय शिवस्थाननी प्राप्ति करे छे, जे भव्यो क्रियानं अजीरणजे निंदा तेनुं सेवन करेछे ते मुक्तिपदना अधिकारी थता नथी, अ-मुक्तमां अमुक दोषक्चे, अमुक तो आम करेक्चे, इत्यादि परभाव परिणति ज्यां सधीछे त्यां सधी आत्तध्यान अने रौद्र ध्याननी क्रिया जाणवी. अंतर्दृष्टि थतां धर्मध्याननी क्रिया थइ शकेले, जगतुमां रोगो अनेक प्रकारना होपछे, तेपज औषधो पण अनेक प्रकारनांछे, कोइने उधरस थड होय ते अग्रुक औषधथी मटे अने ते उधरस कोइने ते हबाथी मटती नथी. सुरतथी विहार क(ता मीयागाम आव्या त्यां श्री दर्लभविजयजी साथे दीपाविजयजी तपस्त्री हता तेमने उधरस घणी हती, तेम ताव पण हतो ते गाममां मोटां मोटां मरचां खा-बायी उधरस मटी तो भव्यात्माओने समजवानुं के भावरोगी जी-

परमात्मदुर्शन.

(141)

वा अनेक प्रकारनाछे, कर्मरोग पण अनेक प्रकारनाछे, तेना उपर धर्मनां औषधो पण अनेक मकारनांछे, कर्मरोगने टाळनार सदगुरू वैद्यो पण अनेक प्रकारनाछे, कोइ जीवने कोइ धर्म औषधयी लाभ थाय, कोइ जीवने कोइ मुनीश्वर वैद्यथी लाभ थाय, माटे पक्षपात करी एकान्तमतरूप कदाग्रहनुं अवलंबन करवं नहीं, पंचमारके अल्पपुण्यवंत बहुपापकमींजीवो प्रायशः धर्मनुनाम धरावी मारा तारा पणानी बुद्धि धारण करी पक्षपातरूपविषतु पान करी अ-नंतभवश्रमण करनारा थशे. अज्ञानरूप निद्रामां स्रुतेलाने तो सद्गुरू महाराज सहेल।इथी उठाडी शकेले किंतु जे मत कदाग्रह पक्षपातरूप दारूनुं पान करीने अज्ञानरूप निंद्रामां सुइ रहेलाछे ते पुरूषने तो गुरूपहाराज पश्चीश लाकडीओ मारीने आत्मस्वरूपे जगाडवाने समर्थ नथी. कारणके ते विलक्कल बेशद्ध वनी गयाछे. सत्यतत्त्व समजवाने शक्तिमान्छे किंत्र जेगे मतकदाग्रह रूप मदि-रातुं पान कर्युंछे, एवा पुरूषनी ्ञागळ सत्यतत्त्वनी हित शिखा-मण गुरूमहाराजा आपेतो ते व्यर्थ जायछे, उलढुं ते गुरूमहाराजने पण निंद्य वचन संभळावेछे, केटलाक जीवो तो एवा होयछेके पो-नाना मतमां बेठुं ते खरूं अन्य सर्व खोटुं मानेछे तेवा जीवोने ज्ञानी गुरूमहाराज बहु प्रयासे सत्यमार्गे दोरेछे, व्यवहार अने निश्रय नयना जाण ज्ञानी गुरूपहाराजा क्रियावडे कर्मनो नाज्ञ करेछे. ए परमार्थ.

" दुहा." आत्मोपयोगी साधुने, किरिया सद्ग्रण धाम; मतकदाश्रह लालचु, सहु किरीया दुःख ठामः ११८ जलनी जपाधियकी, जदी अवस्था थाय; तेवी जे जननी थती, भवमां ते भटकायः ११९

(१६२) योग्य साधु सर्विज्ञयाथी आत्मधर्म साधी शबेछे.

उपादान समजे नहीं, समजे नहीं निमित्तः; कारण कार्य समजे नहीं, तत्त्वे शुं शुभ वित्तः १२० द्रव्यभाव समजे नहीं, वर्ते बाह्याचारः; अनुपयोगिआत्मनो, पामे नहि भवपारः १२१

भावार्थ-प्रथम दुहानो अर्थ उपर लखायोछे जलनी उपाधिथी जेम भिन्न भिन्न अवस्थाओ थायछे-एटले जेम जलमां लाल रंग नाखीए लाल देखायछे. पीळो रग नाखीए तो जळ पीळं देखाय छे, स्रीलो रंग नाखीए तो जल लीलुंदेखायछे, एटलेजछ अन्यनी साथे भिश्र थवाथी व्यवहारथी स्वश्रद्ध रूपनो त्याम करेछे. तेम जे जीवो असत् संगतिरूप उपाधिना योगे जेवा मळ्या तेवा थइ जायछे, ते भवमां अटकेछे, अर्थात् सारांशके-जे जीव पादरीनी संगतथी तेना उपदेशवंडे इशुने पूज्यमाने, अने खीस्ति धर्म स्वीकारे, कदापि ते जीवने कोइ बौध गुरुनी संगति थइ. बौधे कहां स्त्रीस्ति धर्म तो अनार्य धर्मछे, ते धर्मथी मुक्ति मळती नथी, बौध धर्म सत्यछे माटे ते स्वीकार. त्यारे तेना उपदेशयी बीध धर्म स्वीकारे. वळी तेने कोइ ग्रुसल्मान मळ्यो तेणे कहुं बुद्ध धर्म तो खोटोछे,सत्य धर्म तो खुदाकाहै, बुद्ध धर्ममें तो अग्रुक जूटा कहाहे, ओ तो काफरोंका धर्म हे, इसलिये खुदाका धर्म मानेगा तो दोझखमे पडेगा नहीं, एम मुसलमानना उपदेशथी मुसलमान धर्म स्वीकार्यो. त्यारे ते पुरुषने कोइ वेदांति भळ्यो. वेदांतीए कहुं सर्व धर्मनुं मूळ वेदान्त छे. वेदथी मुक्तिनी माप्ति थायछे. इत्यादि कथनथी वेदधर्मनो स्वीकार कर्यो. त्यारे कोइ कालीकाना भक्ते कहुं. अरे मनुष्य तुं कालिकानो भक्तथा, कालिका पुत्र वन स्त्री वैभवने आपनारिछे, माटे कालिका तेज खरीछे, वेदथी तो कंइ सूख मळतुं नथी, इत्यादि कथनथी काणिकानो भक्त थयो, त्यारे वळी नास्तिक वादी तेने मळ्यो तेणे कशुं भला मनुष्य तने धर्म धुताराओ छेतरेछे केमके जे वस्तु आपणी आंखे देखाती नथी. ते वस्तुनी इच्छा राखवी ते व्पर्थछे, कालिका तो पत्थरनी मूर्ति छे ते कंद फल आपवा समर्थ नथी इत्यादि कथनथी नास्तिक थाय इत्यादि अव-स्था जे मनुष्यनी थायछे ते कदापि आत्म सुख पामी शकतो नथी. कारण के ते अज्ञानी अधिवेकी अने श्रद्धा रहीतछे, तेथी भवस्त्रमण कर्या करेछे.

वळी जे भव्यो उपादान कारणने समजता नथी अने निभित्त कारण हुं स्वरूप पण जाणता नथी, अग्रुक कार्य अने तेतुं कारण अग्रुक ते पण समजी शकता नथी. साधन अग्रुक अने साध्य अग्रुक ते पण समजी शकता नथी एवा अज्ञानी जीवोतुं तत्त्वमां चित्त होतुं नथी.

द्रव्य अने भावथी चारित्रने समजता न होय. फक्त ओघ-दृष्टियी बाह्याचारमां धर्म मानी प्रवर्ते, आत्मतत्त्वनो उपयोग होय नहीं तेवा जीवो भवनो पार पामी शके नहीं श्री यशाविजयजी उपाध्याय कहे छे के-

हाळ.

ज्यां लों आतम तत्त्वनुं, लक्षण नवि जाण्युं; त्यां लों ग्रणठाणुं भलुं, किम आवे ताण्युं. आतमः१

ए प्रमाणे विचारतां आत्म तत्त्वावबोध विना किया मुक्ति मार्गपतिकारणीभूत थती नथी. हुं किया कोने माटे कहंछुं, कियाथी शुं थायछे, कियानो कत्ती कोणछे ? एनी यथायोग्य समजण विना अनुपयोगताए परमात्मपदरूपसाध्यसंसिद्धि थड् शकती नथी, उल्रष्टं ते अनुपयोगताए क्रिया करी अन्य फल प्राप्त करेंछे यथा विनायकं प्रकुर्वाणो, रचयामास वानरं। विनायकनी मूर्ति बनावतां वांदरो रच्यो तेनी पेठे—आत्मानी अज्ञानताए अन्योन्य,विष, गरल, ए त्रण क्रियानुं सेवन थायछे—अने ए त्रण क्रियाथी जीव अशुध्धपरिणातियांगे शुभाशुभ कर्मपुद्गलो प्रही अनेक जन्म ग्रहतो त्रिविध तापथी पीडातो क्रुटातो दुःख संतितनो भोगी बनेछे. जड चेतननुं विशेषतः भेद ज्ञान थयुं नथी त्यां सुधी बहि-रात्मपणुं टळतुं नथी. अने बहिरात्मयोगे चेतन जड जेवो भासेछे, अने अज्ञानी जीव परवस्तुमां अहंत्व परिणाम धारतो जडता अनुभवेछे-श्री यशोविजयजी उपाध्याय कहेंछे के—

हुं एहनो ए माहरो, ए हुं एणी बुद्धिः चेतन जडता अनुभवे, न विमासे शुद्धिः आतमः १ आतम अज्ञाने करी, जे भव दुःख लहीएः आतम ज्ञाने ते टळे, एम मन सहहीएः आतमः २

आत्माना अज्ञानथी जे भवदुःख परंपरा पमायछे, ते भव दुःख परंपरानो नाज्ञ आत्मज्ञान थतां थायछे. अर्थात् आत्मज्ञान थतां अनादि काळथी परमां परिणमन थयुंछे ते टळेछे. रागद्वेष योगे जीव परवस्तुमां परिणमेछे अने यदा रागद्वेषनी परिणति टळेछे, तदा आत्मा परवस्तुमां परिणमतो नथी. ज्यां सुधी सम्यग् रीत्या आत्मस्वरूप जाण्युं नथी. त्यां सुधी जीव रागद्वेष पारिणामे मोही बनेछे. आत्मज्ञानथी रागद्वेषनी परिणति उद्भवेछे, आत्मज्ञाने सहज स्वभावे रमतां रागद्वेषनी परिणति नाज्ञ पामेछे, आत्मज्ञाने सिथरना थतां निर्विकार अखंड शाक्ष्वत सुख भोगवाय छे, मादे आत्मोपयोगी साधुने सर्व धार्मिक क्रिया सुखनी खानि भूत यायछे, अज्ञानीने संवरना हेतुओ आश्रवरूपे परिणमेछे अने स्याद्वादरूपे जेणे आत्मतत्त्व जाण्युंछे एवा ज्ञानीने आश्रवना हेतुओ पण संवररूपे परिणमेछे, एम ज्ञानीओनुं कथनछे – मयम कोइ अपेक्षाए अजीवतत्त्वनुं ज्ञान करचुं जोइए. कारणे अजीवने अवबोधतां सहेजे तेथी भिन्नजीव जाण्यो जायछे, जीवाजीवादि नवतत्त्वोनो सम्यगवबोध भेदज्ञान यवामां मुख्य हेतुछे.—

आत्मज्ञानथी मुनिवर्यो मुक्तिपद प्राप्त करेछे. कलिकाल स-र्वज्ञ श्री हेमचंद्र पण कहेछे के—

श्लोक.-योगशाह्रे.

मोक्षः कर्मक्षयादेव, सचात्माज्ञानतो भवेत् । ज्ञानसाध्यं मतं तच्च, तद्भ्यानं हितमात्मनः १ न साम्येन विना ध्यानं,नध्याने न विना च तत् । निःकंपं जायते तस्माद,द्रयमन्योन्य कारणम् १

मोक्षपद प्राप्ति कर्माष्टकक्षयतः थायछे, अने भवसंतित दृद्धि कारणीभूतकर्माष्टकनो क्षय आत्मज्ञानथी यायछे. इत्यादियी विचारतां आत्मज्ञान थवुं एज सर्व शाक्षनो स्पष्ट रहस्यभूत उद्देश समजायछे. मितज्ञान अने श्रुतज्ञानना योगे अस्ति नास्ति धर्ममय आत्मानुं ध्यान थायछे, अने ध्यान पण आत्मानुं समजवुं. ध्यानयोगे स्थिरता मग-दतां अनंत सुख अनुभवी आत्मा बनेछे, अने अनुभव ज्ञानयागे भव्यत्मा सुखनो आस्वादी बनेछे. कोइ वस्तुपर राग नहीं अने कोइ वस्तुपर देष नहीं एवी आत्मानी अवस्थाने साम्य अवस्था कहेछे. सूर्यना समान ज्ञान गुणे प्रकाशी आत्मा समजवो. सूर्य अश्रयी आच्छादित थतां तेना किरणोना मकाश्रनुं पण आच्छादन थायछे,

वायुना योगे वादळां दूर यतां जेम सूर्य किरणोथी प्रकाशे छे तेम आत्मारूपसूर्व कर्मरूपवादळांथी अवरायोछे तेथी सर्व वस्तुओ आत्माना इ।नमां क्रेयरूपे भासती नथी. पण मतिक्रानने शुतक्रानना यांगे ध्यानरूप वायु वातां कर्मरूप वादळां आत्माथी दूर थायछे. त्यारे आत्म। रूप सूर्व ज्ञानरूप किरणोधी लोकालोकने मकाशेले. ध्यानपरंपराए आत्मोपयोगीपणुं मुनिराजने सतत बन्युं रहेछे, भावचारित्रनी प्राप्ति विना आत्मोपयोगता वर्तती नथी. द्रव्य चा-रित्रयी कर्म नाश थतं नयी, चारित्र शुं छे ? ते जे जीवी अज्ञा-नयोगे समजता नथी, ते भाव चारित्रनो स्पर्श करी शकता नथी, भावचारित्र प्राप्ति पति रजोहरण ग्रुहपात्त साधुवेष दीक्षा आदि निमित्त कारणोछे, अने तेवी दीक्षा मत्येक तीर्थकरोए ग्रही भाव चारित्र प्रगटाव्युं, तेम अन्य भव्यात्माओए पण प्रभुना पगले चा-ली तेमनुं अनुकरण करी भावचारित्र मगट करवुं, ते भाव चारि-त्रती निरपेक्षताए वाह्याचारमां सरागदृष्टिथी संस्राता एवा जीवो उपयोगनी शुन्यताए संसाररूप समुद्रनो पार पामी शकता नथी. प्रश्न-भार चारित्र विना साधुवेष असमंजसक्त तो ते केम ग्रहण

प्रश्न-भाव चारित्र विना साधुवेष असमंजसके तो ते केम प्रहण करवो जोडण ?

उत्तर-रजोहरण मुह्यतिथी युक्त साधुवेष अंगीकार करी जीव बाह्यग्रंथिनो त्याग करेछे ते आभ्यंतरग्रंथि नाश पति कारणछे. माटे दीक्षा अंगीकार करवाथी बाह्य उपाधि टळेछे. अने छकायना जीवोनी रक्षा थायछे, पंचमहात्रत पाळवाथी आश्रवना मार्गो नाश पामेछे. सर्वतीर्थं करभगवंतीए एवी भागवती दीक्षा अंगीकार करीछे. अने तद्द्वारा विकल्प संकला त्यागी आ-त्यध्यानमां प्रवर्ती परमात्मपद साध्युं, माटे भन्यात्माए पण भागवती दीक्षा अंगीकार करवा प्रयत्न करतो. संसारमां गृहस्थावासमा वसी सर्वतः विरतिपणुं पामवुं मुक्केछछे, माटे दीक्षा अंगीकार करतां राग द्वेषनी हीनता थतां आत्मस्वरूपे रमण करतां भावचारित्र मगटेखे, ए राजमार्ग जाणवी. मोस पद छक्ष्यमां राखी सद्गुरू संगति करतां आत्मज्ञान मगटेछे. उपाधिमां अइनिंश राचीमाची रहेनार गृहस्थ जीवोने दुःख संत-तिरूप फलनी माप्ति थायछे. आत्मज्ञानना अभि डावि पुरूषोए सद्गुरूनुं सेवन करवुं. सद्गुरू सेवनथी जे झान मळेछे ते तास्विक फळने प्रमटावेछे, अने ते ज्ञानधी संयमनुं ग्रहण थायछे. अने संयमधी पोताना स्वरूपमां स्थिरता प्रगटेछे, अने स्थिरतायोगे जीव स्वगुणोने आविभीव रूपे प्रकाशेछे. माटे द्रव्यचारित्र एटले साधुवेष दीक्षाअंगीकार पंचपहात्रत धारण आदि ब्रव्यचारित्र कदापि असमंजस कहेवाय नहीं, भावचारित्रनी सापेक्षताए द्रव्यचारित्र निषित्त कारणीभूत आदरणीयछे. माटे भागवती दीक्षा अंगीकार करवी एन हिताकांक्षा-निज गुण स्थिरता तेज वस्तुतः चारित्र जाणवुं. व्यवहार चारित्रथी निश्चयचारित्र प्रगटेछे, आत्म परमात्मपद ए माटेज व्यवहार चारित्रिक्षयारूप कथ्युंछे. निश्चय चारि-त्रनी सापेक्षताए व्यवहारचारित्र सप्रमाण निमित्त कारणछे.

शिथिलाचारी आळ्सु, विषय वासना राग कृष्ण सर्प सम ते ग्रुरु, करवो तेनो त्यामः १२२ ब्रह्मचर्य उपदेश दे, मनमां ललना वासः कृष्णसर्पसम ते ग्रुरु, संग न कीजे खासः १२३ भावार्थ-वळी जे शिथिळ आचारवंत-धर्मध्यानमां आळस

साधुनी किया.

(186)

परस्वभाव रमणतामां तत्पर, वळी जेना हृदयमां विषयवासनानी राग सदा बन्यो रहेतो होय. तेवा कुगुरूओ कुष्णसपैसहश्च जाणवा, तेनो धर्मभिछाषी जीवोए त्याग करवो जोइए. कुष्ण सर्प संगतिथी एकवार मृन्यु थायछे, अने एवा कुगुरूनी संगतिथी मिध्यातत्त्वोपदेश पामतां रागद्देष परिणित योगे अनेक जन्मधारण करवा पडेछे. वळी जे गुरू नाम धरावता ब्रह्मचर्यत्रत पाळवानो उपदेश आपेछे. अने अंतर्मां स्त्रीनो वासछे एवा कृष्णसर्प सहश्च कुगुरूनी संगति करवी नहीं. विषयना जे रागी होयछे तेनी संगितिथी आत्मा निर्विषयी बनतो नथी। विषयो विषना करतां पण अति दुःखदायकछे. कहां छे के—

স্থান.

विषस्य विषयाणा च, दृश्यते महदंतरं उपज्रक्तं विषं हंति, विषयाः स्मरणाद्यिः १

विष अने विषयोनुं महद् अंतर देखायछे, विष तो खाधुं छतुं प्राणने। नाश करेछे. अने कामादिक विषयो तो स्मरण मात्रथी आत्माना गुणोने हणेछे तो जे विषयना संगी होय तेनी संगतिथी आत्मिहित थतुं नथी तेवा कुगुरूओनी पण निंदा करवी नहीं। मनमां एम चितववुं के ए विषयना भिखारी अशुद्ध परिणतियोगे हेयह्रेय उपादेय विश्वेक शून्य चित्तवाळा थइ चितामणि रत्नसमान आत्मधर्मनो अनादर करी परपुद्गळरूप ऐंडमां राचीमाची रह्याछे, ए तेमनी भवितव्यतानी वांकछे, एम विचारी माध्यस्थपणे वर्ती तेमनी संगति त्यागवी, कुगुरूनुं छक्षण जणाववानुं मुख्य कारण ए छे के—भव्यजीवो जेवुं आछंबन मळे तेवा थइ जायछे, सार्ह आछंबन मळे तो आत्मा सारा रस्ते वळेछे. अने नडारं आछंबन

मळे तो आत्मा अधोगित भाक् थायछे माटे भड्यजीवो असत्य आछंबननो त्याग करी सत्य सद्गुरूख्य निमित्त कारणतुं अवछं-बन करे, एज हिताकांक्षाछे.

" द्रहा. "

विषय त्याग वैराग्यता, वनितानो नहि संगः धन कंचननो त्याग जास, नमीए सद्युरु चंग. १२४ विषयाशा मनमां मटी, मन मर्कट वश जासः भवभीरु भ्रमणा मटी, तेना थइए दास. १२५

सुग्रह लक्षण कथेले—जेओए विषयने। त्याग कयोंले. अने जेवनुं मन वैराग्यथी सतत वासीत थयुंले. अने जे वनितानो संग करता नथी. धन कंचन ए उपायिले. तथी विवस्त संकला उद्भावेले. एम जाणी जेणे त्याग कर्योंले, एटले वहा पिग्रहनो त्याग कर्योंले. एवा सुंदरगुरूने नमस्कार करीए, विषयनी आशा तृष्णाना अंकुरा जेना हृदयमां उत्पन्न थता नथी. अने जेणे मन रूप मांकडुं वशा कर्युंले. अग्रुद्ध राग द्वेषनी परिणति योगे मनमां आर्तध्यान वा रोद्धध्यान थायले, ते मन वशा करवाथी थतुं नथी. चित्तने वशा करतां विकला संकल्पनो नाश थायले. मन वशा करवुं ते अत्यंत दुर्जयले. कोई धनुष्यधारी स्वबुद्धि विचल्लणताथी राधावेध सहल मात्रमां साधी शको तेवो एण मनने प्रताना वशा करी शकतो नथी.

यतः श्लोक.

वित्तमेवहि संसारो, रागादि क्वेशवासितं। तथैव तैर्विनिर्मुक्तं, भवान्त इति कथ्यते।।।१॥ रागादि क्वेशवी वासीत वित्त तेज संसारक्षे, अने रागद्वेषा- (100)

दिक्यी रहित मन थतां भवान्त कथायछे. एवं चित्त पण जेणे वश्च कर्युछे एवा सुगुरुमहासुनिराजने देखी माणी पण शान्त भावने पामेछे. तेमना उपदेशथी अनेक जीवोने सर्वेद्ध कथीत त-स्वनी श्रद्धा धायछे. कोइ श्रायक व्रत अंगीकार करेछे. कोइ साधु व्रत अंगीकार करेछे, वळी जे सद्गुरू द्धान दर्शन चारित्रथी मोक्ष सुख आराधेछे, ते सद्गुरू सुनिराज चोराशी उपमाए विराजीग होयछे ते ग्रंथान्तरथी जाणवी वळी सुनिराज अनेक उपमाओने धारण करनाराछे. यथा.

कंसे संखे जीवे, गयणे वाउय सारए सिलेले ॥ पुरुषरपत्ते कुभ्मे, विह्रण खग्गय भारंडे ॥१॥

कंस पात्र सपान उज्जवळ, शंख, जीव, गगन, वायु, शरद्कर जुल, कमळपत्र, काचबो, पंखी, खड्गी, भारंड पंखी, हाथी, वृषभ, सिंह, मेरुपर्वत, समुद्र चंद्र, सूर्य, सुत्रणं, पृथ्वी, अग्निनी आदि उपपा-ओने धारण करनार मुनीश्वर जाणवा बळी मुनीश्वर छक्षण कथे छे—भवभीरु—एटले संसारमां अनेक प्रकारनां दुःख भर्या छे, उपां सुधी संसारछे त्यां सुधी तात्विक सुख नथी। पुनः पुनः रागद्वेषथी बीता होय माटे रागद्वेषने सेवे नहीं. अगणा मटी—जड वस्तुमां आत्मबुद्धि हती ते टळी हुं अने मारूं आवी अमणारूप बुद्धि पर-वस्तुमां थती हती, ते अमणा बुद्धिनो जेणे नाश कर्योछे, एवा महात्मामुनीश्वर आत्मतत्त्व साधी शक्षेछे, वळी जे पुरुष शिष्यभाव तथा वैराग्यथी रहितछे। एवा अनिधकारी पुरुषने मायः उपदेश देवा पण मवृत्ति करता नथी। अन्य शास्त्रोमां पण कर्मुछे के—

नापृष्टः कस्यचित् ब्रूया । त्रचान्यायेन पृच्छतः ॥ जानन्नपिच मेधावी, जडवहोकमाचस्त् ॥ १ ॥ विद्वान् ग्रुनिवर्य पक्ष कर्या विना कोइनी साथे बोके नहीं, अन्यायथी पृच्छकने पण उपदेश करे नहीं, किंतु सर्वतस्वनो जाण छतो पण मेथावी जगत्मां जहनी पेठ विचरे बळी जे ग्रुपश्च ग्रु-िननी आत्मज्ञान तरफ धारणाछे, अनेक प्रकारनी वासनाओथी बासित चित्त ज्यां ग्रुथी होयछे त्यां ग्रुथी आत्मस्वरूप प्रतिक्ष स्थानतुं नथी जेम मसीन दर्धणमां प्रतिबिंग स्वच्छ पढी शकतुं नथी जम मसीन दर्धणमां प्रतिबिंग स्वच्छ पढी शकतुं नथी जम मसीछे तेम मनोरूप दर्धण रागद्वेष तेमन अनेक मकारनी बासनाओथी युक्त होयछे त्यां ग्रुथी तेनामां आत्मस्वरूप भास तुं नथी, पण ज्यारे रागद्वेष इच्छा बासनारूप मसीनतानो नाम थाय छे त्यारे आत्मस्वरूप भासेछे, निर्मे वित्त जेतुं थमुंछे एवा ग्रुनिवर्यो आत्मस्वरूप भासेछे, निर्मे वित्त जेतुं थमुंछे एवा ग्रुनिवर्यो आत्मस्वरूप भासेछे, निर्मे वित्त जेतुं थमुंछे एवा ग्रुनिवर्यो आत्मस्वरूप ग्रुह्मो ग्रुह्मथो—तस्व प्राप्तिमां अधिकारी नथी।

वर्डी मुनीश्वर निंदा वा स्तुतिथी संतुष्ट थाय नहीं कारण के मायाना फंदमां पडेली दुनीया दोरंगीले, कोइ कंइ कहे अने कोइ कंइ कहे, लोक की ति अने लोकनी स्तुति अर्थे जे आवरण आव-रवं ते मायानी वृद्धिने माटेले पण आत्मसुख माटे नथी माटे लोककी ति स्तुतिका वासनानो मुनि त्याग करे - स्वकीय आत्मातं हित करवं तेज योग्य ले,

यतः श्लोक.

विद्यते न खलुकश्चिद्धपायः। सर्वलोक परितोषकरो यः। सर्वथा स्वहितमाचरणीयं। किं करिष्यति जनोबहुजल्पः

आ दुनीयामां एवी कोइ उपाय नथी के जेथी सर्व छोक स्तुति करे. माटे आत्मतस्वाधि पुरुषे छोकवासमानी सर्वथा परि-

भारमस्वकप.

त्याम करी आत्महित आचरवुं लोकनी निंदा स्तुति तरफ देखवुं नहीं, बळी अन्य शास्त्रीमां कह्युं छे के—

श्लोक.

न लोकचित्तप्रहणेरतस्य । नमोजनाच्छादन तत्परस्य। न शब्दशास्त्राभिरतस्य मोक्षो।न चातिरम्यावसथप्रियस्य

जो पुरुष सर्व प्रकारसें छोकोंके चित्त रंजन करणे विशेष प्रीतिवाला है तथा जो पुरुष भोजन आल्छादन विषेहीं तत्तरहैं. तथा जो पुरुष व्याकरणादिक अनात्मक्षास्त्र विषे अभिनिवेशवाला है. तथा जो पुरुष अत्यंत रमणीय गृहो विषे प्रीति वालहें ऐसे पुरुषकुं मोक्ष पात होता नहीं, यातें मोक्षकी इच्लाकरनेवाले मुनिन् वर्षकुं सा लोकशासना सर्व प्रकारतें परित्याग करणी चाहिये.

ए श्लोकथी १ण विचारतां मुनिवर्यने सर्वे प्रकारनी वासना-नो परित्याग थवो जोइए. वासनारहित मुनिवर्य अनेक प्रकारनां धार्मिक कार्य करतां बंधाता नथी.

अंतर्थी वासना आदिनो त्याग विना बहिरनो निष्फळ स्याग जाणको. आत्मायी भिन्न सर्व जगत्ने देखनारा मुनिराजना हृदयमांथी सर्व वासनानो नाश थायछे.

असंख्यात प्रदेशी आत्मा तेज हुं परमात्माछुं, अन्य जहमस्तुओ हुं नथी. अने अन्य जहवस्तुओ मारी नथी आ प्रमाणे हृद्ध निश्चय भावनाभावे, अने अंतर्थी न्यारो वर्ते. आत्माभिमुख चेत-नापणे वर्ते. एवा परमपूज्य करूगासागर मुनिश्वर महाराजना द्वास थइने रहीए. एवा मुनिना दास महाभाग्य होय तो थवाय-पूमनी सेवा चाकरीथी भवोभवनां दुःख नाग्न पामे. अने सर्व उ-पाधि दळे, आत्मा परमात्मक्ष्य थाय. मादे भव्य सुशिष्योए प्रवा

परमात्मदर्भन.

102)

मुनिवर्यना दास थइ रहेवुं, एमनी आज्ञा मस्तके चढाववी. कदी एवा मुनिवरनी आज्ञानो छोप करवो नहीं, तेमनुं सदाकाछ ध्यान स्मरण करवुं, तेमनी वैयायच्च करवी.

प्रश्न-गुरू अने मुनिमां अ(पना वोलवा प्रमाणे कंड भेद स-मजाय छे तेनुं शुं कारण ?

उत्तर-नेण उपदेश देइ सम्पक्त्य प्रभाडयुं होय ते ध्रमाचार्य गुरू जाणवा.

ते मुनिराज छते पण धर्म पपाडवाथी धर्माचार्य गुरू मुनिराज जाणवा. अने ते विनाना उपरोक्त छक्षण सहित जे होय तेवा रजोहरण मुहपत्तिना धारक मुनिराज जाणवा. समिकतदान दातृ- न्वथी वेमां पटछो भेद जाणवो. उपकारथी भेद जाणवो. हवे सर्व जीवने धर्मनी माप्ति केवा छक्षणथी थाय ते देखाडेछे, अत्र मुनि तेमज आवकनो भेद पाडया विना, बन्नेने हितकारक आत्म धर्म जाणी बन्नेने उपदेश आपेछे.

'' दुहा ''

रहीए आप स्वभावमां, लहीए तत्त्व स्वरूप ॥ आपोआप विचारतां, मिटे अनादि धूप ॥ १२६ ॥ जाति नहीं हे आत्मकुं, जस जाति अभिमान ॥ पामे नाहे ते धर्मने । नक्की मनमां जाण ॥ १२७ ॥

भावार्थ-मोक्ष पद्याप्त्यर्थम् आत्मस्त्रभावमां रमणता करवी जो आत्मस्त्रभावमां रमण करीए तो तत्त्व स्वरूत एउछे परमात्म पद पामीए, वेष बदछो, देश बदछो, किंतु आत्मस्त्रभावमां रमणता विना मुक्ति नथी। परवस्तु संवंधे थता अनेक मकारना विकर्ण संबर्णो तेने मनथी दुर हठावी केवछ आत्मानुं ध्यान करवुं. आ-

आस्मस्यरूप.

त्मा पोते सुखनुं स्थानछे. आत्मा पोतानी मेळे ज्ञान गुणथी पोतानुं स्वरूप जाणेले, हुं आत्मा सदा सच्चिदानंद स्वरूपनी धारण करनारछुं हुं मायाथी न्यारोछुं. सर्व उपाधिथी हुं भिन्नछुं मारूं पोतानुं स्वरूप रागद्देव रहितछे तो हुं केम तेनो पढले परपुर्ग· छनो संग करूं ? हुं अरूपी छुं तो रूपीवस्तुने केम पोतानी मानुं? हुं विज्ञातिथी न्यारोछ तो माराथी भिन्न विज्ञातिय पुट्-ग्छ द्रव्य तेने क्षेम पोतानुं वानुं ? मारा शुद्ध स्वरूपे हुं रमुं तो ,<mark>हुं अखंड आनंदमयछुं</mark>, विकल्ए संकल्ए रहित हुं छुं तो विकल्प संकल्पने हुं पोताना केम मानुं ? अने विकल्प संकल्प हुं केम कुं रूं ? अने ज्यां सुधी विकल्प संकल्प करूं त्यां सुधी सुखी केप यार्ड ? तेपज निविकरण एवं मारूं स्वरूप पण श्री रीते पासं ? ीब रूट्य संकल्प करवा ए मारा आत्मानो ग्रद्ध स्वभाव नथी तो ह्रवे हुं स्थिर असंख्यमदेशमय उपयोगी थाउं १ अने गाढ निद्रा-नी पढें सर्व माया जाळने भूछी जाउं, तो मारो अनुभव आपो आप विचारतां थाय अने एम निर्विकल्प दशामां रहेतां आत्मशक्ति मारी आविभीवेपकाशे, क्षायिकभावे, द्रढध्यान संततियोगे आत्म गुणो स्फुरायमान थाय, विकल्प संकल्प श्रेणि परंपरानाज्ञ पापतां सहन अनुभव सुखराशि मगटे, अने अनादिकाल संलग्न आधि व्याधि उपाधिरूप धृप नाश पामे. सारांश के-आधि व्याधि उपा-धिनां दुःखोतुं मूल कारण कर्मनी प्रकृतियोछे. अने द्रव्य कर्मरूप मकुतियोजुं आत्मानी साथे जे बंधावुं ते रागद्वेष परिणति याज्यके.

रागदेष परिणतिनी नष्टता ज्ञान ध्यानथीछे. आत्मा स्वस्व-भावमां रमण करेतो अनंत भवोपार्जित कर्भराशिने दूर करेछे अनुक्रमे सर्व कर्म मकृति विकृति समूखतः क्षय करी परमात्मपद स्वात्मविषे मगटावेछे, स्वात्मज्ञानथी प्ताह्य सुखोत्पतिज्ञान क्रि-

यामां प्रवर्तवाथी थायछे.

आत्मानुं स्वरूप दर्शावेछे.

" जाति निह है आत्मकं "-आत्माने जाति नथी एटले ब्रा-ध्मण जाति, वणिक् जाति, कणबी, सोनार, छवार. देड, चंडाळ, इत्यादिजाति आत्मानी स्वरूपतः विचारी जोतां बिलकुल जणाती नथी. जाति देहकुलने आश्रितछे. आत्मा अरूपी तेथीन्यारोछे. माटे जातिमान् आत्मा नथी. कोइ जात्याभिमानथी हुं ब्राह्ममण छुं, हुं वणिकछुं, हुं रजपुत छुं, हुं कणबी छुं, एम अज्ञानयोगे जाति अ-ध्यास पोताना आत्मामांमानी छेछे ते आत्मपद भाप्त करी शकतो नथी. वस्तुतः विचारी जोतां माछम पडेछेके जगत्व्यवहारमां जाति एक संज्ञा मात्र छे. आत्मामां सदा ब्राह्मणत्व क्षत्रिय-त्वादि जाति कदी रहेती नथी अने रहेशे पण नहीं, व्यवहारमार्गे जातिनी कल्पना छे पण ते वस्तुतः सत्य नथी माटे जातिनो अध्यास आत्मामां धारण करवाथी बहिरात्मपदनी पाप्तिनो वियोग थतो नथी. जेम आकाशमां कोइ जाति नथी. तेम आत्मामां पण कोइ जाति नथी अभिमानवाळा जडजीवो आत्मअनात्म विवेक शुन्य बनी परमां अहं-ममस्वबृद्धिथी रागद्वेष परिणति भजी मानसिक अनेकशः संताणो अनुभवी आर्त रौद्रध्यान वश थइ अधोगति पाप्त करेछे. " जस-जाति अभिमान " जेने जातिन्नं अभिमान छे ते बाह्य पदार्थोमां धर्म मानेछे, जातिना अभिमानथी लोको परस्पर एक बीजानी निंदा करेछे, एक बीजाने जाति अभिमानथी हलका गणेछे. जात्यभिमा-नी जीव जातिमां राची माची रहेके, उंची जातिवाळी कहेवातो होय तो नीच जातिवाळाने इलको गणेछे. पोतानी जातिमां राग वंधाय छे, अने अन्य जातिमां द्वेष वंधाय छे. पोतानी जातिमां ज धर्मछे अन्य जातिमां धर्म रहेतो नथी एम इत्यासनाथी भवमां बंधायके (104)

माटे तेवा जीवो बहिर् दृष्टिपणाथी चिदानंद आत्मामां सदा रहेला धर्मने पाप्तः करी शकता नथी. जात्यभिमानी जीवनी अंतर्दृष्टि थती नथी, तेतो क्षणे क्षणे हुं ब्राह्मण छुं, हुं क्षत्रीयछुं, हुं बाणियोछुं, छुं एवी बुद्धि धारण करेछे, पण हुं ब्राह्मण नथी, हुं विणक् नथी, हुं क्षत्रिय नथी, एवी बुद्धि धारण करी शकतो नथी, श्री यशोविजयजी ज्याध्याय पण समाधिशतकमां कहेछे के—

" दुहा• "

जाति देह आश्रित रहे, भवको कारण देह ॥ ताते भव छेदे नहीं, जातिपक्षरति जेह ॥ १॥

इत्यादिकथी विचारतां पण जात्यभिमानी आत्मधर्म साधी शकतो नथी, माटे आत्मधर्मार्थी ग्रुग्रुश्च जनोए आत्मानुं स्वरूप स-मजवुं, अने वाग्र जात्याभिमानरूपभ्रमबुद्धि त्यागी अंतर्दृष्टिथी आत्मधर्म साधवो, परमार्थ शिक्षा इत्येवं.

" दुहा."

लिंग देह उपर रहे, आतमथी छे भिन्नः तेमां शुं रंगाइये, रंगातां दुःख दीन. १२८ वर्णाश्रमना भेदथी, माने जे मन धर्मः सत्य धर्म ते निव ग्रहे, बांधे जलटां कर्मः १२९

भावार्थ—पुरुषिंत वा स्नीलिंग आदि लिंग देहाश्रित छे, देह ज्यारे आत्माथी भिन्न छे, अलवत आत्मानी देह नथी त्यारे लिंग आत्मतुं कहेवायज केम ? पुरुषादि त्रणे लिंगो आत्माने क-मीपाधिना संबंधथीज कहेवाय छे, हुं पुरुष ए अभिमान मनुष्य धारण करतो मायान्ध बनी हुं असंख्यमदेशी आत्मा एवो विषेक

भूली जाय छे, पुरुष लिंग प्राप्त थयुं ए कर्मना उदयथी छे, तेमां अहंता धारण करवी ते अज्ञानी जीवनं लक्षण छे, पुरुष वा स्त्रीना अध्यासथी बंधातां आपणुं आत्मानुं शुद्ध स्वरूप भूलीएछीए, हुं अने मारुं ए अभिमानथी त्रण जगत्मां कोइ आत्मानंदानुभवी थयो नथी अने थवानो नथी माटे वस्तुतः श्रियधर्मसाधक भव्यात्माओ लिंग अध्यासथी केम परमां रंगावुं जोइए ? अर्थात् कदी पण लिं-गाध्यास मनमां स्फुरवा देवो नहीं, अने एमां जो रंगाशुं तो दुःख वडे दीन एटले गरीव अवस्था प्राप्त थशे एमा संशय नथी. कोइ मर्दे पुरुषने चंपालाल, नपुंसक कहे तो त्वरित तेना मनभां आवशे-के मने नपुंसक कहेनार कोण ? एम संकल्प थतां क्रोधनो आवि-भीव थतां मुख तोबरा जेवुं फुळी जशे. वखते चंपाळाळने त्रण चार अपशब्दो पण संभळावे, परस्पर एक बीजानो अपकर्ष करवा बाकी राखे नहीं, ए लिंगाभिमाननुं फळ छे. माटे विवेकनयना-धिष्टाताओए परमात्मपद पाप्यर्थ अन्तर्देष्टि साधी एतादश अभिमा-नने त्यजवो, ज्यां सुधी लिंगाध्यास छे त्यांसुधी जीव हुं परमात्मा छुं एवी दृढ भावना धारण करवाना अभावे जन्म मरणनी उपाधि संचय संग्रहेछे.

वर्ण, तेमज आश्रमभेदे जे आत्मिक शृद्धधर्मनो भेद माने छे, ते शृद्ध शाश्वत आत्मधर्म प्राप्त करतो नथी, सत्यधर्म तेवा व्यवहारजडजनथी समजातो नथी. अने कदापि तेवा पुरुषनी आगळ कोइ सत्य धर्मनु दर्शांवे तोपण कदाग्रहग्रस्त थवाथी वचनामृतो पण तेने विषवत् परिणमे छे, अने सत्य धर्म ते आत्मानो पोताना सहज स्वभावे सदाकाळ पोतानाथी जरामात्र पण दूर नथी तेने अज्ञानान्धजीव विपरीत दृष्टिथी जाणी शकतो नथी.—जडमां आत्म धर्मना अभिनिवेश्वथी छळटां कर्म संग्रही तेना उदये अधोगति भजे छे, श्री

(102)

आत्मज्ञानथी कर्मनी नादा.

यशोविजयजी उपाध्याय पण समाधि शतकमां कहेंछे के— लिंग देह आश्रित रहे, भवको कारण देह; तातें भव छेदे ननीं, लिंग पक्षरत जेह. जाति लिंगके पक्षमे, जिनकूं है हढ राग; ताते भव छेदे नहीं, जाति पक्ष रित जेह.

जाति लिंगना पक्षमां जेने इह राग छे ते भवान्त कदापि करी शकता नथी. आत्माने जाति नथी के । छिंग नथी जेम स्वम-मां अनेक मकारनी जातियो तथा छिंगो धारण करायछे, अने ते जागीने जोतां कंइ भासतुं नथी, तेम जाति अने छिंगाध्यास पण ज्यारे आत्माभिमुख चेतना थायछे त्यारे स्वमवत लागेछे. हं पुरुष वा स्त्री नथी. आ मंत्रनो मनमां १००८ वार जाप जरा श्राद्ध रा-खीने जिज्ञास कर, पछे तारा मनमां केवा पकारना विचारी आ-वेछे ते विचार अने पहेलांना विचारोमां केटलो फेर पडेछे ते विवेकथी विचार. एकवार आ मंत्रमयोग श्रद्धाथी जे अजमावज्ञे तेने अनुभवनी मालुम पडशे, हुं चंपालाल, मनसुखलाल नथी एम अर्घ कलाक पर्यंत धारणा करवाथी प्रथमनी अवस्था अने चालती अवस्थाना विचारोमां एक मोटो भेद पडतो पोताने माछम पडशे. अने आत्म धर्म पाप्त करवानी जिज्ञासानो उद्भव थरो. शुं त्यारे जाति लिंग मानवुं खोटुं छे, तो कोइ पाताने अग्रुक जातोवाळो कहीने बोलावे तो बोलवुं नहीं ? वा कोइ कहे के तुं पुरुष छे के स्त्री छे ? त्यारे एम कहेवुं के हुं तो पुरुष वा स्त्री पण नथी. जो वर्तीए तो चाछे केम ? तेना पत्युत्तरमां समजवातुं के-अंतर्थी जाति वा लिंगनो अध्यास धारण करवो नहीं ? व्यवहारथी जाति ना लिंगना व्यवहारो कराय छे तेम करवा, पण अंतर्थी पोताना

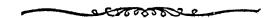
मानवा नहीं. तेमज जाति वा र्लिंग आश्रित धर्म मानवो नहीं, ध-र्म आत्मानो अने धर्मी आत्मा अरूपी छे अने ते देह तथा जाति-थी भिन्न समजवो. ए ज परमार्थ.

कुलाचारनी रीतमां, जे माने मन धर्म;

धर्भ मर्म समजे नहीं, ले नहीं शाश्वत शर्म.१३० भावार्थ-जे भव्यो अज्ञानदशाथी पोताना क्रुलना आचार-मां धर्म मानेछे ते धर्म मर्म समजता नथी, अने धर्मज्ञानना अभावे क्राश्वत क्षमे पामी क्षकता नथी. क्रुष्ठाचारनी प्रवृत्ति दरेकनी भित्र भिभ होयछे, अने ते प्रमाणे सर्व मनुष्योनी परति थया करेछे, ज्ञानी पुरुषो कूलाचारनी रीतिमां धर्म मानता नथी. पायः कूलाचा-रनी रीति जे देशमां जे धर्म चालतो होय तेनी मिश्रताथी थइ होय छे;-जैनोनी क्लाचारनी रीति जैन धर्म फीलोसोफीथी मिश्रितछे, माटे जैनोनी कुलाचारनी रीतिमां धर्मना हेतुओमानो अंतर्भाव वर्ते छे. माटे तेनाथी विपरीत वर्तबुं नहीं−बाल जीवोने कुलाचारनी रीति पण व्यवहारथी धर्म साधनमां कारणी भूतछे आ वचन बो-लवामां दीर्घदृष्टिथी विचार करतां घणो उंडो परमार्थ समायोछे, ते अर्घदम्घ उपलक डोळ घाळु जनोना जाणवामां आवशे नहीं,-जैन भर्मनी सत्यताथी ते धर्म जे लोको आचरेछे तेनी क्लाचारनी रीति पण धर्मकारणमिश्रित होयछे, माटे श्रावकना कुलाचारे पण जे धर्मनी श्रद्धा-आचार ते श्रेयस्कर छे, जेम कोइ कृवामां पाणी (जल) ना होय अर्थात् सुकाइ गयुं होय तो पण ते खोदवा गा-ळवाथी जलनी सेरो फ़ूटी कूवामां पाणि नीकळशे,-तेम जैन धर्म पण कूळाचारथी पाळतां ज्ञानीगुरुनो संग थतां तेनुं रहस्य समजा-तां-समकीतनी पाप्ति थशे, माटे समग्र भव्यजनाए आ बाबतना विचार करवो-हालनो समय मथमना जेवो नथी, माटे जैनीओए (160)

साधनी क्रिया.

नहीं समजतांपण लोकिक देवगुरुनो त्याग तेमज देवपूजा-गुरुवंदन जैन देरासरे जबुं अन्यत्र नहीं, ए विगेरे ओवथी पळातो आचार पण धर्मनं अंग जाणी त्यागवो नहीं, ज्ञानियोनी दृष्टिमां ते हलको छे, पण बास्रजीवोने तेथी चढवातुं छे, श्रावक कूलमां उत्पन्न थएलो माणस एटछुं तो समजज्ञे के अरे हुं ती जैन छुं, मारों धर्म जैन छे, एम मानी अन्य धर्म मानशे नहीं, तेम गुरुनो संग थतां समजतो थशे–क्रूळथी पण जैन धर्म पाळनार, क्रूळमां उत्पन्न थनार विशेष धर्म समजज्ञे नहीं तो पण मारो जैन धर्म छे एटछं पण धर्माभिमान आवशे माटे सापेक्षपणे विचारतां व्यवहारनयथी श्रावक कूला-चारमां पवत्त थनारने धर्मनो प्राप्तिछे, अन्य कूळमां उत्पन्न थना-रने माटे नहीं,-एकांत वादीओ कूळाचारमां धर्म मानेछे तेना नि-षेधपर आ वचन छे. जाति संबंधी पण अंतर् अभिमान त्याग क-रवो. कोइ एम चिंतवे के आपणे वर्णावर्ण गण्याविना देड भंगी स्त्रीस्ति विगेरे सर्वनी साथे खावुं पीवुं, तेथी आपणो आत्मातो अ-भडातो नथी, त्यारे तेनी साथे खावा पीवामां शो दोषछे ? आम कोइ सडेल भ्रष्ट बुद्धिथी कहे तेनो प्रत्युत्तर के जे जातोनी साथे खावापीवानो व्यवहार नथी तेनी साथे खावाथी जाति अभिमान टळ्युं कंड कहेवातं नथी. पण अंतरमां जाति अभिमान बिलक्रल नहीं रहेवाथी अभिमान टळ्युं कहेवाय छे. जाति अभिमान ज्यांथी उत्पन्न थायछे त्यांथी तेनो नाश करवो जोइए. एज मुख्य परमार्थछे, इत्यादि घणुं कहेवानुं छे पण विस्तारभयथी लख्युं नथी, द्रव्य, क्षेत्र, काल, भावनो विचार करी चालवुं.



परमात्मदर्शन.

(\$69')

हवे कुसाधु संबंधी कहेछे. " दुहा. "

सत्य धर्म समजे नहीं, दे उलटो उपदेशः धर्म मर्म समज्या विना, अंतरमां व्हे क्केश. १३१ स्नीविषयाशक्ति घणी, त्याग विराग न लेशः मन चंचल जेनुं सदा, लजवे साधु वेषः १३२ शिष्य यइने रीसथी, वर्ते ग्रुरुनी साथः अत्सहित ते नहि करे, विनयी ले शिवपाथः १३३ कपटी काळा कागडा, कुग्रुरु कर्मचंडालः संगकदो करवो नहीं, भवतस अरहट्ट माळः १३४

तत्त्वनो उपदेश अज्ञानी कुगुरूश्रो सत्य आपी शकता नथी. अने उलटां कर्म ग्रहेछे ते जणावेछे.

भावार्थ-आत्मानुं स्वरूप सम्यग् जाण्या विना जे गुरू एवं नाम धरावेछे, ते कुगुरू जाणवा, धर्मनो मर्म जरा मात्र समज्या विना आत्मापरमात्मानो उपदेश आपवा तैयार थइ जायछे, जीव, अजीव, पुण्य, पाप, आश्रव, संवर, निर्जरा, मोक्ष, इत्यादिनुं किं-चिदपि ज्ञान होय नहीं, तेम छतां उपदेश आपे तेवा कुगुरूओ म-नमां कछेश पामेछे, अने पोते पण ब्रूडेछे, अने बीजाने पण ब्रूडाडेछे, आ वचन लौकिक कुगुरू अने लोकोत्तर कुगुरूना उपदेशने उदेशी कह्युंछे, सामान्यनीति शिक्षण हितशिक्षा तो परस्पर मनुष्यो एक बी-जाने आपेछे, तेनुं आ ठेकाणे ग्रहण कर्युं नथी. फक्त धर्मना उप-देश माटे लखवानुंछे, धर्मनो उपदेश आपवाने साधुओने अधिकार छे, संसारमां राचीमाची रहेला श्रावकोने तो धर्मनो उपदेश आप- वातुं क्यांथी होय ? माटे श्रावकवर्गने उद्देशीने पण लख्युं नथी. उपदेशनो अधिकार अधिकारी विना नथी. सामान्यतः श्रावक वांचे ते माटे ना नथी. हवे मूळ विषय उपर आषीये, लौकिक तेम लोकोत्तर कुगुरुओ अज्ञानदशाथी पोते पोताना आत्माना वैरी थायछे. अने अन्य जनोना आत्माना पण वैरी बनेछे. पोते हिंसा करे, असत्य वदे, परवस्तु ग्रहे, अब्रह्ममां लीन होय, स्त्री परिग्रहना धारी होय अमे अंतर्थी विष्टामां राची रहेनार भूडनी पेठे पौद्गिलक सुलमां अहर्निश अभिलाषी होय. एवा कुगुरुओ अधोगित भाक् थइ, अनेक प्रकारना कलेशो पामेछे.

जेना मनमां त्याग तथा वैराग्य छेश मात्र पण होय नहीं, अने श्री विषयोनी आशक्ति घणी होय अने हस्तिकर्णवत् वा वि
हात्वत् जेतु मन चंचळताने भजतुं होय, एटछे परवस्तुमां मन र
मण करतुं होय एवा साधुनो वेष जो के धारण करेछे, तोपण

ते साधुवेषने लजवेछे. जेम कोइ मनुष्य बख्तर वगेरे पहेरी यु
हमां लडवा जाय अने ज्यारे लडाइ थाय त्यारे नासे. ते जेम

वीरपणाने लजवेछे तेम अत्र पण जाणवुं. दुःखगर्भितवैराग्य

वा मोहगर्भित वैराग्यथी दीक्षा अंगीकार करी पश्चात् अंतर् दृष्टि

विना बाह्यपैद्गलिक विषयोमां मन वर्चे, अने तेना योगे आ
र्षध्यानने रीद्रध्याननो परिणामी बनी उपरथी साधु वेषना सद्
भावे साधु कहावे, तो ते अवद्य पोताना आत्माने ठगेछे, अर्थात्
तेने राग दृषनी अगुद्ध परिणति ठगेछे.

वळी जे धर्मदानथी तथा धर्मीपदेश दानथी वा दीक्षा आप-वाथी पोताना ग्रह तरोके जे होय अने पोते शिष्य होय रोम छतां रीसना हेतुओनो संबंध पामी रीसथी ग्रहनी साथे वर्ते ग्रहनी निंदा करे वा तेमनां दुषणो शोधे— तेमनोउपकार भूली जइ तेमनी आज्ञा ममाणे करे नहीं, तेवा अविनेय शिष्यो आत्महित करी शकता नथी, हराया ढोरनी पेठे स्वच्छंदाचारपणे वर्ती बहिरात्मदशामां आयुष्य निर्ममन करता आत्महित साधी शकता नथी. जे शिष्यो नम्र विनयी परमार्थना ग्राहक लज्जा, आदि गुणोथी अलंकृत छे ते शिष्यो मुक्ति मार्ग ग्रहेछे.

कपटभावथी परिपूर्ण कृष्णलेक्या अंतर्मां वर्तवाथी कृष्ण सर्प सहभ, चंडाल सहभ जे कृत्यो करता होय एवा कुगुरुओनों हे भव्यात्माओ संग करशो नहीं. एताहश कुगुरुओनी भवद्रद्धि अ-रहदमाळन्यायवत् जाणवी. स्त्रीस्ति आदि कुगुरुओनी संगति चेपी रोग समान छे तेथी सदा द्र रहेचुं, विशेषतः लौकिक कुगु-रुओने माटे आ वचन छे. कदापि संसारी जीवे ने कार्यवभात् स्त्रीस्ति आदिक कुगुरुओनी संगति करवी पडे तो पण तेमना वचन सांभळवा नहीं, अने तेमना उपदेशनी श्रद्धा करवी नहीं, कारण-के तेथी संसारनी दृद्धि थाय, मिथ्यात्वनी दृद्धि करनार पादरीओ विगेरे कुगुरुओ छे, माटे मोक्षार्थी जीव कुगुरुनो त्याग करी सुगुरु-ने भजे—सेवे.

" दुहा. "

मनता त्यजी तुं बाह्यनी, अंतर्धनने देखः अंतर्धन ते-'धर्म छे, सत्यज मानी लेखः १३५ अरूप अंतर्धनतणी, रूद्धि रहारी पासः तेनी भ्रमणाए करी, करे शुं अन्य प्रयासः १३६ अन्य प्रयासे दुःख राशि, परपरिणति परतंतः परपरिणतिमां लीन जे, करे न भवभय अंतः १३७

(१८४) योग्य साधु सत्क्रियायी आत्मधर्म साधी शकेले.

संसारी अवळा फरे, सवळा फरे फकीर; नमो नमो ते सद्युरु, भयभंजन वडवीर. १३८

भावार्थ—हे आत्मा सद्गुरु संगत्या आत्मतत्व समजी बाह्यनी एटले धन, धान्य, क्षेत्र, ह्यी, पुत्र, गृह, हाट, राज्यादि जे
पर वस्तु तेनी ममता त्यजी हे चेतन तुं तारा अंतर्धनने देख-ज्ञान
दर्भनचारित्र रुप अंतर् धन आत्मानी अंदर रह्यं तेने हे आत्मा
निहाळ, अंतर् धन ताराथी द्र वा भिन्न नथी, अंतर् धननी प्राप्तिथी अपूर्व ज्ञान्तिनो भोगी आत्मा बनेले, अंतर्धन विना क्षायिक
सुखनी प्राप्ति कदी थवानी नथी. दरेक ग्रंथोमां आत्म स्वरुपना हितने माटे विवेचन ले, सात नयथी सम्यग् आत्मानुं स्वरूप जाणवुं.
एकांत पक्षथी आत्म स्वरुप जे जाणेले ते सम्यग् परमात्मपदनी
प्राप्ति सन्मुख थइ शकता नथी. आत्मानुं ध्यान मनन करवाथी
आत्मगुणोनो आविर्भाव थायले, ते संबंधी श्री देवचंद्रजीए आत्मस्तुति नीचे श्रमाणे करीले.

स्तवन--ध्यानदीपिका.

गुण अनंत धर जीवने, वंचे भवमे कर्म-धरोनिज गावना-ए टेक. राग द्वेष मुख हि वहढचा. शत्र हणु धरी ध्यान. धरो० आतम लखो निज ज्ञानश्रं, बाली कर्म अज्ञान. O E ₹ कर्म हणु तिम ध्यानशुं, जेम न पद्धं भवमांहे. OB भवज्वर अज्ञाने नडया, नवि दीठी शिव राह. 3 ध परमातम जग गुरु ठग्यो, निरस विषयने संग. ध० सर्वेज आत्म नवी लेखीयो. भ्रम अज्ञाने रंग. Y o आत्म स्वरूप पिछाणवा, ज्ञान दृष्टिए करी देख. 10 पंच ध्येय अरु आत्मा, ज्ञान गुण एक लेख. ध०

परमात्मदर्शनः	(964)	
नित्य छतोछे सहज ते, केवळ गुण ग्रुज मांहि.	घ॰	
मोह दाह त्यां पीडवे, ज्ञान अमृत ज्यां नांहि.	घ०	६
कर्म उदय चउगति भमुं, निश्रय सिद्ध स्वरूपः	ध०	
कर्मने भज्ञं केम हुं, अनंत चतुष्ट्य भूप.	ध०	9
तजी आशा निज शक्तिशुं, हुं आनंद स्वभावः	ध०	•
छेद अज्ञान अनादिनो, आज लहचो निज दाव.	ध०	S
एम जाणी धीरज धरी, रागादि मल खोय.	ध०	
ध्यावे आतम शक्तिग्रं, धर्म शुक्क ध्यान होय.	ध०	९
ध्यान ध्येय स्वरूपथी, ध्यावो स्ववेद ध्यान.	घ०	
कर्महीन सर्वज्ञता, निर्मेख शीख भगवान.	ध०	१०
जड चेतन जीवादि ए, ध्येय स्त्रमाव पिछाणि.	ध०	
ध्यान लहो मन स्थिर करो, ज्ञान ध्याए आणि.	घ०	११
परमेश्वर परमात्मा, ध्येय अरूपी देव.	ध॰	
द्रव्यार्थिक नय शान्वतो, ए परमातम सेव.	ध०	१२
भवदुव क्षयकर शुद्ध छे, ज्ञान थकी पर भिन्न.	घ०	
जगत् सकल आदर्श ज्युं, जीर्ण ज्योतिमयः	্ষ	१३
द्र्शन ज्ञान आनंदमय, अक्षर विगत-विकार.	घ०	
इंद्रि विणुं निकल गुगी, श्वान्त जाण शिवधार.	घ०	\$8
शुद्ध अष्ट गुण युक्तछे, निर्मेल अमेय अमेय	ঘ•	
पर स्वामी अक्षय गुणी, ज्ञानीने आदेय.	घ०	१५
अणुषी पण जे सूक्ष्मछे, थंभथी पण जे वृद्ध,	ध०	
जगत् पूज्य निर्भय सदा, परमातम शिव सिद्धः	ध०	१६
ध्याने कर्प सहु गळे, जगगुरु अवल अरूप.	- घ०	*
जिण जाणे सहु जाणीये, जाय अविद्या धूपः	ঘ ০	90
तत्त्व दृष्टि निज थीर हुवे, जाणे निज अनुभूति.	ध०	

((:tet)

आस्मस्यरूपं.

धरो ध्येय क्षेय आदेय ते, अंतर आतम भूत.	ध॰	१८
वचन अगोचर भ्रम विता, चिंतवी सहज्ञ अनंत.	ध०	
जास ज्ञानमें अंशज्युं, मार्वे द्रव्य अनंत.	ঘ •	86
आत्म ज्ञानथी आत्मने, जाण्यां थाये सिद्धिः	ध०	
मुनि तन्मय गुग तिहां छहे, तजी ग्रहीका नहीं छिन्धि.	घ०	२०
लीन थइ ग्रहे एकता, ध्याता ध्यान सुध्येय	ध॰	
परमात्मा अंतरात्मा, एक अभिन्न अमेय.	ध०	२१
कटमे कट कत्ती तणी, दिसे दुविधा री।ते.	ध०	
पण ध्यान ध्येय ए आत्मा, एथी नवीय परतीत.	ध०	्र२
भवमें भम्यो अज्ञानथी, विण लाघा निज नाण.	ध०	
परम ज्योति जग दुःखहरु, तेहिज अनुभव जाण.	ध∙ं	२३
भावे एम निज भावना, ध्यान बीज गुणधाम.	घ०	
देवचंद्र सुख सागरु, ध्यान अमूलल पाप.	ध०	२४

श्री देवचंद्रजी पण ए प्रमाणे आत्म स्वरूपनुं वर्णन करेछे.
गुण विशिष्ट आत्माने संसार चक्रमां वर्ततां आत्मस्वरूपनी अनुपयोगताए परस्वभावमां रमणपणाथी परपुद्गलरूप जे कर्म तेनुं
ग्रहण समय समय प्रति थतुं जायछे, माटे हे चेतन स्वस्वरूप रमणता रूप निजभावनानो दृढ प्रयास अने स्थिरताथी आद्र कर.
अनादि कालथी तुं परभाव एटले पुद्गल द्रव्यना वर्ण, गंध, रस स्पर्भ,
मय पर्यायोनी लालचमां—तृष्णामां, ग्रहणमां, ममस्त्रमां, पराभिम्रुख
चेतना करी अथुद्ध परिणित धारी, स्वभान भूली लोभायो पण
परवस्तु पेतानी थइ नहीं जलदुं राग द्रेषनायोगे पुद्गल दृब्यने आकर्षी कर्मरूप परिणमावी अनेक योनिमां विचित्र देहो धारी स्वऋद्भिनुं आच्छादन करी परपुद्गुल भोगी थइ राजा जेवो पण तुं

रंक बन्धो, राग द्वेषरूप शत्रुने हणी आत्मीयध्यानमां प्रहत्ता याउ, अने ज्ञान शक्तिथी निजस्बरूप जाणुं आत्मज्ञान यतां परमां बंधाएलो अज्ञानाध्यास स्वतः दूर थायछे, आत्मा निर्मल थतां परमात्मा कहेवायछे~तेनुं स्वरूप कहेछे.

श्लोक.

साकारं निर्गताकारं, निष्क्रियं परमाक्षरं। निर्विकल्पं च निःकंपं, नित्य मानन्दमन्दिरम् १

आत्मा ज्ञानरूप उपयोगथी साकारछे, तथ दर्शनरूप उपयोग्यी निराकारछे तथा आत्मा निष्क्रिय निश्चय नयथी जाणवो.

प्रश्न-शरीस्थ आत्मा साक्रियछे, अनेक प्रकारनी खावा पीवानी गमनागमनी क्रिया करेछे, छतां ते निष्क्रिम क्षेम जाणवो ?

उत्तर-उयां सुधी जीवना प्रदेशोनी साथे कर्म लाग्युंछे त्यां सुधी ते सिक्रियछे-अने कर्मनो नाश सर्वथा थतां निर्मल सिद्ध बुद्ध परमात्मा निष्क्रियछे. शरीरस्थ आत्मा व्यवहार नयथी सिक्रियछे कर्मनो संबंधछे माटे, अने निश्चयनयथी अक्रिय जाणवो. वस्तुतः आत्मानुं जेवुं स्वरूप होय तेवुं निश्चयनय वर्णवे छे, माटे आत्मानुं वस्तुतः ध्यान करतां निष्क्रिम भाववो, अने छे पण निष्क्रिय.

परमाक्षरं-क्षर एटले खरबं, पोतानं स्वरूप बदलबं. परम ए-टले सर्वोत्कृष्टपणे पोतानं स्वरूप निह फेरवनार आत्माले, अनादि कालथी विभाव दशाणों भवचक्रमां आत्मा परिश्रमेले तोपण तेना असंख्यात प्रदेशमांथी एक प्रदेश पण खरी गयो निह, तेमक अनंत गुणोमांनो एक गुण पण खरी गयो नथी, माटे आत्मा अक्षर, ानदृष्टिथी जाणवो. यद्याप आत्माना प्रदेशोनुं तथा गुणोनुं

(966)

आत्मस्वरूप.

कर्मथी आच्छादन थयुंछे तोपण प्रदेशो तथा गुणोनो नाश थयो नथी तेम पण थवानो पण नथी त्रण कालमां अक्षर रूप आत्माछे. प्रश्न—परमाक्षर असंख्यात प्रदेशी आत्मा कीडी अने हाथीना शरीरमां एक सरखो केम मनाय ? कीडीनुं शरीर छोडी ज्यारे हाथीनुं शरीर धारण करे त्यारे तेनो विकास थयो, अने ज्यारे हाथीनुं शरीर त्यागी कीडीनुं शरीर धारण करे त्यारे आत्मानो संकोच थयो, असंख्य प्रदेशी आत्मानो संकोच विकास थयो त्यारे ते नाना शरीरमां लघु अने मोटा शरीरमां महान् थयो त्यारे आत्मानुं एकसरखुं रूप रखुं नहीं, देहमात्र व्यापी जीव थयो तेनुं केम ?

वत्तर—

गाथा.

जह पडम राय रयणं, खित्तं खीरं पभासयदि खीरं॥ तह देही देहथ्यो, सदेहमत्तं पभासयदि १

छाया.

यथा पद्मराग रत्नं, क्षिप्तं क्षीरे प्रभासयति क्षीरं; तथा देही देहस्थ, स्सदेह मात्रं प्रभासयति १

भावार्थ — पद्मरागरत्न दुग्ध्यी भरेला वासणमां नांसीए तो ते रत्नमां एवो गुण छे के—तेनी प्रभाधी सर्व दुग्ध तद्वर्णमय थइ रहेले. जो नानी वाटकीमां दुग्ध भरी अंदर पद्मरागरत्न नांसीए तो पद्मरागना रंग सरखुं सर्व दुध थइ जायले. तेमज मोढुं छंडुं होय तेमां दूध भरी पद्मराग रत्न नांसीए तो ते रत्ननी प्रभा तेटला सर्व दूधमां व्यापी जायले. तथा संसारी जीव पण अनादि कालथी कषायोद्दारा मलीन थतो शरीरमां रहेले. शरीरमां असंख्यात मदेशोवडे व्याप्त थइ रहेले, स्निग्ध पौष्टिक आहारथी जेम जेम शरीर

वृद्धि पामेछे. तेम तेम शरीरनी अंदर रहेला आत्म मदेशो पण तेटला शरीरमां व्याप्त थायछे, मोटा शरीरमां जीवपदेशो विस्तारपूर्वक रहे छे, नाना शरीरमां शरीरने व्यापी रहे तेवी रीते आत्मपदेशो रहेछे. असंख्यात प्रदेशनी व्यक्ति स्वरूप जीव जाणवी, जो के आ-त्मा शरीरादि परद्रव्यथी जुदोछे तोपण संसार अवस्थामां अनादि कर्म संबंधथी नाना प्रकारना विभाव भाव धारण करेछे ते विभाव भावोधी नवीन कर्मबंध थायछे. वळी ते बांघेलां कर्मोना उदयथी फरी एक देहथी देहान्तर धारण करेछे. अने तेम अशुद्धकारक चक्रथी संसारद्वद्धि पामेछे, संसार अवस्थामां जीव कर्मसहित होय छे अने मोक्षदशामां कर्मरहित आत्मा सादि अनंतभंगें सदा समये समये अनंत सुख भोगवतो वर्तेछे, संसारी यद्यपि आत्माछे तोपण तेनी सत्ताथी अक्षरछे. तथा सत्तातः निर्विकल्प आत्मा जाणवो**.** विकल्प संकल्प मनना योगे थायछे. विकल्प संकल्प योगे राग द्वेषमां आत्मा परिणमेछे, हुं आत्मा ज्यारे विकल्प रहीतछं तो केम विकल्प संकल्प करूं ? परभावमां रमतां विकल्पादि उद्भवेछे, माटे परभावमां रमणता निवारवी, बाह्यदृष्टि योगे आत्मा परभावमां प-रिणमेछे माटे प्रमुख भव्यजनोए बाह्यदृष्टि पचार वारवा माटे अं-तर्देष्टिथी आत्मधर्म तरफ क्षणे क्षणे लक्ष्य आपवुं, अंतर्देष्टि थतां बाह्यवस्तमां परिणमेलो मननो वेग अटकतां मन अंतरात्मा मति वळेछे. एम प्रतिदिन सतत हढ अभ्यास थतां पोतानी ऋद्विनो स्वयं अनुभव थायछे. कहां छे के-

श्लोक.

बहिर्दृष्टि प्रचारेषु, सुदितेषु महात्मनः । अंतरेवावभासंते, स्फुटाः सर्वाः समृद्धयः ॥ १ ॥ महानाने बहिर्दृष्टिना प्रचारो बंध थए छते पोताना आत्मामा

आस्मस्वरूप.

सर्व समृद्धियो भासेछे, बहिर्देष्टियी देखाता परार्थीमां अहं ममस्बः बुद्धियी वंघाएछा जीवने अंतर्देष्टिनी माप्ति थती नथी, अंतर्देष्टिनाः अभिलाषी जीवोए निम्न लिखित विषयोनुं पुनः पुनः मनन करवुं.

- १ प्रथम विषय-हुं कोण ? हुं क्यां छुं ? शाथी छुं ?
- २ द्वितोय विषय-हुं चेतन के जड ? चेतननो धर्म शो ? जडनो धर्म शो ?
- ३ तृतीय यिषय-देखाती वस्तुओमां हुं छुं के नहीं. हब्य वस्तु-ओमां मारापणुं शुं ?
- ·४ चतुर्थ विषय-हुं क्यांथी आव्यो ? क्यां जइश ?
- ५ पंचम विषय-मनुष्य जन्मनी साफल्यता बाधी ?
- ६ पर् विषय-धर्म क्यां रहेछे ? तेना हेतुओ कोण ?
- सप्तम विषय—हुं संसारमां जन्मजरामरणपामुं हुं तेतुं शुं कारण ?
- ८ अष्टम विषय-संसारमां आत्मा क्यारथीछे ?
- ९ नवम विषय-आत्मा निर्मेळ परमपद शाथी पामे ?
- १० दशम विषय-कर्मनो कर्ना भोका आत्मा कर्मनो नाक्ष भी रीते करी शके ?

ए दश महाविषयो संबंधी भव्यात्माए एक कलाक वे कलाक प्रतिदिन विचार करवो.

प्रथम विषय संबंधी विचार-कोऽहम् ? हुं कोण छुं ? जड़ के चेतन ?, ज्ञानशून्य जड़ हुं लक्षणछे, अने हुं तो ज्ञान गुणवाळो भासुं छुं. त्यारे हुं चेतन, शुद्ध आत्मद्रव्य तेज हुं, ज्ञान, दर्शन, चारित्र, वीर्य, आदि गुणमय हुं आत्मा ते शिवाय हुं अत्य नथी.

हुं क्यां छुं ?-हुं संसारी छुं तथी शरीर पाणरूप जे जड़-बस्तु तेमां रह्योछुं. जेम म्यानमां असि रहे पण जेम म्यानथी भिन्नछे तेम हुं शरीर के जे सप्तथातुमय तेमां वस्योछुं पण तेथी न्यारो छुं. हुं शाथी छुं ? अनादि एटले जेनी आदि नथी एवो हुं आत्मा अनादि कालथी अज्ञानयोगे तथा रागद्देषयोगे अशुद्ध परिणति योगे अष्टक मंग्रही अने ते कर्मयोगे शरीर ग्रही तेमां कर्मथी वस्यो छुं.

दितीय विषयविचार—हुं चेतन के जड ? अलबत ज्ञानदृष्टियी विचारतां हुं ज्ञानमय चेतनछुं, चेतन, आत्मा वा जीव ए त्रण पर्याय वाची शब्द जाणवा. हुं जड़थी भिन्नछुं, अनंत काल गयो पण हुं आत्मा अन्ययछुं, अजीव पदार्थने हुं जाणुंछुं तेथी हुं तेनो ज्ञाताछुं अने ते ज्ञेय पदार्थछे, जेटली दुनियामां वस्तुओ देखायछे तेथी हुं भिन्नछुं पंचभूतथी पण हुं भिन्नछुं, पुद्गलास्तिकाय, धर्म, अभर्म, आकाश, कालद्रन्य, अजीवछे अने हुं तो जीवछुं.

तृतीय विषयविचार—देखाती वस्तुओमां हुं आत्मा नथी. जे जे बस्तुओ चक्कुगोचरथायछे ते खरूप हुं नथी, ते दृश्यमान धनादिकमां मारापणुं मानवुं ते स्वमनी पेठे भ्रांतिछे, अर्थात् स्वममां देखाती बस्तुओने मारी मानवी ते जेम खोटुं भ्रांतिछे, तेम चक्कुवडे देखाती बस्तुओमां मारापणुं मानवुं ते केवळ भ्रम मोहदशाछे.

अभि—चक्षुथी दृश्यमान वस्तुओथी अनेक प्रकारनां कृत्यो याय छे, कोइ वस्तुओ आहाररूपे होयछे, तेना भक्षणथी श्रुधा शमेछे, चश्रुथी दृश्यमान जल्रथी तृपा शान्त थायछे, एम प्रत्यक्षने वस्तुओना फायदा मालुम पहेछे, तो ते पदार्थीने स्वमना पदार्थी सरखा केम कहा। स्वमना पदार्थीथी कंइ कार्य थतं नथी. अने चश्रुद्वारा दृश्यमान पदार्थीथी कार्य थायछे मादे सादृश्यणं शी रीते संभवे ?

प्रस्युत्तर—हा अलवत स्वमना पदार्थी अने चक्षवा दृश्यमान प-दार्थीमां कार्यभेदे मोढुं आंतरूंछे, पण चक्षयी देखाता पदार्थी तेमज स्वममां भासता पदार्थीमां आत्मा नथी, अलवत ते बे

आश्मस्वरूपे.

आत्माथी न्याराछे, चक्कुथी देखाता आकारो अने स्वममां देखाता आकारो पुद्गल द्रव्यनाछे, अने पुद्गल द्रव्यथी आत्मा त्रणे कालमां निश्चयनयतः जोतां भिक्नछे, माटे भिक्न वस्तुमां आत्मपणानी बुद्धि स्रांति मात्रछे, माटे जेवी स्वममां देखाता पदार्थोमां मारापणानी बुद्धि खोटी तेना सरखीज चक्कुषा देखाता पदार्थोमां मारापणानी बुद्धि खोटी जाणवी.

प्रश्न—त्यारे चक्षुथी देखाता सर्व पदार्थी असत्य समजवा? अने जो ते असत्यछे तो तेमां ममन्व भाव केम उत्पन्न थायछे?

प्रत्य चक्कुथी देखाता सर्व पदार्थी पुद्गलना पर्यायोक्ष्ये सत्य एटले अस्तिच्व युक्त जाणवा, अने ते पुद्गल पर्यायक्ष्य पदार्थी आत्मखरूपे नथी एटले आत्माथी भिन्नले, आत्मपणुं तेमां कंइ नथी माटे आत्मअपेक्षाए ते असत्य जाणवा, आत्मद्रव्यमां पुद्गल पर्यायक्ष्य पदार्थी जुं अस्तिल नथी किंतु आत्मद्रव्यमां पुद्गल पर्यायक्ष्य पदार्थी नी नास्तिता सदा समये समये परिणमी रहीले, तद्पेक्षया असत्य जाणवा, अने पुद्गलक्षे ते सत्य जाणवा, माटे पुद्गल वस्तुओ ज्ञानहिल्थी जोतां आत्माथी अत्यंत भिन्नले तेमां मारापणानी बुद्धि अज्ञान तथा मोहथी उत्पन्न थायले, ज्यारे अज्ञान नाज्ञ थतां ज्ञान प्रगटेले त्यारे मोहनो नाज्ञ थतां परवस्तुमां थती अहंममत्वबुद्धि नाज्ञ पामेले.

शंका—ज्यारे आ प्रत्यक्ष देखातुं शरीर पोतानुं नथी एम जाण्युं त्यारे कोइ शरीरनो घात करे तो शुं करवा देवो ? समाधान—कोइ शरीरनो घात करे तो विलक्कल करवा देवो नहीं. अने उलदुं शरीरनुं संरक्षण करवुं यतः शरीरमाद्यं खलु धर्म

परमारमदर्शन.

(14k)

साधनं मथम तो शरीरज धर्म साधनमां कारणी भूतछे. यतः कत्तुं छे के-

श्लोक.

शरीरं धर्मसंयुक्तं, रक्षणीयं प्रयत्नतः शरीराज्जायते धर्मः पर्वतात्सिळळं यथा-

भावार्थ-धर्म संयुक्त एवा शरीरतुं यत्न पूर्वक रक्षण करवुं, कारण के जेम पर्वतथी नदी उत्पन्न थाय छे तेम शरीरथी धर्मतुं साधन थाय छे ने वळी कहुं छे के शरीरंच पुद्गल धर्मत्वात् आ-हाराधारं-शरीर पुद्गल रूपछे माटे ते आहारना आधारे रहेछे कहुं छे के-

गाथा.

देहो अ पुरगलमओ । आहाराइ विरहिओ न भवे॥ तय भावे नय नाणं । नाणेण विणा कओ तित्यं. १

भावार्थ-देह एटले शरीर पुद्गलमयछे, अने ते शरीर आहार विना होतुं नथी. तेना अभावे ज्ञान नथी अने ज्ञान विना
तीर्थ नथी. पूर्वेबार वर्षनी दुकाली पडी हती त्यारे आहारना अभावे
थ्रुत ज्ञाननी विस्मृति घणी थइ गइ माटे आहार पण श्रुत ज्ञानना
अभ्यासमां चारित्र पालनमां कारणीभूतछे. अने आहार विना
ज्ञान नाश पामेछे, आहार पुनः वे मकारनोछे, सावद्य आहार अने
निरवद्याहार-जीवमय जे आहार ते सावद्याहार, अने जीव रहित
जे आहार ते निरवद्याहार-सावद्यआहार भक्षणथी कर्म वंध थायछे. माटे मोक्षाभिलापिजीवोए निरवद्याहारनुं ग्रहण करवं, तेमां
मुनिराज तो सर्वथा सावद्याहारना त्यागी होयछे, सावद्यआहारना
निमित्तथी जीवो सप्त नरक पर्यंत गमन करेछे यतः कर्मुंछे के-

साधनी किया.

(138)

गाथा.

आहार निमित्तेणं, जीवा गच्छंति सत्तमिं पुढवीं। तंडुल जसं आहरणं, भणियं सुत्ते जिणंदेहिं।

भावार्थ-आहारनो अभिलाषी तंडुल तत्स्य बीजा जीवोने भक्षण करवानी इच्छामात्रथी सातमी नरक सुधी जायके माटे भवभीरु ग्रानिवर्यो शुद्धआहार संयमार्थे ग्रहण करेले, यतियोने आहार शुद्धि अति दुष्कराले कहां ले के-

गाथा.

आहोरे खलु सुद्धी, दुलहा समणाण समणधम्मंमि । ववहारे खलु सुद्धी, दुलहा गेहीण गिहधम्मेः १

अपणाने अपण धर्ममां वर्ततां निर्दोष आहारनी माप्ति दुर्लभछे,
तेम गृहस्थाने गृहस्थावासमां वर्ततां व्यापारादिमां व्यवहार सुधी
दुर्लभाछे. शुद्ध आहारथी शरीरतुं पोषण संयमार्थम् अमणो करेछे
पसंगथी आहारतुं विवेचन करी शरीर धर्मसाधनमां कारणी भूत
छे एम सिद्ध कर्यु, धर्माजीवोतुं शरीर धर्म माटेछे तेम पापी जीवोतुं शरीर पाप माटे जाणतुं. चतुरशीति छक्ष जीवयोनि परिश्रमण करतां दुष्पाप्प मनुष्य शरीर चिंतामणि रत्न जेवुं पामी जे
मनुष्यो खावा पीवामां. तेमज विषय सुख भोगववामां, मोज मजा
मारवामां शरीरनी सार्थकता समजेछे, ते जीवो मूह अविवेकी पशु
समान जाणवा. देवताना शरीर करतां मनुष्य शरीर अत्यंत उपयोगीछे. मनुष्य शरीरथी मोक्ष माप्ति थायछे, बीजा शरीरथी मोक्ष
माप्ति थती नथी, माटेशरीरनुं आहारादिकथी पोषण करतुं. रोगादिक
थये छते रोगनाशार्थ औषध द्वा करवी. कोइ शरीरनो धात करे
को करवा देवो निर्हे कारण के शरीर विना धर्म साधन थतुं नथी.

श्रारीर मासंखे एम मानवुं नहीं, कारण के ते पुद्गलके श्रारियी न्यारो आत्मा भाववी, शरीर आत्म धर्मनी पातिमां निमित्त का-रणके एवं, उपरना प्रश्ननो उत्तर थयो.

मुश्न-गजसुकुमाल सुनी वरे इमज्ञानमां अरीर घातनो उपसर्ग केम सहो ? केम तेमणे अरीरनो घात करवा दीयो ?

मत्युत्तर-गजमुक्तपालेतो काउसमा कर्यो हतो अने एवी तेमनी श्रद्धा हती के शरीरना उपसर्गथी पण चळ्या नहीं. सर्वे जी-बोने पाटे एवी स्थीति नथी. अंतरथी भिन्नपणे आत्मभावमां वर्तवं ? व्यवहारथी तेनं संरक्षणकरवं, गज सुकुमालनी एशी भवितव्यता हती. तेमज तेनी अंतर्भावना पवर्द्धमान हती, तेथी एवी स्थीति बनी. एकांत जैनमार्ग नथी तेथी शंका करवी नहीं, काल, स्वभाव, नियति, कर्म, अने उद्यम ए पंच कारणोथी मोक्षरूप कार्यनी सिद्धि थायछे. शरी-रनी सार्थकता व्रतघारण तपश्चर्या विगेरेथी छे. अंते शरीर आत्मानं थयं नथी अने थशे पण नहीं. नित्य पर्व सम शरीरनी लालना पालना करवापात्रथी आन त्महित थतं नथी पण तेथी धर्मनां कार्य करवाथी अत्महित थायछे ? त्रण धन दरेक मनुष्यनी पासे रहेछे, प्रथम बाह्य धन. धुवर्ण, रूपुं, जवाहीर, रव, राज्य विगेरे जाणवुं, ते बाह्य धन अनित्य चंचल जाणवं, कोइनी पासे बाह्य धन वि-शेष छे तो कोडनी पासे स्तोक छे. ए बाह्य धननी अपेक्षाप गरीव तांगरमां भेद पडेळे, बाह्य धनने मादे अनेक ग्रकारना उद्योगो क्लेशो देशोदेश परिभ्रमण आदि उपाधियो बेटकी पहेंछे. किंतु ए बाह्य धननो ढगलो मरवी बलते साथे छैड् गयो नथी अने छेइ जुवानी नथी, बाब धननी मधवाप अद-

(154)

आत्मज्ञानभी कर्मनी नाश.

र्निश आर्तध्यान अने रौद्रध्यानमां आत्मा परिणमी अनेक प्रकारनां कर्म बांधेछे. अने बहिर्भावे राचीमाची अनेक ज-न्मनी दृद्धि करे छे.

जेम कंभकार चक्रने एकवार वेग आपेछे तेथी ते चक्र चकर-चकर घणी वखत सुधी भम्या करेछे तेम मनने आर्तध्यान, रीद्र-ध्यानना चितवननो एकवार वेग आप्याथी घणा वखत सुधी आर्तिथ्यानादिमां परिणमी रहेछे. रागद्वेषनो वेग आत्माने आपवा-थी घणा काल सुधी आत्मा रागद्वेष वेग जोरे संसारमां परिश्रमण करेछे, माटे अत्र सार ए प्रह्वानोछे के-धर्मनो वेगजो आत्माने आपवामां आवे तो प्रक्तिपद आत्मा पामे, तत्पद अर्थे सदाकाल एम भाववं के-देखाती वस्तुओमां हुं नथी। त्यारे मारे कंचन का-मीनीने केम मारी मानवी ? वा मनमां तेतुं चिंतन केम थवा देवुं. कारण के ते वस्तुओ पोतानी नथी तो निर्धक ते संबंधी विचार मारे केम करवो घटे ? हुं एटले आत्मा जेमां नथी तेमां रागद्वेषथी परिणमवं मारे केम घटे. कदापि जाणोके शरीर निर्वाह आदि अर्थे ते वस्तुओनुं ग्रहण कर्खु पडे तोपण उदासीन भावे ग्रहण करवुं. अंतर्थी ते वस्तुओथी हुं न्यारोछुं एवा उपयो-गनी स्थिरताए रहुं. पण तेमां रागद्वेषथी परिणमवुं योग्य नथी. संसारनां कार्यो कहं पण तेमां लपटाउं नहीं एवी रीते वर्तवुं तेज आत्माने हितकारीछे, देखाती वस्तुओ पुरुगलना पर्यायो जाणवा. पुर्गलनो सडण पडण, विध्वंसन स्वभावछे. पुर्गलना पर्यायो अनेक आकाररुपे देखायछे. अने पाछा विखरी जायछे. जेम सं-ध्या समये पुदुगलना पर्यायो अनेक रंगरूपे परिणमेखे अने क्षणमां नष्ट यह जाय छे तेम च भ्रुशी देखाती वस्तुओ विचित्र वर्ण गंध रस स्पर्शमय देखायछे अने वळी ते पाछी जुदा आकाररूपे परिणधी

भिन्नतर्ण गंध रस स्पर्धने धारण करेछे शरीर पण पुर्गलछे. माटे ते मारूं नहीं अने हुं तेनो नथी, पुद्गलनी भिन्न जातिछे. अने आत्मानी भिन्न जातिछे तेनी जाति भिन्न अने जेनो धर्म भिन्न जेनी वर्तना भिन्न ते एक कदी होय नहीं. हुं आत्मा पुद्गलमां त्यारे केम होंडं? जो के संसारमां कर्मनायोगे हुं पुद्गलथी वस्यो छुं तो पण पुद्गलथी निश्रय नयथी जोतां हुं न्यारो छुं ए त्रीजा विषयनो अल्प विचार कर्यो.

चतुर्थ विषय विचार-हुं क्यांथी आव्यो क्यां जाइश ? हुं आत्मा क्यांथी एटले कया स्थानमांथी अत्र मनुष्य गतिमां आव्यो. अने हवे आ शरीरनो उत्सर्ग कर्या बाद क्यां जाइशः ते संबंधी स्थिरचितथी विचार करतां एम सिद्ध यायछे के पूर्व भवमां कोइ पण में सारुं कृत्य करेलुं. सिद्धान्तमां पण कथ्युंछे के-जे जीव स-रल हृद्यी होय, परोपकारी होय, दयाछ होय, धर्माथी होय, कोइ जीवनो घात करनार होय नहिं ते जीव मरीने मनुष्य थायछे. अ-र्थात शुमभावनायुक्तजीव मरीने मनुष्य गति पाप्त करेछे, तप-अर्थावंत, त्रती, परोपकारी, ब्रह्मचर्यादि गुण विशिष्ट जीव देवगति प्राप्त करेंछे. पापी. मालेनारंभी, कृतन्न, कपटी, हिंसा असत्यादिथी जीव नरक गति पामेळे. कपटवंत जीव तिर्यचनी गांत प्राप्त करेछे. पाटे ते उपरथी विचारतां सिध्य थायछे के पूर्व भवमां कंइ सारां कृत्य करेलां के जेना योगे मनुष्य शरीर ग्रही तेमां वश्यो छुं. जेने जाति स्मरण ज्ञान उत्पन्न थायछे ते पोतानो पूर्वभव यथातथ्य जाणछे, जाति स्मरण मति ज्ञाननो भेरछे, संगातिराजा पूर्वे दुमकनो जीव हता. मिष्टान्न भक्षण लालचथी श्री आर्य सुहास्त आचार्यजीने साधु यवानी विनंति करी, गुरु महाराजे योग्य जाणी लाभनी खातर साधु वेष समर्प्यो,

(396)

स्यांथी श्रुभ भावना योगे मृत्यु पामी संगति राजा तरीके थया, संमति राजाना भवमां गुरु महाराजने देखी पूर्व भवनी यादी आ-बी, अनेक जिनविंव भराव्यां, अनार्य देशमां-जेवाके अफगानिस्तान बळुचिस्तान, इरान,अरबस्तान, तिबेट विगेरे स्थाने श्रावकोने साधु वेष समर्पि जैन धर्मनो बोध देवा मोकल्या. घणा राजाओने जैन धर्मी कर्या अवंति सक्कमाक पण उज्जीयनी नगरीमां आचार्य श्री आर्य सहस्तिना योगे जाति स्मरण ज्ञान पाम्या. हाल पण जे स्थाने अवंति सुकुमाल स्वर्गस्थ थया त्यां अवंति सुकुमाल पार्श्वनाथ ना-मन्रं जिनमंदिरछे, सुदर्शना पूर्वभवभां समिलकाहती ते तद्भवमां पंच परमेष्टि मंत्र अवण करी मृत्यु पामी सिहलद्वीप तृप पुत्रिका थड त्यां रुषभदास शेठना मुख्यी नमो अरिइंताणं पद सांभळी इहापोह करतां जातिस्मरण ज्ञान पामी भरुअच्च नगरमां जिन मंदिर तथा मुनिवर्थेने वंदन करवा आवी. पूर्वभवमां भरुअच्च नगरनी बाहिर ज्यां मरण पामी हती त्यां श्री ज्ञानभानु नामना आचार्य पथार्या इता तेमणे सुदर्शनाने उपदेश दीथो. सुदर्शनाए समिलिका विद्वार बंधाव्यो. मतिज्ञाननी उत्कृष्टि स्थिति छासठ सागरोपमनी छे. पाठ-कालमसंखं संखंच धारणा मातिज्ञाननो धा-रणा नामनो भेदछे. तेनो असंख्यात संख्यातो काल जाणवो,जाति स्मरण ए धारणामां भळेळे. अर्थावग्रहतो एक समयनो जाणवो. उत्कुष्ट अने जघन्यथी इहा अपायनो काल अंतर्ग्रहुर्त्तनो जाणवो. समिकती जीवने मतिज्ञान होयछे अने मिध्यात्वी जीवने मति अ-ज्ञान होयछे. सम्यग रित्या तत्त्वबोध थया विना तत्त्वज्ञान तरफ छक्ष वळतुं नथी, सम्यग् तत्त्वनी श्रद्धा विना मतिज्ञान उत्पन्न यतुं नथी. इवे मुळ विषय उपर आवीये. देवता पूर्वभव जाणी ब्रुकें , नारकीना जीव पोतानी पूर्वभव जाणेके, दाकना

वस्तमां जाति स्मरणक्षःन उत्पन्न थवानो निषेध नथी।
केटलाक सद्गुरू संगतिहीन अनार्यमिति अज्ञानी आत्माना
पुनर्जन्म मानता नथी एवा नास्तिक शिरोमाणि ज्ञानहिष्टि
शून्य जीवो परमपद पामी शकता नथी। जीव पण अनादि
कालथी आ संसारमांछे अने जीवने कर्मपण अनादिकालथी
लाग्यांछे ते कर्मनायोगे अवतारो ग्रहण करवा पढेछे तेनी साबीतीना हेतुओ—नीचे ग्रुजव.

- १ जोड कहेवातां छोकरां नानपणमां एक सरखां होवा छतां अने तेमने एक सरखी रीते उछेरवामां आव्या छतां पाछळ-थी तेओना विचार आचारमां भिन्नता पडेछे तेनुं कारण कर्म जाणवुं.
- २ पिता पुत्रना देखावनुं सद्द्यापणुं छतां बन्नेनी अक्कल अने वि-चारमां जे आसमान जमीननो तफावत जोवामां आबेछे तेनुं फारण पण कर्म जाणवुं.
- र एक मावापना वे पुत्री छतां एकने कविता बनाववानी सहेजे शक्ति उत्पन्न थायछे अने बीजो अभ्यास करतां एण कम बुद्धिमान् अने कविता करी शकतो नथी तेनुं कारण पण कर्म जाववुं कारण के एकने ज्ञानावरणीय कर्मनो क्षयोपश्चम थयो छे अने बीजाने थयो नथी.
- ४ आ पृथ्विमां एक दुःखी, अने बीजो सुखी एक जन्मश्री अंध, छुलो, लंगडो, बाधिर, वा भीखारीना पेटे जः न्मी मरण पर्यंत दुःख पामनार थायछे, त्यारे बीजो मनुष्य देहथी सुखी सारा कुलमां पेदा थयेलो, धनथीं सुखी बुध्धिमान, तथा मान सन्मान पामनार जोवामां आवले तेनुं कारण जीवे पूर्व भवमां करेलां पाप पुण्य तेनुं फल जाणधुं.

पुनर्जनमनी साबीती.

एम थवानुं कारण इश्वरना हायमांछे एम कहीए तो आपणे इश्वरने गेर इन्साफी अने दया विनानो ठेरवीए छीए, कर्मथी ज आवा अवतारो बनेछे. इश्वरने सुख दुःख आपनारो मा-नवुं ए न्यायथी विरुध्ध तेमज महा अज्ञान जाणवुं. इश्वर कोइने सुख दुःख आपतो नथी. जीव, पुण्य, पाप रूप कर्म-ना अनुसारे सुख दुःख पामेछे एम श्री तीर्थेकर भगवान् कहें छे, तीर्थं कर केवळ ज्ञानी छे माटे ते सत्य पदार्थ स्त्ररूप कथे छे. माटे तेमना वचन उपर विश्वास राखवी. पुनर्जन्म सिध्धं छे. प्रमाण जीवयोनिमां परिभ्रमण करतो जीव महापुण्योदये मनुष्य जन्म पामेळे.अमूल्य चिंतामणि समान मानवततुं पामी भवो दिधनो पार पामवो एज कर्तव्ये . संसाररूप समुद्र तरवा मनुष्यावतार एक वहाण समान छे. मनुष्यरूप वहाणमां आत्म रूप उतारु बेठोछे. आत्मोपयोग रूप खलासी वहाणने चलवेतो वहाण सम्यग् मार्गे चाले. समुद्रमां तृष्णा रूप मोटी भगरीओ आवेछे तेमां वहाणने बुडवा नहीं देतां शुर्शापयोग रुप खलासी समुद्र पार बहाण उतारे माटे हे चेतन तुं शुध्यो-पयोगनो आदर कर के जेथी तुं अनंत शास्त्रत मुख पामे.

तुं क्यां जाइश—परभवना पुण्यथी मानसिक शक्तिवाछं मानव तनु प्राप्त थयुंछ ते आयुष्यनी मर्यादा सुधी अंते रहेछे. पश्चात् ते शरीरमांथी आत्मा जुदो पडेछे. कोइ आत्मा महापाप करी नरक गतिमां संचरेछे. नरको सातछे, पहेली करतां बीजी नरकमां विशेष दुःखछे, बीजी करतां त्रीजीमां विशेष दुःख जाणवुं. सर्व करतां सातमी नरकमां विशेष दुःख मोगववुं पडेछे, उत्कृष्ट तेत्रीस सागरोपमनुं आयुष्य सातमी नरकना जीवानेछे जे जीवो हजारो मायो भेंसो बकरांने रेंसी नांखछे अने तथी पोतानुं गुजरान चन

परमात्मदर्शन.

(909)

लावेछे तेवा जीवो पायः नरकगतिना मेमान थइ त्यां दुर्गेधमय खराब शरीरोने पामी असहा दुःख क्षणेक्षणे भोगवेछे, विविध प्रका-रनी क्षेत्र वेदनाओं भोगवेछे, जे जीवो हजारो माछलीओनुं भक्षण क-रेक्टे अने रात्रिदिवस तेमने मारवानो उद्यम करी रह्याछे तेवा जीवो नरकगातिमां गयन करेछे. मरती वखते तेवा जीवोनी लेक्या बगडे छे, अने नरकमां दुःख पामतां तेवा जीवोने मुकाववा कोइ जतुं नथी. त्यां नरकमां महारौरव दुःख पामेछे, करेला पापोमांथी छुटता नथी. जे जीवो शिकार रमी हजारो पंखी पशुने मारी तेना मांसथी पापी पेट भरेछे अने सदाकाल तेवा पापी शिकारकृत्यमां राचीमाची रहेछे तेवा जीवो प्रायः नरकगतिमां परमाधामीनी क-रेली वेदनाओ, बुमो चीसो पाडता भोगवेछे, सागरोपम वर्ष सुधी नरकमां रहेछे, ते जीवोने जरामात्र पण सुख नथी. आंख मींचीने उघाडीए तेटली वस्तत पर्यंत पण नरकमां सुख नयी जे जीवो मांसर्था पापी पेट भरी आनंद मानेछे तथा परस्ती छंपटी होयछे तेवा जीवो प्रायः नरकगतिमां जायछे, रौद्रध्यानना चार ४ पायामां वर्ततो जीव क़रपरिणामयोगे नरकमां गमन करेछे. माटे हे आत्मा तं जो उपरोक्त हेत्रओनं सेवन करीशतो नरकगतिमां जाइश्र. अ-संख्य जीवो रौट परिणामने धारण करता नरकगतिमां गया अने अनेक जायछे अने जशे. तुं मनथी तारूं वर्तन तपासीजो, तुं गुत्री दिवस केवा मकारना विचारो धारण करेछे, तं रात्रीदिवस पापनां केवां केवां कृत्य करेछे. वावे तेवुं उगे आ कहेवतने याद राख. तें अज्ञानधी नरकगतिमां जवाय तेवां पापा कर्यो होय तो इंवे ते बावतनो पश्चात्ताप करवो घटेछे. अने गीतार्थग्ररू पार्श्वे आलोचना लेवी घटेले. प्रायश्चित्त विना पापनी शादि थती नथी. जेने भवनी भीति उत्पन्न यह होय ते पायश्वित्त ग्रहेछे. मान ल-

(202)

प्रायक्षित छेवुं.

ज्ञानो त्याग थाय अने वैराग्य प्रगटे त्यारे प्रायश्चित्त लेवायछे, जे जे ग्रप्त पापो कर्यी होय तेने बीजानी आगळ कहेवाथी जीव डरेछे वा लज्जा पामेछे. पण मोक्षाभिलाषी जीवोए गुरू पासे लोकवासना त्याग करी प्रायश्चित्त ग्रहण करवुं. व्रतभंगतुं प्राय-श्चित्त ग्रहनार जीव आराधक जाणवो. मनमां शल्य राखवुं नहीं कहुं छे के—

गाथा.

ससलो जइवि कठुग्गां, घोरं चीरं तवं चरे। दिव्ववास सहस्सं तु, तओवि तं तस्स निष्फलं सल्लुडरण निमित्तं, गीयस्स नेसणाउ उक्कोसा। जोयण सयाइं सत्तर, बारस वरिसाई आलोअणा परिणओ, सम्मं संपिडओ ग्ररू सगासे। जइ अंतरावि कालं, करिज आराहगो तहवि. लज्जाइगारवेणं, बहुस्सुअ मएणवाविदुचरिअं। जो न कहेइ ग्रहणं, नहु सो आराहगो भणिओ ४ जह बालो जंपंतो, कज्जमकज्जं च उज्जुअं भणइ। तं तह आलोइज्जा, मायामयविष्यमुक्कोअः न वि तं सथ्यं व विसंवर, दुप्पउत्तो च कुणइ वेआली। जं तं च दुप्पनत्तं, सप्पो व पमाइओ कुद्धोः माटे उपरोक्त भावार्थ समजी सद्गुरु पार्श्वे कृत पापोनी व्रत भंगोनी आलोचना लेवी गुरु गीतार्थ जाणवा तेमनी पासे आलोचना लेवी सातसे योजन तथा बार वर्ष सुधी गंभीर

परमात्मदर्भन.

((R# 2))

गीतार्थ पासे आले।चना लेवानी तीत्रेच्छा राखवी, आलोचना छेनार पण आत्मार्थी तत्त्वनो अभिलापी होवो करतो प्राणी कर्मथी जोइए. गुरुनी पार्श्वे पापनो पश्चात्ताप हळबो थायछे अने निर्मल थयेलो निशल्य भव्यात्मा सत्पंथे चालेले, जेम कोइना उदरमां बगाड थइ ते अशक्त थयो होय तो ते माणस वैद्यने नाडी देखाडेछे, वैद्य तेनी वर्तणुक पुछी छेछे, कया कया पदार्थी खावामां आच्या हता ते पुछेछे त्यारे रोगी पण सर्व वात कहेछे पश्चात वैद्य तेना शरीने सारुं करवा पथम मळ शुद्धि जुलाव आपेछे. पश्चात् बीजी दवाओ आपेछे, तेम गुरु महाराज पण अनेक प्रकारना पापोनी आलोचना रूप जुलाव आपी तेन्नं हु-द्य शुद्ध करेछे पश्चात आत्महितने माटे अन्य मार्गो, त्रतो बतावेछे मार्टे हे चेतन तुं हवे विचार कर अने नरकना हेतुओ दूर कर. श्रीवीरभगवान्नी मत्त्रीए माथाना वाळ जेटला घणी कर्या एम प्रभुनी पासे पश्चाताप कर्ये। तेथी सर्व पाप जतुं रहा, हे चेतन जो मनमां करीश तो तिर्धेचनी गतिमां जा-इश. धर्मध्यानथी देवगति मनुष्यगति पाप्त थायछे अने शुक्छ ध्यानथी मोक्ष स्थान प्राप्त थायछे. माटे चेतन-चारे गतिनां द्वार तारे माटे खुळुांछे, जेवां कृत्य करीश तेवी गतिमां जाइश-आयुष्य पूर्ण थतां, देवता मनुष्य तिर्थेच अने नरक ए चार गतिमांथी गमे ते गतिमां कर्मानुसारे तं जाइश-एक गतिमांथी नीकळी बीजीमां, बोजीमांथी नीकळी त्रीजीमां, एम अनादि कालथी तुं चतुर्गतिमां प-रिभ्रमण करेछे. चतुर्गतिमां परिभ्रमण करावनार कर्मछे. कर्माष्टक प्रक्र-ति रूप द्रव्यकर्म जाणवं. राग अने द्वेष रूप भावकर्म जाणवं, सग अगर द्वेषना विचारो कर्याथी जीव पुद्गल स्कंबोने कर्म रूप परि-णमाची ग्रहण करेछे.

(Ros)

आस्मस्य स्प

दरेक माणस पोते करेला रागद्वेषना विचारोथी ज पोताने कर्मनी जाळमां घेरी लेखे, एम समजवातुंछे.-विचारमां समायला जोखमनो ख्याल नही होवाथी रागद्वेषना सर्वे विचारो सुखेथी आ-ववा देखे. हवे एवा विचारोथी रागद्वेषना संस्कारो उत्पन्न थायछे. अने ते राग द्वेषना संस्कारो पोताना बनावनार उपर दबाण करी तेनी पासे फरीथी तेवा विचारो उत्पन्न करावेछे के जेनी अणस-मजु लोकोने खबर नहि होवाथी तेम थतं अटकाववानी कोशेश करवाने बदले उलद्धं वारंवार तेवाज विचारो उत्पन्न थवा देले. अने तेत्रं छेवट परिणाम एवं आवेधे के एकज विचार वे पांच वखत कीधाथी माणस पोते रागदेवना कबजामां आवी जायछे. अने ते पछी रागद्देष, निंदा, शोक, मोह, अदेखाइ, बुराइ, चोरी, असत्य, व्यभिचार, हिंसा, कपट, विश्वासघातना विचारो माणसनी मरजी उपरांत तेनाथी थइ जायछे, एवी रीते राय द्वेष मोह मायाना विचारोना बंधनमां जीव पडेछे. कर्मनो कर्ता पोते अने जेमां बंधानार करोळीयाना जाळनी पेठे पोते ज छे, जे नटारा विचारो अजाण पणे फरी फरीथी करवाथी तेमां पोते वं-धाइ जाय छे वळी रागद्वेष मोह, माया, मत्सर, रुप नठारा विचारो थी छेवटे नटारुं काम थइ जायछे के जेने कडवें फल भोगवती वेळाए ते दुःखी थायछे, दुःख खमती वखते तेने पोताना करेला कर्मथी छुटो थवानी इच्छा थायछे. अने फरीथी एवं नटारुं काम नहीं थाय अने नठारो विचार नहीं आवे तेने माटे हवे ते साध-चेत रहेवानी कोशेश करेछे. उत्पन्न करेली रागद्वेषनी टेवो घणी बलवान तथा अनादि कालयी होवाथी शरुआतमां तो मनुष्य निष्क-ळ जायछे. एटले तेनी मरजी उपरांत रागद्वेष मोहना विचारो आवी जायछे. अथवा तो खराब काम थइ जायछे. पण लांबो वखत पो- तानी महेनत चालु राख्याथी छेवटे ते रागद्वेष मोह मायाना खरा-ब विचारोने अटकावी शकेछे. अने तेम कीधाथी रागद्वेषथी बांधे-लां कर्मनो पण ते नाश करी शकेछे, मनोजय अभ्यासथी थायछे. रागद्वेषना विचारोथी मनुष्य आवता भवने माटे नवां कर्म संग्रहेछे. तेथी परभवमां जन्म लेवा पढेछे, जन्म जरा मरणथी आत्मा खरूं सुख भोगवी शकतो नथी माटे हवे मनुष्य भवमां चेतवानुं छे, दरेक मनुष्यो पोतानी बुद्धि अनुसारे सुखी थवा महेनत करेछे—कोइ रा-ज्यथी सुख मानी लेछे. कोइ पैशाथी तो कोइ स्त्रीथी कोइ कुटुंबथी तो कोइ पुत्रादिकथी सुख माने छे पण ते पुद्गल वस्तुओमां सुख नी बुद्धि धारवी ते केवल अज्ञानछे, खरुं सुख आत्मामां रह्यंछे, ते सुख आत्म ध्यानथी प्राप्त थायछे. श्री तीर्थकर महाराजाए मोक्षनुं सुख सत्य कथ्यंछे, अने मोक्ष तो आत्मा कर्मथी मृकाय त्यारे मळे छे, मोक्षनुं सुख कंइ वातोना गपाटा मारवाथी मळतुं नथी. पण ते माटे सांसारिक सुखनी इच्छा त्यागी मोक्ष सुख प्राप्त करवा सुख्य-ताए चारित्र मार्ग आदरवो जोडए.

प्रश्न-चारित्र विना शुं मुक्ति नथी मळती ?

उत्तर-श्री सर्वज्ञे ज्ञाननुं फळ विरित कथ्युंछे माटे विरितिरूपचा-रित्र सर्व कर्मनो क्षय करेछे, विरित पणुं वे प्रकारेछे-देशवि-रित अने सर्व विरिति-देशविरितिपणुं व्रतथारी श्रावकने होयछे. अने सर्वविरितिपणुं ग्रुनीश्वरने होयछे. श्री तीर्थकर महाराजाओ पण दीक्षा अंगीकार करेछे, जेटला तीर्थकर थया अने थशे ते सर्व सर्वविरितिरूप चारित्रने ग्रहण करेछे. ज्यारे तीर्थकरने दीक्षा लेवानो समय थायछे त्यारे लोकांतिक देवता वीनित करवा मग्रु पासे आवेछे. हे प्रभो आप दीक्षा लेइ ज-ना जीवोनो उद्धारगत करो, भव्यो विचारो के जेने ते भवमां

(-704)

आसमस्यरूप.

केवल ज्ञान उत्पन्न थायछे तेवा तीर्थंकर महाराजाओ पण चारित्र अंगीकार करेछे अने गृहस्थावासना त्याग करेछे. तो बीजा भव्यजीवोने चारित्र विना ग्रिक्त शी रीते मळे ?अने वळी शास्त्रमां पण कहुंछे के-

गाथा.

दंसण नाण जुओ विहु। न कुणइ कम्मरूखयं वरण रहिओ। नाणरुइ जुओ विज्जुट्य । किरिय रहिओ अरोगत्तं १

भावार्थ-दर्शन अने ज्ञानवहे सहितपण पाणी चारित्र विना कर्मनो क्षय करतो नथी. जाणकार वैद्य क्रियाहीनपणाथी रोग रहित थाय नहीं तेनी पेठे-वळी कहां छे वे.-

गाथा.

बहुभवं कयंपि कम्मं । खबइ चिरत्तमप्पकालंमि । चिर संचि इंधण भरं । खणेण निह्नहइ जह जलणोरे एग दिवसंपि जीवो । पव्यज्ज मुवागओ अनन्नमणो। जय वि न पावइ मुख्लं । अवस्स वेमाणिओ होइ २ अध्थवता एग दिणं। अंतमुहुत्तंपि चारु चरण जुओ। खबइ असंखिज्ज भव । जिजयंपि जीवो बहु कम्मं.३ सुइरंपि चरण विणा। न दिंति नाणं च दंसणं सिवं। वरचरित्त जुयाइं । खणेण ताइं सिव फलाइं।

भावार्थ-बहु भवनां कर्या कर्मने चारित्र अल्प काळमां क्षय करेछे घणा काळनो संचित इंधण समूहने जेम अपि बाळी भस्मक-रेछे तेनी पेठे अन्यत्र चित्त नथी. अने आत्मरमणतामां चित्तवाळं एवं चारित्र एक दिवसनुं जो मोक्ष न आपे तो पण वैमानिक देव-पणाने आपे.

भाव सहित भावचारित्र एक अंतर्ग्रहूर्त्तमां पण असंख्यभवाजित पापनो क्षय करे, ज्ञान अने दर्शन ए वे पण चारित्र विना
मोक्ष आपी शकतां नथी. माटे सम्यण्ज्ञानदर्शनचारित्राणि मोक्षमार्गः ज्ञान, दर्शन, अने चारित्र मोक्षनो मार्ग जाणवो. भावचारित्रथी पण कोइने मुक्तिनी पाप्ति थायछे. चारित्र विना रागद्वेषनो जय
थतो नथी. माटे कहुंछे के—ज्ञान विना चारित्र निह, चारित्र विण
निहं मुक्तिनां मुख छे शाश्वतां। ते केम लहीए मुक्तिरे—इत्यादि महापुरुषोनां वचनथी चारित्र मार्ग भावकर्मनो क्षय करनार बलवत्तर
जाणवो. हव चारित्र पाळवा अशक होय ते आवकत्रत अंगीकार
करे तथी पण मननों शनैः शनैः जय थायछे. अने मोक्षाभिमुख
थवाय छे.

हवे भन्यात्माओने समजवानुं के-श्रावक्षनां त्रत वा साधुनां त्रत अंगीकार करीने पण रागद्वेषनो क्षय करवानोछे, मनने जीत्या विना रागद्वेषनो क्षय करवो दुर्लभछे, अने आत्मज्ञान छे ते षड्द्र-न्य तेना गुण पर्यायना ज्ञानविना तथा वैराग्यविना थतुं नथी. मन पवन करतां पण घणुं चंचळछे. पवनने जेम मूंठीमां झाली राखवो तेम मनने पण वश राखवुं दुर्लभछे, आत्मस्वरूप चिंतवनना कु-त्रूमां मनने लगाडवुं ए सिवाय बीजो रस्तो मनोजयनोनथी. प्रथम स्थिर दृष्टि राखीने जोवुं के मनमां कया कया (शा शा) विचारो थायछे, तुरत जोतां हजार विचारो आवता जणाशे ते वखते एम चिंतववुं के हे आत्मा! ए विचार त्हारा नथी; तुं तेनाथी भिन्नछे, त्हारे एणी तरक लक्ष आपवुं निहं, एम विचारी तुरत आत्मगुणोना चिंतनमां वळवुं, अरूपी आत्मा केवी रीतेछे ? तेनो विचार करवो.

. ऑस्मस्बरूप,

पथम अभ्यासमां मनविचार करतां बंध रहेतुं नथी. माटे तेने कंइक ज्यम तो जोइए. माटे आत्मस्वरूप चिंतवनमां मनने दोर्बुं. एटले मन बहिरनी हजारो वस्तुओमां भटकतुं पोतानी मेळे वंध थशे. म-नने बहिरनी वस्तुओमां भटकवाथी जेवो आनंद मेळेछे तेवो पहेलां मळशे नंहीं. जेम नानां छोकराने निशाळे जतां जेवं कंटाळा भरेछं छागेछे तेम तथा कोड पंखीने प्रथम पांजरामां प्रवामां आवेछे त्यारे जेम कंटाळा भरेलं तेने लागेले तेम पेला छोकराने ज्यारे निशा-ळमां भणतां समजण पडेछे त्यारे कंटाळो थतो नथी. अने पंखीने जेम पांजरामां खावो पीवानो आनंद थायछे तथा तेना धणीनी साथे हळी मळी जायछे त्यारे स्थिर थायछे तेम मन पण आत्मध्यानमां प्रथम कंटा-की जायछे. पण ज्यारे तेने स्थिर आत्मध्यानमां करवामां आवेछे त्यारे कंडक स्थिर थायछे. अने अंते तेना उंपर काबू मेळवी ज्ञकायछे. अने ते बाह्यना विषयोमां भटकतं नथी अने ज्ञा-न्त जेवं थइ जायछे. पश्चात निर्विकल्पमय आत्मस्यरूपमां स्थिर उपयोगदृष्टिनी धारा दृद्धि पामेछे तेथी भव्यात्मा आत्माना असंख्यप्रदेशे लागेलां घणां कर्म निर्जरावेळे. अने निराधार स्वपर प्रकाशक बने माटे परमपदनी चाहना करनारे प्रथम मनो-जय करवो आवश्यकछे. श्री आनंदघनजी महायोगी कहेछे के-

श्री कुंथुनाथजीना स्तवनमां= मन साध्युं तेणें सघछुं साध्युं, एह वात निहं खोटी: इम कहें साध्युं ते निव मानुं, ए कंइ वात छे मोटी हो, कुंथुजिन०

जेणे मन वश कर्युं तेणे मुक्ति मुख वश कर्युं एम कहेवुं अ-तिश्चयोक्ति भर्युं नथी माटे पहेलां तो दरेक अभ्यासीए मन काबुमां राखवुं, जेम घोडाओं गाडी गमे त्यां घसडी जायछे. माटे तेओने काबुमां राखवा पडेछे, तेम इंद्रियो रूपी घोडाओं आ शरीररूपी

परंमासमदर्शन,

(404)

गाडीने पोताने गमे त्यां नहिं खेंची जाय ते सारु अंदर बेठेला आत्माए तेओने काबुमां राखवानाछे, प्रथम अवस्थामां मनने का-बुमां राखवानी जैम जैम वधारे को शेश करवामां आवे छे तेम तेम नहीं जोइता विचारो धमधोकार थया करेछे, सारा, नटारा, उंच, धनना, स्त्रीना, वेपारना हजारो विचारोथवातुं कारण समजी काढी खप विना विचार थवा देवो नहीं, सारां सारां पुस्तको बांचवामां आवे त्यां सुधी मन ते काममां राकाइ रहेछे. अने खराब विचारी नो नाश थायछे, खराब विचारो महारोगोना करतां पण भूंडाछे, मोटा रोगो तो एक भवमां पीडा करेंछे, किंतु खराव विचारोथी माठी असरो थइ घणां चीकणां कर्म बंधाय छे, माटे अंतर्ना ख-राव विचारो माटे विशेष लक्ष आपवानी जरुरछे अने तेवा अशुभ विचारमय आर्त्तध्यान अने रीद्र ध्याननुं स्वरूप शासमां कश्युंके, आर्तध्यान अने रौद्र ध्याननं मूल कारण अज्ञान, रागद्वेष मोहछे, अज्ञान ए महा शत्रुछे. अज्ञाननो नाश करवा सद्गुरु उप-देश वारंवार सांभळवो अने तेनो विचार करवो. षड्द्रव्योनं स्वरूप धारवुं. जड चेतननो विभाग करवो तेथी स्व अने परनी समजण पडतां भेद ज्ञान मगट थशे. समिकत मगट थवानुं मुख्य कारण भेद ज्ञानछे. जड अने चेतन वे वस्त भिन्न भिन्न छे एटला मात्रथी भेद ज्ञान मानी खुशी थवं नहिं पण आगल वधी अंतरथी सटाकाळ वे वस्तुओ न्यारी समजवी. इवे रागद्वेष ए वे मोटां भ्रुतछे, राग ए चूडेल छे अने द्वेष ए जन्दछे. ए बे ज्यां सुधी माणसमां छे त्यां सुधी विचारो मनुष्य सदाकाल दुःवीयो जाणवो, चूढेल जेम म-तुष्यतुं रुधिर चुसी लेले. तेम रागरूप चुडेलथी आत्मानी अनंति रूद्धि कर्मावरणथी आच्छादन थती जायछे, जन्द जेम माणसना शरीरमां पेसी अनेक तोफान करे**छे. माणसन् भान भूलावेछे.** तेम

(180)

रागद्वेषना विचारी परिहरवा.

द्वेषस्पी जन्द आत्माने वळग्यो छतो अनेक प्रकारनां तोफान करे छे अने आत्मानुं भान भ्रुटावेछे, चूडेल अने जन्दने कोइ महा उ-स्ताद मंत्र वादी काढेछे तेम आत्माने लागेलां रागरूपी चूडेल अने द्वेषस्प जन्द ते उस्ताद गीतार्थ गुरुना उपदेशस्प मंत्रथी दुर थायछे त्यारे आत्मा अत्यंत मुखी थायछे आ ठेकाणे शिष्यना आ-त्माभां रहेला रागद्वेषने काढवामां गुरु बलवान निमित्त कारण जा-णवा, अने उपादन कारण तो शिष्यना आत्मानी शुद्ध परिणति जा-णवी. आत्मानी शुद्ध परिणति थाय त्यारे आत्मा निर्मळ पदने पामेछे, निश्चय नयथी कहेवातुं जे पोतानुं शुद्ध स्वरूप, तन्मय आत्मा बनतां लोक अने अलोक तेना केवलज्ञानमां प्रकाशेछे. ज्ञानावरणीय कर्म नाश पामेछे त्यारे अनंतज्ञान उत्पन्न थायछे.

प्रश्न-ज्ञानावरणीय कर्म क्यां रहेतुं हशे ? अने तेतुं ग्रहण शाथी थतुं हशे ?

प्रस्युत्तर-ज्ञाननुं जे आच्छादन करे ते ज्ञानावरणीय कर्म-ज्ञानना पंच प्रकारछे पंच प्रकारनुं ज्ञान आच्छादन करे तेथी ज्ञाना- वरणीय कर्म पण पंच प्रकारनुं जाणवुं. पुद्गलना स्कंधोने आत्मा अशुद्ध परिणितयोगे ज्ञाननुं आच्छादन करे तेवा रूपे पोताना असंख्य प्रदेशोनी साथे क्षीर नीरनी पेठे परिणमावे ए उपरथी स्पष्ट समजाशे के क्षीर नीरना मळवाना संबंधनी पेठे ज्ञानावरणीय कर्म आत्माना प्रदेशोनी साथे रहुंछे अने ते ज्ञानावरणीय कर्मनुं ग्रहण अज्ञानयोगे अशुद्धपरिणितथी ग्रहण थायछे.

जेम सूर्यनां किरणोनो प्रकाश वादळांना आच्छादननी अवराय छे, तेम आत्मानुं सूर्य सदश जे ज्ञान ते ज्ञानावरणीय कर्मथी अव-रायछे. तेथी आत्मज्ञान स्थपर प्रकाशकरूप कार्य करी शकतुं नथी. इवे ज्यारे ज्ञानावरणीयकर्मनो नाश थायछे त्यारे अनंतज्ञान जलक थायछे, दर्शनावरणीय कर्पनो सर्वथा नाज थवाथी अनंत दर्शन उत्पन्न थायछे. तथा ज्ञाता अने अज्ञाता वेदनीयनो सर्वथा क्षय थवाथी अनंत अव्याबाध सुख उत्पन्न थायछे. मोहनीय कर्मनो सर्वथा क्षय थवाथी क्षायिक सम्पन्तनी तथा चारित्रनी पाप्ति थायछे, आयुष्य कर्मनो क्षय थवाथी आत्मा सादि अनंत स्थिति पामेछे. सारांश के-आयुष्य कर्मथी मुक्त थयेलो जीव सिद्धशिलानी उपर एक योजनना २४ चोवीस भाग करीए तेमांना त्रेवीस भाग मुकी चोवीसमा भागे एक समयमां सिद्धिस्थानमां जीव विराजेछे त्यां गयानी आदिछे पण त्यांथी पडवानं नथी माटे अंत नथी. माटे सादि अनंतमा भांगे सिद्धमां प्रक्त थएल प्रकात्मा रहेछे. नामकर्मना नाशथी आत्मा पोतानं अरूपीपद आविर्भावे करेछे. गोत्रकर्मना नाशथी आत्मा अगुरु लघुगुण पाप्त करेछे. अंतराय कर्मना नाशयी आत्मा सहज जे अनंतवीर्थ तेने प्रगट करेछे एम ए आठ कर्मना नाशथी आत्मा अब्राणने प्रगट करेछे. अने परमात्मारूपे थायछे, पंचमीगति मोक्ष तेनी प्राप्ति कर्मना क्षयथीछे, एम जीवने चारे गतियोमां जवानां कारणो बताव्यां तेमज पंचमीगतिमां जवानो मार्ग याने उपाय बता-व्यो. आत्मा जेवं वर्तन चलावशे तेवी गतिमां जशे. ए स्पष्ट वात छे. क्यांथी आव्योने क्यां जाइश्च ? ए संबंधी विचार छख्यो, हवे पंचम विषय संबंधी विचार लखेछे.

पंचमिववय-मनुष्य जन्मनी साफल्यता शाथी-पंचपगित साध्य क-रवाथी मनुष्य जन्मनी साफल्यता थायछे. पुण्यपापक्षयान्म्रिकः पुण्य अने पापना क्षयथी मुक्ति पद मळेछे अभ कर्मने पुण्य कथेछे अने अग्रुभ कर्मने पाप कथेछे. ग्रुभ वा अग्रुभ कर्म पौद्गहिक छे. बे पकारना कर्मने पण आश्रव कहेछे. ग्रुपुण्य-

साधुनी किया.

भाश्रव कहेवाय छे अने पापने अशुभाश्रव कहेवाय छे. आत्माने अनादि कालथी आश्रव एटले कर्म लाग्युं छे, शीरनीरवत् आत्मा अने कर्मनो संबंध थयो छे. आत्माना असंख्याता प्रदेशों छे तेमां मित पदेशे अनंति कर्मनी वर्गणाआ लागी छे. एकेक वर्गणा मध्ये अनंता पुद्गलपरमाणु छे एम अनंता परमाणु जीव साथे लाग्या छे. वर्णगंधरस अने स्पर्शमय परमाणु ओनी वर्गणाओ जाणवी, जीवद्रव्यने लागेला परमाणु थकी अनंत गुणा परमाणुओ छूटा छे – कर्म सहित आत्मद्रव्य पण सत्ताथी सिद्ध परमात्मा समान छे. जीवद्रव्य नित्य पण छे अने अनित्य पण छे कहां छे के —

गाथा.

निचानिच सरूवा, भावा सब्वेवि ताव तियलोए ॥ उपाय विगम ठिइ धम्म, संगया ते पुणो एवं. ॥१॥ पुब्वभवपज्जएणं, विगमोइह भवगएण उपाती ॥ जीव दब्वेण ठिइ, निचा निचत्तमेवंतु ॥ २ ॥

नित्य अने अनित्य स्वरुपी सर्वे पदार्थी त्रिलोक्तमां वर्तता उ-त्पादव्यय अने प्रीव्यता धर्ममय जाणवा, एक पदार्थमां उत्पादव्यय भ्रीव्यता केवी रीते थायछे ते घटावेछे-

यथा जीवद्रव्यमां पूर्व भवना पर्यायनो विनाश अने आभवना पर्यायथी उत्पाद अने जीव द्रव्यत्वपणे ध्रीव्यता एम त्रण धर्ममय जीव पदार्थ जाणवो, जीव द्रव्यमां गतिपर्यायथी उत्पाद व्यय ध्रीव्य-ता दर्शावी, आत्माना संसारावस्थामां अशुद्धपर्याय जाणवा वळी स्थूलदृष्टांते उत्पाद व्यय धीव्यता वर्णवेछे—

परमारमदर्शन.

(312)

गाथा.

कुंडल विगमो मउड पाओ कणगं अविवयं जहा ॥ तहसञ्वेवि पयथ्या, जीवोनेओ पुणो एवं ॥१॥

कंडलरूप पर्यायपणे सुवर्गनो नाश अने तेनो ज्यारे मुकुट बनाव्यो त्यारे मुकुटरूप पर्यायपणे सोनानो उत्पाद, अने सुवर्गपणे श्रीव्यता कंडलमां तेम मुकुटमां पण बनी रही छे, सोतुं कायम बनी रहे छे सुवर्णमां सुवर्णना पर्यायोनो एटले आकारोनो उत्पाद व्यय थया करे छे. तेम अत्र जीवद्रव्यमां पण अनंत गुणोनो उत्पात व्यय समये समये थया करे छे. एम धर्मास्तिकायद्रव्य, अधर्मास्ति काय, आकाशास्तिकाय, पुर्गलास्तिकाय अने उपचारे कालमां पण उत्पाद व्यय थया करे छे, अने श्रीव्यतापणुं सदा अवस्थित छे, षड्द्रव्य द्रव्यार्थिकनयापेक्षया नित्य जाणवां अने पर्यायार्थिकनया पेक्षया अनित्य जाणवां, जीवे धारण करेला मोटा शरीरमां वा नाना शरीरमां आत्माना असंख्यात प्रदेशो सरखा जाणवा नते वात दृष्टांतथी दृढावे छे —

गाथा.

संकोय विकोएहिं, पईवकंतिब्व महागगिहेमु ॥ हथ्यिस्सव कुंथुस्सव, पएससंखा समाचेव ॥ १ ॥

मृत्तिकाना नाना वा मोटां कुंडामां दीपकनी कांति संकोच अने विकाशे करी युक्त जेमछे. एटले नाना कुंडामां दीपकनी कांति सं-कोचपणे रहेछे, अने तेज पाजी दीपकनी कांति मोटा कुंडामां विका-भपणे रहेछे, तेम जीव पण हाथीनुं शरीर पामतां तेमां आत्माना मदेशोना विकाशयी सर्व शरीरने व्यापी रहेछे. तेम कुंयुवानुं शरीर जीव ज्यारे प्रहेछे त्यारे तेटला शरीरमां जीवना असंख्यातपदेशो व्यापीने रहेछे. कर्म संयुक्त संसारी जीव शरीरमां वस्योछे तेनी अपेक्षाए नानामां नानुं अंगुलना असंख्यातमा भागनुं शरीर धारण करेछे माटे अंगुल असंख्यातमा भाग जेवडो आत्मा कहेवायछे. अने केवली समुद्धात करतां जीव लोकपमाण असंख्यात पदेशों विस्तारेछे माटे तदपेक्षाथी लोकपमाण आत्मा कहेवायछे. मोक्ष दशामां आत्मा अक्रिय थवाथी एकहपे आत्मानी स्थीति रहेछे. शुद्धबुद्ध सिद्ध परमात्मामां पण उत्पाद व्यय ध्रीव्यता वनी रहेछे. प्रश्न—हे सद्गुरो! संसारावस्थामां शरीर प्रमाणे आत्माना पदेशों एक बीजा मदेशथी जुदा पडता हशे के केम—;

प्रत्युत्तर—तेवी स्थितिमां जो के आत्माना प्रदेशोनो संकोच विकाश थायछे तोपण प्रत्येक प्रदेशो एक बीजा प्रदेशोनी साथे
नित्य संबंधे संबंधितछे. तेथी आत्माना प्रदेशो संकोच विकाश्वाने पामेछे तोपण एक बीजाथी जुदा पडता नथी. अश्विना
तणखाओनी पेठे सर्वथा भिन्न आत्माना प्रदेशों जो पडे तो
असंख्यात प्रदेश मळीने एक आत्मा कहेवाय नहीं, अने आत्मापणुं नष्ट थइ जाय. माटे अरूपी आत्माना प्रदेशों
संकोचविकाशने संसारी अवस्थामां पामेछे तोपण तादात्म्य
संबंधे संबंधीत होवाथी कोइ कालमां जूदा पड्या नथी अने
पडशे पण नहीं. एवो प्रदेशोमां स्थभाव रह्योछे ते केवलीना
ह्यानगम्यछे, अनुभवीओ ए वातने सम्यग् अनुभवेछे.

प्रश्न—आत्माना असंख्यात प्रदेशने ठेकाणे एक प्रदेश मानीए तो कंड हरकत आवे:

इस -हा हरकत आवे छे, श्री हर्व । महाराजे आत्माना असंख्यात मुद्देश दीटा छे तेथी एक मदेश केम मानी शकाय, हे शंका- वादी तने केवलज्ञान थयुंछे के एम कही शके. ना. त्यारे असंख्यात प्रदेश आत्माना छे एम श्रद्धा कर. मित कल्पनाथी कंइ काम थतुं नथी. वली हे शंकावादी स्रक्ष्मदृष्टिथी समज के ज्यां आत्माना प्रदेशोछे ते आत्माना प्रदेशोने व्यापीने ज्ञान अनंत्र्वणुं रह्युंछे, प्रति प्रदेशे अनंतु ज्ञान रह्युंछे. मितिज्ञान, श्रुतज्ञान, अवधिज्ञान, मनः पर्यवज्ञान अने केवलज्ञान ए पंच-मांतुं कोइपण ज्ञान आत्माना प्रदेशोने त्यागीने रहेतुं नथी। हवे आत्मानो असंख्यात प्रदेश न मानीए नहींतो एक मोटो विरोध आवेछे.—

(हाष्य-हे सद्गुरो आत्माना असंख्यात प्रदेशो मानीए नहीं तो मोटो शो विरोध आवेछे-ते कृपा करीने कहो.

सद्गुरु-प्रथमतो केवली केवलीसमुद्धात करेखे. लोकाकाश ममाण आत्माना प्रदेशों कर्मनुं परिशाटन करवा विस्तारेखे. अने कर्म भोगवी लेखे ते वातनो विरोध आवेखे एक प्रदेश लोकाकाश प्रमाण विस्तारातो नथी तथी श्री रीते कर्मनुं परिशाटन करे नागो पलाले थुं अने नीचोवे थुं एवी बात थइ, वली बीजो विरोध ए आवेखे वे.—ज्यारे चतुर्दशपूर्वी शंका पुख्वा माटे आहारकशरीर, लब्धिथी बनावी सीमंधर स्वामी पासे मोकलेखे त्यां जइ ते शरीर शंका पुच्छी तीर्थंकर सीमंधर स्वामी पासे मोकलेखे त्यां जइ ते शरीर शंका पुच्छी तीर्थंकर सीमंधर स्वामी पासेथी उत्तर लेइ जलदी आवेखे. हवे कहो के—चउदपूर्वीए बनावीने मोकलेखें जे आहारक शरीर तेमां आन्तमाना प्रदेशों खरा के नहि ?

शिष्य-हा सद्गुरो ते आहारक शरीरमां आत्माना पदेशो होवा जोइए- जो ते आहारक शरीरमां आत्माना पदेशो न होयतो ज्ञान विना भगवान्ने पश्चशी रीते पूछे. अने भगवान्

चतुर्थ विषय विचार,

((R1A)

वाणीथी उत्तर आपे ते आहारक शरीरमां आत्माना मदेशोना होयतो समजी शकाय ते विना उत्तरनो अर्थ शी रीते समजे अने उत्तर अम्रुक मकारनो छे ते कोण धारण करी शके-माटे अवश्य आहारक शरीरमा आत्माना मदेशो मानवाज जोइए. श्री ती-र्थकर भगवाने जे वात कही छे. ते सत्यज छे-अनंतज्ञानी सर्व पदार्थनुं वरावर स्वरूप जाणेछे.

खुष्ठ - ज्यारे चउदपूर्वीए आहारक शरीर अत्रथी बनावी महावि-देह क्षेत्रमां मोकल्युं त्यारे- वे शरीर थयां एकतो चउदपूर्वीतुं सात धातुथी बनेछं औदारिक शरीर अने वीजुं महाविदेह क्षेत्रमां मोकलेखं आहारक शरीर.

हवे बन्ने शरीरमां आत्माना प्रदेशो खराके नहीं-

- शिष्य-हा गुरुजी बन्ने शरीरमां आत्माना प्रदेशों छे. औदारिक शरीरथी तो चउद पूर्वी व्याख्यान बांबेछे. ते समजवुं त्यां पण ज्ञान छे. नहीं तो व्याख्यान शी रीते वंचाय. वळी सम-जवुं के—यत्र यत्रज्ञानं तत्र तत्र आत्म प्रदेशाः ज्यां ज्यां ज्ञाननो सद्भाव छे त्यां त्यां आत्माना प्रदेशो जाणवा. बन्ने शरीरमां जो आत्मभदेशों होय नहीं तो बन्ने शरीरमां ज्ञान होय नहीं माटे बन्ने शरीरमां ज्ञानथी आत्माना प्रदेशों छे एम नक्की यथार्थ सिद्ध स्पष्ट माळम पड्युं.—
- खुरु-हवे ते बने शरीरमां आत्ममदेशों छे एम सिद्ध थयुं. हवे समजों के एक पदेशी आत्मा होय तो बने शरीरमां ज्ञाननों सद्भाव शी रीते होय, एक पदेश जो आत्मानों होत तो एवो बनाव बने नहीं. अने लब्धिथी बीजां शरीर धारण करवामां बांधो आवे. वैकिय शरीर पण धारण करी शकाय नहीं. आ-त्माना असंख्य पदेशों मान्या सिवाय बने शरीरमां जाणवा-

पणुं घटे नहीं. एम पण सिद्ध थयुं. चउदपूर्वीना आहारक श्र-रीरना दृष्टांतथी बने शरीरमां आत्ममदेशो असंख्याता छे एम सिद्ध थयुं अने एक प्रदेशआत्मानो मानवामां बाध आवेछे ते पण सिद्ध कर्युं. युक्त अने युंजान येागिया पण अनेक शरीर धारण करे छे तेमां पण आत्माना असंख्य प्रदेशो जाणवाः तीर्थेकर महाराजे लोकाकाश प्रमाण आत्माना ना प्रदेशो कहाले ते वात पण सिद्ध ठरी, अने ते सिद्धले. हवे आत्माना प्रदेशो संबंधी वर्णन करेले. आत्माना एकेक प्रदेशे अनंता पर्याय रहाले, ज्ञान पण प्रति प्रदेशे अनंतु सदाका अ

प्रश्न-आत्माना दरेक प्रदेशे जुदु जुदु अनंतज्ञान छे एम मानीए तो एक प्रदेश जुदु जाणवाहप कार्य करे. त्यारे आत्मानो कंइक जुदु जाणवाहप कार्य करे. त्रीजो प्रदेश वळी कंइ जुदु जाणे. त्यारे एक जाणनार आत्मा रह्यो नहीं.

उत्तर-जो के आत्माना प्रत्येक प्रदेशे अनंतज्ञान सत्ताभावे रहुंछे तो पण असंख्यात प्रदेशो मळी एक उपयोग वर्तछे, पण प्रत्येक प्रदेशनो जुरो जुरो उपयोग वर्ततो नथी ते कंइ बाय आवतो नथी. असंख्य प्रदेशो मळी एक आत्मा कहेत्रायछं, माटे आत्मापणुं नष्ट थतुं नयी। असंख्यप्रदेशो मळी एक समये निर्मळ सिद्धात्माने एक उपयोग होयछे तेथी एक न आत्मा जाणवो.

कोइक आचार्य युगपत् उपयोग मानेछे तथा चतत्पाउः गाथा

केइ भणंति जुगवं, जाणइ पासइ केवलीनिअमा ॥ अन्ने एगंतारअं, इच्छांति सुउच्वएसेणं ॥ १ ॥ (296)

आरमंस्वरूप.

केचित् सिद्धसेनाचार्य वगरे कहेछे के—युगपत् एककाला-वच्छेदन केवल ज्ञानी जाणेळे देखेछे—अन्ये जिन भद्रसमाश्रमण वगरे एक समये केवल ज्ञानी जाणेळे अने बीजा समये देखेळे. एटले एक समये ज्ञानापयोग अने बीजा समये द्वानापयोग एक कमवितिपण इच्छेछे—अ(गमना अनुसारे तेम इच्छेळे. आ बे पक्षनी नंदिस्नुत्रमां घणी चर्चाछे. त्यांथी विस्तार विशेष जोइ लेवो.

जिङ्गासु—केवल ज्ञान विना मतिज्ञानी, श्रुतज्ञानी, अवधिज्ञानी, मनःपर्यव ज्ञानीने एक समये ज्ञानीपयोग अने वीजा समये दर्शनोपयोगे होय के गहीं.

अग्रेर-केवलज्ञानी विना बीजा ज्ञानवाळाओंने एक समये ज्ञानो-पयोग अने बीजा समये दर्शनोपयोग न्यक्त होतो नथी.

जिज्ञासु--आत्मज्ञानना छतिपर्याय अने सामर्थ्य पर्याय केवी रीते समजवा ?

सुगुरु-आत्माना असंख्यात प्रदेश पैकी प्रांतप्रदेशे छतापणे अनंत अनंत ज्ञान रहां छे ते ज्ञाननो त्रिकालमां कदीपण नाश थनार नथी. ते ज्ञानना छितपर्याय नाणवा, अने ज्ञानमां क्षेय पदार्थनो भासनपणो तेथी ज्ञानना सामर्थ्य पर्याय जाणवा. ज्ञेयपदार्थी अनंताछे. अने ते समये समये ज्ञानमां भासेछे, माटे ज्ञेय जे अनंत पदार्थी तेनी भासता कार्य करणशक्ति-वाळा जे ज्ञानना पर्यायो ते ज्ञानना सामर्थ्य पर्याय जाणवा. छित पर्यायथी सामर्थ्य पर्याय अनंत ग्रण विशेष जाणवा. सामर्थ्य पर्याय ते कार्यरूपछे. तथा च महाभाष्ये—यावंतो क्षेयाः तावंत एवज्ञानपर्यार्थाः ते च आस्तिरूपाः प्रतिवस्तुनि अनंताः ततोष्यनंतगुणाः सामर्थ्यपर्यायाः जेम एक दोरहो

श्वतं एटले सो तांतणातो छेते आविभागपणे छता पर्यायछे अने ते दोरडाथी अनेक कार्य थाय, अनेक वस्तुओ बंधाय अने ते अनेकने आधार थाय. तेने सामर्थ्य पर्याय कहीए, छातिरूप जे पर्याय तेतो वस्तुरूपछे. अने सामर्थ्य पर्याय तो पर्यात रूप एटले कार्यरू छे. तेम अत्र ज्ञानना छाति पर्याय-मां अने सामर्थ्य पर्यायमां पण समजवं-

जिज्ञासु—ंत्री सर्वज्ञे षड्द्रव्यनी बहार कोइ वस्तु नथी एम कथ्युं छे अने नैयायिक शोळ पदार्थ कहे छे. तेनुं केम ?

सुग्रह-षड्द्रश्यरूप छ पदार्थीनी अंदर शोळ पदार्थनो समावेश थायछे तथी छ पदार्थ सत्य जाणना प्रथम नैयायिक प्रमा-णने भिन्न पदार्थ कहेछे ते गुक्त नशी कारण के प्रमाण जे-टलांछे तेटलां ज्ञानछे अने ज्ञानतो आत्मानो गुणछे तेने भिन्न पदार्थ कहेबाय नहि. प्रभेयपणुं पण षड्द्रव्योनी बहार नथी. बीजा प्रयोजन सिद्धांतादिक ते सर्व जीवद्रव्यनी प्रदृत्ति जाणवी माटे भिन्न पदार्थ कहेबाय नहीं,

जिज्ञासु--वैशेषिक द्रव्यग्रण, कर्म, सामान्य, विशेष, समवाय अने अभाव ए सात पदार्थ कहे छे. तेनो षड्द्रव्यनी अंदर सम् मावेश थायछे के षड्द्रव्यथी भिन्न पदार्थछे तेनी यथार्थ स्प-ष्ट्र समजण आपो.

सुग्रह-है जिज्ञास स्थिर दृष्टि राखी सांभळ. गुणने पदार्थ बीजो कहेवाय नहीं. गुण तेतो द्रव्यमां रहाछे. तेथी गुणने भिन्न पदार्थ कहेवाय नहीं, तथा कर्म ते द्रव्यनुं कार्यछे तथा सामान्य विशेष ए वे तो द्रव्य मध्ये परिणमन छे. वळी समवायने पण द्रव्यमां समायछे, अने अभावतो अछताने कहेवाय ते अछताने पदार्थ मानवो घटतो नथी अभावछे

(१२०) बैशेषिक दर्भन पदार्थनी पड्दब्यमां समावेश-

ते वस्तुनो व्यतिरेक धर्मछे माटे वैशेषिक मतपण षड्द्रव्यमां समाइ जायछे. वळी वैशेषिक द्रव्यना पृथिवी अप, तेज वायु आकाश. काल, दिशा, आत्मा, मन ए नव भेद कहेछे. ते संबंधी समजवुं के—पृथ्वी, अप, आग्न वायु एतो एकेंद्रिय जीव जाणवा, पृथ्वीरूप शरीर धारण करी जे जीवो रह्यां हे ते पृथ्वीकायना जीवो समजवा, अने शरीरतो पुद्गल द्रव्यमां आव्युं. एम ए चार पण आत्मद्रव्य ठर्या. पग कर्मयोगे शरीर भेदे नाम जुदां पड्यांछे. दिशीतो आकाशमां मळी जायछे अने आकाश ए आकाशास्तिकाय द्रव्य जाणवुं. मनते आत्मानुं संसारीपणामां उपयोग प्रवर्तवानुं द्वारछे तेथी ते भिन्न द्रव्य कहेवाय नहीं. वैशेषिक मतवादी साधान्य विशेष ए बेने भिन्न पदार्थ मानछे ते पण युक्त नथी—

तथिह सकलशास्त्रे पक्षद्रयं, जातिपक्षा व्यक्तिपक्षश्च तत्रजातिः सामान्यं व्यक्तिस्तुविशोषः इतिवचनात सामान्येतुसर्वेषामेव नित्यत्वं सत्ताप्रतिपादनपरत्वात् यथागोत्वाश्वत्वादिकं नित्यं नतु गैर श्वोवानित्यः व्यक्तिपक्षेत्वनित्यमेव यस्तुजातिपक्षः सत्वस्माकं जैनानां द्रव्यार्थिकनयः व्यक्तिपक्षः स्त्वस्माकं पर्यायार्थिकनयः भावार्थ-सकलशास्त्रमां पक्ष बेले. १ जातिपक्ष २ बीजो व्याकिपक्ष जाति एटले सामान्य अने व्यक्ति एटले विशेष. एवा बचनथी जाणवुं. सामान्ये एटले जातिपक्षमां सर्व पदार्थी तुं नित्यपणुं
जाणवुं कारणके जातिपक्ष सत्तानुं प्रतिपादन करवामां तत्परले ते
हेतुयी जेमके गोत्व, अश्वत्व, गायपणुं अने अश्वपणुं ए नित्यले.
पग व्यक्तिरूप जे गौ घोडो ते आनित्यले. जे आ जातिपक्षले ते
जैनोनो द्रव्यार्थिक नयले. अने जे व्यक्तिपक्षले. तेज जैनोनो पर्यायार्थिक नयले. जातिपक्ष द्रव्यनुं ग्रह्म करेले अने व्यक्तिपक्ष पर्या
योनुं ग्रह्म करेले. जातिपक्ष ए सामान्य अने व्यक्तिपक्ष ए विशेष
ले माटे ते बेनो नयमां समावेश थवायी सामान्य विशेष षड्दव्यथी
भिन्न पदार्थ नथी.

जिज्ञासु—पृथिवी, अप, तेज, वायु, ए चार विना बाकीनां पंच नित्य कहांछे. तो जैनोना स्यादादपक्ष प्रमाणे नित्य अनि-त्य ए वे पक्ष प्रत्येक द्रव्यमां घट्या नहीं. ने तमी घटावोछो ते केवी रीते ते समजावो

सुगुरू-हे भत्र सांभळ, प्रत्येक वस्तुमां ज्ञानदृष्टिथी जोतां नित्य अने अनित्यपणुं रह्यं छे. पृथिशी, अप, तेज अने वायु कार्य- रूप न्यायशास्त्रमां अनित्य कह्यां छे अने परमाणुरूप नित्य कह्यां छे. आकाश स्वस्वरूपे त्रणकालमां एकरूप छे माटे तद्यपेक्षया नित्य छे. अने = प्रदाकाशोन हः पटाकाशोन हः) घटा- काश नष्ट थयुं, पटाकाश नष्ट थयुं, पत्री रिते घटपटनी उपिथी अनित्य पक्षपणुं आकाशमां आव्युं. दिशाकालमां पण तेवी रिते नित्यानित्यपणुं घटयुं = श्रात्मापितस्यमते सच- देहें द्रियव्यतिरिक्तः विश्विनित्यश्रेति व व नात् तत्र कौंडिन्य त्यायेन पारिशिष्या द्रुमानेन देहाश्रितोनित्य एवेति = श्रात्मा

((२३२) प्रायश्चित छेतुं.

पण वैशेषिकना मतमां देहथकी भिन्न जे आत्मा ते विश्व अने नित्यछे त्यां कोंडिन्य न्यायवडे जोतां देहमां रहे आन्मा अनित्य कहा छे. स्याद्वाद मतमां अग्रद पर्याये तथा शृद्धपर्याये आत्मामां नित्यानित्यपणुं स्वीकार्युक्ते. मनमां पण नित्यानित्यपणुं रह्यं छे. देहना अनित्यपणाथी मनतुं पण अनित्यपणुं जाणवुं. देहाश्रितंमनः देहाश्रित मनछे माटे, पुद्गलक्षे देहतुं पण नित्यपणुं छे तेम मनतुं पण पुद्गलक्षे नित्यपणुं छे. पुद्गल परमाणुओमां पण द्रव्य धिकनयनी अपेन्साए नित्यपणुं छे. कारण के—परमाणुका पुद्गलनो कदी त्रिकालमां पण नाज थतो नथी तेम पुद्गलक्ष्प परमाणुओमां पण वर्ग, गंय, रस अने स्पर्श समये समये फर्या करे छे माटे पर्यायाधिकनयनी अपेकाए तेमां अनित्यपणुं जाणवुं.

जिङ्गासु-स्याद्वाद एटले थुं ? ते समजावो.

सुगुरू-एकस्मिन् वस्तुनि विरुद्धधर्मद्वय समावेशः स्याद्वादः एक वस्तुमां परस्पर विरुद्ध वे धर्मनो समावेश ते स्याद्वाद जाणवो अथवा वस्तु स्वरूप मतिपादन परः श्रुविकल्पः स्याद्वादः भावार्थ-वस्तुनुं यथार्थ स्वरूप मतिपादन करवामां पर एवो श्रुतनो विकल्प स्याद्वाद जाणवो. अथवा विरूद्धधर्मद्वय मति-पादन परोवक्तुरभिमाय विशेषः स्याद्वादः अथवा तो एक वस्तुमां विरूद्ध धर्म वेने मतिपादन करवामां तत्पर एवो व-क्तानो अभिनाय विशेष तेने स्याद्वाद जाणवे. तथा एक-स्मिन् जीवाजीवादौ विरूद्धयद्धर्म द्वयं नित्यानित्यास्तित्व नास्तित्वोपादेयानुपादेयाभिलाप्यानभिलाप्यादि लक्षणं तस्य समावेशः समाश्रयः स्याद्वाद इत्यर्थः

तथा जीव अजीव आहि पदार्थमां विरुद्ध जे धर्मद्वय-नित्य

अनित्य तेम अस्तित्व नास्तित्व तथा उपादेय, अनुपादेय तेमज अभिलाप्य अने अनभिलाप्य धर्मनो समावेश, ए विरूद्ध धर्मोनी स्थिति तेनुं नाम स्याद्वाद जाणवुं.

ए ममाणे स्याद्वादनुं लक्षण कही मस्तुतविषय वर्णन करीए. तथा वेदांती सांख्य ते एकज आत्मा अँद्रतपणे एकज द्रव्य मानेछे, ते पण युक्ति युक्त नथी. केमके शरीरजे आ चर्मचक्ष्यी देखायछे वा औदारिक, वैक्रिय, आहारक, तैजस अने कार्मण ए पंच प्रकारनां बरीर तो पुट्गलास्किकायपणेछे माटे रूपीछे, तेमज पुटगल द्रव्यना स्कंधो जे जुदी जुदी आकृतिरूपेछे ते एक केम थाय. तथा आत्मा अने शरीरनो आधार ते आकाश जाणबुं. अवगाहो आगासं इति वचनात्. बीजा द्रव्योने रहेवा अवकाश आपवो ते आकाशनं लक्षणछे अने ते सर्वत्र प्रसिद्ध छे. ते आकाश द्रव्यने जुद्दं मानवुं जोइए. आत्मा भिन्न ठर्यो. पुट्गलद्रव्य भिन्न ठर्थे. आकाशद्रव्य भिन्न ठर्थे. तो एकज आत्माछे आत्मा विना अन्य वस्तु नथी. एवा अद्वैतवार सिद्ध ठर्या नहीं. वळी अद्वैतवा-दमां एकज आत्माछे. पण अनेक आत्मा नयी एवं मनायछे. तो अनेक आत्मानी शास्त्र युक्ति, अनुभवथी सिद्धि आगळ करवामां आवशे. अद्वेतवादी आत्मानुं अस्तित्त्व मानेछे माटे ते वादनो स-मावेश आत्मद्रव्यमां करवामां आवेछे, माटे पड्डव्यनी बाहार कोइ वस्त नथी एम सिद्ध ठर्थुः

षड् द्रव्यनी अंदर बौद्धदर्शननो समावेश.

वौद्धदर्शनने समये समये नवा नवापणे आकाश १ काल २ जीव ३ पुद्रल ४ ए चार द्रव्य मानेछे. ते वादी प्रति कहेवानुं के जीव अने पुद्रल एकज क्षेत्रे केम रहेता नथी. ते तो चडनादिभाव पामेछे. माटे तेना अपेक्षाकारणरूप, धर्मास्तिकाय अने अधर्मा-

(२१४) अन्य द्शननो जैन तस्वमी समावेश.

स्तिकाय. ए वे द्रव्य पण मानवां जोइए. तथा केटलाक संसार चक्रनो कर्ता एक परमेश्वर माने छे. ते पण मुषा समजवुं. निर्मल राग द्वेषातीत मश्च, विश्व, परमात्मा, परना सुख दुःखनो कर्ता थाय नहीं. वळी जगत्कर्त्ता इश्वर नथी. एनो विस्तार अग्ने कर वामां आवशे. हाल तो आत्मानुं स्वरूप वर्णवनां प्रसंगे अन्य चर्चा चाली. हवे आत्म स्वरूप विषयनुं वर्णन करीए. आपणे नकी सम्मजवुं के आत्मद्रव्य बीजां पंचद्रव्यथी न्याक्छे. अनादि कालथी अशुद्ध परिणितयोगे पुद्गलद्रव्यने परमाणुओ तेना स्कंघो कर्मरूप परिणमी आत्मानी साथे क्षीरनीर पेटे परिणम्युं छे. मन, वाणी, छेइया, शरीर, संस्थान ए सर्व पुद्रल समजवुं. अष्टकर्मनी वर्गणा-ओ पण पुद्रल छे.

अष्ट वर्गणानुं स्वरूप रुषेछे.

औदारिकवर्गणा, वैक्रियवर्गणा, आहारकवर्गणा तेनसवर्गणा, भाषावर्गणा, श्वासोश्वासवर्गणा, मनोवर्गणा, कार्मणवर्गणा, वे परमाणु भेगा थाय त्यारे द्वयणुक स्कंध कहेवायछे. त्रणपरमाणु भेगा थाय त्यारे व्यणुक स्कंध थाय. एम संख्याना परमाणु मिले त्यारे संख्याताणुकस्कंध थाय. तेमज असंख्याता परमाणुआ भेगा थाय त्यारे असंख्याताणुकस्कंध थायछे, तथा तेमज अनंतपरमाणुओनो स्कंध थायते अनंताणुकस्कंध थाय, एटला सर्व स्कंध ते जीवने ग्रहण करवा लायक नथी, पण ज्यारे अभव्यथी अनंतगुण अधिक परमाणुओ भेगा थइ जे स्कंध थाय. त्यारे तेनी औदिरिक श्रीरने लेवा योग्य वर्गणा थाय.

एमज औदारिकथी अनंतगुणा अधिकवर्गणामां दल भेगा थाय. तेवारे वैक्रियवर्गणा थाय. वळी वैक्रियथी अनंतगुणा परवा-णु मळे त्यारे आहारकवर्गणा थाय एमं सर्व वर्गणाना एकेकवी

अनंतगुणा अधिक परमाणु मले त्यारे उपरनी वर्गणाओ अनुक्रमे थाय एटले पहेलीथी बीजी वर्गणा. बीजीथी त्रीजी, त्रीजीथी चोथी, अने चोथीथी पांचमी,अने पांचमीथी छड्डी,छड्डीथी सातमी,मने।वर्गणा थी आठमी कार्मण वर्गणामां अनंतगुणा परमाणुआ अधिक जाणवा आठ वर्गणाओमां औदारिक, वैक्रिय, आहारक, अने तैजस, ए चार वर्गणाओ बाद्रछे. ए चारवाद्र वर्गणाओमां पांच वर्ण वे गंध, पांच रस, अने आठस्पर्श, ए बीश गुग जाणवा. तथा भाषावर्गणा. श्वासोश्वास वर्गणा तेम मनोवर्गणा ए चार वर्गणा सूक्ष्मछे, ए चार सुक्ष्मवर्गणामां पांच वर्ण, वे गंध, पांच रस, अने चार स्पर्श,ए सोल गुण रह्याछे, अने एक परमाणुगां एक वर्ण एक गंध, एक रस, अने वे स्पर्श, ए पांच गुणछे. ए अष्ट वर्गणा संसारी आत्माने लागीछे. अने तेमां पण समये समये उत्पाद व्ययध्रुवता परिणमी रहीछे. ते वर्गगामां पण अगुरू छघुथी षड्गुण हानिद्वद्धि समये समये परि-णमी रही छे. ए आठ वर्गणामां आत्मानुं कंइनथी. पुद्गलद्रव्य अने आत्मद्रव्य वे भेगां घइ परिणमेछे-पुर्गल परमाणुआ अनंतछे.

हवे प्रसंगे पुद्गलनुं स्वरूप लखेछे-

पुद्गलस्वरूप,

वर्गादिक गुणो दृद्धि पामे. गळी जाय. खरी जाय एवो जेमां स्वभाव छे. तेने पुद्गलास्तिक य दृष्य जाणवं. मूलद्रष्य पुद्गलास्ति काय परमाणुरूप अवबोधवं—द्रयणुक आदि जेटला स्कंधछे तेतुं मूल कारण जाणवं. एटले घट, पट, दंड, चक्र, वस्त, पात्र, कपाट, इंट, पर्यर. आदि पुद्गलनी आकृतियो तुं मूल उपादान कारण परमाणुओ छे. तेता रूपे परमाणुआ परिणम्या छे, बीना पण तेमां निमित्त आदि कारणो मळे छे. छ प्रकारनां पुद्गल स्कंधो छे १ बादरवादर २ बादर ३ बादरसहम ४ सहमबादर ५ सहम ६ सहमसहम.

(334)

पुत्वसंस्वरूप.

- १ पुर्गलिपंडना ने खंड कर्या पोते फरी मळे नहीं ते काष्ट्र पा-षाणादिक बादर बादर भेद मथम जाणवो.
 - २ पुर्गल स्कंघ खंडखंड कर्या पोतानी मेळे परस्पर एकमेक थर जाय एवां दुग्ध, घी, तेल वगेरेने बादर कहेले.
- ३ जे पुद्गल स्कंधो देखवामां स्थूल होय-खंडखंड करवामां आवे नहीं हस्सादिकथा ग्रहण थाय निह, एवा धूप, चंद्र,चांदनी, आदिपुद्गलवादरसूक्ष कथायले.लायातम पुद्गलो पणजाणवां.
- ४ जे स्कंघो स्रश्मछे किंतु स्थूलोपलंभ होय. स्पर्श, रस, गंध वर्ण, शब्द विगेरे सुश्म बादर जाणवा.
- ५ जे पुद्गल स्कंधो आति स्र्मिक्ने इंन्द्रियोना ग्रहवामां आवता नयी एवा कर्मवर्गणादिक स्र्मपुद्गल कहेवायके.
- ६ कर्मवर्गणाओथी पण अतिस्रक्ष्म द्रयणुकस्कंध आदि स्र्स्मस्रम् कहेवायछे.

पूर्वोक्त स्कंधोनुं मूलकारण परमाणुले, परमाणु काइराहीतले जोके स्कंधोना मिलापथी शब्दरूप पर्यायने धारण करेले तो पण व्यक्तरूप शब्दपर्यायथी रहीतले. वळी परमाणु अविभागी एटले भाग रहीतले. पृथिवी, अप अग्नि, वायु ए चारनुं कारण परमाणुआले अर्थात् पृथिवी अप अग्नि नायु ए चार भूतो पण परमाणुआर्थी पेदा थायले. वळी परमाणु परिणमन स्भाववाळोले. परमाणु अक्षब्द ले तोपण काइनुं कारणले. परमाणु पोते द्रव्यले अने तेमां वर्ण, गंध रस अने स्पर्ध ए चार गुणोले अने ते मूर्त कहेवायले. पृथिवी जाति परमाणुओमां चारे गुणोनी मुख्यताले. जलमां गंध गुणनी गौणता, अने वाकिना त्रम गुणोनी मुख्यताले. अग्निमां गंध अने रस गुणनी गौणताले, अने स्पर्ध वर्णनी मुख्यताले. अग्निमां गंध अने रस गुणोनी गौणताले, अने स्पर्ध गुणीनी मुख्यताले.

इन्द्रियो वडे उपभीग्य पदार्थी, तथा पांच प्रकारनी द्रव्येन्द्रिय तथा औदारिक वैक्रिय आहारक तेजस अने कार्मण ए पंच मका-रनां शरीर तथा पैट्गलीक द्रव्य पन तथा द्रव्यकर्म नोकर्म वि-गेरे मूर्त पदार्थ पुट्गल द्रव्य जाणबुं. ए पुट्गल द्रव्य द्रव्यार्थिक नय्थी ज्ञान्ततके, अने पर्वायर्थिक नयथी अज्ञान्ततके. वस्तुतः पुद्-गल द्रव्ययी आत्मा न्यारोछे. परपरिणति परिणामी थतां पुरुगल ग्राहक पुरुगल भोगी थए छते पति समये नवा कर्म बांधवे संसारी थयाछे, ज्यारे आत्मा स्वस्वरूप ग्राहक तथा स्वस्वरूप भोगी थाय त्यारे सर्वकर्ष रहीत थइ परम ज्ञानमयी-परम दर्शनमयी-परमानंद मयी सिद्ध,बुद्ध अगुरारी,अग्नरीरी, अयोगी, अलेगी, अनाकारी, निःपयासी, अविनाशी,अज,अविचल, विमल स्वरूप,सुखनो भोगी सिद्ध परमात्मा थाय, माटे सर्व जगत् जीवनी अंटतुल्य पुद्गलना भोगनो त्याग करी स्वआत्मा स्वरूप भोगी पणाना रसीया थड स्वस्वरूप अनुयायी चेतना योगे निजगुण स्थिरतारूप चारित्रनी माप्ती करवी. एज मनुष्य जन्म पाम्यानी साफल्यता जाणवी. षष्ट्रविषय-धर्म क्यां रहेळे अने तेना हेतुओ कोणः

विचार - संसाररूपी ऋपमां पडता माणिओने धारी राखे तेने

धर्म कहेळे. धर्मना वे भेदळे व्यवहारधर्म अने निश्चयधर्म, प्रश्न-ज्यारे धर्म एकजळे, त्यारे तेना वे भेद केम कथन कर्या.

उत्तर-जो के आत्मामां स्थित धर्मरूप कार्य निश्चयता कारण विना थती नथी. माटे सर्वज्ञ मञ्जूष व्यवहार धर्म अने निश्चयधर्म एवे प्रकारनो धर्म कथ्योछे. व्यवहारथीजे धर्मछे ते निश्चय जे शुद्ध आत्मिक धर्म तेने प्रगटाववामां कारणछे. व्यवहार धर्म ते साधनछे अने आत्मिक धर्म ते साध्यछे. माटे धर्मना पण कारण कार्यनी सापेक्षता ए वे भेदछे. भिन्न-निश्चय नयथी शुद्ध आत्मानोज ज्यारे धर्मछे तो व्यवहार धर्म आदरवानुं शुं कारण छे. एक फक्त निश्चय आत्मिक धर्म अद्भवने जोइए.

उत्तर-व्यवहारधर्म विना निश्चयधर्म मगट थतो नथी. जेमके-बा-जरीना दाणामां उगवानी घणी सारी शक्ति रहीछे तोपण ज-लनो संयोग थतां उगी नीकळेछे. तेम व्यवहारधर्म विना निश्चय धर्मनी माप्ति थती नथी-

प्रश्न-मरुदेवी माताए व्यवहारधर्म आदयों नहोतो. तेम छतां केम तेमके निश्चय आत्मधर्मनी सिद्धि थइ.

प्रत्युत्तर-कारण विना कार्यनी निष्पत्ति थती नथी. तेता अवश्य समजवुं. जोके मरुदेवी माताए देशथीना सर्वथी चारित्र प्रश्चें नहोतुं. तोपण व्यवहारधर्मने अवलंक्यो हतो तेथीज निश्चय आत्मिक धर्मने पगटाक्यो.

जिज्ञासु हे सद्गुरो मरुदेवी माताए कयो व्यवहार धर्म आदर्यो हतो. ते समजावो.

सुग्रर-मरुदेवी माता प्रथम श्री रूपभदेव भगवान्ना दर्शन करवा चाल्यां ए पण व्यवहारधर्मछे. तेमज मरुदेव माताए मनवचन अने काया ए त्रण योगनी गुप्ति करी, एटले मनवचन अने कायाना व्यापारोने परभावमां जता अटकाव्या. धर्म ध्यान ध्यायुं ते रूप व्यवहारथी उत्तम ध्याने चड्यां. शुक्क ध्यानध्यायी अंतकृत् केवली थइ मोक्षमां गयां-पुत्रमेम नाश थवानुं कारण मरुदेवी माताने समवसरण थयुं. ते पण व्यवहार, तेमज तेथी संसारनी असारता उद्भवी, ते पण व्यवहारथी उत्पन्न थइ. मनवचय कायाना खराव आश्रवना व्या पार रोक्या. अलवत धर्मध्याना दिध्यावतां रोकाणा,पश्चात् शुक्क ध्यान ध्यावतां निश्चय आत्मिक धर्म मगटयो, ते आत्मिक धर्म रूप कार्यमां मनवचन कायानी ग्रिप्त तथा धर्मध्यानरूप व्यवहार धर्म मरुदेवी माताने थइ गयो, मनोग्रिप्त वचनग्रिप्त अने काया ग्रिप्तरूप तथा धर्मध्यानरूप व्यवहारधर्मने कारणता निश्चयधर्म रूप कार्यमांछे, व्यवहारधर्म घणा प्रकारेछे. तेनी विचिन्नता ग्रुग्रुरुना ग्रुख्यी सांभळी अनेकांतधर्म ग्रह्वो. वळी भरतराजाने पण धर्मध्यानरूप व्यवहारधर्म केवल ज्ञान मगटवामां निमित्त कारणीभूत हतो. निश्चर्य धर्मतो अरूपीछे, ते व्यवहार धर्मनी मद्त्रथी प्रगट थायछे. उपादान कारणनी शुद्धिमां निमित्त का-रण वलवत्तरछे. एम समजवुं सारांश के मरुदेवी माता वा भरत चक्रवर्ति पण नीचला ग्रुणठाणानुं छोडवुं अने उपरना ग्रुणठाणे चढवुं ते रूप शुद्ध व्यवहार पाम्यां हतां.

जिज्ञासु प्रश्न--जो एमछे तो व्यवहारधर्म कोने कहेछे ते समजावो. सुग्ररु-पंच महात्रत उचरवां. सर्व विरितधर्म देशविरितधर्म अलबत साधुधर्म. श्रावकधर्म ए व्यवहारणी धर्म जाणवो. ए व्यवहा-रधर्म निश्चयधर्मनी माप्ति करावी आपेछे. निश्चयथी संपूर्ण नि-रावरण परमात्मपदनी माप्ति कराव्या बाद व्यवहार रहेतो नथी.

शिष्यप्रश्न--आत्मा परमात्मारूप थाय तेमां कयां कारणोनी जरुरछे.

सुग्रह-उपादान कारण. अने असाधारण कारण अपेक्षाकारण निमित्तकारण. ए चार कारणथी कार्यनी सिद्धि थायछे.

शिष्यप्रश्न-आत्मा सिद्धपणुं पामे तेमां पामे तेमां उपादान कोने समजबुं.

सुगुरु-सिद्धतारूप कार्य ते आत्मानुं अभेद स्वरूपछे. सिद्धतारूप कार्यनो कर्त्ता आत्मा पोतेजछे अने सिद्धपणुं आत्मानुं कार्य समजनुं, अधुना सिद्धता मगटावनी तेज कर्तव्यधर्मछे. सिद्ध- तारूप कार्यनी रुचि विना अनंतकाल संसारमां परिश्रमण थयुं. अने अज्ञान रागद्देषयोगे पोताना धर्मथी श्रष्ट बन्यो. हवे आत्मानो मूलधर्म भासन थयो तेथी हवे ते कार्यनी सिद्धि करवी. एम निर्धार करी तदनुगत चेतना वीर्यथी खस्त्ररूप कार्यनी-पजावे प्रथम तो अंश्रथी आत्मा कर्ता थाय. पश्चात् आत्मिक गुणोनी आविर्भावता थतां संपूर्ण कर्तापणुं पामीने परमात्मरूप कार्य नीप्राते. एवी सिद्धतानुं उपादान कारण पोतानी सन्तागत ज्ञान दर्शन चारित्र वीर्यादिक अनंतागुण छे. तेज उपा दान कारणपणे जाणवा. उपादान कारणरूप जे ज्ञानदर्शन चारित्र अने वीर्यछेते कार्यथी भिन्न नथी, अने तेज कार्यरूप परिणामेछे. माटे तेने उपादान कार्य कहेछे, आत्मानाधर्म छे तेमां पण ज्ञानदर्शन चारित्रनी मुख्यता जाणवी.

हिाडय--हे गुरुजी असाधारण कारण कोण समजवुं.

सुगुरु-उपादान कारणथी जे अभेद स्वरूपेछे. अने जे कार्यपणुं पामतुं नथी एटले कार्य संपूर्ण उत्पन्न थतां जे रहेतुं नथी तेने असाधारण कारण कहेछे. घटरूप कार्यनुं उपादानका मृत्तिका छे. मृत्तिकाछे. तेज घटरूपे थायछे, तेता वाचकने लक्ष्यमां आव्युं हशे हवे असाधारण कारणनुं दृष्टांत कहेछे. जेमके घट-रूप कार्य थतां स्थास, कोस, कुसलाकारजे थायछे. ते मृत्तिका पिंडरूप कारणथी अभेदछे परंतु घटरूप कार्य थतां ते असाधा-रण कारण स्थास कोस कुसलाकाररूप रहेतुं नथी. कहुं छे के-प्रमाण निश्चयेन उपादानस्य कार्यत्वापाप्तस्य अवांतरावस्था असाधारणमिति.

हवे परमात्मरूप कार्यमां असाधारण कारण घटावेछे. सिद्धता रूप कार्यप्रतिमथम मनवचन कायानायोग तेहने स्वग्रुण रमणमां अरागी अद्वेषीयणे पवर्ताववाः चोथा गुणठाणाथी मांडीने सिद्धतारूप कार्य पर्यंत गुणनी दृद्धि करवीः उपशममाव क्षयोपशमभाव श्रेणी-गतध्यान, विधिसहित आचरणा, पूजा भक्ति, गुणिनुं बहुमान, ज्ञान क्रियारूप साधक अवस्थानी तरतमता ते सर्व असाधारण कारणजाणवुं. आत्मानुं ध्यान करवुं. क्षणेक्षणे आत्मोपयोगमां स्थिरपणे वर्तवुं साधुवतः श्रावकवत पालवां इत्यादि सर्व असाधारण कारणजाणवुं. भेदज्ञान विना असाधारण कारणनी प्राप्ति थती नथी.

शिष्य--हे सुगुरो आत्मा सिद्धतारुप कार्यनीपजावे तेमां निमित्त कारण कोण ?

सुग्रह—देव अरिहंत, गुरु, अने सिद्धांत ते निमित्त कारण जाणवुं.
निमित्त कारण विना जीव उंची स्थिति ए चढी शकतो नथी.
धर्मनी माप्तिमां निमित्त कारण बळवान रहेछे. देवगुरु सिद्धांत
ए मुक्तिरुप महेळमां चढतां निसरणी समानछे. देवगुरुनी भिक्त
बहुमान करवाथी कार्य सिद्धि थशे. तेम सिद्धांतनुं बहुमान
विनयआदि करवाथी गुण मगट थशे. मुगुरुनो विनय विश्वास
श्रद्धाभिक्त जेम घणी तेम निमित्त कारणनी पुष्टता जाणवी,
मुगुरुनुं आलंबन मोटुंछे. अज्ञानरुप अंधकारनो नाश मुगुरु
महाराज करेछे.

इिाच्य-देननी भक्ति बहुमान शी रीते करवुं.

सुग्रह-श्री अईन्नी पूजा करवी, अईन्ना गुणोनुं स्तवन, कीर्त्तन, करवुं, अईन्नी आज्ञा मानवी, इत्यादिथी पूजा भक्ति जाणवी. [हाहया -अईन्ननुं पूजन शी रीते करवुं, अरिइंत साक्षात् तोहाल नथी, तेनो खुलासो आषो.

सुग्रह-अष्ठ प्रकारी पूजा विगेरेथी प्रभुनी पूजा करवी. अरिहंत भगवान साक्षात जोके विद्यमान नथी तोषण 'जिनना अभावे

(२६२) चतुर्थ विषय विचार.

जिन मितमानुं पूजन करवुं. जिन मितमामां जिनेश्वरनो आ-रोप करी मानतां-पूजतां समिकतनी पुछि अने निर्जरानुं का-रण जिन मितमा थायछे.

शिष्य-श्री जिन प्रतिमानुं कथन सूत्रमां छे के नहि ?

सुग्ररु-हा जिन प्रतिमानुं कथन प्रभुना पवित्र सूत्रोमां छे.

शिष्य- हे सुगुरुजी, कृपा करीने सूत्रनो एक पाठ कहा के जेथी जिन मतिमानी साबीती थायः

सुगुरु-हे भन्य सांभळ-मृत्रपाटः

तेणं कालेणं, तेणं समएणं, जावतुंगीयाए नयरीए, बहवे समणो वासगा परिवसंति, संखे, सयगे, सिलप्पवाले, रिसद्ते,दमगे,पोरूखली,तिविद्य,सुपयहे, भाणुद्ते,सामिले, नर-वम्मे, आणंदा, इणोअजे अन्नध्य परिवसंति, से अहा, दित्ता, बुलिन्न विपुलवाहणा,जाव लध्यठा,गहिअद्या,अठमी,चाउहिसी, पुन्न मासिणी, सुपडिपुनं पोसहं पालेमाणा, निग्गंथाणं निग्गंथीणं, फासुएसणिज्जेणं,असण, पाण, खाइम, साइमेणं, जाव पडिलाभेमाणा, चेइआलएस तिसं गंध पुष्क वध्याइएहिं अच्चणं कुणमाणा जावविहरंति, सेतेणठेणं गोयमा, जेजिण पडिमं पूएइ, सोसम्मिद्दी अनोपुणि हिंदिर, मिन्छादिहिस्स नोनाणं, नोचरणं, नोमोरूख इत्ति सम्मिद्दिस्स नाणं,चरणं, मोरूख, इतिसेतेणठेणं गोयमा, अवस्सिजिणपडिमाण गधपुष्फवश्या-इएहिं पूयाकायच्वा—श्रीपंचकल्य सूत्रे पूजालापक.

भावार्थ-तुंगीया नगरीमां रहेनारा सूत्रोक्त बार श्रावको पो-षधव्रततुं आठम चउदस पूर्णिमा अमावाश्याए आराधत करता हता, पोषधपारीने साधु साध्वीओने निरवय आहार पाणी वहोरावता हता. अने चैत्यालयमां न र प्रतिमानी पुष्पादिकथी पूजा करता, हता, माटे गृहस्थ श्रावक जिन मितमानी अवश्य पूजा करे. इत्या-दि अधिकार समजी लेवो.

द्वितीय सुत्रपाठ.

तएणं सा दोवइ रायवरकन्ना, जेणेव मञ्जणघरे तेणेव उवागच्छइ. उवा० मञ्जणघरं अणुपविसइ, अणु२ ण्हाया कय बिलकम्मा कयकोउअ मंगलपायिकत्ता सुध्धप्पा वेसाइं, मंगलाइं, वध्धाइं,
पवरपरिहिया मञ्जणघराओ पिडिनिरकमइ, पिडि२ जेणेव जिणघरे
तेणेव उवागच्छइ उवा२ जिणघरं अणु पिवसइ जिणपिडिमार्ण
आलोए, पणामंकरेइ, लोमहध्थमं गिन्हइ.: ता२ जिणपिडिमार्ण
आलोए, पणामंकरेइ, लोमहध्थमं गिन्हइ.: ता२ जिणपिडिमार्था पमजेइ, ता सुरिमणा गंधोदएणं ण्हावेइ, ता२ सुरिमए गंधकासाइए
गत्ताइं छहेइ, ता२ सुरसेहिं मल्लेहिअ अच्वेइ जहा सुरियाभो जिण
पिडिमाओ अच्वेइ अच्वेइत्ता तहेव भाणिअव्वं जाव धृवं दहइ, दहइत्ता, वामं जाणुं अंचइ, अंचइता, दाहिणं जाणुं धरणिअलंबि कट्टतिखुत्तो-इत्यादिपाटः

भावार्थ-राजकन्या द्रौपदी स्नान करवा मन्जनगृहमां जाय अने त्यांथी जिनेश्वरना देरासरमां जाय. प्रभुनी प्रतिमाने देखी प्रणाम करे. रुडा लोम हस्तकथी जिन प्रतिमानुं प्रजार्जन करे. सु-रिम गंधमिश्रितजलथी प्रभुनी प्रतिमानुं स्नान करे पश्चात् अंगलुंहन करे, पश्चात् गंधादिकनुं विलेपन करे—इत्यादि घणा पाठ ले तेथी सिद्ध थायले के—प्रभुनी पडिमा एटले प्रतिमा ले. महानिशीशमां पण प्रभुनी प्रतिमा विषे पाठले—माटे जिन प्रतिमामां जिनेश्वरनी आरोप करी मानतां पूजतां आत्महित थायले.

वळी ज्यारे श्रीतीर्थंकर भगवान समवसरणमां पूर्वदिशा सन्धु-ख बेसेछे अने दक्षणि, पश्चिम, उत्तरदिशिना द्वारे श्रीअरिहंतना प्रतिक्रिक स्थापेछे, ते त्रण दिशाना स्थापनाजिननो आलंबन पामीने अनैक

जिनप्रतिमाः

जन समवसरणमां समिकतरत्नने पाम्या, बीजी पर्षद् मध्ये जिन से-वनथी समिकतनो लाभ यायछे. ए पण स्थापना निक्षेपानो उपगारछे.

विचरता अरिहंत तथा तेमनी स्थापना ए वे साधक जीवने निमित्त कारण छे पण उपादान नथी. अईन्ने वांदवानुं तथा अ-अईन्नी प्रतिमाने वांदवानुं फल सरखं जाणवुं. कारण के वेमां पण भावनी मुख्यता अंतर्थी थातां फल थायछे.

वळी दरेक वस्तुना चार निक्षेपा श्रीअनुयोग द्वारमां वर्णव्या छे. नामनिक्षेपो, स्थापनानिक्षेपो, द्रव्यनिक्षेपो, अने भावनिक्षेप. ए चार निक्षेपामां आद्यना त्रण निक्षेपाते भावना कारण छे. उक्तंचभाष्ये.

गाथा.

अहवा नाम ठवणा, दव्वाए भाव मंगलंगाए।। पाएण भाव मंगलं, परिणाम निमित्त भावाओ ॥१॥

माटे आद्यना त्रण निक्षेपा कारणछे. ए त्रण निक्षेपा विना भाव निक्षेपो थाय नहीं. अने नाम तथा स्थापना एवं निक्षेपा उ-पकारी कहाछे. चोत्रीस तथिंकरनां नाम ए नाम निक्षेपोछे. तेमज नमो अरिइंताणं आ अरिइंत भगवान्नो नाम निक्षेपोछे. अईन्नी मृतिं ए स्थापना निक्षेपछे, ज्यारे नमो अरिइंताणं ए नाम निक्षेपो कबुल कराए छीए अने ते जेम आत्मा प्रतिनिमित्त कारणछे तेम अरिइंतनी प्रतिमा पण आत्मा प्रति निमित्त कारणछे. नाम निक्षे-पाथी जेटलो फायदोछे तेटलोज स्थापना निक्षेपाथी फायदो छे. नमो अरिइंताणं ए नाम निक्षेपाथी अरिइंतना गुणोन्नं स्मरण था-यके केइंज अरिइंतनी प्रतिमाथी अरिइंतना गुणोन्नं स्मरण था-यके, अरिइंत, सिद्ध, आचार्य, उपाध्याय, साधु, ए पंच परमेष्ठिनां नाम तथा तेमनी स्थापना बन्ने सरखां फळने उत्पन्न करनारीछे. माटे जे भव्य पुरुष पंच परमेष्टिनां नामनुं आलंबन करेके तेणे पंच परमेष्टिनी स्थापनानुं पण आलंबन करवंज जोइए.

शिष्य--त्रीतरागनी स्थापनाथी आत्महितछे. एमां तो जरा मात्र संशय नथी, पण प्रभुनी प्रतिभा पूजतां श्रावकने हिंसा थाय तेनुं केम ?

सुग्रह-हे भव्य तुं सांभळ, जिनेश्वरनी आज्ञा प्रमाण के आपणी मति कल्पना प्रमाण.

शिष्य-गुरुजी, मञ्जनी आज्ञामधान.

युरु-त्यारे सांभळ-बीजे गाम जतां वच्चमां नदी आवे ते साधु उन्तरे के नहीं, यादराख—एकपाणिना विंदुमां एटला जीवछे के ते पारेवा जेवडी काया करेतो जंबुद्दीपमां माय नहीं. एवं जलतुं विंदु समजवं. वळी पाणीमां सेवालकप वनस्पति पण साधारण बादर निगोदकपे रहीछे. वळी पुरा मम्रुल स्र्म्मत्रस जीव पण एवाछे के मनुष्यनी कायाना स्पर्शथी हणाइ जाय हवे कहोके प्री नदीना जलमां मुनिराज पगमुकी उतरे के नहीं?

शिष्य-मभु ए सिध्धांतमां हिंसा थतां पण साधुने नदी उतरवा-नी आज्ञा करीछे. कारणके तथी मुनीश्वरने अन्य भव्यजीवो प्रतिबोधमां छाभ मळेछे. अने भावदयानी पुष्टि थायछे माटे, आपे एवं मने समजाव्यं हतुं, प्रतिमाना निषेधको पण आ वात मानेछे.

सुगुरु—तेज प्रमाणे सर्वज्ञमञ्जूष सिध्धांतमां श्रावस्ते, प्रश्नी प्रतिमा पूजनतुं फरमान कर्युछे. प्रश्नी प्रतिमा पूजतां मोटो
लाभ थायछे. अत्र प्रभुनी आज्ञाज प्रधान जाणशी, प्रश्न सर्वज्ञ हता तेमना केवलज्ञान आगळ आपणी पति कर्यना

जिनप्रतिमा.

(334)

दिसायमां नथी माटे सर्वज्ञ पश्चनी आज्ञानुसारे श्रावक प्रश्चनी मित्रमानुं प्रजन करे. तथी तेने आत्महित थायछे अने प्रश्चकी आज्ञानो आराधक बनेछे, श्रावकतो आहारादिक माटे छकायना जीवनी हिंसा कर्या करेछे माटे ते हिंसाना आरंभ-थी दूर थयो नथी माटे श्रावक प्रश्चनी पित्मानुं पूजन भिक्त करे तेमां तेने मोटो लाभ छे प्रश्चनी पितमाने मानेछे ते सम्यगृहिष्ठ जाणवो. पश्चनी पितमा पूजतां श्रावकने हिंसाना पिरणाम नथी—जीवोने मारवानी बुद्धि श्रावकने नथी. तथी तेने हिंसानो बंध थतो नथी अने तथी श्रम भाव पगटतां पुण्य बंध अने श्रम भाव पगटतां परमानंद पदनी प्राप्ति था- यछे, यद्यपि जोके श्रम भावने पुण्य बंधनो हेतुछे. तोपण ते लताआत्मगुणने स्थिर थवानो तथा नवा पगट करवानो हेतुछे. शुण्यानुबंधी पुण्यनो हेतुछे माटे पश्चना उपर रागरूप श्रम भाव पण परंपराए मोक्ष प्राप्तिमां हेतुभूतछे. श्रीहरिभद्र- स्विर पंचवस्तु ग्रंथमां कहां छे के: -

गाथा.

गुणस्ड मूलं एयं, तेणं गुणबुहि हे उअं भणिअं ॥ जह एलाइयुत्तो, पसध्य रागेण गुणपत्तो ॥ १ ॥

माटे प्रभ्रनी प्रतिमा पूजतां शुभभाव पण उपादन कारणनी शुध्यिमां लारणछे, माटे श्रावके पश्चनी प्रतिमानुं पूजन करवुं जोइए. बळी सूत्रमां कहुंछे के-ज्ञानीने आश्रवनां कारण पण संवर रूपछे अमे श्रुज्ञानीने संवरनां कारण पण आश्रव स्वरूपे परिणमेछे.

वळी सर्व-विरितिपदने धारण करनारा मुनीश्वर ज्यारे नदी जाडे के हो पण ज्यारे लाभने माटे छे त्यारे आवक मभुनी प्रतिमानुं

पूजन करे ते केम लाभने माटे न होय. अलवत पश्चनी आज्ञाए वर्तत्रृं ते श्रावक तथा साधुने लाभकारी छे. आज्ञा ए शर्म जाणको

श्री आनंदघनजी महाराज पण नवमा स्विधिनाथना स्तत्रमनां प्रभुनी प्रतिमानुं पूजन करवुं एम उपदेशे छे, माटे जिनेश्वर बीतराग्नी स्थापनारूप प्रतिमानी बहुमानता, रेवना, पूजा, अवश्य करवी जोइए. एक सामान्य उत्तम गुणवंतनी छन्नी जोइने केटलो आनंद थायछे. त्यारे त्रण जगत्ना पदार्थने जाणनार सर्वज्ञ अतिशय उप्तारी तीर्थकरनी प्रतिमाने देखी जीवने आनंद थाय बहुमानता प्रगटे, तेमां शुं कहेबुं-निमित्त कारणरूप देव तथा तेमनी प्रतिमानुं अवलंबन भव्यजीवोने करवा लायकछे. प्रभुनी प्रतिमा संबंधी प्रशुं विवेचन करवानुं धार्यु किंतु ग्रंथ गौरवना भयथी संक्षेपमां मसंग्रेविचन कर्यु.

[शब्य-हे सुगुरो ! आपे कृपा करी निमित्त कारण कोण अने तेनुं स्वरूप समजाव्युं हवे कृपा करी अपेक्षा कारण कोणछे[ं] ते समजावशो-

सु छर-जे कारण कार्यथी भिन्न छे अने जे कारण माटे कर्जाने प-यास करवो पडतो नथी, अने कार्यनी सिद्धिमां निश्चयथी ते जोइए. अने जे बीजा कार्योमां पण कारणछे. तेने अपेक्षा कारण कहे छे.

यथा पृथ्वी, आकाश, काल, ए विना घटादिक कार्यनी निष्पत्ति थती नथी. भूमी, आकाश, काल, जेम घटनी निष्पत्ति श्रति कारणछे तेम अन्य कार्योना प्रति पण कारणछे. कर्ता जेम उपादान तथा निम्ति कारणने ज्यापार करेछे. तेम एनो प्रवर्तन करतो नथी. ते अवेक्षा कारणतुं तत्त्वार्थीदिक मंथीमां कहांछे,

(385)

कार्यमध्येत.

यथा.

घटस्य जत्पत्तो अपेक्षा कारणं व्योमादि अपेक्षते तेनविना तद्भावाभावात् निर्व्यापारं अपेक्षाकारणं इति तत्त्वार्थस्तो

हवे आत्मा कर्मक्षय करी मुक्तिपद पामे तेमां अपेक्षा कारण दर्शांवे छे.

मनुष्यगति प्रथम वज्ररूषमनाराच संघयण, पंचेंद्रियणणुं इत्यादि सिद्धिरूप कार्यनुं अपेक्षाकारण जाणनुं.

निमित्त कारणनी माप्ति विना अपेक्षाकारण लेखे आवतुं नथी. जे भव्यजीवे निमित्तकारण आचर्यु नथी तेनी मनुष्यगति अपेक्षा-कारणमां गणाती नथी. श्रादेवग्रहना पुष्ट निमित्ते उपादानकारणने तरतमयोगे मगटावतो असाधारण कारणताए चढतो मनुष्यादिक अपेक्षा कारणपणे करी तत्वानंदरुप कार्यनो कर्त्ता आत्मा थाय.

उपादानादिक त्रणनी कारणता निभित्तना अवलंबनथी प्रगटे के माटे भव्यप्राणी निर्दोषपणे शुद्ध निमित्तकारणने सेवे. अने शुद्ध निमित्त कारणीभूत शुद्ध देव, तथा सुगुरूना सेवनथी कर्ता-पणुं स्मरे, अने कर्त्तापणुं स्मरण करी स्वकार्य करे.

श्री अप्तमीमांसामां त्रण कारण कथ्यांछे. समवायासमवायि निमित्तभेदात.

समवायी कारण ते अवेक्षाए उपादानकारण जाणवुं. अने असम वायि कारण ते नामांतर असाधारण कारण कहेवायछे तथा निमित्त कारणना वे भेद जाणवा. एक निमित्तकारण बीजुं अवेक्षाकारण— वळी कारणना वे भेद शाक्षमां कहाछे. एक उपादानकारण. बीजुं निमित्तकारण जाणवुं. घटदृष्टांतमां घटरूप भिन्न कार्यनो कर्ता कुंभकार घटथी भिन्नछे, तेम सिद्धतारूप अभिन्न कार्यनो कर्ता आत्मा पण कार्यथी अभिन्नछे. ज्ञाननो कर्त्ता आत्माछे तेम संपूर्ण सिद्धतारूप कार्यनो कर्ता पण आत्माछे. कर्ता आत्मा ज्यारे कारणनीयोगवाइ पामे त्यारे कार्यनी सिद्धि नीपजावे. एकछो कर्ता कारण सामग्री विना कार्य करी शके नहीं एवी स्वभावता जाणवी.

उपर प्रमाणे आत्मा परमात्मपद पामे तेमां जे जे कारणो जो-इए. तेनुं यत्रिंचित् स्वरूप दर्शाव्युं.

(ज्ञाब्य--हे सुगुरो ! पूर्वोक्त कारणोमांथी व्यवहार धर्मरूप केटलां कारण जाणवां.

सुग्रह-हे शिष्य स्वस्थ चित्तथी सांभळ-जे कारणी कार्य सिध्धि थतां रहेतां नथी. अने कार्य सिद्धिमां अवश्य कारणी भूत छे, ते कारणोनी माप्तिने व्यवहार धर्म कहेछे. निमित्त कारणनी सेवना तथा असाधारण कारणनी मवर्तना पण व्यवहार धर्म कथायछे. नीचेना गुणस्थानकनुं छोडवुं अने उपरमा गुणस्थानकनुं आदरवुं ते शुद्धव्यवहार धर्म जाणवो. वळी साधुधर्म वा श्रावकधर्म पणव्यवहार नयथी धर्म कथायछे. व्यवहार धर्म कारणछे, अने निश्चय धर्म कार्यछे कारण अनेक छे अने कार्य एकछे. माटे असंख्ययोग जिनेश्वर भगवाने कथ्याछे. तेमां पण नवपदनी गुख्यता जाणवी. जेने अंशे निरूपाधिपणुं तेते अंशे धर्मनी माप्ति जाणवी.

शिष्य-मनुष्यगति विना आत्मा सिद्धतारूप कार्य अन्य गतिमां माप्त करी शके के नहीं.

सुग्र-मनुष्यगति विना सिद्धतारूप कार्यनी सिद्धि थती नथी.
प्रथमतो एकेंद्रियमां अपेक्षाकारणक्प नरगति मथम संघयण नथी.
तथा निमित्त कारण पण नथी. द्वीन्द्रिय, त्रीन्द्रिय चतुरिन्द्रिय,
मां अपेक्षा कारण नथी. पंचेंद्रियना चार भेदछे. प्रथम देवता
समाकती होयछे तेमने क्षयोपक्षमभावनुं मतिज्ञान तथा श्रत-

क्षान होयछे. अने तेओ संमिकतपणार्थी खोंया गुणठाणाना स्वामी जाणवा. एटळे ते अविरति सम्यम् दृष्टि देवना-ना-णवा. तेओ विरतिपणाने पामे नहीं एवी देवगतिनी स्थीति छे माटे तेओ उपरउपरना गुणठाणे चढी शकता नथी. मि-थ्यादृष्टि देवताओतो मथम गुणस्थानके वर्षेळे. वेमानीक, ग्रु-वनपति, व्यंतर, अने ज्योतिष एम देवताना चार मकारछे. तिर्धेच पंचेद्रियना पंचभेदछे जलचर, थलचर, खेचर, उरपार सर्प, ग्रुजपरिसर्प.

तिथिच समिकित पामी शके छे. कृष्णमहाराजना भाइ बलदेव सुनीश्वरचे एक हरिणभक्त हतुं, पण त्यां अपेक्षा कारण प्रथम तो मयी. गुर्वादिकचुं निमित्त पामी कदापि पंचम गुणस्थानक परित जाय. पण त्यां असाधारण कारणनी श्रेष्टता नथी. असाधारण का-रणनी अंश पामे.

नारकीना जीवोनी पण देवतानी पेठे अधिकार समजी लेवो ए त्रण गतिमां धर्मसामग्रीनी संपूर्ण जोगवाइ नथी.

यतः गाथा

देवा विसय पसत्ता, नेरइया विविद्द दुःख संसत्ता ॥ तिरिया विवेग विगला, मणुआणं धम्म सामग्गी १

देवताओ विषयमां प्रसक्तछे. नारकी जीवों अहर्निश विविध प्रकारनां दुःखों भीगव्या करेछे, तिर्धेच विवेकथी विकलछे. फक्त गर्भज मनुष्योने धर्मनी सामग्रीछे.

मसुष्यगतिमां अपेक्षा कारण, निमित्त कारण, असाधारणकारण, उपादान कारण, ए चार कारणनी सामग्री माप्त थायछे.वळी अपेक्षा कारणमां मथम संध्यण अधुना नथी.

हाल पंचमारके पण निमित्तादि कारणो पामी आत्मधर्म सा-धन थायछे. मतिज्ञान अने श्रुतज्ञानना क्षयोपश्चमभावे असाधारण कारणने अवलंबतो जीव शुद्धानुभव पामेछे. अने भव्य, कर्मनां तिक्ष्ण वंधनने छेदवा समर्थ थायछे,

माटे भव्यजीवीए चिंतामणिरत, कल्परक्षथी पण दुर्लभ एवी मनुष्यजन्म पामी धर्मसाधन करवुं गयो वखत पश्चात् आवतो नयी. आयुष्य क्षणेक्षणे ओछुं थतुं जायछे. आ दुनीयामां कोइ अमर रह्यो नथी अने कोइ रहेवानो नथी. कायारूप माटीनुं पूतळुं आत्मानुं कदी थयुं नथी, अने थवानुं नथी. भ्रांतिथी परवस्तुमां सुखबुद्धि करपायछे. जेम आकाशमां कमलनी उत्पत्ति खोटीछे. तेम परवस्तुमां सुखबुद्धि खोटीछे. जडवस्तमां आत्मसुख क्यांची होयः अलबत जडवस्त्रयी कदापि सुखनी माप्ति थती नथीज. बाल्यावस्थामां अ-ज्ञानतायोगे जे सुख धूळना ढगळामां रमकडां रमवाथी मान्युं हतुं. ते मोटी उपर थतां पोतानी मेळे टळेछे. एटले मोटी उपर थतां र-मकडां वा धूलमां रमवानुं मन थतुं नथी. ते रमत उपर अरूचि थायछे. तेम विषयभोग आदिमां रूचि बाल जेवा जीवोने थायछे. जेम कागडाए विष्टा चुंथवामां पोतानुं श्रेयः मान्युंछे. तेम अज्ञानीः बालम्बुष्योए विषयभोग आदि परवस्तुमां पोतानुं सुख मान्युं हे पण ते सर्व मिथ्याछे. ज्ञानीनी दृष्टि आगळ एवा बाळजीवो केवल दया पात्रछे. आत्मामां अखंड परमानंद समायोछे. अनंतस्रख आ-त्मामां रहांछे. शोधसोपावे आत्मस्रखनी पाप्ति अर्थे ज्ञाताओं आ-त्मध्यानमां सप्ताकाळ मग्र रहेळे. परवस्तुमां रागद्वेष बुद्धि धारण करता नथी. पोताना आत्मस्वरूपमां रमणता करेछे. परभावनो अ-नादर करेछे. परवस्तमां आत्मपणुं कंइ मानता नथी. पुद्रल वस्तथी आत्मा सदा न्यारोछे एम भावेछे. अने सदा अंतर्रुक्य राखेछे.

परपारिणातिनां द्वार रोके छे. आत्माना गुण पर्यायनुं चिंतवन करे छे. पोताना आत्मामां अनंतरुद्धि कोषे छे. उज्ज्वल ध्यान ध्यावे छे, अने क्वानीओ मनमां थता अनेक संकल्पाविकल्पो दूर करी आत्मस्वभान्वमां मन्न रहे छे, मितादिन उच्चास्थितिने भोगवे छे. सहज क्वांतिथी थतुं ताचिक सुख ते माप्त करी क्षके छे. मननी थती चंचलतानो त्याग करवो. मनसंबंधी मथम घणुं कहे वामां आव्यु छे. तेथी अत्र विशेष वर्णन करवुं योग्य नथी. तोपण मसंगवकात् कहे वानुं के मृत्र चंचल अने आस्थिर छे ते ज्यां जाय त्यांथी पालुं वाळीने आत्मानी साथे वन्न करवुं.

मन ज्यां सुधी स्थिर रहे नहीं त्यां सुधी शास्त्रोक्तकिया जेटली करीए तेटली सफल थाय नहि. श्रीयशोविजयजी उपा-ध्याय कहें छेके—

श्लोक.

या निश्चयैकलीनानां, किया नातिप्रयोजना ॥ व्यवहार दशास्थानां ताएवाति ग्रणावहाः ॥ १ ॥

भावार्थ-जेतुं मन निश्रयमां लीन छे. तेने क्रियानुं प्रयोजन नथी. व्यवहार दशावाळाने क्रिया अति ग्रणकारी छे. मन वश क-रवाथी वंधातां कर्म अटके छे, ज्ञानी थइने फरता एवा पुक्षोथी एण मन जीता हुं नथी. अभ्यासथी मन जीता ये छे, महा अनुभवी योगीओना शिष्यो मन वश करी शके छे पुस्तक, पोथी, पुराण, वांचवाथी एण जे मन वश यतुं नथी, ते मन सुगुरु महाराजनी ग्रप्त अर्पेली कुंचीओथी धीरे धीरे वश थाय छे. पुस्तक सिद्धांतमां लखेल छ। विषयोने जाणी सुगुरुए परिणामिकी बुद्धिथी जे अनुभव मेन् लंदी, होय छे ते शिष्यो के जे गुरुना सदाने माटे विश्वासी होय छे तेने मले छे. माटे सुगुरुनुं शरण करी आत्मिक धर्मनी माप्ति करवी।

कर्मनो क्षय करतां आत्मिकधर्मनी आविर्भावता थायछे. काथा पुद्गलछे, वचन पुद्गलछे, मनपुद्गलछे, धर्म तो निश्चयधी चेतनगत जाणवो, आत्मामां धर्म रहेछे. ते आत्मिक धर्म आत्मस्व-भावे स्थिर थतां मगटेछे. निश्चयथी आत्मा अरूपीछे, अने आत्मा-मां रहेलो धर्म पण अरूपीछे. असंख्य मदेश आत्माना छे, मति-मदेशे अनंत अनंत धर्म व्यापी रह्योछे, तात्त्विक आत्मिक धर्मथी अनंत सुखनी माप्ति थायछे. कर्मनो क्षय करी जे भव्यो सिद्धिपद पाम्याछे तेमने शुद्ध आविर्भावे आत्मिक धर्म मगट्योछे, जे जीवो कर्म सहीतछे तेमने तिरोभावे आत्मिक धर्म जाणवो. जे वस्तु मुळमां वस्तुतः सत्पणे नथी. तेनी उत्पत्ति थती नथी. कारण के-

नासतो विद्यतेभावो

सारांश के-असत्तुं उत्पन्न थवापणुं नथी.

शिष्य—जेम असत्नुं उत्पन्न थवापणुं नथी. तेम सत् जे वस्तु त्रिकालमां वर्तती होय तेनी उत्पत्ति कहेवी ए पण अयुक्त कें. कारण के—जे वस्तुनो उत्पाद थाय ते वस्तु प्रथम होय नहीं. यथा पट तेनो उत्पाद थयो तो ते प्रथम नहोतो. तेम जो आत्माना धर्मने सत् मानवामां आवे तो ते त्रिकालमां विद्य-मानपणाथी तेनी उत्पत्ति थइ एम कहेवुं असत्य टरेके अने जो आत्माना शुद्ध धर्मने असत् कहेवामां आवे तो तेनी उत्पत्ति असत्य टरेके माटे हे सुगुरो कृपा करी यथार्थ स्व-रूप समजावशो.

सुगुरू-हे शिष्य! एकाग्र चित्तथी श्रवण करः असत् पदार्थनी तो त्रिकालमां पण उत्पत्ति थती नथी, हवे सत्वस्तुनो विचार करीए.

गाथा.

भावस्स णित्थ णासो, णित्य अभावस्स चेवखणादो, छण पज्जयेसु भावा, जणाद वए पकुव्वंति ॥ १ ॥

भावार्थ-भावनी एटले सत्रूप पदार्थनो नाम नथी, अने निश्चयथी अभाव एटले असत्नो उत्पाद नथी, गुणपर्यायोमां भावो उत्पाद व्ययने करेले.

सारांश के-द्रव्यार्थिकनयथी सत् षट्पदार्थी उपजता नथी, तेम विनाशताने पण पामता नथी.

अने जे त्रिकाल अविनाशी सत्पदार्थोमां उत्पाद व्यय थाय छ ते पर्यायार्थिक नयनी अपेक्षाथी गुणपर्यायोमां जाणवा.

हवे आत्मधर्मना सत्पणा संबंधी विचार करतां समजाशे के आतिमक शुद्ध धर्मनुं सत्पणं द्रव्यार्थिकनयनी अपेक्षाए अनादि सत्पणे छे.
जो के कर्मावरणथी आत्मिक शुद्ध धर्मनुं आच्छादन थयुंछे तोपण आत्मधर्मनुं द्रव्यार्थिकनयथी जोतां सत्पणं टळ्युं नथी. अनादि कालथी कर्मावरणथी आत्मिक धर्म आच्छादनताने पाम्यो छे एटले ते तिरोभावे सत्पणे वर्तेछे, आत्मिक शुद्ध धर्मनुं सत्पणं वे मकारे छे. संसारदशामां तिरोभावे सत्पणं अने सिद्धावस्थामां आविर्भाव सत्पणं एम प्रकारे जाणवुं. अनादि कालथी जीवनी साथे कर्मनो संबंधछे अने ते कर्मना संबंधे आत्मिक शुद्ध धर्म दंकायोछे. ते ज्यारे कर्मनो नाश थायछे त्यारे आत्मिक शुद्ध धर्म प्रगटपणे प्रकाशेष्ठे, हवे सत्स्वरूप आत्मिक धर्मनो उत्पाद केवी रीते थायछे ते समजावेछे. तिरोभावपणे वर्ततो आत्मिक धर्म छे तेनो आविर्भाव थयो. तेनी अपेक्षाए उत्पत्ति समजवी सारांश के—सत्स्वरूप जे आतिमक शुद्ध धर्मनो कर्मावरणथी तिरोभाव थयो हतो. ते सत्स्वरूप आत्मिक शुद्ध धर्मनो कर्मावरणथी तिरोभाव थयो हतो. ते सत्स्वरूप आत्मिक शुद्ध धर्मनो कर्मनाशयी आविर्भाव थयो-तिरोभावनो जे

आविर्भाव तेनी अपेक्षाए शृद्धधर्मनी आत्मामां उत्पत्ति जाणवी सत पणुं तो प्रथम पण विद्यमान इतुं हवे ते उपरथी स्पष्ट समजाशे के सत्खरूप आत्मिक धर्म द्रव्यार्थिकनयनी अपेक्षाए सदात्रिकाल सत्पणे जाणवो

तिरोभावे ढंकाएलो धर्म आविर्भावनी अपेक्षाए प्रगटपणे वर्तातो नथी माटे असत् अने तिरोभावनो नाश थतां आविर्भावपणे प्रकाशतां सत्स्वरूप जाणवो.

आविर्भावपणे आत्मिकशुद्धधर्म मगट थतां आत्मा परमात्म स्वरूप थइ जायछे अने ते अनंत सुखनो भोगी थायछे. पश्चात् कंइ कर्त्तच्य बाकी रहेतुं नथी. सिद्ध स्वरूप थतां पण आत्मामां पर्याया-धिंकनयनी अपेक्षाए पर्यायनो उत्पाद व्यय समये समये बन्या करे छे, सिद्धस्वरूपी आत्मामां अक्रियपणुं जाणवुं. गमनागमन पण सिद्धात्माने नथी. रागद्वेषरूप मलनो सर्वथा क्षय थवाथी सदाकाल स्वस्वभाव रमणतागुण मगटपणे वर्तेछे, ज्ञानावरणीय अने दर्शना वरणीय कर्मनो सर्वथा समूलतः क्षय थवाथी अनंत ज्ञान अने अनंत दर्शन आत्मामां मगटपणे मकाशेछे एम अष्टकर्म क्षयथी अष्टगुण आदि अनंत गुण आत्मामां आविर्भावताए मगटेछे.

एम अनंत धर्ममय आत्मा जाणवो, सत्य धर्म आत्मामां रहेछे, शुध्ध आत्मिक धर्म मगटाववाना हेतुओने व्यवहार धर्म कथायछे, माटे व्यवहार धर्म अने निश्रय धर्म ए बेतुं अवलंबन करवुं.

श्री सिद्धसेनाचार्य कहेछे के-

श्लोक.

निश्चयव्यवहारी द्री, सूर्यचंद्रमसाविव ॥ इहामुत्र दिवारात्री, सदोद्योताय जाप्रतः ॥ १ ॥ (284)

आरमश्रादि.

अंतस्तस्वं मनः शुद्धि, बिह्स्तस्वंच संयमः ॥
कैवल्यं द्रयसंयोगे, तस्माद् द्वितयभाग्भव ॥ २ ॥
नैकचकोरथो याति, नैकपक्षो विहंगमः ॥
नैवमेकातमार्गस्थो, नरो निर्वाण मृच्छिति ॥ ३ ॥
परस्परं कोऽपियोगः, किया ज्ञान विशेषयोः ॥
स्त्रीपुंसयोरिवानंदं, प्रसूते परमात्मजं ॥ ४ ॥
माग्यं पंगूपमं पुसां, व्यवसायोंऽ धसंनिभः ॥
यथा सिद्धिस्तयोयोंगे, तथा ज्ञानचरित्रयोः ॥ ५ ॥
यथा सिद्धिस्तयोयोंगे, तथा ज्ञानचरित्रयोः ॥ ५ ॥
विशे दर्शन सन्नाहः कलेःपारं प्रयातिवे ॥ ६ ॥
एकांते नतु लीयंते, तुच्छेऽनेकांतसंपदः
नदरिद्रगृहे मांति, सार्वभौमसमृद्धयः ॥ ७ ॥

भावार्थः — निश्चयनय अने व्यवहारनय आ जगत्मां सूर्यचंद्रनी पेठे प्रकाश करता जागताछे. सूर्य अने चंद्रनी उपमामां विशेष गंभीर भावार्थ समायोछे. सूर्य अने चंद्रना प्रकाशमां घणुं समजवातुं छे. पूर्वोक्त श्लोकोना भावार्थ स्पष्टछे. तेनुं तेथी अत्र विवरण कर्युं नथी. तुच्छ एकांत मार्गमां अनेकांत संपदाओं छीन थती नथी. आ वाक्य आपणने केटछं समजावेछे, तेनी केटछी बथी महत्त्वताछे. वळी कहेछे के—दरिद्रना घरमां सार्वभौमनी समृद्धि माती नथी. माटे भव्यात्माओए आयित सर्व शाश्वत सुख संतित प्रदायक व्यवहार निश्चय धर्मनुं अवलंबन करी उत्तम पुरुषोना पंथने अनुसर्वं तेमां हित समायछंछे. अज्ञान मार्गनी अंध श्रद्धायी एकांत मार्गनुं सेवन

करनारा मत कदाग्रही जीवो-व्यवहार अने निश्चयनयना ज्ञान विना वस्तु स्वरूप ओळखी शकता नथी. अने तेथी कर्तव्य कार्य सन्मुख थता नथी. सातनयोना ज्ञान विना जगत्मां मतोनी उत्पत्ति थड्छे, परस्परनयोनी निरपेक्षताए वस्तु स्वरूप यथार्थ कथातुं नथी, श्री यशोविजयजी उपाध्याय कहेळे के-

एवे.कनयना इठथी मतोत्पत्ति.

श्लोकः

बौद्धाना मृजुसृत्रतो मतमभू देदांतिनांसंग्रहात ॥ सांख्यानां ततएव नैगमनयाद योगश्ववैशेषिकः ॥ शब्दब्रह्मविदोपि शब्दनयतः सर्वेर्नयैशंपिता ॥ जैनीदृष्टिरितीइ सारतरता प्रसक्षमुद्वीक्षते ॥ १ ॥

भावार्थ-रुजुसूत्रनयथी बौधमत प्रगटयो, अने संग्रहनयथी वेदांतिनो मत प्रगटयोः तथा सांख्यमत पण नैगमनयथी तथा योग मत अने वैशेषिक मत पण ते नयथी प्रगटयोः शब्दनयथी मीमांसक दर्शन उत्पन्न थयुं. अने जैन दर्शन एटले स्याद्वाद दर्शन तो सर्वनयथी ग्रंफितछे. माटे अनेकांत जैन दर्शनमां सारमां सारपणुं सदा प्रत्यक्ष-पणे देखीए छीए-जैन सर्व दर्शनीले. अने बीजां दर्शन ते जैनना एकएक अंशले.

श्री आनंदघनजी महाराज कहेछे के. जिनवरमां सघळां दर्शनछे, दर्शने जिनवर भजनारे; सागरमां सघळी तटिनी सही, तटीनीमां सागर भजनारे. षड्दर्शन जिन अंग भणीजे.

जिनदर्शमां सर्व दर्शन छे माटे अन्य दर्शन जिनेश्वर दर्शन अंग-भूतछे. अने एवे का दर्शनमां सर्वाशे सप्तनय परिपूर्ण जैन दर्शननी

अनेकान्त.

माप्ति थाय नहीं. कारण के तेमां जैन दर्शननी भजनाछे. एक अंग-नय पक्षयी पामीए पण सर्वोंगे पाप्ति थाय नहीं. जेम संघळी नदीओ सम्मुद्रमां होय पण नदीओमां सम्मुद्रनी भजना जाणवी. सारांश के— जे नदी समुद्रमां मळी तेमां समुद्रनी भरनीओटनुं पाणी आवे. एवी रीते नदीओमां समुद्र एकदेशे संभवेछे. तेवी रीते समुद्रनी उपमाने धारण करनार जिनवरनां ए षड्दर्शन ते अंग जाणवां. एकांते नयनुं कथन करतां मिध्यात्व लागे—कह्युं छे के—

एगंते होइ मिच्छतं.

एकांते मिथ्यात्वपणुं होय—माटे हितिशिक्षा निग्रंथ मवचन कये छे के—एकांतपक्ष आत्म हितकारक नथी. ज्यवहारनय अने निश्चयनय अवलंबी आत्म धर्मरूप साध्यना साधक बनवुं. साध्यनी सिद्धि करवी मुक्केलछे. वातो करवी सहजछे माटे आत्मिक हितेच्छुओए ममाद त्याग करवो अने ज्यवहार निश्चयधर्मनुं साधन करवुं. सप्तनय सप्तभंगी चारनिक्षेपा षड्द्रज्य, गुणपर्याय—उत्सर्ग अपवादथी परिपूर्ण स्याद्वादमतने कोइ वीरला भन्य पुरुषो सम्यग् रीत्या जाणी शकेछे. केटलाक विचित्रमार्गनी भ्रमणाओमांगोथां खायछे केटलाक ज्ञान ज्ञान पोकारीज्ञानी नामधरावी शुद्ध धर्मरूप कियातरफ अरुचि मार्ग दर्शावे छे अने कियानुं उध्यापन करेछे, तेथी स्वआत्मानो उद्घार करी अकता नथी. सप्तनयोथी परिपूर्ण वीतराग धर्मने सत्गुरू अने सत्श्रद्धा विना अवगाहवो मुक्केलछे माटे भन्य पुरुषो प्रभुना धर्मनो मार्ग समजी निश्चयहिष्ट हृद्यमां धारण करी ज्यवहार मार्ग चालेछे.

श्रीयशोविजयजी वचनामृत.

निश्चय दृष्टि चित्त धरीजी-चाले जे व्यवहार-इत्यादि.

श्री यशोविजयजी उपाध्याय महा विद्वान हता. संवत् १७४० नी लगभग विद्यमान हता, आत्मिक ग्रंथो दरेक दर्शनना वांच्या हता. अध्यात्मज्ञानदृष्टि पण धरावता हता, जेमणे शास्त्रवार्ता ससु-स्वय आदि शतग्रंथ बनाव्या. ते महा पुरुष पण निश्चय दृष्टि हृदयमां धारण करी व्यवहार मार्गे चालवानी खास भलामण करेछे. शुं हालमां अध्यात्मनी किंचित वात सांभळी व्यवहार मार्गथी विरुद्ध खाली डोळघाल अध्यात्मी बनी जनाराओ करतां विशेष झानी नहोता. एम केम कहेवाय ? ना तेओ महा ज्ञानी हता. माटे व्य-वहार धर्म मार्गनुं यथाविधि यथाशक्ति आराधन करता हता— भगवान सर्वज्ञानी कहेछे के—

जइ जिणमयं पवज्जह, तामा ववहारनिध्थए मुयह; ववहारनओ छछेए, तिध्शुच्छेओ जओ भणिओ १

जो तुं जिनदर्शनने अंगीकार करे तो व्यवहार अने निश्चयने मूकीश नहीं. कारण के—व्यवहार नयनो उच्छेद कर्याथी तीर्थनो उच्छेद कर्यो कहेवायछे, माटे महात्मा थवानी इच्छा होय तो प्रश्ननी शिक्षा धारवी मानवी,

केटलाक ज्ञाननी आकांक्षा विना अंध श्रद्धावाननी पेठे क्रिया करेछे. ते क्रिया जड जाणवी तेमनो धर्मन्यवहार फोनोग्राफवत जाणवो.

कोइ एम कहेशे के-बरावर वस्तुनुं खरूप समजीने अमे क्रिया करीशुं-ज्यां सुधी ज्ञान नथीत्यां सुधी क्रिया शाकामनी ? प्रत्युत्तरमां समजवानुं-एम बोलवामां पण समजवानी घणी तारतम्यता समाइछे. प्रथम विकल्प थशे के कया ज्ञाननी प्राप्तिथी क्रिया करवी. मति-श्रुतज्ञाननी प्राप्तिथी वा केवलज्ञाननी प्राप्तिथी.

मतिश्रुतज्ञान थया बाद क्रिया करनी एम कहेतां पण विचा-रवातुं के—गणधरोना जेवुं मतिज्ञान, श्रुतज्ञान, तेवुं ज्ञान हाळना बखतमां नथी त्यारे कहो के चउदपूर्वी वा दशपूर्वधारी जेवुं मति ज्ञान तेवुं ज्ञान पण हाळना वखतमां नथी त्यारे हाळमां मतिज्ञान श्रुतज्ञान तरतमताए थोडं अपेक्षाए कहेवाय. हवे ज्ञाननेज माननारा कहो के, केवं ज्ञान थयाथी किया करशो, ते बतावो, वा कहो के, ज्यां मितज्ञान अने श्रुतज्ञान होय त्यां किया होय के नहीं. अने बळी विचारों के मितिज्ञानी अने श्रुतज्ञानी किया विना शुं करे. माटे कियानो स्वीकार करवो योग्यके. किया विना एकछं ज्ञान शुं करे. किया ज्ञानिनी पासे होयके शास्त्रमां पण-

ज्ञान क्रियाभ्यां मोक्षः

क्षान अने क्रियाथी मोक्षछे, ज्ञानाभ्यासरूपिकया विना ज्ञाननो पण क्षयोपञ्चम थतो नथी। त्यां पण क्रियानी जरूरछे। कोइ एम कहेशे के, मित वा श्रुतज्ञान थयुं एम प्रत्यक्ष जणाशे एटले क्रिया करीथुं। तेना उत्तर्मा समजवानुं केवल्ज्ञान प्रत्यक्षज्ञानछे, मितज्ञान अने श्रुतज्ञान परोक्षज्ञानछे। मित वा श्रुत छे के नहीं ते अनुमानथी जाणी शकाय। केवल्ज्ञानी कंइ कहेवातो कोइ आवनाना नथी। माटे भव्य जीवोए ज्ञान श्रदाथी जाणी धर्मध्यानादि कारक क्रियामां प्रवर्तवुं—

श्रालेखक-कोइ स्थळे ज्ञाननी विशेषता वा क्रियानी न्यूनता लखे तोपण ते कोइना आदरभणीया कोइना निषेध भणी नथी किं तु बन्नेना स्वीकार माटेछे एम समजवुं. एकज स्थळे सर्वनुं स्वरूप एकज वखते वर्णवी शकातुं नथी. तथी जेजे स्थळे जेनुं जेनुं स्वरूप वर्णन करवामां आवे ते नयनी सापेक्षताए ते ग्रहण करवुं. व्यवहार धर्म अने निश्चयधर्म सदा जयवंता वर्तेछे. सद्गुरूपासेथी एनुं स्वरूप समजवुं. मित मंदताथी शंकादि उत्पन्न थायते। पण सर्वन्न वीरना वचनमां सत्यता भरिछे. मितदोष काढी सत्शासनो गुरून मता पूर्वक अभ्यास करवो. केटलीक वातोमां तो श्रद्धाज राखवी पढेछे. केवलन्नानथी जाणेला पदार्थीनुं स्वरूप तेने अरपमित नानी

जीव बराबर शी रीते समजी शके, माटे जिनवचनमां जरा मात्र शंकानो अवकाश नथी. एम श्रद्धा करवी मोक्षार्थी जीवने घटेछे

उपर प्रमाणे यथा मतिलेशथी व्यवहार निश्चयधर्म वा धर्म क्यां रहे छे ते दर्शाव्युं.

सप्तम विषय.

हुं संसारमां जन्म मरण पाम्रुं तेनुं शुं कारण ?

प्रत्युत्तर—कर्म, कर्म ए आत्मा नथी. आत्माथी भिन्न द्रव्यछे. आ-त्मानी साथे अनादिकालथी लाग्युंके जेनी आदिनथी तेनो अनादिकाल समनवो—

प्रश्न-कर्म आत्मानी साथे पोते पोतानी मेळे लाग्यांछे वा कोइए लगाड्यांछे

उत्तर-कर्म पुर्गल स्कंध स्वरूप छे. जड छे. खरवा मिछवा रूपिक या करे छे, अनादिकालथी आत्मानी अशुद्धि परिणतियोगे कर्म प्रहाय छे, परमात्मा आत्मानी साथे कर्म लगाड तो नथी. अर्थात् आत्मा पोते अशुद्ध भावथी कर्मने प्रहे छे. अशुद्ध परिणति आत्माधी न्यारी नथी तथी आत्माज पाते कर्मने। कर्जा तथा भोक्ता कहे वाय छे.

आत्मानी साथे अन्य कोइ कर्म लगाडतुं नथी. केटलाक जीवो इश्वर जीवनी साथे कर्म लगाडे छे एम माने छे पण ते युक्तिहीन तथा सर्वज्ञनामत विरूद्ध वातछे. कारण के परमेश्वरने थुं मयोजन छे के ते जीवोनी साथे कर्म लगावे. अलवत रागद्देष रहीत मञ्जने कंड्रपण मयोजन नथी के ते जीवोनी साथे कर्म लगाडी शके. वळी परमेश्वर कहा के परमात्मा सिद्ध, तेओए कर्मनो नाश कर्योछे, कर्मनो सर्वथा मकारे नाश थतां सिद्ध परमात्मा कहेवायछे, त्यारे

सप्तमविषय.

समजवातुं के, जे सिद्ध, परमेश्वर कर्मातीतछे अक्रियछे कोइपण प्र-कारनी क्रिया करता नथी. ते बीजाने कर्म लगाडवानी क्रिया करे ते शशशृंगवत् असत्यवात ठरेछे.

अश्व-त्यारे शुं सिध्ध परमात्मा कोइपण प्रकारनी क्रिया नथी करता.

प्रत्यत्तर-ना, पौद्गलिक कोइपण प्रकारनी क्रिया सिध्ध परमेथर करता नथी, पोताना शुध्धस्त्रभावे तेमनी सदाकाल स्थितिछे. कर्मछे ते तो पौद्गलिकछे. पौद्गलिक भावथी भिन्न प्रस्थाने सिध्धछे. भिन्न पुद्गलद्रव्यनी क्रियाने प्रस्र परमेश्वर करता नथी, प्रस्रतो अरूपीछे एवा प्रस्र्थी कर्म जीवोने लगाववं त्रिकालमां पण बनेज नहीं.

सिध्ध परमात्मा शुध्ध स्वस्वभावे सक्रियछे एटले स्वभाव रमणतारूपवा षड्गुणगुणहानिद्यध्धिरूपक्रियाना कत्ती सिध्धात्माछे.

मश्र-सिध्य परमेश्वर, जीवो कर्म सारां वा नटारां कर्म करेंछे. तेनो इन्साफ आपेछे के नहीं.

प्रत्युत्तर—सिध्य परमात्मा वा जेने निरंजन निराकार ब्रह्म वा इश्वर कहे छे ते कर्म प्रपंचयी अत्यंत भिन्न छे. ने तेथी ते जी-वोन कर्या कर्म प्रमाणे इन्साफ (न्याय) करी सुखदुःख आपता नथी. सारांशे जीवोए जे कर्म कर्यो छेतदनुसारे सुख दुःख भोगाववा जीवोने सारा खोटा उंच पथ, पंखी, माणस, अंधादिना अवतार परमेश्वर आपता नथी.

प्रश्न-त्यारे जीवो सागं वा खोटां कर्म करे. ते पोतानी मेळे शीं रीते भोगवे.

ज्ञर-जे क्रियानो कत्ती जीव पोतेछे ते क्रियानुं फळ भोगवनार एण जीव पोते जाणवी, जेम कोइ मनुष्य तालपुट विष अक्ष-

णनी क्रिया पोत करे तो ते क्रियाथी प्राणनाशरूप यतुं फल पण पोते भोगवेछे. इवे कही के तेमां न्याय कर्त्ती कोण इश्वर वा क्रियानो कर्त्ता, इश्वरे मनुष्यना पाणनो नाश कर्यो वा तालपुट विषे प्राणनो नाश कर्यी. अलवत कहेवुं पडशे के विषमांज एवी शक्ति रहीछे के ते प्राणनो नाश करेंछे, पत्यक्ष ते सिध्य वातके. इश्वर न्याय करेके एम मानवं ते केवल मुषा, प्रमाणाविरूध्ध कल्पना मात्रछे, निरंजन निराकार इश्वर सिध्धात्माने शुं प्रयोजन छे के कर्मना फले।दयने भोगवाने. वळी ते उपर वे विकल्प करीएछीए के कर्म पोते फल आ-पवामां स्वतंत्रछे के परतंत्र प्रथम पक्षमां कर्म पोतेज सारू वा खोडुं आपवामां स्वतंत्रछे. एम स्वीकारतां इश्वर जीवोने कर्याकर्म प्रमाणे न्याय आपेछे ते वात खोटी आकाश कुसुमवत् ठरी. कर्ममां ज सारूं वा नठारुं फल आपवानी शक्ति रही छे तो ते ममाणे कर्मथी सुख दुःख फल मळशे. पोतानी मळे जेम पुरूषतुं वीर्य अने स्त्रीतुं रेतस ए बेन । संयोगमां गर्भ उत्पन्न करवानी शक्ति रही छे तथा जेम अग्निमां स्वाभाविक दाहक शक्ति रही छे तेथी अग्निनो अंगारो हाथमां लइएतो पोतानी मेळे हाथ बळे, हाथने बालवामां दाहकत्त्वरूप न्याय पोते करेछे. तेमां इत्वर कंइ न्याय करतो नथी. तेम कर्म पोते स्वतंत्र रीत्या फल आपना समर्थछे. त्यां इश्वरने न्याय कत्ती मा-नवो फेवल भूपणा अने अज्ञान अने पिथ्यात्व सपजवुं. कर्पपांज शातावा अशातारूप फल आपवानी शक्ति छे एम सत्य छे, ज्ञान दृष्टिथी देखायछे. एम वदवातुं कंइ कारण नथी हवे बीजो पक्ष छइए, कर्म फल आप-वामां परतंत्र छे एटले ते इन्बरना ताबामांछे. इन्बरनी इच्छा प्रमाणे कर्म कल आपी शके छे एम मानीएतो इश्वर अन्यायी प्रपंची दया-श्रीन उरेछे:

(AME)

कर्म स्वयमेव सुस दुस आपेछे.

आशंका तेम करतां इत्यर अन्यायी दयाहीन प्रपंची शीरीते ठरे बारु? समाधान-कर्ष फल आपवामां प्रतंत्रके. तेम लागवामां पण पर-

तंत्र, जे परतंत्र होय ते सदाय फलोदयमां तथा लागवामां परतंत्रज रहेछे, जेम तरवार बीजाने लागवामां तथा तेनो माण लेवामां सदाय परतंत्र रहीने कार्यकरेले. मनुष्य हाथमां तरवार ग्रहीने अन्यने मारे त्यारे तेना माणनो नाश थायछे, तरवार पोतानी मेळे उंची थइ मारवानी क्रिया करी शकती नथी, कारण के ते कत्ताधी प्रवर्ते छे माटे परतंत्र छे. तेम कर्म इश्वरना ताबामां रही प्रवर्ततां होय तो प्रथम जीवोने इश्वरे कर्म लगाडयां एम कहीएतो पहेला जीव कर्मरहीत हता. त्यारे तेमने या माटे कर्म लगाड्यां ? कंडपण अपराध विना कर्म लगाड्याथी इश्वर अन्यायी पातकी ठरे. वली कर्मरहीत पहेला जीवो हता तेओने कर्म लगाडवाथी इश्वर प्रभनं श्रं कल्याण थवानं हतं अलवत कंड नहीं, बळी डश्वरनामां जीवोने कर्म लगावानी सक्ति नित्यले के अनित्यले, जोते कर्प लगाइवानी शक्तिने नित्य मानीए तो सदाय इश्वरजीवोने कर्म लगाइया करशे. जीवो कदी कर्मरहीत थशे नहीं. तो मधुने भजवं इत्यादि सर्व व्यर्थ कल्पना मात्र थइपडे. वळी इश्वरमां कर्म लगाडवानी शक्ति अनित्यले एम कहीए तो अनित्य शक्तिना आधारी भूत इश्वरपण आनित्य ठरेछे, निराकार साकार इश्वर मानवामां कोर प्रमाण नथी. निराकार इश्वर सिध्धने मानतां निराकार इ बरने कोइपण जातनी इच्छा नथी तेथी ते कर्म लगाडवानी उपाधिमां केम पहे.

वळी निराकार इश्वरने जो इच्छा कहीए तो इच्छा अधुराने होयछे, पण पूर्णने होती नथी। इच्छा मानवाथी इश्वरनी पूर्णतानो

नाश थायछे. वळी समजवानुं के -इच्छा राग विना होती नथी अने ज्यां राग होयछे त्यां सदाय द्वेष रह्योछे. रागी द्वेषी होयते कर्म स- हीत होय अने कर्म सहीत होयते संसारी कहेवायछे, संसारी थवाथी इश्वरपणुं नष्ट थयुं, कर्म कलंक नाश करी निरंजन निराकार पद् पामवाथी इश्वरताछे - कर्म ए कंइ बोलवा मात्र शब्द नथी, कर्म पुद्गल परमाणुओनो स्कंधथी वनेलुंछे. अने ते रूपीछे. कर्म लागवाथी आत्माना गुणो ढंकायाछे. हवे कहो के -कर्मथी रहीत एवा इश्वरमां कर्म लगाडवानी शक्ति मानवी ए केटली भूलनी वातछे, जे पोते कर्म रहीत थयाछे ते बीजाने केम कर्म लगाडे, कर्म लगाडवानी शक्ति इश्वरमां कल्पवी ते आकाश कुमुमवत् असत्य कल्पना मात्रछे. तेमज इश्वरनामां सुख दुःख भोगाववानी शक्ति मानवी ते पण कल्पना मात्र शश शृंगवत् वातछे.

कर्म पोतानी मेळे लाग्यां एम मानतां इश्वर कर्ता हर्ता नथी एम सिध्ध थयुं. हवे जीवने कर्म पोतानी मेळे लाग्यां एम मानतां तर्क थशेके कर्म लगाड्या विना पोतानी मेळे शी रीते लाग्यां अने ते क्यारथी लाग्यां नतेनुं समाधान सूक्ष्म विचारथी थशेके कर्म अनादि काळ्यी जीवने लाग्यांछे. जीव अनादि काळ्यीछे. जेनी आदि होय उत्पन्न थवापणे ते वस्तुनो अंत पण होयछे, जे वस्तुनो आदि अने अंतछे. ते अनित्य होयछे अने जे अनित्य होयछे ते कार्यछे अने जे कार्यपणे वस्तुछे ते विनाशीछे जेम घट उत्पन्न थयानी आदिछे तो तेनोअंत एटले नाम होयले, आत्मा कहो के चेतन वा जीव तेनी उत्पन्न थवानी आदि नथी अर्थात् आत्मा द्रव्याधिकनयापेक्षाए कोइनाथी उत्पन्न थयो नथी, अने जे वस्तु उत्पन्न थइ नथी ते अनादि काल्यीछे, जेम आकाश. जे वस्तु अनादि काळ्यीछे तेनो अंत पण नथी, माटे जीव पण अनादि अनंतछे. आत्माना असंख्यात

(१५६) कर्म शी रीते आस्माने छागे छ ?

मदेशमय व्यक्ति द्रव्यार्थिक नयनी अपेक्षाए अनादि अनंतछे, कोइ पण कालमां आत्माना असंख्यात मदेश पैकी एक मदेश पण खर-बानो नथी. आत्मा कहो के जीव ते त्रिकालमां पोताना रूपे सत्छे अने जे वस्तु सत्छे ते नित्यछे, आत्मा सत्छे माटे ते नित्यछे,

प्रागभावाप्रतियोगित्वं नित्यत्वं

पाग्भावनुं जे अप्रतियोगी होयते नित्य जेटला कार्य रूप पन् दार्थो घट पट दंडादिकछे ते पर्यायाधिक नयनी अपेक्षाए अनित्य जाणवा—कारणके घटपटादिक पदार्थो पाग्भावना पतियोगीले. आत्मा वा चेतन पाग्भावनो अप्रतियोगीले माटे आत्मा नित्य जाणवो—द्रव्याधिक नय द्रव्यत्व पणाने प्रहेछे माटे द्रव्याधिक नयनी अपेक्षाए आत्मा नित्यरूप जाणवो. संसारमां चार गतिमां परिश्रमण करनारा अनंत आत्माओनुं द्रव्यपणुं त्रिकाल एक स्वरूपले माटे ते द्रव्याधिक नयनी अपेक्षाए नित्य जाणवा, हवे आत्मा अनादि अनंत नित्यले, तेम सिध्ध कर्यु, ते आत्माने अनादिकालधी कर्म लाग्यांछे ते वातनुं विवेचन करायछे. आत्मा अनादिकालधी छे एम सर्वज्ञ श्री वीरमञ्जना वचनथी जाण्युं तेम कर्म पण अनादिकालथी छे एम सर्वज्ञ श्री वीरमञ्जना वचनथी जाण्युं तेम कर्म पण अनादिकालथी आत्माने लाग्युंछे. एम सर्वज्ञ श्री महावीरना वचनथी जणायुं, वीर मञ्च सर्वज्ञ अने रागदेषथी सर्वथा रहित हता माटे तेमना वचननो पूर्ण विश्वास भव्यजीवने थाय एमां कंइ आश्चर्य नथी,

आप्तोक्तं वाक्यं प्रमाणं

श्री वीरमभ्र त्रिकाल सर्वज्ञानी आप्त हता. माटे तेमनुं वाक्य प्रमाणीभृत जाणवुं. कर्म अन।दिकालथी जीवने लाग्यां एमां आगम प्रमाण पण सिध्ध टर्यु. कोइ जीव राजा थायछे, कोइ रंक था-यक्ठे, कोइ जन्मथी अंधा विधर अवतरेछे कोइ-रोगीतो कोइ-भोगी इत्यादि सर्व पुण्यपापनुं फल प्रत्यक्ष देखवामां आवेक्ठे माटे तेमां

पर्यक्ष प्रमाण पण सिध्ध करेक्टे. (भोगायतनं शरीरं) सुख दुःख भोगववानं स्थान शरीरछे, अने ते प्रमाणे दरेक जीव क्षणिक सुख तथा दुःख शरीरादिकथी भोगवेछे एम पत्यक्ष जोवामां आवेछे. तो ते सुख दुःखन्नं कारण कर्म-पुण्य पापरूप¦आत्मानी साथे लाग्युं छे एम अनुमान थायछे. जेम कोइ शहेरपासे नदीछे तेमा जलनी रेल आवीछे. शहेरनी आसपासतो मेघ वरस्यो नथी. ते उपरथी एम अनुमान थायछे के-ज्यां त्यां अत्यंत मेघनी दृष्टि थवी जोइए. कारणके नदीमां रेल रूप कार्य देखायछे ते मेघनी दृष्टि विना होय नहीं अहीं तो मेघनी दृष्टि थइ नथी. तेथी अनुमान थायछे के पर्व-तमां दूरे खूब मेघ दृष्टि थइ हशे, तेम कर्मनी बाबतमां पण अतुमान थायछे के- भोग रोग सुख दुःख रूप कार्य फलतो प्रत्यक्ष देखवामां आवेछे माटे तेनुं कारण कर्म होवुं जोइए. पुण्य पाप विना शाता तथा अञ्चाता वेदनीय होय नहीं, ए अनुभव सिध्ध वातछे, वळी कहेछे के-जेम कोइ दृक्षना कोटरमां अग्नि सळगेछे अंदरना भागमां अग्नि बळेछे बाहिर देखाती नथी बाहिरतो फक्त धूम देखायछे. ते उपरथी अनुमान थायछे के-

यत्रयत्र धूम स्तत्रतत्र वन्हिः

ज्यां ज्यां धूम होयछे त्यां त्यां अग्नि होयछे, दृक्ष अंदरथी धूम बहिर निकळतो देखायछे माटे दृक्षना कोटरमां अग्निछे एम अनुमान थी सिद्धि थायछे. तेम सुख,पूर्णेच्छा,भोग, रोग,शोक,वियोग,अंधत्व, बिधरत्व, दरिद्रत्वरूप,कार्यरूप, फल देखायछे माटे तेनुं कारण पुण्य पापरूप कर्म आत्मानी साथे लाग्युंछे एम सिद्ध थायछे, सर्व विद्वा-नो कर्मनुं अस्तित्व स्विकारेछे तेम कर्म ग्रंथमां कर्मनुं स्वरूप विस्ता-रथी ज्ञानीए वर्णव्युंछे तेमज कम्मपयडी, भगवतीसूत्र, पत्रवणासूत्र, विपाकसूत्र विगेरे सूत्रो तथा ग्रंथोथी कर्मनुं यथातथ्य स्वरूप सम- जायछे अने ते अनुभवमां आवेछे. कर्मनी पकृतिनुं स्वरूप निष्रंथ भवचनमां स्क्ष्मपणे वर्णन कर्युछेः तेवुंवर्णन अन्य दर्शनमां ते ममाणे परिपूर्ण पण नथी. कोइ कर्मने किस्मत कहेछे, कोइ कर्मने पकृति कहेछे, पण कर्मनुं अस्तित्व मान्याविना छूटको थतो नथी.—

श्लोक.

कृतकर्मक्षयोनास्ति, कल्पकोटीशतैरिप ॥ अवश्यमेव भोक्तव्यं, कृतं कर्म शुभाशुभं ॥ १ ॥

कृतकर्मनो क्षय नथी. कोटीकल्पशतोए पण कर्म अवश्य शुभा-शुभ भोगववुं पडेछे, जन्मजरा अने मृत्यु पण कर्मथी थायछे. चो-राशी लाख जीवयोनिगां अवतरवुं पण कर्मथी थायछे. एकेंद्रिय, द्वींद्रिय, त्रीन्द्रिय, चतुरिंन्द्रिय, पंचेंद्रियना अवतार पण कर्मथी थायछे, कर्म अनेक मकारेछे. कर्मना मूळ आठ भेदछे. तेनी उत्तर मकृति एकशतअठावनछे. देवगति, मनुष्यगति, तिर्यचगति, नारकगति, ए चार गतिमां अवतार पण शुभाशुभ कर्मथी छे कृषुंछे के-

गाथा.

जंजेण क्यंकम्मं, पुच्वभवे इहभवे वसंतेणं॥ तं तेण वेइअच्वं, निभित्तमित्तो परो होइ॥१॥

जे जीवे पूर्वभवमां तथा आभवमां वसतां जे कर्म कर्योछे. ते कर्म ते जीवे भोगववा योग्यछे. सुखदुःखमां परजीव तो निमित्त मात्रछे. कर्मनो कर्त्ता पण जीवछे तेम कर्मनो भोक्ता पण जीवछे. देखो स्वयडांगसूत्र—सम्मतितर्कमां परभावमां रमतो जीव परनो कर्ता तथा भोक्ता बनेलोछे—केटलांक कर्म भोगवीने खेरवेछे. अने जीव केटलांक कर्म नवां प्रहण करेछे—एम अनादि काळ्यी जीव कर्मने प्रहण करतो तथा कर्मने छंडतो वर्तेछे, मातानुं रूथिर अने पुरुषना

वीर्य संयोगे गर्भमां जीवनुं उत्पन्न थवं अने मितिदिन दृद्धि पामवं इत्यादि सर्व कर्मनो मपंचछे गर्भमां पण जीव ओजाहार प्रहेछे प्रश्न-गर्भमां जीव शावडे आहार प्रहण करेछे.

प्रत्युत्तर—आहार त्रण प्रकारनाछे. १ ओजाहार, २ लोमाहार,
(रोमाहार) कवलाहर—पूप एटले मालपू आने ज्यारे घीमां
तले छे त्यारे मालपुओ सर्वथी घीनी साथे परिणमी जायले.
तेम गर्भमां जीव आहारने खेची शरीररूपे परिणमांवी
शरीरनी दृद्धि करेले. रोमथकी जे आहारने ग्रहण करवो ते
रोमाहार कहेवायले. हवानुं ग्रहण शरीरमां रोमथी थायले,
ग्रुत्वथकी जे आहारनुं ग्रहण करवुं. ते कवलाहार कहेवायले,
मनुष्य पशु पंत्री जलचरने कवलाहार प्रत्यक्ष देखवामां आवे
ले, एम गर्भमां ओजाहारनुं ग्रहण ले.

प्रश्न-केटलाक भोळा लोको अज्ञानताथी एम मानेछे के-गर्भमांथी बाहिर नीकळ्या बाद-जीव शरीरमां मवेशेछे. अने पश्चात् छहा दीवसनी रात्रीए सरस्वति बाळकतुं भविष्य कपालमां लखेछे अने कहेछे के-छद्वीना लेख लख्या मटे नहीं तेतुं केम?

प्रत्युत्तर-गर्भमांज जीव उत्पन्न थायछे. ते माटे प्रवचन सारोद्धार नवतत्त्व विगेरे ग्रंथो जोवा छठीना छेख सरस्वति छखेछे एम मानवुं पण मिथ्या कल्पनामात्रछे-कर्म साथे बंध पामेळो जीव गर्भमां उत्पन्न थायछे, अने त्यां दृद्धि पामी नव मास थया बाद बाहिर नीकळेछे, कोइ गर्भमांज मरण पामेछे. इत्यादि सर्व कर्मनुं फळछे.

कर्मनो सर्वथा प्रकारे क्षय थवाथी जन्मजरा मरणनी प्राप्ति थती नथी-

(२३0)

ईश्वरः

भश्न-कर्मनो क्षय थवाथी मुक्तिपद मळेछे त्यारे जेटला जीव कर्मनो क्षय करेछे ते परमेश्वर कहेवाय के नहीं.

प्रत्यत्तर-हा, जेटला जीव, कर्मनो क्षय करेखे तेटला जीव परमा-त्मा सिद्ध, बुद्ध, कहेवायळे, कर्मथकी सर्वथा प्रकारे रहीत थवुं. तेवुं नाम मोक्ष कहेवायळे.

प्रश्न-कर्म सहित जीव मौक्षमां जाय के नहीं ?

प्रत्युत्तर-कर्मसहित कोइ जीव मोक्षमां गयो नथी अने जशे पण नहीं. शिष्य-हे सद्ग्रो-कोइ मित अज्ञानीयोए नवीन कल्पना उत्पन्न करी एम कहें छे के मुक्तिमां केटलांक वर्ष सुधी जीव रही पश्चात् संसारमां आवे छे. आ बाबत शुं समजवुं.

सद्ग्रह—मुक्तिमां गया बाद जीव पुनर्संसारमां पाछो आवतो नथी. जीवने एक स्थानथी अन्यत्र छेइ जनार कर्मछे. अने ते कर्मनो संपूर्ण नाश थाय त्यारे मुक्ति स्थानमां जीव सिद्ध रूपे बीराजेछे. त्यांथी संसारमां आवी शकातुंज नथी. कारण के जीवनी साथे कर्म संबंध छतां गमनागमनछे. कर्मना अभावे मुक्ति स्थित मुक्तात्मानुं गमनागमन थतुं नथी, श्री वीरपग्र एम सर्वज्ञ दृष्टिथी वदेछे—चकलाचकलीनी पेठे मुक्तिना जीवो गमनागमन करना नथी—मुक्त जीवो अक्रियावंतछे. माटे ते गमनागमननी क्रिया करता नथी.

प्रश्न-प्रक्त आत्मामां सर्वशक्तिमानपणुं छेके नहीं,

उत्तर-हा मुक्तात्मामां पोताना स्वरूपथी सर्व शक्तिपणुं रहुंछे.पण पुद्गल द्रव्यनी शक्तिथी मुक्तात्मानी शक्ति भिन्नछे. आकाश द्रव्य अरूपीछे. आकाश जेम अनंत प्रदेशीछे अने ते जेम स्व-स्वरूपे स्थिर वर्तेछे. तेम सिद्ध परमात्मा स्वस्वरूपे शुद्ध थया छता स्थिर वर्तेछे. स्थिरवर्तवाथी आत्मिक सर्व शक्तिपणुं जरा मात्र घटतुं नथी. गमनागमन परमाणुओनुंछे. परमाणुओना संबंधथी थएला पुद्गल स्कंधो कर्मरूप परिणमी आत्माना प्रदेशोनी साथे लाग्याछे ते ज्यारे कर्म नाश थायछे. त्यारे मुक्तात्मा सिद्धबुद्ध कहेवायछे. मुक्तात्मानी सर्व शक्ति आत्माना असंख्य प्रदेशोनी व्यापीने रहीछे. मुक्तात्मानी शक्ति स्वद्रव्य बाहिर जती नथी. माटे आत्मस्वभावे सर्व शक्तिपणुं सदा बनी रहुंछे, सिद्ध अक्रिय होवाथी गमनागमननी क्रिया करे नहीं.

प्रश्न-कोइ एम कहेछे के-इश्वर अवतार छेइ दैत्योनो नाज करेछे ए वात खरी के खोटी−

उत्तर-कर्म रहीत निर्मेल परमात्माने इश्वर कहेवामां आवेळे ते परमात्मा अवतार ग्रहण करता नथी कारणके कर्मातीतने अव-तरवुं आदि उपाधि नथी-पण कर्म सहित जे संसारी जीवळे ते अवतार ग्रहण करेळे अने जन्म जरा मरणनां दुःख पामेळे.

प्रश्न-त्यारे इश्वरनां लक्षण कहो.

प्रत्युत्तर—जेनामां रागद्वेष सर्वथा होतो नथी तेने इत्थर कहे छे वळी इत्थरना चार प्रकारछे—नाम इत्थर, स्थापना इत्थर, द्रव्य इत्थर, अने भावइत्थर इत्थर एवं गुणी वा निर्गुणीनुं इत्थर एवं नाम स्थापवं ते नाम इत्थर, तथा कोइ पण वस्तुमां इत्थरनो आरोप करवो ते स्थापना इत्थर—जे जीवमां इत्थरपणुं आविर्भाव वर्ते नहीं ते द्रव्येत्थर—जे जीवमां रागद्वेषना क्षयथी इत्थरत्व आविर्माव वर्ते छे ते भावेत्थर, ए चार भेद इत्थरनाछे. तेमांथी पूर्वोक्त जे इत्थर भावइत्थर तरीके कथायछे. ते इत्थरनुं संसारमां पुन-रजन्मवुं थतुं नथी. जीव ते पण इत्थर सत्ताएछे. इत्थरपणुं कर्मा च्छादितपणे होवाथी कर्म सहीत संसारी जीव संसारमां जन्म जरा मरण करे छे अने चतुरशीति लक्ष जीवयोनिमां पुनः पुनः परि-

आहमा कर्म करे छे.

(२६२)

भ्रमण करेंछे-जीव पोते कर्म करेंछे अने तेनो भोका पण पोते एकलोछे. कहुंछे के-

गाथा.

एको करेइ कम्मं,फलमावि तम्मिकर्छ समणुवहइ एको जायइ मरइय, परलोयं एकर्छजाइ॥१॥

भावार्थ सुगम होवाथी छख्या नथी, व्यवहारनये जीव कर्मनो कर्त्तांक्रे-शुद्धनिश्रयथी स्वस्वरूपे रमतो जीव परनो एटछे द्रव्यकर्म तथा भावकर्मनो कर्त्ता नथी.

ज्ञानी शुद्ध आत्मस्वरूपमां रमतो कर्मनो नाज्ञ करेछे-जे आ-श्रवना हेतुओ छे ते ज्ञानीने संवररूपे परिणमेछे. कहुंछे के-श्लोक.

यथा प्रकारा यावंतः संसारावेश हेतवः तावंतस्तद्विपर्यासाः निर्वाणावेशहेतवः

कर्मना वे भेद छे. एक शुभाश्रव वीनो अशुभाश्रव. प्रथम शु-भाश्रवने पुण्य कहे छे, अने अशुभाश्रवने श्रीनिनंद्रदेव पाप तरीके कथे छे. पुण्यनी चेतालीस प्रकृति छे अने तेम पापकर्मनी ८२ ब्यासी प्रकृति छे. आत्माना शुभ परिणामथी पुण्य तथा अशुभ प-रिणामथी पापकर्म वंधाय छे. रागद्वेषने भावकर्म कथे छे. रागद्वेषनो जय करवो ए शुरा पुरूष नुं कृत्य छे. रागद्वेष जीत्या विना देवपणुं कथातुं नथी. चतुर्दश रज्ज्वात्मक लोकमां सर्व संसारी जीवोमां रागद्वेष व्यापी रह्यो छे. महादेव बत्रीसीमां कह्युं छे के-

श्लोक.

रागद्वेषो महामलो, दुर्जितौ येन निर्जितौ; महादेवं तु तं मन्ये, शेषा वै नामधारकाः आ संसारमां दुर्जय रागद्देषरूप महामछछे. तेवा महामछोने जेणे जीत्याछे तेने महादेव मानुंछं, बाकीना तो नामना महादेवछे. रागद्देषने जीतवाथी वीतरागता मगटेछे, सत्यतात्त्विक सुख वीतरागावस्थामांछे. रागद्द्याथी दुःखछे अने बीतरागद्द्याथी सुखछे. एम सर्वेद्र वीरपरमात्मा सारमां सार कथेछे. श्रीवीरमञ्जूष ध्याननी तीक्ष्णताथी रागद्देषनो क्षय कर्योछे. श्रीमसन्त्रचंद्र राजर्षिए रागद्देष शत्रुनो आत्मध्यानथी क्षय कर्योछ रागद्देषज संसारनुं मूळ्छे. ज्ञान दर्शन अने चारित्रगुणनी क्षायिकभावे माप्ति रागद्देषना क्षय विना नथी. द्रेष करतां पण रागनी सत्ता विशेषतः मवर्तेछे. कारण के जड वस्तुपर पण रागद्द्याथी ममत्वभाव उत्पन्न थायछे. आ-तिमक ज्ञानयोगे मोहनीय कर्मनो उपशमभाव वा क्षयोपशमभाव वा क्षायिकभाव मगटेछे. ज्ञानावरणीय कर्मना, क्षयोपशमभाव वा क्षायिकभाव मगटेछे. ज्ञानावरणीय कर्मना, क्षयोपशमभाव वा क्षायिकभावना मादुर्भावने मोहनीय कर्म अटकावेछे.

कर्मबंधमां पण रागद्वेषनी प्राधान्यता समयमां वर्णवीछे. चार घातीकर्ममां पण मोहनीय कर्मनी सत्ता प्रबल्पणे प्रवर्तेछे. देवगुरु धर्मनी श्रद्धा सम्यक्त्व पण मोहनीय कर्मना, उपशम, क्षयोपशम तथा क्षायिकभावथी थायछे, मोहनीय कर्म पण दिधा प्रवर्तेछे. दर्शन मोहनीयना क्षयथी दर्शन प्रगटेछे अने चारित्र मोहनीयना क्षयथी चारित्र प्रगटेछे. वेदनीयकर्म, आयुष्यकर्म, गोत्रकर्भ अने नामकर्म एह चार कर्म अघातीयांछे, ए चार कर्ममां औदयिकभाव फक्त प्रवर्तेछे. औदियकभावे अघातियां चार कर्म भोगवीने आत्मा वेदरेखे. प्रत्येक भवमां द्रव्य, क्षेत्र, काळ, भावथी औदियकभावनी जीव जीव प्रति भिन्नता वर्तेछे. इंद्रिय, गतिकायनी अपेक्षाए औ-दियकभावमां जीव जीव प्रति असंख्यभेदे भिन्नतानी तारतम्यता प्रवर्तेछे. औदियकभावे चार अघातीयां कर्मनी कर्मबंधनमां निमित्त (244)

कारणता वर्तेछे. प्राध्यानता रागद्वेषनी कर्मबंधनमांछे. माइनीय कर्मनी बंधस्थीति उत्कृष्टी सित्तेर कोडाकोडी सागरोपमनी जा-णवी. मोहनीय कर्म मदिरा समानछे. जेम मदिरापानथी मत्त थएल मनुष्य अविवेकी बनी कृत्याकृत्य जाणी शकतो नथी. तेम मोहना उदयथी मृढ थएल मनुष्य कृत्याकृत्यने समजी शकतो नथी. भक्ष्याभक्ष्यमां प्रवर्तेछे, परभावमां मदोन्मत्तपणे प्रवर्तेछे अने पापकर्मयोगे आत्माने कर्मदलिकथी भारे करेले. मोहोदयथी कोइनी हित्रिक्षा श्रवणे सुणतो नथी. युवावस्थामां तो मोहोदयता अति-शय वर्तेछे. मोहनीय कर्मरूप बाजीगर-संसारी जीवोने पूतळांनी माफक नचावेछे अने जन्म, जरामरण, रोगशोक, तृषा, श्रुधा, छे-दनभेदननां दुःख आपेछे. छतां जीवा मृदताथी संसारमां सार मानी रागदशामां मस्तान थइ वर्तेछे. अहो केटली अज्ञानता. क्ष-णिक सुखमां चिंतामणि रत्न समान मनुष्यभव जीव हारी जायछे अने पुनः पुनः संसारमां परिभ्रमण करेछे. कर्मराजा संसाररूप नगरमांथी जीवने जरा मात्र खसवा देतो नथी. अनंत शक्तिधारी आत्मा पण कर्म पिंजरमां रह्योछे. क्यां पुट्गलनी शक्ति अने क्यां आत्मानी अक्ति तेनो तो हे भव्यो विचार करो-प्रश्न-हे गुरु महाराज कर्म ए पुर्गल द्रव्य छे के पुर्गल द्रव्यना

पर्यायछे.

उत्तर-कर्म एह पुर्गल परमाणु द्रव्यना पर्यायरूप स्कंधोछे अने ते आत्म मदेशानी साथे शीरनीरनी पेठे परिणमेछे-पुद्गल द्रव्यनो स्कंध रूप पर्याय कर्म जाणबुं-कर्भ जडछे. पण तेनाथी आ-त्माना गुणो ढंकायछे तेथी आत्मा दुःख पामेछे.

प्रश्न-अनादिकाळथी जे कर्म आत्मानी साथे लाग्युं छे तेनो शी शिते अंत आवे.

उत्तर—कर्म बंधननी मूळ सत्ता जे रागद्वेषछे तेनो क्षय करवाथी कर्मनो अंत आवेछे. मितश्रुतज्ञानना क्षयोपग्रमभावे कोइक भव्यजीव षड्द्रव्यने जाणी जीवद्रव्यने अन्य पंचद्रव्यथी भिन्न जाणी सम्यक् शुद्ध वोधथी आत्मध्यानमां मवर्ते अने रागदशाना हेतुओने त्यागी संयम आदरी निश्चयथी स्वस्वभाव स्वगुण स्थिरतारूप चारित्रमां उपयोगथी वर्ते तो जीव कर्मनो क्षय करेछे. अने तीर्थंकरोक्त परमपदनी प्राप्ति करेछे. अनंत जीवो कर्मनो संक्षय करी परमपद पाम्या अने पामश्चे. एम श्री पवचन वदेछे.

जे भव्यो वीतरागना पंथने चाइछे ते भव्यो रागद्वेषनी सय करी ते पदने पामेछे अने पामशे कर्मनो ग्रहण कर्ता पण जीवछे अने तेनो नाशकर्त्ता पण जीवछे.

परमां रागद्वेषनी परिणतिथी कर्मबंधन अने स्वद्रव्य, स्वक्षेत्र, स्वकाल अने स्वभावथी आत्मगुणमां मद्दत्ति करवाथी कर्मनो नाश थायछे. मिध्यात्व, अविरति, कषाय अने योगथी कर्मबंधन थायछे. अनारि कालथी जीव संसारमां परिश्रमण करेछे तेतुं कारण कर्म जाणवुं. भेदज्ञान थवाथी आत्मा अने परनो भेद थायछे. अने भेदज्ञानथी समिकत मगटेछे. ज्ञानभाव विना मोहो-दयतानो नाश थतो नथी. कह्यं छे के,

श्लोकः

ज्ञानेन भिद्यते कर्म, छिद्यंते सर्व संशयाः आत्मीयध्यानतो मुक्ति, रित्येवं कथितं जिनेः॥१॥

ज्ञानथी कर्मनो नाश थायछे अने सर्व संशयो छेदायछे अने आत्मध्यान पण ज्ञान विना थतुं नथी माटे ज्ञानथी आत्मध्यान करतां मुक्तिनी माप्ति श्रीजिनेश्वरोए कथीछे ज्ञानथी वैरण्य

शानंपतापं.

थायके अने वैराज्यथी चारित्र जीव आदरेके, अने तेथी जीवकर्मनी सूख करी मोक्षमां जायके. माटे मुक्तिमार्गमां ज्ञाननी तथा तेनी साथे वैराय्यनी पण मुख्यताके. शास्त्रमां कत्तुं के के-

श्लोक.

ज्ञानस्यैविह सामर्थ्यं, वैराग्यस्यैव वा किलः यत्कोऽपि कर्मभिः कर्म मुजानोऽपि न बध्यते. १

काननुं एवं सामर्थ्य छे के वा वैराग्यनुं खरेखर एवं सामर्थ्य छे के जेथी कोइपण कर्भोवडे कर्म भोगवतो छतो पण कर्मथी बंधातो नृथी. तात्पर्य के ज्ञान अने वैराग्यथी कर्म भोगवतां पण कर्मेंबंध यतो नथी.

माटे कहेछे के-

ज्ञानीको भोग साव निर्जराको हेतु है.

क्रानीनो सर्वभोग निर्जरार्थछे. औदिविकभावे पाप्त थएला पंचेंद्रिय विषयभोगोने भोगवता एण क्रानी कर्मनी निर्जरा करेछे, अने अज्ञानी उलटा बंधायछे. हुं ज्ञानीछुं एम मानी वेसवाथी कंड् क्रानीपणुं आवतुं नथी. वा कोइ एम कहेशे के आ ज्ञानी नथी एम क्रयवाथी क्रानीपणुं टळतुं नथी. ज्ञानीपणुं ज्ञानीगम्य वा ज्ञानीना अनुभवमां समजायछे.

ज्ञानना पण घणा भेदछे. आत्मज्ञान विना कर्भ कलंक टळतुं नथी ज्ञाननो महिमा अनंतछे.

कृष्ण अर्जुनने कहेछे के-

क्रानाग्निः सर्वेकर्माणि भस्मसात् कुरुतेऽर्जुन.

दे अर्जुन ! ज्ञानरूप अग्नि सर्व कर्मने बाळी भस्म करेछे. ज्ञान विना चारित्र नथी अने चारित्र विना मुक्ति नथी. क्रिया पण ज्ञानिनी पासे छे. ज्ञान विना शुंतप, शुंकिया माटे आत्मतत्त्वहुं ज्ञान

(440)

करवुं श्रेयस्करछे. आत्मज्ञान विना कोइ तर्या नथी अने तर्ज पण नहीं, राजा, करोडा धिपति, आदि सर्व करतां ज्ञानीनी महत्वतां छैं। ज्ञानी सर्थ करतां पण मोटोछे। कारण के सर्थ वाह्य प्रकाश करें छैं। क्षेत्र अंतर्पकाश करी शकतो नथी। अने झानी तो अंतर्पकाश करे छैं। ज्ञानीनी सर्व किया, वर्तन सापेक्षपणे वर्ते छे। अने अज्ञानी हुं वर्तन निरपेक्षतया वर्ते छे। ज्ञानी अवस्य चोथाटाणे गणे तो होयछे अने अज्ञानी बी। ए। एल। एल। बी। आदि पद्विओधी दुनीयादारी हां महा विद्वान कहेवातो होय तो पण समकित विना पहेले गुणठाणे वर्ते छे। ज्ञानावरणीय कर्मना क्षयोपशमभावथी वा सायिक भावथी ज्ञाननो आविभीव थायछे। सम्यक्तत्त्व श्रद्धान विना ज्ञानावरणीय कर्मनो क्षयोपशमभाव पण मिथ्यात्वरूपे परिणमेले। एम श्रीवीर मग्रनं कथनछे।

ज्ञानावरणीय कर्म पंचनकारे छे-मितज्ञानावरणीय कर्म १, श्रुतज्ञानावरणीय कर्म २, अवधि ज्ञानावरणीय कर्म २, मनःपर्यव ज्ञानावरणीय कर्म ४, केवल ज्ञानावरणीय कर्म ५.

ज्ञानावरणीय कर्ममां उपश्रम भाव नथी. ज्ञानावरणीय कर्मनो औद्धिकभावछे ज्ञानावरणीय कर्मनो क्षयोपश्रम विचित्र असंख्य प्रकारे तरतमयोगथी वर्तेछे. द्वादशांगीनुं गुंथन गणधरजी क्षयोप-श्रमभावे करेछे.

मतिज्ञान, श्रुतज्ञान, अविधिज्ञान, मनःपर्धवज्ञानमां क्षयोपज्ञान भाव छाभेछे. केवलक्षान क्षायिकभावे उत्पन्न थायछे. ज्ञानावरणीय कर्म अष्ट कर्ममां मथम के तेतुं कारण के विशेषतः ज्ञानावरणीय कर्म आत्मानुं भान भूलवेछे. ज्ञान विना तत्त्वनुं भान थतुं नथीं. माटे मथम तेनो निक्षेप कर्योछे. ज्ञान विना जीव, अजीव, पुण्य, पाप, आश्रव, सवर, निजरा, बंध अने मोक्षनुं स्वरूप जणातुं नथीं. ज्ञान,

षड्द्रच्य, सातनय, सप्तभंगी, प्रमाण निक्षेपनुं यथातथ्य स्वरूप ज्ञान विना समजातुं नथी. ज्ञान विना धर्म अधर्मनुं स्वरूप जणातुं नथी. ज्ञान विना चारित्र शुं छे तेनुं पण भान थतुं नथी.

मित ज्ञानावरणीय अने श्रुत ज्ञानावरणीय कर्मनो क्षयोपशम सर्व जीवोमां सरखो लागतो नथी. कोइएक वस्तुनुं स्वरूप विशेष समजे कोइ समजतुं नथी. त्यां पित ज्ञानावरणीयकर्मनी क्षयो-पश्चमताज कारणीभूतले. पूर्वभवमां ने प्रकारे पितज्ञान अने श्रुत ज्ञाननुं आराधन कर्युं होयले. ते प्रमाणे आ भवमां मनुष्य जन्म पामी शरीरनी रचना, मगजनी रचना ज्ञानतंतुनी प्रवलता आदि सामग्रीसाधन पितज्ञानावरणीय कर्मना क्षयोपश्मभावमां पाप्त थायले अने ते साधनोद्वारा उद्यम करवाथी पितज्ञाननी दृद्धि थायले.

मितज्ञानना अष्टार्विश्वति अने २४० त्रणसो चालीश भेद नंदिस्त्रत्रमां मरुप्याछे. ज्ञाननी ब्राह्मी लीपी जे श्रुतज्ञान अक्षरस्व-रूपेछे तेनी आशातना करवाथी ज्ञानावरणीय कर्म बंधायछे. आ-श्वातनाना हजारो भेदछे. ते गीतार्थने विनयथी पूछीसमजण लेवी.

सुवर्णना प्यालामां जलनां जेटलां बिंदु पडेछे तेटलां कायम रहेछे. तेम योग्य संस्कारी जीव जेटलुं गुरुद्वारा श्रुतज्ञान मेळवेछे तेटलुं तेने शुद्धरूपे परिणमेछे अने तेनुं स्मरण रहेछे.

जेम तपावेला लोहना गोळा उपर जलविंदु त्रण चार दश बार पडे तो कंइ तेनुं जोर चालतुं नथी तेम मूद अज्ञानी जीवना हृदयमां सद्गुरु वचनामृतनो वास थतो नथी उलटो तेनो नाश थायछे.

एक शिक्षक शिष्योंने एकज वखते सरखी रीते कोइ विषयनों बोध आपेछे तेमां कोइ विद्यार्थिने तो बिलकुल तेनी यादी रहेती नथी कोइने यत्किंचित् रहेछे. कोइने पूर्ण यादी रहेछे त्यां श्रुत झानावरणीय कर्मनी क्षयोपशमताज कारणीभूतछे, कोइ एक श्लोक

भणीने स्मरणमां राखेछे. कोइ एक कलाकमां पांच श्लोक अणेछे. कोइ पचीश श्लोक कोइ शतश्लोक कोइ सहस्रश्लोक एक कलाकमां याद करेछे कोइ आखा दीवसनो एक श्लोक पण याद करी शकतो नथी. त्यां श्रुतज्ञानावरणीयकर्मनी क्षयोपश्चताज कारणीभूतछे. हा-लना समयमां कोइ शतावधानी कोइ द्विशतावधानी देखवामां आवे छे. तेनुं पण कारण मित अने श्रुतज्ञानावरणीय कर्मनी क्षयोपज्ञम-तानी विचित्रताछे. अने ते प्रमाणे मगजनी रचना ज्ञानतंत्रनी प्रब-लता अने अमबलतानी तारतम्यताए घटना थायले. अने ते ममाणे द्रव्य क्षेत्र काळभावथी पवल अपवल साधनोनी पाप्ति थायछे. श्रुत-ज्ञानना अभ्यासथी तथा श्रुतज्ञानीनो विनय भक्ति बहुमान करवाथी श्रुतज्ञानावरणीय कर्मनो क्षयोपञ्चम थायछे. श्रुत अने श्रुतज्ञानीनी आज्ञातना करवाथी तथा उत्स्रुत्रभाषण करवाथी श्रुतज्ञाना-वरणीय कर्मनो बंध थायछे. माटे भन्य जीवोए क्रोध छोभ मान पूजा स्वार्थीदिक आवेशथी उत्सूत्र भाषण करवुं नहीं. उत्सूत्र भाषणथी जमाली तथा मरीचिनी पेठे भवपरंपरानी प्राप्ति थायछे. अल्पज्ञानयोगे उत्सूत्र भाषण थयुं होय तो ज्ञान थतां मिथ्या दुष्कृत देवुं. पण मान पूजा लज्जादिकथी मिश्यादुष्कृत देतां पमाद करवो नहि. भवभीरु भाग्यवंत जीव अनेकांत पंथने समजी पाणांते पण मिथ्यामरूपणा करतो नथी. उत्सुत्र भाषण समान कोइ पाप नथी. माटे कटी अल्पन्नपणाथी उत्सूत्र परूपणा करवी नहि, कलियुगमां सूत्रोनी मरूपणामां गुरुगम विरह, मान, पूजा, स्वार्थ, मतांधपणाथी, उत्स्वेभा-पण करी अज्ञानी जीवो अनेक प्रकारना मत उठावेछे अने कुमति कुश्रुतयोगे कुतर्क करी भिन्न भिन्न पंथनी काळी दृष्टि रागी जीवोने समजावीने वीर्यभ्रनां सत्य वचननो लोप करी आत्माना अजाण-पणाथी भवपरंपरानी दृद्धि करी जन्मजरा मरणनां दुःख विविध योनिमां अवतार ग्रही भोगववा पयत्न करेछे.

(२७०) स्त्रीना आश्य.

सूत्रीमां कीइ वचन तो उत्सर्ग मार्गनां छे. कोइ वचन अपवाद मार्ग बोधकछे. कोइ भय वचनछे. कोइक तो व्यवहार मार्गने बोधेछे. कोइक तो निश्चयनय मार्गने बोधेछे. एशे सूत्र सिद्धांतरूपी श्रुत सागरनो सार-महाश्रुतज्ञानी विना कोण पामी शके. अलबत ज्ञानी पामी शके-कहुंछे के-

गाथासूत्र.

विहि छज्जम वन्नय भय, उसग्ग ववाय तदुभय गयाई;
सुत्ताइं बहुविहाइं, समइं गंभीर भावाइं ॥ १॥
एसिं विसयविभागं, अमुणंतो नाण चरणकम्मुदया,
मुझइ जीवोतत्तो, सपरिस मसग्गहं कुणइ ॥ २॥

जैनसूत्रो उत्सर्ग अपवादथी परिपूर्ण सदाकाल विजयवंत वर्ते छै.
सप्तनयोनुं यथार्थ स्वरूप जाण्या विना धर्मोपदेश सम्यग् रीत्या देइ
शकतो नथी. वेटलांक सूत्रो उद्यमकथकछे, माटे अपेक्षा समज्या
विना प्ररूपणा करवी नहि. भाग्यवंत जीवोए गीतार्थनुं शरण अंगीकार करवुं योग्यछे. दुःषम समयछे. माटे गीतार्थद्वारा अनेकांत
मार्ग समजवो. श्रुतझानिनी तथा श्रुतझाननी आशातना करवाथी
नरकादि गतिमां घणा जीवो गया अने घणा जशे.

णमो वंभलीवीए.

आ सूत्रनो सम्यग् अर्थ गुरु परंपरया केवी रीते थायछे. अने तैमां श्रुतज्ञाननो विनय बहुमान भक्तिनुं केटलुं रहस्य समायुंछे. हवे तेनो कुतर्कनी स्वच्छं रताए विपरीत अर्थ करवामां केटली विरुद्धता बर्तेछे. ते विद्वज्जनो माध्यस्थद्दिथी विचार करशे तो समजाशे. श्री यशोविजयजी उपाध्याय पोताना रवेला स्तवनमां सपमाण अनु-भव सहित शुद्ध व्याकरण दोषरहित सम्यग् अर्थ दर्शावेछे. तेनी समजु लोको विचार करी असत् आलंबन परिहरो सदालंबन अंगी-कार करको. शतज्ञानीनो एकमत अने शत अज्ञानिना शतमत व्य-वहारमां प्रसिद्धके.

जगत्मां सुक्ष्मगंभीरअर्थपिरपूर्ण धर्मतत्त्वना समजनारा भन्यो अल्प होयछे, अने तेमां पण भावार्थ समजी धर्मतत्त्वनो आदर कर-नारा अल्प होयछे, अने तेमां पण अनुभवी तो अल्पमां अल्प होयछे.

हाल पंचमकाळछे, पंचित्रच भेगां थयांछे. प्रायः बहु पापी जीवोतुं अत्र उत्पन्न थवुं थायछे. वळी तेमां मिथ्याती अने पापातु-वंधी पापवाळा घणा जीवोनी उत्पत्तिनो समयछे. एवा पंचमकाळमां धर्मी जीवो करतां पापी मिथ्याती जीवोनो मोटो भाग होय तेमां शी नवाइ!!! अहा दुःषमकाळ त्हारो केवो प्रभाव ?

त्यारे हवे शुं करवुं ? धर्म कर्या विना बेसी रहेवुं ? ना तेम करवुं योग्य नथी. भगवान् नुं शासन दुःपसहस्र्रि सुधी चालको. धर्म पण त्यां सुधी छे वे.टलाक मितहीन प्रमादी जीवो हालमां श्रक्ति नथी एम समजी धर्मकरणी करता नथी. आ विपरीत समजवुं तेमनुं भूल भरेलुंछे. हाल पण अप्रमादयोगे सातमा गुणठाणानुं स्पर्शन भाग्य-वंतो करे तेमां सप्रमाण हेतुछे. जेटली जेटली कर्म प्रकृतिथी मूकावुं ते ते अंशे गुक्तपणुं अने धर्म समजवो. क्रंबुंछे के-

जे जे अंशेरे निरुपाधिकपणुं, ते ते अंशे धर्म ॥ सम्यग् दृष्टिरे गुणगणायकी, जीव लहे शिवशर्म ॥

श्री यशोविजय उपाध्याय भेद ज्ञान थतां समिकतनी प्राप्ति थतां उपञ्चमभावे वा क्षयोपश्चमभावे वा क्षायिकभावे धर्मनी साध्यता सिद्धि बतावे छे, चोथा गुणठाणाथी महयेक गुणठाणे षड्गुण हानि दृद्धि असं-ख्यात भेदे मत्येक जीवोने रही छे. ए वात गीतार्थीना अनुभवमां सत्य छे,

शांन.

धर्म श्रवणथी भेदज्ञान थायछे अन तथी स्वपरनो विभाग क-रतां सम्यक्त्वनी प्राप्ति थाशछे. तेमां श्रुतज्ञाननो महा उपकार स-मजवो, त्रिकाल सर्वज्ञ वीरमञ्जूष केवलज्ञानथी सर्व पदार्थोने जोया अने वाणीथी ते पदार्थोनुं स्वरूप कथ्युं. ते भगवाननी स्वपर प-काशक वाणीनेज श्रुतज्ञान सूत्रसिद्धांतरूप कथेछे हालपण भगवाननी वाणी जयवंती वर्तेछे.

आसन्नभव्यी भगवद्वाणीरूपगंगा प्रवाहमां स्नान करी सं-सारना तापथी शांति पामेछे अने पामशे.

्र महाविदेह क्षेत्रमां अनादिकाळथी समिकतश्रुत अने मिथ्याश्रुत वर्ते छे.

सुश्रुतनो हे भन्यो आदर करो वखत वही जायछे, वखत अमूल्यछे. गयो वखत पश्चात् आवनार नथी. भन्य जीवोए वारंवार श्रुतज्ञाननो अभ्यास करवो.

अवधिज्ञानावरणीय कर्मनो क्षयोपश्चम थवाथी अवधिज्ञान उत्पन्न थायछे. अवधिज्ञानना षड्भेदछे. अने वळी असंख्यात भेदे प्रवर्तेछे. मनःपर्यवज्ञानावरणीय कर्मना क्षयोपश्चमथी मनःपर्यवज्ञान उत्पन्न थायछे, मनपर्यवज्ञान वे प्रकारेछे.

केवलज्ञान क्षायिकभावे उत्पन्न थायछे. शुक्रध्यानना बीजो पायो ध्यावतां वारमे गुणठाणे केवलज्ञानावरणीयकर्मनो सत्ताथी पण सर्वथा क्षय थाय छे.

मतिज्ञान अने श्रुतज्ञान परोक्षछे. अवधिज्ञान अने मनःपर्यव-ज्ञान देश प्रत्यक्षछे. केवलज्ञान सर्वथी प्रत्यक्षछे.

आ प्रमाणे ज्ञाननी पाप्ति थतां आत्मा परमात्मस्त्ररूप बनेछे. ज्ञाननी पाप्ति थतां दर्शनावरणीयादि कर्मनो सर्वथा क्षय वायछे. जे जे कॅर्मफकृतिनो जे जे गुणटाणे क्षय थवानो होयछे ते ते गुण-

परमारमद्दशन.

(402)

टाणे तेने। क्षय थायछे. ज्ञानमरूपणा नंदिम्त्रमां हेतु न्याय पूर्वक दर्शावीछे. माटे आत्मार्थि जीवोए त्यांथी विशेष अधिकार समजवी अहाज्ञाननी केवी शक्ति!!! चक्षुद्धारादेखेळा पदार्थीनो मनमां केवो विचार थायछे. बीजानामनना विचार एण ज्ञानथी जाणी शकाय छे. ज्ञाननी एकनी एकथी बीजा जीवमां विशेषता देखवामां आवेछे. केवळज्ञानमां सर्वज्ञाननो समावेश थायछे. संप्रतिकाळे ज्ञाननी क्षीणताछे. अने तथी मतभेद घणा थया अने थशे जेम ज्ञाननी अल्पता तेम मतमतांतर विशेष अने ज्ञाननी दृष्टिं तेम मतमतांतर अल्प जाणवां. मतभेदना कदाग्रह विना जे जे वांचवुं. सांभळवुं. मनन करवुं ते सफळछे.

क्षयोपश्चमभावे अधुना मितज्ञान अने श्रुतज्ञान समिकिती जी-वोने वर्तेछे. एम कथवुं अनुभवगम्य सप्रमाणछे, मित अज्ञानी अने श्रुत अज्ञानी जीवो आ क्षेत्रमां विशेषछे. मित अने श्रुत ज्ञानी जीवो अल्प अने तेमां पण विरित पाम्या जीवो अल्प अनुभवगम्य सिद्धांतानुसारछे.

हे भव्य मित ज्ञान अने श्रुतज्ञाननो गहन विषयहे अल्पज्ञ-पणाथी स्म तत्त्वरूवरुप निगोद स्वरूप समजी शकाय नहीं तो तेमां ज्ञानावरणीय कर्मनो दोष समज. ग्रंथकत्तीने दोष आपीश नहीं सम्म तीक्ष्ण मित ज्ञान विना सक्ष्म वातनो बोध थतो नथी. एम कहेवुं सप्रमाणछे केवलज्ञान अने केवल दर्शनथी जे पदार्थ स्वरूप जाणवा देखवामां आवे तेनुं स्वरूप मितज्ञानथी यथार्थ साक्षात कदी जाणी शकाय नहि. एम अनुभवथी ज्ञानीओ कथेछे. माटे शंका मनमां लावीश नहिं जिन प्रवचनपर आस्था राख. जिनेश्वरे जे वचनो कथ्यांछे ने अन्यथा नथी. एम श्रद्धा कर. अने आत्मा-नुभव सद्गुरुद्वारा कर के जेथी मुक्तिमार्गनो अधिकारी थाय. पूर्वी-

३७४) कर्मराजा अने धर्मराजानं युद्ध.

क्र मोइनीय अने झानावरणीय कर्मनुं स्वरूप तथा तेना नासभी आरुप्राणोनो लाभ देखाडी हवे पस्तत कर्मविषयनुंज वर्णन कर-सामां आहे छे. कर्म संबंधी सामान्य वर्णन कर्यु. कर्म जडछे अने ते आत्माना गुणोनो घातकर्ता छे. सर्व जीव कर्मासक्त छे. कर्मनो नाम करनो एज कर्तव्य छे. कर्मनुं स्वरुप समज्या विना कर्मनो नात्र थतो नथी. श्रीवीरमग्रुए घोर परिसह सहन करी कर्पनो क्षय कर्योः तो तेमनी वाणीना आधारे आपणे पण ज्ञान दर्शन चारिन बतुं आराधन करवुं, लक्ष्यमां राखवुं. मोक्ष मार्ग विकट छे. यमाद क्रको, उपयोग अल्प, आयुष्य अल्प, दःषमसमय, सत्समागम अन ल्प, धर्म साधनो अल्प, कर्मसाधनो विशेष, अहो वे वी दुर्दशा, कः र्धनं जोर विशेष, धर्मध्याननं जोर अल्प. आ शुं थयुं, शुं करवुं. हे बीर्मभ्र तारी वाणीतुं शरण, जगत्मां तमारो वेटलो उपकार ! ता-रो आधार, तारो विश्वास. कर्पनी दुःखपद्विचित्रपकृतियोनो नाज्ञ करवा केवा मकारनुं लक्ष्य जोइए ? अधमता अने भमादशी जीवो क्यांथी स्वस्वरूप पामे ? धर्म उद्यम अल्प छे. कर्मोपार्जन उद्यय अहर्विश चाल्या करेछे. तपासोतो खरा ! रागतं जोर तमा-रामां विशेष छे वा वैराग्यतुं, जोर विशेष छे, कर्मनी कठीन ग्रंथीनो मेद आत्मार्थी पुरुष पुरुषार्थथी करेछे. कर्मन्नं क्षेत्र चतुर्दश रज्वात्म-क प्रमाण छे, अर्थात् कर्मनी राजधानी चउद राजलोकमां छे. ता पण कर्मथी इरवातुं नथी कर्म नाश थवातुं नथी एम स्वप्नमां पण विचारवं नहि, कारणके तेम मानी बेसवाथी उलदुं कर्मनीज दृद्धि थापछे. माराथी राग छूटवानो नथी वा मारा कर्ममां लख्युं हुने ते श्माणे थन्ने. एम प्रमादनी रुद्धि अर्थे वा सरागदशानी रुद्धि अर्थे बचन बदशो नहि. अनुग्रमनां वचनो जे बोलवामां आवेछे ते चा-दिन मोहनी आदिना उदयथी समजवुं जरा स्ट्रमदृष्टिथी विचारो के

उग्रमयी कयुं कार्य सिद्ध थतुं नथी ? अलवत उग्रमयी सर्व कार्क सिद्ध थाय ते. हचे ते कर्भ संबंधी विशेष विवेचन करीए छीए.

- १ कर्मराना
- २ कर्पराजानो मधान मोह
- ३ संसारनगर
- ४ कर्मराजानो पुत्र अज्ञान
- ५ कर्मराजानी पुत्री निंदा

कर्मराजाना सुभटो-मिथ्यात्व, अविरति, क्रोध, मान, माया, लोभ, हास्य, रति, अरति, कलह, भय, अभ्याख्यान, अधुभयोग, आर्तध्यान, रीद्रध्यान, इर्ब्या विगेरे कर्मनुं कार्य ए छे के दरेक सं-सारी जीवो उपर सत्ता चलाववी. हवे एक दीवस कर्मराजा पोते संसारनगर तरफ ध्यान आपी जुएछे के संसारी जीवो हाल हेवी हालतमां छे अने ते आपणी आज्ञामां छे के नहीं ? जोतां जीतां कर्मराजाने माळप पड्यं के. अरे हाय वीतरागना भक्तो तथा ते-मनी वाणीरूप आगमोथी घणा जीवोए मारु स्वरूप जाणी लीधुं. अने ते जीवो मने ते शत्रु तरीके छेखवी मारी नगरीमांथी नीकळ-वानो उपाय श्रीवीतरागना भक्तोने पुछेछे अने मोक्ष नगरी के जे धर्मराजानी राजधानी त्यां जवा इच्छेछे. वे.टलाके मोक्ष नगरी त-रफ जवा सारु प्रयाण शरु कर्युछे. अरे मारा नगरमांथी जीवी बेटलाक काळे सर्वे जता रहेशे. वे.म करु, एम उंडा विचारमा गुम थर बेठो छे. त्यारे तेनी पासे मोहनधान आवी पुंजेखे के, हे कर्मराजा तमे देम उदास थड़ बेठा छो ? मारा जेवो मधान छना तमने शी मोटी चिंता आवी पडीछे ते कृपा करीने कहो.

कर्मनृपतिभाषण

कर्मराजा मोहनधानने कहे छे के, अरे हवे मारा राज्यमार्थी

(२७६) कमेराजा अने धमराजानुं युद्धः

दिनमतिदिन जीवो मोक्ष नगरीमां चाल्या जायछे.

धर्म राजाना सुभटो आपणी नगरीना जीवोने समजावी पोतानी नगरीमां खंची जायछे. मुख्यताए तेमां मोटो भाग जीवोने
मोक्ष नगरीमां छइ जनार तीर्थकरोनोछे. अने तेमना कायदा प्रमाणे
वर्तनार साधुओ एवा तो कावेछछे के-ते साधुओनी आगल आपणा क्रोधादिक शतुओनुं कंइ चालतुं नथी. आपणा सुभटोने पण
हरावी जीवोने पोते मोक्ष नगरीनो मार्ग जणावी आपणी नगरी
खाली करेछे. हाय, हवे शुं करुं. अरे ओ मोह प्रधान तुं जलदी
आपणा सुभटोने तथा मारा पुत्रने वोलाव, अने अविवेक सभामां
कचेरी भर, मोहप्रधान कर्मराजानुं वचन अंगीकार करी सर्व सुभदोने बोलावी सभानी बेठक करी. कर्मराजा सभामां आवी ममता
सिद्यासन उपर विराजमान थया. हवे कर्मराजा पोताना सर्व सुभटोने तथा पुत्रपुत्रीओने नीचे मुजव वचनो कहेले के

अरे मारा मोह प्रधान तुं मारो पिय प्रधानले. हिंसातो मारी बेंन्छे निंद्रा मारी पुत्रीले, अज्ञान मारो पुत्रले, चउदराज लोकतुं राज्य आपणा ताबामांले. आपणुं राज्य अनादिकालथी संसार न-गुर्मा चालेले. सर्व जीवोने आपणे पोताना वशमां राखी धर्म राज्यानी मोक्ष नगरीमां लेइ जवा देवा नहि. ते तमारी मुख्य फरजले. आपणुं राज्य घटे नहि ते तमारे ध्यानमां लेवं जोइए.

मारा सुभटो सांभळो ! आपणो मोटो शत्रु धर्म राजाछे. ज्ञान दर्शन चारित्र ए त्रण एना पुत्रछे. धर्म राजानो उपयोग रूप प्रधान छे, क्षांति,आर्जव,मार्जव,म्रुक्ति,संयम,सत्य, शोच, आर्किचन, ए दश धर्म राजाना अत्यंत वळवान सुभटोछे, समिकत रूप धर्म राजानो पुत्र एवो तो वळवानछे के जेनाथी आपणो मिथ्यात्व सुभट रण संग्राममां भागी जायछे, पंच महादृत रूप जोद्धाओ एव।तो वळवा- नक्के के अविरित नामना आपणा योद्धाने थरथरावेछे. आपणा नगरनो मंग करनार श्री चोवीस तीर्थकरो तथा तेमनाथी उत्पन्न थयेला १साधु २साध्वी ३श्रावक ४श्रावीका रूप चतुर्विध संघ आपणाथी छुटी पडी धर्म राजाना नगरमां जवा उपडयोछे. तीर्थ-करना भक्तो, साधु महाराजाओ, आपणा संसार नगरमां रहेनार संसारी जीवोने पवातो उपदेश आपेछे के—ते उपदेश सांभळ्या पछी आपणा नगरमां ते जीवो रहेता नथी, अने संसारने ते स्म-शान सरखो गणेछे, आपणी मायाना अने कुटुंव परिवारने बंधन समान गणेछे, मायाना पास त्रोडी वैराग्य रूप बख्तर धारण करी संसारनो त्याग करेछे, अनादिकाळथी आ ममाणे आपणा नगरमांथी जीवो मोक्ष नगरमां चाल्या जायछे. ते जोइ मने अत्यंत चिंता थायछे. धर्म राजानुं मोक्ष नगर आपणा संसार नगर कर गं नानुंछे ते चौद राज लोकने अंते आवेछंछे ते नगरमां रहेनारा जीवो अत्यंत सुकी होयछे मोक्ष नगरीमांगयेला जीवोनो आपणाथी कशो भय रहेतो नथी.

मोक्ष नगरमां गया जीवो पाछा आपणा नगरमां आवी शकता नथी-आपणुं तेमना उपर कशुं जोर चालतुं नथी. अरे मारी नग-रीनी खराब अवस्था थइ गइ! तमो आटला बधा सुभटो छवां मारी आवी दशा थई, हवे मारे शुं करबुं,कोनी आगळ जइ पोकार करवो.

आ प्रमाणे कर्म राजानां वचनो सांभळी मोह प्रधान आस्वा-सना आपेछे.

हे कर्म राजा तमो केम चिंता करो छो, कर्म राजाजी तमारुं नगर कदी खाली थइ शकवानुं नथी. अनादिकालथी तमारी एवी सत्ता बेठेलीछे के मायः कोइक जीव मोक्ष नगरीमां जइ शके, आ-पनो हुं मधान तथा अज्ञान नामनो पुत्र, एटली तो संसारी जीवो उपर सत्ता चलावे छे के, विचारा जीवने संसार एज सार मान्या विना छुटको थतो नथी. कर्म राजाजी अमारां दरेकनां पराक्रम नीचे मुजबछे ते सांमळो.

हुं मोह मधान अनादि काळथी आपनी कृपाद्रष्टि तळे हाजरछुं. परभावरूपी झाळ्गां दरेक संसारी जीवोने में फसावी दीघाछे. एकेंद्रिय जीवो उपर पण मारी सत्ता व्यापेली छे. द्वीन्द्रिय जीवो उपर पण मारी सत्ता व्यापेलीछे, त्रीन्द्रिय जीवो उपर पण हुं सत्ता चलावुंछुं चतुरिन्द्रि जीवोपर पण मारा वशमां छे, पंचेंद्री जीवो चार पकारनां छे १ देवता २मनुष्य ३तीर्थेच ४नारकी ए चार प्रकारना जीवो पण मारा आधीनछे, देवताओ पण देवीओ उपर मोहना पासथी आशक्त रहेछे. आ मारी देवी, आ बीजानी देवी, एवी मोह धशा करावनारछुं. मारी उत्क्रव्रि स्थीति मोहनीय, कर्मनी सित्तेर कोडाकोडी सागरोपमनीछे, नानं बाळक तेनामां पण हुं व्यापिछुं. युवाव ध्यावाळा जुवान पु-रुषोमां तो हं निर्भय पणे व्याप्त छं जो मोहना होय तो दरेक मनु-ष्यो संसारमां सार मानेनहीं, रात्री अने दीवस हुं दरेक जीवोनी साये व्याप्तछं, मोह मदथी वेला थयेला जीवो जाणी शकता नथो के अमो मोहना पा गमां छपडायाछीए-एवी मारी सत्ताछे जोगी जती. संन्यासी, गोसाइ, अतीत, फकीर विगेरे कहेळेके मोह खरावळे, मोह करना नहि एम बीजाने उपदेश आपेछे तेवा पुरुषोने पण हं मारी मोह झाळमां फसावी दउंछं.

फकीर फकीराइ छेइ बेठा होयछे तोपण धन स्नीनामां हुं घवे-इन करी तेने छ उचावी संसारमां पाइं छुं राजाओं के जे श्रूरवीरो कहेवायछे तेने पग स्नी,धन, पुत्र, राज्य, विगेरेना मोहमां फसावी देउछुं, जे राजाओं सिंह समान श्रूरा होयछे, अने जे रणसंग्राममां इजारो मनुष्योने कापी नाखेंछे, तेवाने पण हुं पुत्र मोहमां फसावी रोतराबुं हुं. सिंहसमानश्र्रा राजाओने पण मोहमां फर्साकी सीओना पणे लगां खुंहुं. हजारो सुभटोनां बाण वागतां पण जेनी चश्चमांथी अश्च आव्यां नथी. एवा राजाओनी चश्चमांथी स्त्रीना मरणथी अश्च कढां बुंछुं. जो हुं राजाओमां व्यापी निह रहुं तो तेओ आ संसार मांजीवनी हिंसा विगेरे केम कुकर्म करे ?पृथ्वीना लोभथी परस्पर राजाओने हुं लडां बुंछुं, स्त्रीना मोहथी परस्पर राजाओने लडावनार जने दुनीआमां जीवोनो नाश करनार हुं मोह प्रधान छुं. ज्यां मारो संचार होयछे त्यां क्रोधादिक सुभटो पण वास करेछे. मोक्ष नगरीमां जतां अगीयारमा गुणटाणा सुधी मारु पबल जोरछे. कोइ विरलो जीव माराथी बची जायछे. अरे तमो तीर्थंकरना भक्तो साधुओने पूछोके तमो कोनाथी विशेष डरोछो. पत्युत्तर मळशे के— मोहथी अमो डरीए छीए. जुओ चकलो, चकली, मोर, पोपट, कबु-तर, सिंह, शृंगाल, विगेरे तिर्थंच जीवो पण मोहावेशथी केवी स्थित माप्त करेछे.

चकलो, चकली, पोतानां इंडांपर केवो मोहधारण करेले. मयूर मयुरीनो विरह थतां केवं आकंद करेले. गौ महिषी पोतानां वचांने जुओ मोहना आवेशयी केवां चाटेले: कृती कुरकुरीयांने पोतानां मानी केवं हेतधारण करेले. वळी धनना मोहथी माणीओ मरी परभवमां मूषक सर्प विगेरेना अवतार धारण करेले. पुत्रना मरणथी मातिपताने अत्यंत रूदन करावनार हुं छुं स्नीना मरणथी तेना पतिने शोक करावनार हुं छुं. सत्यनेपण असत्य तरीके देखाहनार हुं छुं. मारा वश्चमां आवेला जीवोने चोराशीलाख जिनवायोनिमां भटकावनार हुं छुं. मारा वश्चमां पतित माणीओ हिंसा करेले. असत्य वदेले. चोरी करेले. परस्नी सेवन करेले. इत्यादि सर्व मारी सत्ताथी थायले.

(२८०) कमराजा अने धर्मराजानुं युद्ध.

पृथुराजे स्नीना मीहथी जयचंद्र साथे भारे क्रेश कर्यों पृथु-राज उपर शाहबुद्दीन घोरी चढी आव्यों, तेमां अंते मृत्यु पाम्यों कर्णघेलाए स्नीना मोहथीराज्य खोयुं,मनुष्यपरदेश स्त्रभण करेले.जळमां मवेशेले, इत्यादि सर्व मारुं कार्यले. अनंत जीवोने हुं संसारमां अनादिकाळ्थी भटकावुं छुं. अने भटकावीश. धर्मर जानो विवेक रूपी योद्धो पण माराथी वीवेले. कया जीवमां हुं व्यापीरह्यों नथी

बीतरागदेवना साधुओने लाग साधी मारा फंदमां फसावी दुउछं. जुओ मारी केवी शक्ति!जीवोने संसारमां सार देखाडी चा रित्र छेवरावतो नथी. सर्व जीवोने संसारमां अनादिकाळथी फेरबुं छं अने वळी फेरवीश अधर्मी बनावुछं. अनेक मकारनो वेषो करी जीवोनो हुं माराफंदमां फसाबुं छुं. कोइनामां व्यक्तपणेतो कोइनामां अव्यक्तपणे हुं वसुंछं,सर्व संसारी जीवोनेहुं पुतळांनी माफक नचावुं छुं, मारी घेनमां सर्व जीवो मुंझाणाछे. ज्यां त्यां हुं मोह व्यापी रह्यो छुं मोह घाटी तुं भेदन कर व महा दुष्कर छे. एम दरेक महात्माओ पुः स्तकमां लखेके. दरेक जीवनुं भान भूलावनार अने परस्वभावमां रमण करावनार हुं मोह जीवोमां पेठो के ते बीचारा परवश थड़ जायछे मारा आगळ सर्व जीवो कीटक समानछे, मारी शक्तिथी ज्ञानीओ पण गभरायछे, हं सदाकाल चोराबी लाख जीवयोनियां रहेला जीवोनी पासे रहुंछुं. महादेव सरखाने पण पार्वतीना मोहगां फसावनार मारा विना बीजा कोण! देशाभिम नथी दुनीयानी प्र-जाने परस्पर वैर करावनार मारा विना बीजो कोइ नथी. मोह गर्भित वैराग्यमां पण मारु अस्तित्त्वछे, मतमतांतर मिथ्यात्वादिनी बृद्धि माराथी थायछे. जुओ मारी शक्ति. !!!

आवां मोह सिचवनां वचन सिभळी कर्मराजाए मोह प्रधानने ज्ञाबाज्ञी आपी कहुं के धन्यछे मारा शुरा मोह प्रधान मारे तारा जेवो बीजो कोइ मिय नथी.

हवे कर्मनृपतिनो पुत्र अज्ञान स्वकीय स्वरूप सभा समक्ष कथे छे. अरे हुं मोहराजानो पुत्र छुं. अज्ञान मारूं नामछे, पंडित लोक मारा वैशिष्ठे. चउद राजलोक मारू स्थान छे. सर्व जीवोने में अंध कर्या छे. ज्ञानावरणीय कर्मे करी हुं सर्व जीवोमां वसुं छुं, धर्मराजा तथा मोक्षनगरी मुं भान हुं थवा देतो नथी. सत्यासत्य मुं स्वरूप जीवोने जाणवा देतो नथी, सत्य देव गुरूधर्म मुं ज्ञान मारी सत्ताथी। जीवो करी शकता नथी.

तीर्थंकरनां सूत्रो तथा तेमनी आज्ञा प्रमाणे मोक्ष नगरी प्रतिगमन करनार मुनिवरो पण मारा वज्ञमां रहेला जीवोने समजावी
शकता नथीं जे समजु छे तेने साधुओ समजावी शके, पण हुं ज्यां
वसुं छुं त्यां तेओ गमे तेटलो उपदेश आपे तोपण उखरभूमां वर्षानीपेठे निष्फळ जायछे. चारगतिना जीवो मारा वज्ञमां छे. पथुपंखी
आदिजीवोनी में केवी अवस्था करी छे; माटे हे कर्मनृप्ति
मारा जेवा पुत्रो छतां आपने चिंता करवी योग्य नथीं.

अज्ञान पुत्र आ प्रमाणे कहीने मौन रह्यो, त्यारे कर्मन्यविनीः निंदा नामनी पुत्री सभासमक्ष कहेवा लागी के—

निंदाभाषण.

हे पिताजी ! हुं आपनी निंदा नामनी पुत्री छतां आप केम जदास थाओछो. सर्व जीवोने हुं वश करुछुं. अदेखाइ नामनी मारी माताए जन्म आप्योछे. सर्व जीवोना गुणोने हुं तेमां पेसतां भस्म करुछुं. ज्यां माता अदेखाइनो मवेश थयो. त्यां हुं त्यरित हाजरी आपी मवेश करुछुं.

मुनियो पंडितो के जे अमृत सरखां वचन वदेछे तेना मुख-मांकी खराव वचनोरूी विष्टा कडाबुंछुं. जे मनुष्यो परपुरुषना

(२८२) कर्मराजा भने धर्मराजानुं युद्ध.

गुणनी मश्चंसारूप जळथी पोताना आत्माने पवित्र करेछे. ते पुरुषे। मारा वश्चमां थवाथी परनिंदारूप कर्मकादवधी तेओने मर्छान करुं छुं. निंदा चतुर्थ चंडालछे एम सर्व छोको जाणेछे छतां निंदा कर्या विना छूटको थतो नथी.

सामासामी एक बीजानी निंदा करावी परस्पर वैर कराबुंछुं, छडाबुंछुं, अने नरक निगोदमां जीवोने घसडी छेइ जाउछुं. छोको सर्वना करतां मने विशेष बळवान गणेछे, कारण के परस्पर एक बीजानी निंदा करवाथी एक बीजानां मस्तकोने पण दडानी माफ्क मनुष्यो उडावी देछे, माटे हे कर्मराजाजी!!! तमारी पुत्री छतां तमो केम चिंता करोछो.

आवां निंदानां वचन सांमळी अदेखाइ नामनी कर्मराजानी स्त्रीनो पुत्र कुसंप नामनो हतो ते बोलवा लाग्यो के—हे पिताजी मारा जेवो आपणा सुभटो छतां धर्मराजाना सुभटोनुं कंइ चाल-वानुं नथी. चार गतिना जीवोमां हुं व्यापी रह्याछुं, मारा सरखं कोइनुं बळ नथी, वकील वकीलने कुसंप, राजाराजाने कुसंप, सुनि सुनिन कुसंप, वेश्या वेश्याने कुसंप, भीखारी भीखारीने कुसंप, वेपारी वेपारीने कुसंप, क्तरा कृतराओने कुसंप. एम सर्व जीवोने मांहोमांहे कुसंप करावनार हुं छुं, हे कर्मराजाजी हुं कुसंप नामनो महायोद्धो हिंदुस्तानना रहेवाशीओमां पेटो त्यारथी हिंदुस्तानना लोकनी दुर्दशा थइ गइछे.

जयचंद्र अने पृथुराजने लडावी मारनार पण हुं हुं. मुसल मानोप दिल्लीनी गादी लीधी ते पण मारा मतापथी. कारण के ज्यारे हिंदुस्तानना राजाओंने मांहोमांहे कुसंप थयो त्यारे मुनल मानोप हिंदु राज्य सर कर्यु मोक्षमार्गमां चालनार साधुओंनो पण कसंप करावी कुमार्ग चलावनार हुं हुं ज्यां पेटो कुसंप त्यां

जरा नहि जंप, ए वचन हुं सत्य करुंछुं. कुसंपथकी मांहोमाहे मनु-ष्य खडेळे एक बीजानां मस्तक छेदेळे, एक बीजानी निंदा करेके, क्रोध, मान, माया अने लोभ पण ज्यां हुं कुसंपछं त्यां वासी करे छे, चोरासी ल ल जीवयोनीना जीवोने हुं अनादिकाळथी मारा वश्नमां राखुंछुं. हाल हिंदुस्तान देशनी नवली स्थीति करनार पण हुं छुं. ज्यां में प्रवेश कर्यो त्यांथी संप नामनो योद्धो पण पोबारा गणी जायछे, कोइ वखत कोइ देशमां वधारे रहुंछुं अने कोइ वस्तत कोइ देशमां थांडो रहुंछुं, जीवो विचारा संप करवाने घणी महेनत करे, कोन्फरन्स भरेछे, सभाओ स्थापेछे अने बीजाओने कहेछे, के भाइओ संप करो पग मारुं मूळ काढवुं घणुं मुद्दकेलछे, ज्यांथी कु-संप काढवानी तैयारी संप योद्धाओ।नी होय त्यां तो कुसंप भय-रहीत रहेळे. मोटा मोटा मुनिराजो भाषणो आपीने थाक्या पण मारुं मूल कोइ उखेडी अक्युं नहि. वखते मुनिओमां पण हुं छाग कोइने पेसी जाउंछुं अने मुनि मंढळमां पग क्रसंपनी सत्ता चलावुं छुं, जे जीवो मारा वशमां छे तेमने कष्टनी पूत्रळीनी पेठे चारगातिमां नचावुंछुं, मारी अदेखाइ माता विना हुं एकलो रही शकतो नथी.

अमेरिका इंग्लांड बंगरेमां कुसंप नथी तो ते लोको सुली के पण ज्यारे हुं त्यां पगलां भरीक्ष त्यारे ते लोकोना बार वगाडीक्ष, संपीने जीवो वर्ते ते मने साहं लागतुं नथी. नक्ला मनना माणस उपर हुं विशेष सत्ता चल बुं छुं. विशेष थुं. पर्वत उपर, रणमां, अपि विगरेमां हुं जीवोने मवेश कराबुं छुं. हे कर्मरानानी मारा नेवो पुत्र खतां आम कम चिंता करोछो.

आवं कुसंपनुंवचन सांभकी अदेखाइ नावनी तेनी माता सभा स-मक्ष भाषग करवा लागी के, हे मारा प्रागमिय तमो मारा छतां केम चिंता करोलो.

(१८४) कर्मराजा अने धर्मराजातुं बुद्ध.

अदेखाइ परस्पर कराववी ए मारो धर्मछे. गुणीना गुण देखी माणसो अदेखाइ करेछे. चारगतिना जीवोमां हुं आविर्भावे वा तिरोभावे वसुंछं.

वेपारी वेपारीने, राजा राजाने, वकील वकीलने, साधु सा-धुने हुं मांहोमांहे अदेखाइयी कर्मवंध फळ माप्त करावुंछुं.

मारा वश थएला जीवो तरक निगोदमां जइ दारुण भोगवेछे इत्यादि अदेखाइना वचन सांभली कर्मराजा खुशी थयो. तेवामां सभामां विराजमान मिथ्यात्व नामनो कर्मराजानो योद्धो बोली उठयो के, हे कर्मराजाजी मारा छतां आप केम चिंता करोछो. हुं मिथ्यात्व नामनो योद्धो संसारमां प्रख्यातछुं, कर्मवंध जीवोने करावनार मुख्यताए हुं छुं, मारी सत्ता संसारी जीवोपर सारी रीते बेठेलीछे. मारु मुख्य काम ए छे के, भव्य जीवोने शुद्ध देव शुद्ध गुरु अने शुद्ध धर्मनी श्रद्धा थवा देवी नहीं, कोइ विरला पाणी तीर्थकरनो कहेलो सत्य मार्ग जाणी शकेछे, जुओ में केटला जीवोनी एवी ता बुद्धि करी नाखी छे के ते बिचारा पंच महाभूत स्वस्थ जीवछे ते थकी अन्य आत्मा नथी एवं बिचारा मानी चार्वा किमतरूप राक्षसना मुख्यमां प्रवेश करेले

में केटलाक जीवोने एवा तो फसाव्याछे के— ते पामर जीवो जीव अनीव पुण्य पापने स्वीकारता नथी, मोक्ष मानता नथी. खाबुं पीबुं, हरबुं, फरबुं इत्यादि कार्यमां धर्म मानेछे—केट-खाक जीवोने एवा तो में फसाव्याछेके—अज्ञानपणामां मुख मानेछे. अने तेश्रो अज्ञानवादी भ्रभावेछेके—अज्ञानमां सुखछे ज्ञानथी राग द्वेष उत्पन्न थायछे. एम मानी पामर चतुर्गति संसारमां अनंतशः परिश्रमण करेछे.

वळी में केटलाक जीवोने एवातो फसाव्याल के- बौध धर्म

स्त्रीकारी पोताने सुखी मानेछे अने ते पामर प्राणी मारा पासमां थी छूटी त्रकवाना नथी.

वळी में केटलाक जीव ने एवी रीते फसाव्याछे के ते इशुए चढावेला इग्रुस्त्रीस्त धर्मरूप अन्याय कूपमां गाडरीया प्रवाहनी पेठे टपोटप कूदी पडेडे अने त्यां अत्यंत दुःख भोगवता सदा काळ जीवन गुनारेछे. वळी में केटलाक जीवोन एवा तो ग्रंझाव्याछे के बीचारा धनना, स्त्रीना, पुत्रना लोभमां तत्त्व मानेछे अने ते पोताना आत्मानुं हित साधी शकता नथी. वळी में केटलाक जी-बोने एवा तो फसाव्याछे के सत्य जैनधर्म पाम्या छतां पण तेमां शंकादिक करी आपगी सत्तामां वर्तेछे. वळी हुं तत्त्व समज्या जी-बोने पण मिथ्यात्त्रमां घेरुछुं. जेटला संसारमां मतमतांतर उत्पन्न थाय छे ते मारी सत्ताथीन थाय छे. संसारी सर्व जीवोने हुं मारा वश्वमां राखुं छूं. माराथी छडकी कोइ वीरपुरुष मुक्तिमां जइ शके छे. हं सर्व जीवोमां व्यापीने रह्योछं. इत्यादि मिथ्यात्व योद्धानां वचन सांभळी कर्मराजा हर्ष पाम्यो. तेवामां अविरात नामना मोहराजाना योद्धाए भाषण कर्यु के अरे सभाजनो हुं कोने संसारमां भटका-वतो नथी. चोथा गुणठाणा सुधी तो मारु स्त्रतंत्र राज्यछे देवता-ओ तथा नारकी जीवो तथा तिर्यंच जीवो मायः सर्वे मारा वश्नमां वर्ते हे. पनष्योमां पग आर्यजनो कोइ मारा झपाटामांथी बची गया हत्रे. आवुं अविरतिनुं बोलवुं सांभळी कषाय नामना योद्धो छाती ठोकीने बोली उठयों के, अरे ज्यां सुधी कषाय एवं मारुं नाम दुनियामां वियमानछे त्यां सुधी कोइनो भय राखवी नहीं, मारुं रहेडाण चौद राजलोकमां छे, हुं कोइ जीवने मुक्तिनगरीमां जवा देतो नथी, सर्व जीवो कषायना वश थइ पोतानुं आत्महित करतुं चुकेळे. सामासामी जीवोने हुं लडावी मारुं छुं एक बीनानां मस्तक कपाबुंछुं सामासामी वेर करावुंछुं, माता, पुत्र, क्षी विगेरनो निकट संबंध करावी आपनार हुंछुं संसारी जीवोने उपरना गुणठाणे प्रद्वा देतो नथी. संसारस्पी दृशनुं बीज हुंछुं. हुं अनादिकाळथी संसारमां वसुंछुं कोइपण काळे संसारमांथी मारुं रहेटाण द्र थवानुं नथी. आ प्रमाणे कपाय स्वभटनां वचन सांभळी कर्मराजा खुशी भयो. त्यारे योग नामनो सुभट बोल्यो के मारुं पराक्रम कोण नथी नाणतुं. हुं सर्व जीवोने पाप बंधावी चोराशी लाख जीवयोनिमां भटकावुंछुं हुं सूक्ष्म रीते दरेक जीवोने व्यापीने रहुंछुं हुं आत्मानी परमात्मादशा थतां विख्टो पहुंछुं, माटे हे कर्मराजाजी तमो जरा मात्र पण भय पामशो नहि. इत्यादि सुभटोनुं बोलवुं सांभळी कर्मराजाने जुससो चढयो. हिंमत आवी.

सर्व मुभटोने कर्म राजाए हुकम कर्यो के तमो इवे सर्व सं-सारी जीवोने वशमां राखो के जेथी धर्मराजाना मुभटोनुं कंइ पण चाली शके नहि. अने सर्व जीवोमां व्यापी संसारी जीवोने धर्म करतां अटकावो.

आवां कर्मराजानां वचन सांभळी सर्व सुभटो जुस्साभेर पोत

पोतानुं कार्य बजाववं तत्पर थया.

इवे आ वखते धर्म शुं करेछे ते कीचे मुजबः-

धर्मराजा

विवेकसभा, द्यामाता, घेर्यपिता, श्रांतिस्त्री, उपयोगमंत्री, सम-कितसेनापति, क्षमापुत्री, ब्रह्मचर्यपुत्र, क्षमादिधर्मनृपतिनासुभटो, सुक्तिनगरी.

एकदीवस धर्मराजा विचार करेछे के-अहो हुं सर्व जीवोने मुक्तिनगरीमां क्यारे छेइ जइक अनादिकाळथी हुं संसारी जीवोने मुक्तिपुरीमां छेइ जाउंछुं, तोपण अद्यापि पर्यंत पार आवतो नथी, कर्मराजाना सुभटो जीवोने एवातो सपडावेछे के-भाग्ये जावो मारा नगरमां आवी शके-सर्व जीवोमां कर्मराजाना सुभटो व्यापी रह्याछे. कर्म सुभटोए संसारी जीवोने एवी रीते अंध कर्याछे के-ते जीवो मुक्तिनगरीमां आववा इच्छा पण करता नथी. अरे हवे केम करवुं. आम धर्मराजा उंडो विचार करी चिंता करेछे.

त्यारे उपयोगमंत्रीए इंगिताकारथी जाणीने पूच्छयुं के हे प्रभो आज आप मोटी चिंतामां पडया होय तेम देखाओछो. ते चिंता शीछे ते कृपा करीने कहो—

एम उपयोग मंत्रीनी पार्थनाथी धर्म नृपतिए सर्व इकीकत कही। संभळावी—

त्यारे उपयोग मंत्री बोल्यो के—हे प्रभो मारा छतां आपने चिंता करवी घटे निह. विवेकसभा भरावी धर्मराजा निस्पृह सिंहा-सन उपर विराजमान थया. मुख्य उद्देशथी धर्म राजाए वातचर्ची अने कत्तुं के—हे सुभटो तमो आळसु थइ केम बेशी रह्याछो. कर्मराजाना सुभटो सर्व जीवोने भमावीचारगतिमां परिश्रमण करावेछे. सत्यमोक्षमार्गनी समजण पडवा देता नथी. तमो मारा खरा सुभटो होय तो कर्मराजानो नाश करी भव्यजीवोने मुक्तिपुरीमां छेइ जाओ आ मारी सभा समक्ष हितशिक्षाछे. आवां नीतियुक्त मिष्ट वचनाम्-तनुं अवण करी धर्मराजानो अनादिकाळनो उपयोग मंत्री गंभीर वाणीथी सभा समक्ष कहेवा छाग्या के—

हे धर्मनृपति, हुं निरंतर आपनी सेवामां हाजरछुं. ज्यां आप धर्मराजा त्यां हुं उपयोग अवस्य.

आपनो सर्व कारभार हुं करुंछुं. माटे कहेवायछे के-उपयोगे धर्म-उपयोगविना आप धर्मतृपति नथी. एम अनुवाद मसिद्धछे. हुं आविर्भावे तथा तिरोभावे आपनी साथे सदाकाळ जीवोमां वसुंछुं. (366)

कर्मराजा अने धर्मराजाने युद्ध

मारी शक्ति पगट थतां मोहादि शत्रुओ नाश पामेछे. जीवने क्षपक श्रेणि उपर हुं चढावुंछुं क्षपकश्रेणि चडतां कर्मशत्रुनो नाश थायछे. मोक्षपुरीमां पण पत्येक आत्मानी साथे भिन्नाभित्र स्वरूपे हुं वमुंछुं. माराथी दरेक आत्माओ स्वपरने जाणी शकेछे मारो नाश कोइथी थतो नथी. माटे हे धर्मराजाजी आप जरामात्र चिंता करशो नहि. आवां उपयोग मंत्रीनां वचनो सांभळी धर्मराजा खुशी थयो, त्यारे धर्मराजानीमाता दया सभा समक्ष बोलवा लागी के-हुं ज्यां सुधी विद्यमानछुं. त्यां सुधी कोइतुं कंइ चालनार नथी. हुं सर्व जीवोमां प्रथम वासकरुं छुं. हुं ज्यां छुं त्यां तारी हयाती छे. द्रव्य अने भावथी मारु वे प्रकारे वसवुं थायछे. दया, धर्मनी माता जगत्मां कहेवायछे. तुं मारो पुत्रछे हुं ज्यां छुं त्यां त्हारी हयाती कहेवायछे, माराथी हिंसा विगेरे कर्म राजानो परिवार दूर नाशेछे, सर्व पाणीयोमां थाडी घणी स्थीति करुंछं, अने मोक्षपुरी जीवो न पमाडुछं, माटे हे पुत्र सुखेथी राज्यधुरा धारणकरोः इत्यादि दयाना वचनो श्रवण करीधर्मराजाना मनमां धेर्य स्फ़र्यु. तेवामां धेर्य पिता धर्म पुत्र उपर स्नेहदृष्टि वर्षीवतां वचनामृतनो वरसाद वरसाववा लाग्यो हे धर्मपुत्र धैर्यथी तारी उत्पत्ति छतां तमे वे.म अधीरा बनोछो. कर्मशत्रुओ साथे हुं हिमतथी लडी जीवोने क्षपकश्रेणि प्राप्त करावी आपुंछं. हे धर्म तारा सुभटोने घैर्य आपुंछुं अने रणसंग्राममां कर्मनो पराजय करुंछुं, कर्मराजानी साथे युद्ध थायछे, अने तेना नगरमांथी अनेक जीवोने मुक्तिनगरीमां लेड जड़ए छीए. माटे धेर्य धारण करो त्यारबाद शांति स्त्री पोताना स्वामी धर्मराजाने नम्रतापूर्वक विनयथी कहेवा लागी के-हे स्वामिनाथ आप चिंता केम करोछो, मारो हुं धर्म सदाकाल बजाबुंछुं, हुं सर्व जोबोने मोक्ष नगरी तरफ खेचुछुं. सर्व जीव कर्वना आधीन थया छे तोपण मारी संगत करवा चाहेछे. हुं तेमने शांति मेळववा लक्ष-

चावी कर्म प्रपंचथी दूर रहेवा वारंवार मनोद्वारा कहुं हुं जे जीवो संसारनी हवाथी दूर रहेछे अने संसारने बळता अग्नि समान गणेछे ते जीवोमां हुँ वास करुंछुं अने ते जीवोने शाश्वतपद भाप्त करवामां स्हायी बनुंछुं. घणा जीवो मारी स्हायथी मुक्तिनगरीमां गया जायछे अने जर्जे. माटे आप निश्चित रहो, त्यारबाद सकल धर्म सेनानो उपरी " सम्युक्त सेनापति" धर्मराजाजीने नमन करि मधुरवाणीयी सभाजनने आश्चर्य पमाडतो कहेवा लाग्यो के हे धर्मराजाजी आपनी सेनानो हुं उपरीछुं. मारो वास सकळ भव्या-त्माओमांछे. पारा विना कर्पना राजा योद्धाओ रणभूमिमांथी पाछा हठता नथी, सकळकर्प सैन्यनो हुं नाज्ञ कहंछुं. जे आत्मामां हुं उत्पन्न थाउंछुं त्यांथी मिध्याल योद्धो नाज्ञी जायछे. पछी भन्यात्मा सरळ-ताए गमन करतो छतो मुक्ति नगरीमां पहोचेछे. मिथ्यालनो नाश करवो एन मारुं मुख्य कामछे. जे जीवो मिश्यातना जोरे दुनीया परमेश्वरे बनावीछे, पाछो प्रलयकालमां दुनीयानो नाज्ञ थायछे पर-मेश्वर जीवोने सुख दुःख आपेछे एम मानी चारगतिमां भटकनारा जीवोने सुखदु:ख आपेछे ते जीवोनो दुं उद्धार कहंछुं. हुं ते जीवोगां वास करी तेमनी सारी बुद्धि करुंछुं परमेश्वर जगत्नो बनावनार नथी, जगत अनादिकाळथीछे जीवो सर्व परमात्मा सद्दशछे, कर्मना-योगे जुदी जुदी गतिमां भमेछे जीवोने कर्म अनादिकाळथी लाग्युंछे. जीबो अनंतछे अनादिकाळथीछे कर्प नाश थतां जीवनी मुक्ति थायछे. आ प्रमाणे जीवोनी सारी बुद्धि करी मिथ्यालनो संग दूर करावी मोक्षनगरीतरफ गमन कराबुंछुं. केटलाक जीवो मिथ्याल योद्धाना संसर्गे ब्रह्म ब्रह्म स्वीकारी अन्यने माया तरीके कल्पी भवब्रह्मांडमां भटके छे. तेमने हुं शुद्धश्रद्धा अपि आत्महितार्थे आत्मा अने तेने

(\$40)

कर्मराजा अंग धर्मराजानं शुद्ध.

भटकावनार कर्षके एवी श्रद्धा कराबी कर्प नाश करवा तरफ ते जीबोनी इचि लक्षुंलुं. वळी हुं इयु-परमेश्वरनो दीकरोछे तेने सेवो ते तारके उत्यादि भ्रमपाशमां फसाएला जीवोने विवेकचश्च आर्प सत्य मोक्षमार्ग देखाडी आत्मतत्त्वतं भान करावी शह बुद्धिथी परमात्मपद भाप्त करे तेम योजुलुं, वळी हुं केटलाक जीवोने आत्मा भणिकछे. भणमां भणमां जुदो जुदो आत्मा उलक् भाषायछे. एम माननारा जीवोत्रं मिथ्यात्व संहरी सत्यमति अर्थी आत्मा भणिक नथी. आत्मरूप व्यक्तिनो नाज्ञ थतो नथी क्रेयना पलटवे क्रानतं पलटाववुं थायछे तेथी आत्मामां थतो उत्पाद व्यय तेनी अपेक्षाए पर्या-यार्थिक नयमते आत्मा अनित्यछे एम सम्यक्ष्वोध जीवने अर्पुछं अमे द्रव्याधिक नयनी अपेक्षाए आत्मा नित्यक्षे एम शुद्धबोध समर्पी भन्य जीकोने मुक्ति नगरी दुःपाप्या पाप्त कराबुंछं. वळी हं केटलाक जीबो क्षिष्ठपात्व सुभटनो संग पामी पंचभूत विना व्यतिरिक्त आत्मा नथी एम स्वीकारीछे तेवा जनोने शुद्ध श्रद्धा सद्गुरु संगे करावी आ-त्मा पंचभूत थकी न्यारोछे मुख दुःख भोक्ताछे कर्मनो कर्ताछे एम सम्बद्भत्व रत्न अपीं मोक्ष मार्म वाही करुंछुं. बळी जे जीवो नित्य एकांत आत्मतत्व मानी आत्माने कर्मबंध स्वीकारता नथी आत्माकर्मनो कर्ता नथी अने भोक्ता नथी इत्यादि वक्ताओने पण अपेक्षाए सत्य समजाबुंद्धं कर्मनो कर्त्ता अने भोक्ता आत्माछे, आत्मा एकांत नित्य नथी एकांत नित्य वम्तु आत्मा जो होय तो पछी नाना विध क्षरीरमां वक्षनारा जीवो सुखी दुःखी अवस्थावाळा देखायछे ते केन बनी शके, माटे आत्मा एकांत नित्य नथी, जो एकांव नित्य आत्मा मानीय तो पछी शिर्षमुंडन व्रतारोप विगेरे पण शा कारणथी करवं जोइए. माटे आत्मा स्वव्यक्तिश्री

वस्मात्मदर्शन

(231

पर्यायना पलट्ये करी अनित्यक्ते नित्य अने अनित्य एवं पर्यायां आत्माक्ते. तेने कर्म लागेक्ते कर्मपण मिथ्यात्व अविरित्त कषाययंगे करी लागेक्ते ए कर्पनो नाश यतां आत्मा परमात्मपद माप्त करेक्ते ए आदि शुद्धशान अपी साध्य मित्रपदार्थे जीनोने मेरु छं अने स्वत्व रूपने माप्त करा बुं हुं केट लाक जीनो स्त्री पुत्र धन आदियी पोताने सुखी माने के ते जीनोनी दृश्य क्षणिक पदार्थोमां थे। सुस्वनी बुद्धि दूर करी अदृश्य आत्मतत्त्वमां ज सुख छे एम शुद्ध नोध देह आ क्षणिक पदार्थोमां मिथ्या भ्रा थतो दूर करा बुं छुं अने काम क्रोध लोभ भय हास्य स्रोक विगेरेथी जीनोने पृथक् करी स्वस्व रूपे निष्ठा करा बुं छुं.

अहितमां हितबुद्धि अने हितमां अहित बुद्धिरूप जे मिध्याइ न तेनो हुं नाम करुं दुरेक जीवोने हुं सम्यक्षान अपुँछुं एम अनंता जीवोचुं भूतका छे मुक्ति पति लक्ष दोर्यु अने वर्तमानकाळे लक्ष दोरुं अने भविष्यकाळे दोरीम हुं दरेक जीवष्यक्तिमां वसुछुं मिध्यात्व सैन्य मारायी ना भाग करे छे. जेम मूर्यनो उदय धतां अंधकारनो नाम था। छे अने ते अंधकार क्यां गयो! तेनी जेम मालूम पहती नथी तेन मूर्यसम मारा मकामथी मिध्यात्व भःगी जायछे हुं भव्य जीवामां सदा वसुंछुं. सम्यक्त्व विना कोई माणस मुक्ति पामी मकतो नथी कर्यराजानुं सैन्य माराथी दूर नासे छे माटे हे धर्मराजाजी! तमो मुलेथी निश्चित रहो आ प्रमाणे सम्यक्त्व सैन् नापति वद्या बाद धर्मराजानी क्षमा नामनी पुत्री सविनय पितान् जीने वमन करी मधुर भाषाए कहेवा लागी के हे धर्मिताजी हुं एक आपनी नानी पुत्रीछुं आपनी पवित्र सेवा हुं दरेक आत्माओमां दिश्वति करती बजावुंछुं. हुं अनारिकाळथी भव्य जीवोमां वसुंखुं के हुं (232)

कर्मराजा अने धर्मराजानुं युद्धः

व्यवहारे करी द्रव्यक्षमा भावक्षमा उपकारक्षमा अपकारक्षमा इत्यादि रूपांतर करी ओळलाउछुं. तीर्थकर महाराजाए मुक्तिमार्ग मरूप्यो तेमां मने यतिना गुणोमां मुख्य करी स्थापीछे पुर्छिगताथी ओळ-खातो क्रोध नापनो सभट माराथी नाश पामेळे.अनेक कर्मना यो-द्धाओं माराथी समुला नाश पामेले जे जीवोगां मारो वासले,त्यां क्रोध अहंकार अदेखाई हिंसा विगेरेतुं जोर चालतु नथी दुनीया-मां हुं सत्पुरुषोमां वास करुंछुं. अने माराथी दरेक जीवो प्रतिष्टा पामी कर्पटळ हणी क्षपकश्रेणि पाप्त करी सम्यक्त्व सेनापतिद्वारा म्रक्तिप्ररीमां सुखे पहोचेछे.मुक्तिनगरीमां जवानी इच्छावाळा पहेलां मारुं सेवन करेछे अपराधी जीवोपर गुस्से थता नथी अने तेमना अपराधो माफ जीको करेछे ते पण मारा बसादथीज समजवं क्षणा थकी जीवो ज्ञान्तिने पामेछे क्रोधनो नाश थायछे दरेक जीवो जपर दयाना आईभाव थाय छे. परस्पर जीवोना वैर विरोधने हं टाळुंळुं. दरेक मनुष्यनुं मसन्नमुख राखुंछुं. अने मुक्तिनगरीमां जना माटे माराथी बने तेटलं अवस्य कहंतुं.मारी स्हायथी अनंता जीवो म्रक्ति गया. जायछे अने जशे. माटे हे पिताजी! तमो हर्षाओ अने शोक त्यागो आ प्रमाणे क्षमा पुत्री बोलीने तुष्णीभावने पामी बाद झान नामनो महाबलवान् राज्यधुरावाही यथायोग्य विनयपू-र्वक िपतानीने नमन करी हर्षचित्ते यसनवदने गंभीर वाणीशी सभाने चमत्कृति पमाडतो बोलवा लाग्यो के-हे पिताजी! अने हे सभाजनो ! हुं धर्मराजानो पुत्रछुं एम आ बाळगोपाळ सर्व जगत्नि-बासीओ जाणे छे.पारुं बळ केटलुं छे ते कंड विशेष स्वमुखे कहेवाथी शुं ? तोपण इंस्वफरनो केवी रीते अदा करुं हुं ते सभा समक्ष निवेदन करुंछुं, हुं दरेक जीवोमां आविभीवे करी वा तिसेभावे करी स्थिति करुंखुं हुं अनादिकाळथी आत्मव्यक्तिओमां वसुंखुं, क्कानावरणीय कर्मना घणा जोरथी पण नरकानगोद तिर्यचादि भ-बोमां हुं समूळ नाश पामी शकतो नथी. तेम हुं पण जेमां सदा-काळ रहुं छुं. एवुं आत्म व्यक्तिरूपस्थान असंख्य प्रदेशी कदापि नाश पानी शकतुं नथी. तेम आप पण आत्मस्थानमांथी नाश पामना नथी. काल लिबियोगे हुं ज्ञानावरणीयादि कर्मने हटावतो मारूं श्रद्ध स्वरूप तथा आत्मानं श्रद्ध स्वरूप समजी कर्मनो नाश्च करूंछं. आकाशस्थित सूर्यमकाशधी मत्येक वस्तुओ स्पष्टपणे भासे छे. तेप मारी शक्तियी लोकालोक स्पष्टपणे भासे छे. हुं प्रत्येक वस्तुओनुं यथातधा स्वरूप जाणुंछुं अने मारी सत्ता थया बाद कर्पना सुभटोनो समूलथी नाश करुछुं, कर्प आठ प्रकारनांके. १ ज्ञानावरणीय, २ दर्शनावरणीय, ३ वेदनीय, ४ मोहनीय, ५ आयुष्य, ६ नामकर्म, ७ गोत्रकर्म, ८ अंतरायकर्म. ए पूर्वीक्त कर्म रागादिक योगे आत्मा आकर्षेत्रे. कर्भ जडले, चतुर्गति भ्रामककर्म छे. जगतुमां आत्माओ अनंताछे मत्येक आत्मामां अनंति शक्ति रही छे, शाश्वत, अज, अमर, निर्लेष, निस्संग आत्मस्वरूपछे.

जीव तथा अजीव तत्वने हुं जाणी शकु छुं. हुं व्यवहारे करी
मितिज्ञान २ श्रुतज्ञान ३ अविधिज्ञान ४ मनःपर्यवज्ञान ५ केवलज्ञान
आदि रूपांतरो पामुं छुं. मारू शुद्ध स्वरूपतो केवलज्ञान रूपछे.लोकालोकतुं स्वरूप पण हुं जाणुं छुं. कर्मनो नाश पण हुं करूं छुं.
स्यादाद धर्म आत्मामां रहेलोछे तेपण माराथी जणाय छे. मिध्यात्व ते पण हुं जाणी तेनो त्याग करी आत्माने कर्म थकी छोडा हुं
छुं. मिध्यात्व,अविरिति,क गाय,अने योग पण मारी पवल सत्ताथी
बासे छे इच्छा, मोह, माया, क्राम, क्रोध, लोभ, पण मारा ने नाज्ञ

(१९४) कर्मराजा अने धर्मराजानुं युद्ध

पामे छे हुं पोतानो पण पोतानी मेळे प्रकाश करू छुं माटे लोको स्पंनी उपमा मने आपे छे, कर्म रिपु सकळ सैन्यनो हुं कल्पांत काल वायुनी पेठे क्षणमां नाश करू छुं. में अनंता जीवोने मुक्ति नगरी माप्त करावी, करा बुंछु, ने करावीश, माटे हे पिताजी! मारा बेहा आप चिता करो ते अनुचित छे, आ ममाणे झानपुत्रे भाषण कर्युं. त्यारबाद ब्रम्मचर्यनामनो धर्मराजानो पुत्र महा पराक्रनी मह्याति पामेल सविनय पिताजीने नमन करी गंभीर वाणीयी बोल्यो के आ दुनियामां ब्रम्मचर्य नामे करी हुं प्रसिद्धताने पाम्यो छुं.

परस्पर मैथुन संबंधनो हुं त्यांग करावुं हुं अनादिकाळथी जीनोमां नास करुं छुं ज्यां मारो निरित नामनो नेता वसे छे तेनी साथे हुं पण वसुछुं. ज्ञान तथा नैराग्य मित्र मने साहाय्य आपे छे. नविष्य ब्रम्चर्थ गुप्ति धारक जीनो कामनो पत्रक्रमां पराजय करे छे. मारा वासथी मत्येक मनुष्योना श्वरीरनी आरोग्यता हिंद्ध पामे छे, धर्म कृत्यमां धैर्यता मेरक हुं छुं. सर्व व्रतोमां समुद्रनी उपमाने हुं धारण करुं मारा वासथी मनुष्यो वचन सिद्धि कीर्तिमान अष्ट सिद्धि आदि माप्त करे छे. मोहादि शत्रुओ पराङ्मुख थायछे. आसक्र भव्य जीनोमां हं निशेषतः वास करुं हुं, मार अवलंबन करी अनंत जीनो मुक्ति गया जायछे. अने जशे, माटे हे पिताजी! आप चितात्यागी धैर्य धारण करो अने सर्व मुभटोने धैर्य आपो.

आम ब्रह्मचर्यना कथन पश्चात् संवरसंज्ञक महारिथ योध शीर्य बाणीथी सभा समप्त बोल्यो के-हे धर्म राजाजी! हुं सत्तावन रूप करी कर्मारिनो समूलतः नाञ्च करुछुं जे छिद्र द्वारा कर्म सैन्य जीवोमां प्रवेशेष्ठे ते छिद्रोनो हुं रोध करुछुं. तेथी कर्म सैन्यतुं कंड् चालतुं नथी, मन वचन अने कायाना व्यापारो जे अथुद्ध परिण-तिमां परिणम्याछे तेनो हुं नाज्ञ करुतुं.

मारी हयानीमां पाप अने पुण्य आत्माने लागी सकतां नथीकर्मनो पराजय करी क्षपक श्रेणि उपर चढावी त्रयोदसम गुणस्था
नक माप्त करावी मिक्त नगरमां प्रवेश करावुंछं मारो वास पंचेदित्र
गर्भज मनुष्योमां विशेषतः आविर्भावेछे. क्रोध, मान, माया, लोस,
अने हास्यष्टकनो त्वरित नास कहंछुं. अर्वध्यान अने रौद्रध्यान
रूप योद्धाओनो हुं क्षणमां नास कहंछुं. कृष्ण लेक्या, कापोत लेक्या,
नील लेक्या, विगेरेनो समूलतः नास कहंछुं, आत्मानो हुं शुद्ध स्वभाव अर्पुछं, कर्म रहीत करी जीवोने सित्रस्थान मित मो कलवानुं
हुं कार्य बजावुंछुं, मारा अवलंबनथी अनंतजीवो मिक्तपद पाम्या अने
पामसे, पण अभन्न जीवोने हुं मिक्तपद पमाडी सकतो नथी. निरुपाधिमय मारो स्वभावछे, माराथी कर्भसत्तु थरथर धुजेछे. ज्यां मारो
मवेस त्यां उपसम विवेक विनय सांति विगेरेनो मचार थायछे, इत्यादि वाणी वदी संवरयोद्धो तुष्णीभाव पाम्यो त्यारे निर्वरानामने
महायोद्धो विनयपूर्वक धर्मराजाने नमन करी बोल्या के-हे धर्मराजाजी! आप सेवकनी वाणी मसन्नचित्तथी सांभळो. हुं आपनो योद्धोछुं

हुं आपनुं कार्य सदाकाल बजावं छुं, बाह्य अने आभ्यंतर एवं रूपां-तरने हुं पाग्रुं छुं अनंतकर्मनो नाश हुं क्षणमां करुं छुं. निकाचित कर्म पण माराथी क्षय पामेछे आत्माओमां मारुं रहेवानुं स्थानछे. काष्ट्रस-मूहने जेम अग्नि बाळी भस्म करेछे तेम कर्मरूप काष्ट्रसमूहने पण हुं बाळी भस्म करुं छुं. तद्भव मुक्ति पामनार तीर्थकरो पण मारो आश्रम करी कर्म नाश करे छे. नरसुरपद्दीओनां सुख पण मारा आरुं-वनथी पमायछे, माराथी मनुष्यो अष्ट्रसिद्धि अने नवनिधि पाम करेछे. (494)

कर्मराजा अने धर्मराजानं युद्धः

पण याद राखवुं के जे जीवो मने सेवेछे. तेओनां क्रोध, छिद्र देख्या करेछे. अकाम अने सकाम ए वे भेदे मारु मवर्तनछे. चार इत्या-कारक जीवोनो पण माराथी उद्धार थायछे. अनंताजीवो कर्म क्षपावी सिक्तपद पाम्या अने पामशे तेमां मारो प्रभाव जाणवो. माटे हे धर्भ-राजाजी! आप खाध्य थाओ. आपणुं सैन्य एवंतो बळवान छे के त्यां कर्मराजानुं कांइ चाळवानुं नथी.

आ प्रमाणे धर्मराजाना सुभटोए पोतपोतानुं पराक्रम वर्णव्युं. त्यारे धर्मराजा अत्यंत हर्षायमान थयो अने मनमां समझ्यो के मारु सैन्य मबलके.

आ प्रमाणे अत्र धर्मनृपनी सभामां हत्तांत चालेले त्यारे कर्म-राजानी सभामां ते प्रमाणे धामधूम चाली रहीले. पिथ्या चेतना नामनी कर्म राजानी दासीए कर्मने धर्मनी सभामां बनेली सर्व ह-कीकत कही. त्यारे सम्यक् चेतना दासी धर्मनी अग्रे कर्म नृप सभा-मां बनेली सर्व हकीकत कही. परस्पर युद्ध कार्यनी सर्व सामग्रीओ तैयार थवा लागी. धर्मनृपे पोताना सुभटोने कहांके—मारा पिय सुभ-हो ! तमो शत्रु सैन्यनो पराजय करो, मारुनाम अमर राखशो, वळीत-मारा जेवा श्र्रा सुभटोनुं पराक्रम रण संग्राममां मालुम पडशे. माटे चतुराइथी युद्ध करनुं.

ते प्रमाणे कर्म राजाए पण सर्व सुभटोने वीर रसनां वाक्यो कथी शुर चढाव्युं. सुभटो पण परस्पर पराक्रम बताववा आतुर थइ रह्या-परस्पर युद्ध चाल्युं तेमां श्रद्धा रूपी सुभटे मिथ्यात्व रूपी योद्धाने इराव्योः समिकत रोनापतिए मोह प्रधाननी शक्तिनो नाश कर्यो, क्षमा पुत्रीए क्रोधनो नाश कर्यो, जीव चोथा गुणटाणा आदि गुणस्थानक चढवा लाग्योः विरतिए अविरतिनी शक्ति नाश करी.

ज्ञाने अज्ञाननो नाज्ञ कर्यो. दयाए हिंसानो नाज्ञ कर्यो, शां-तिथी तृष्णा नाश पामी. कर्म राजानुं सैन्य नाश पामतुं पाछुं इठवा लाग्युं. ब्रह्मचर्य पुत्रे अब्रह्मचर्यनो सर्वथा नाज्ञ कर्यो-परगुण पर्शसाए निंदानो नाज कर्यो जाने कवायनो पण स्थिर परिणामने साहाय्य आपी नाज्ञ कराव्यो. धर्म ध्यान रूप योद्धाए आर्तध्यान अने रौद्र ध्याननो नाज्ञ कर्योः संतोषे हुण्णानो नाज्ञ कर्यो आयिक सम-कित पामी जीव स्वस्वभाव शक्ति पामी आत्म रूप प्रकाशवा लाग्यो. हास्य, रति, अरति, भय, शोक, दुगंछा, स्त्रीवेद, पुरुषवेद, नपुंसक, वेद रूप कर्म सैन्यनो नाश अवमाद तथा ध्यान योद्धाए कर्यो. पंच पकारनी निद्रानो तथा चन्नु दर्शनावरणी आदिचारनो तथा ज्ञाना वरणीय कर्पनो तथा अंतरायनो नाज उपयोग मंत्रीनी साहाय्यथी शुक्रध्याने कर्यो. आत्मा तेरमे गुणठाणे जइ अनंत चतुष्ठयथी शो-भवा लाग्यो. अंते अघाती कर्मनी प्रकृतिनो पण नाश करी मुक्ति परीमां गयो. एम धर्म राजानो जय जयकार थयो अने कर्म राजान सैन्य नाश पाम्युं. आत्मा परमात्म दशा पामी निर्भय थयो. अनंत जीवो एम कर्मनो नाश करी मुक्तिमां गया अने अनागत काले अ-नंत जीव मुक्तिमां जशे. कर्मनी नाश उपयोग दशाए अनंता जीवो करेछे अने करशे. जीव कर्मनी नाश करती क्षायिक भावनी नव-लिधयो पामेछे.

क्षायिक भावनी नव लब्धियोनां,नामः

१ श्लोयिकसमिकित, २ श्लायिकचारित्र, २ अनंतज्ञान, ४ अनंत दर्शन, दान, लाभ, भोग, उपभोग अने वीर्य ए रीते नवल-ब्धियोनी पाप्ति गुणठाणानी हद प्रमाणेळे.

हवे संबंध दर्शावतां कथायछे के उग्रमथी कर्मनो क्षय थायछे. उपश्मभाव क्षयौपश्मभाद अने क्षायीकमावनी माप्ति पण उग्रमथी

थायछे. ज्ञासाभ्यासनी उग्रम करतां पंचमकारे स्वाध्याय करतां ज्ञानावरणीयकर्मनो क्षयोपञ्चम थायछे. तेम पत्येक घातीकर्मनो नाच उग्रमथीछे. धर्मध्यान अने श्रद्धध्यानरूप उग्रमथी ज्ञानीओ कुत्स्न कर्मनो क्षय करेछे. चारित्रनो लप करतां चारित्र मोहनीयनो पण नाज्ञ थायछे. माटे पंचमकाळमां पण भन्यजीवोए पुरुषार्थ क-रवो. प्रस्वार्थना पण अनेक भेदछे. माटे सत्यप्रस्वार्थ प्रद्वो जोइए. समिकतनी प्राप्ति विना सबळी परिणति थती नथी. अने समिकत विना प्ररुपार्थ निष्फल जाणवो. समिकत मोक्षनगरत्रं द्वारछे. सम-कितविना कोइ जीव मोक्षमां गयो नथी. अने जवानो नथी. सम-कित विना ज्ञानावरणीय कर्मनो क्षयोपशम पण अज्ञान तरीके छे-खायछे. एटले मतिज्ञानावरणीय कर्मनो क्षयोपश्चम तरीके गणायछे. श्रुतज्ञानावरणीय कर्मनो क्षयोपश्चम श्रुतअज्ञान त-रीके लेखायले. अने अवधिज्ञानावरणीय कर्मनो क्षयोपशम विभंग बान तरीके गणायछे. अने ज्यारे समिकतनी प्राप्ति थायछे त्यारे तेनो क्षयोपञ्चम सवळो परिणमेछे. अने ते मतिज्ञान श्रुतज्ञान अव-धि ज्ञान तरीके गणायछे. समिकत विना अभव्य जीव सक्ति पामतो नथी. बाह्य चारित्र पाळीने अभव्य जीव नवग्रैवेयक पर्यंत जायके किंतु समिकतिवना भावचारित्र पामी शकतो नथी अने तेथी ते चतुर्गतिमां पुनः पुनः परिश्रमण करेछे, समिकतनो महिमा अपूर्वछे, पंच प्रकारना मिथ्यालनो नाश थवाथी समकितनी उत्पत्ति थायछे. पंच मकारना मिथ्यालनो नाश जिनागम सांभळवाथी थायछे, सद्-गुरुनी श्रद्धा भक्तिथी उपदेश श्रवण करतां मिध्यात नाश पामेछे. समिकतनी प्राप्ति माटे आगळ पट्स्थानक कहैवामां आवशे. समिक-तना पंचप्रकारछे.

? जुज़्जाम समिकत, २ भवोपशमसमिकत, ३ भाविकसमिकत,

४ वेदसम्कित, ५ सास्वादनसमिकत, अनंतानुवंधी क्रोध, मान, माया अने छोभ तेमज समिकत मोहनीय मिश्र मोहनीय, मिध्यात्व, मोहनीय ए सात पकृति सर्वथा क्षय थतां क्रिशायिक समिकतनी माप्ति थायछे.

श्री जिन वचनज तत्त्वरूपछे बीतराग होवाथी एम सामान्य रूचिवाळा जीव ने द्रव्य सम्यक्त्व पणुं स्फुट थायछे. अने नय निक्षेप प्रमाणना विचारयी तत्त्व श्रद्धावाळा जीवने भाव सम्यक्त्व पणुं स्फुट थायछे आहें द्रव्य शब्दार्थ कारणता अने भाव शब्दार्थ कार्यता रूप जाणवो एम श्री हरिभद्रसूरि कहेछे.

श्री उत्तराध्ययन सूत्रानुंसारे दश्विध सम्यक्त्व कहेछे.

- १ सत्य अर्थनी साथे संमितवडे जीवाजीवादि नव पदार्थ संबंधी जे रुचि ते निसर्ग रुचि जाणवी.
- २ परोपदेशवहे प्रयुक्त जीवाजीवादि पदार्थ विषयनी जे श्रदा ते उपदेशक्वि कहेवायछे.
- र रागद्देष रहित एवा पुरुषने आज्ञा वडे धर्मानुष्टानमां रुचि थाय तेने आज्ञारुचि समिकत कहेवायछे.
- ४ मूत्रना अध्ययन तथा अभ्यासथी उत्पन्न थएला विशेष ज्ञान वढे जीवाजीवादि पदार्थना विषयमां रुचि थाय तेने सूत्र रूचि समिकत कहेछे.

सूत्र रूचि उपर गोविंदाचार्यनुं दर्शत जाणबुं.

- ५ एकपद वडे अनेकपदतथा तेना अर्थना अनुसंधान द्वारा जलमां तेलना बिंदुनी जेम रुचि मसरि जाय तेबीजरुचि सम्यक्त्व कहेवायछे.
- कि जोने सर्व सुत्रता अर्थतुं ज्ञान उत्पन्न थाय ते अभिगम किंव सम्यक्त कहेवायके. त्यारे अत्र श्वेका यशे के अभिगम किंव

(३••)

अने सूत्रमां शोफेर-प्रत्युत्तरमां समजवातुं के आ अभिगम रू चि अर्थ सहित सूत्रना विषयमां आवेछे. अने ते सूत्ररुचि केवळ सूत्रना विषयमांज आवेछे एटलो ते बन्नेमां भेदछे. केव-ळ सूत्र मूळ कथायछे.

- असर्व प्रमाण तथा सर्व नयथी उत्पन्न थएल सर्व द्रव्य अने सर्व भावना विषयनी रुचिने विस्तार रुचि सम्यक्त्व कहेवा-यक्ठे तथी विशेष लाभ प्राप्ति थायळे.
- ८ ज्ञान, दर्शन, चारित्र, तप अने विनय वैयाद्यत्य आदिना आच-रण संवंधी रुचि ते क्रियारुचि कहेवायछे.
 - ९ जेणे कुद्षिनो अभिग्रह कर्यो ना होय अने जे प्रवचनमां प्रवीण न होय तेवा पुरुषने मात्र निर्वाण पद संबंधी रुचि ते संक्षेप रुचि जाणवी जेम उपशम संवर अने (विवेक आ त्रण पदनी रुचि चिलाती पुत्रने थइ हती तेम समजवुं.
- १० धर्मपद श्रवणयी उत्पन्न थएली जे धर्मपदवाच्य संबंधी रुचि ते धर्मरुचि कहेवायछे.

समिकतरत्ननी प्राप्त दुर्लभछे—समिकत पाम्या पश्चात् संसार समुद्र चुलुक प्रमाण समजवो. आ संसारचक्रमां अनंतशः परिश्व-मण करी अनंतवार अनंतदुःख पाम्यो. अनेक देहो धारण करी. प्रत्येक भवमां अनेक दुःख भोगव्यां. जन्म जरा मरणादि दुःखोनो भोक्ता घणीवार थयो. पण पार आव्यो निहे. जीव पुनः पुनः परस्वभावमां रमण करी कर्म ग्रहेले. आत्मस्वभावमां रमण करवाः थी कर्म नाश पामेले. कम्मपयदी आदि ग्रंथोमांथी विशेष स्वरूप ज्ञाणवं. कर्मनो नाश करी मोक्षनगरमां जवानी इच्ला होय तो अनुभव झाननो खप करो. मितश्चत झाननं उत्तर भावी अने केवलझानचु पूर्वभावी अनुभवझानले. दृष्टांत जेम सूर्य केवलझानले

अने स्पीद्य थतां प्राक्त जे अरुणोद्य छे ते दृष्टांते अनुभवज्ञान जा-णवुं. अनुभवज्ञान साक्षात् परमात्मपदनी प्राप्ति करावेछे. भव्य-जीवो अनुभवज्ञानथी जाणेछे. अनुभवज्ञान साक्षात् सूर्य समानछे. शास्त्रोनुं अध्ययन करतां, ध्यान करतां अनुभवज्ञाननी प्राप्ति थाय छे. अनुभवज्ञानीओ उपयोग पोताना आत्माना असंख्यात प्रदेशे स्थापी पुद्गळवस्तुमां उघछे. मारो शुद्ध आत्मस्वभाव तेज मारुं धनछे. बाकी आ बाह्य देखातुं धन मारु नथी. एम भिन्नता पाडी शुद्ध गुणमां परिणमेछे अनुभवज्ञानी सिद्धांतनो सारुष्ठप मकरंद पीवेछे. अनुभवज्ञानी समता भ्रवनमां सदा सुखमां म्हालेखे. अरूपी आत्माने दृष्टिगोचर करवानुं स्थान अनुभवज्ञानछे माटे सम्यग् ज्ञानना अर्थी जीवोए पुनः पुनः सत्शास्त्र अने सद्गुरूनो परिचय करी अंतरृदृत्ति करी बाह्यदृत्तिनो त्याग करवो.

कह्यं छे के-

बाह्यहत्तिए गुणठाणे चढवुं, ते तो जडना भांमाः संयमश्रेणि शिखरे चढावे, अंतरंग परिणामारे. लोका भो-ळवीया मत भूलो. १

ए उपरथी सार लेवानो के-बाह्यह ित नाम बहिरात्मदशाथी
गुणस्थानके चडवुं एम तो जडजीवोनी भ्रमणाले, अंतरंग परिणामरूप
अंतर्हित्त संयमश्रोणना शिखरे चढावेले. माटे भव्य लोको भोळवीया
तमे भूलो नहीं सत्य तत्त्वमां रूपण करो. अने ध्याननी इच्छा करो।
आत्मगुणनी विचारणा करो. आत्माना स्वभावमां ज्ञान, दर्शन,
चारित्र, वीर्यादि अनंतगुणले, वळी गुण गुण मति भिन्न भिन्न
स्वभाव आत्मामां रह्याले, ज्ञाननो जाणवारूप स्वभाव, दर्शननो देस्ववारूप स्वभाव, चारित्रनो स्थिरतारूप अने वीर्यनो स्फुरणा
शक्तिरूप स्वभाव एम अनंतगुणो आत्मामां तिरोनात रह्याले पण

उपस्थिति.

शक्तिभावथी आत्मानुं कार्य सरे निर्ह. जेम अरणि काष्ट्रमां शक्ति-भावे रहीछे पण अरणिना काष्ट्रने बाथ भीडवाथी टाढ नाश पामे निर्ह ते दृष्टांतना अनुसारे शक्तिभावे रहेलो आत्मानो धर्म ज्ञानथी जा-णी वीर्यथी पगट करीए तो चतुर्गीतनां अनंतशः जन्म जरा मरण टळी जाय. आत्माना गुण पर्यायनुं व्यक्तिरूपे पगटवुं तेज स्वभाव लाभ जाणवो.

प्रश्न-घातीकर्मनो नाश शावडे त्वरित थाय.

उत्तर-ज्ञान अने ध्यानथी प्रमादना त्यागपूर्वक आत्मोषयोगे स्थिरताथी कर्मनो नाज्ञ थायछे. पर्वतनी गुफामां निविद्य अधकार होयछे तेनो नाज्ञ दीपकथी थायछे तेम अज्ञान तथा कर्मनो नाज्ञ पण आत्मज्ञानथी थायछे. मोटी तणनी गंजी पण अग्निना स्वल्प कणीयाथी नाज्ञ क्षणमां पामेछे तेम अनंत भवोपार्जित घातीकर्मनो नाज्ञ पण आत्मज्ञानथी स्वल्पकाळमां यायछे. श्रीपाळना रासमां देशनानी ढाळमां कर्षु छे के-

श्री वजय उपाध्याय.

क्षण अर्थे जे अघटले, तेन टळे भवनी कोडीरे, तपत्रया करतां अतिघणी, नहीं ज्ञान तणीडे जोडीरे.

श्वानी पुरुष अर्धक्षणमां जे पापनो नाश करेछे ते कोटी भव पर्यत कठीन विचित्र छठ अठम मास वे मास विगेरेनी तपश्चर्या क-रतां ठळे नहीं. माटे झाननी कोइ जोडी एटछे ते समान कोइ नथी माटे आत्मज्ञाननी माप्ति करवा मयत्न करवो. ज्ञान रूपी अग्नि सर्व कर्मने वाली भस्म करेछे. षड्द्रच्य सात नय तथा निक्षेप द्रव्या-दिकना झानथी स्वपर विभाग थायछे अने पोताना घरमां प्रवेश करेछे अर्थात् असंख्य प्रदेशरूप जे घर तेमां आत्माउपयोगपणे परिणमी अशुद्धतानो परिहार करेछे, पोताना घरमां आवतां आ-

(zes)

त्माए अनुभवदृष्टियी सर्व सिध्धि जोइ त्यारे विचार्यु के-अहो में अनंत भवचक काळ अज्ञान रूप निद्रामां निर्गमाच्योः मारी भूले हुं जन्म जरा मरणनां दुःख पाम्यो हवे श्रांति भागी आ शरीररूप नगरीमां असंख्य मदेशी आत्मानी मतीति थइ, असंख्य मदेशीरूप आत्मा हुं अरुपी छुं. श्वेत, पीत, रक्त, कृष्ण, ए पुद्गलतुं रूप छे पण हुं तो पुद्गलयी भिन्नछुं माटे रूपातीतछुं, मारामां गंध स्पर्शनयी शब्द्यी माह ज्ञान थाय छे पण हुं शब्द्यी न्यारो छुं माह कोइ नाम नथी. तेथी हुं अनामी कहेवाउछुं.

हुं कीर्ति वा अपकीर्तिवाळी नथी-कारण के बहिरात्मदशामां कीर्तिनी वासना जीवने रहेछे अने तेथी ते अनेक प्रकारना कीर्ति माटे उग्रमो करेछे. पण तेथी कंइ कल्याण थतुं नथी. जेम वंध्याने स्वमानी अंदर पुत्रनो प रव थयो. अने ते पुत्रने मोटां थतां परणा-व्यो. वंध्या बहु आनंद पामी एवामां वंध्यानो पुत्र मरण पाम्यो त्यारे बंध्या रोबा पीटवा लागी. केश तोडवा लागी. बंध्यानी आं-ख जघडी गइ अने जुवे छे तो कंइ नथी. मिध्याभास थयो एम जाण्युं तेम अज्ञानी जीव साधु वा ग्रहस्थना वा कोइपण अवस्थामां कीर्तिनी वासनाथी अनेक कार्यो करेछे. किंतु आंख मींचाया बाद कंड पण तेमांनुं देखातं नथी. माटे ज्ञानयोगी आत्मा कोइ कीर्ति करे वा कोइ अपकीर्ति करे तोपण समभावे रहेछे. कारण के-ज्ञान योगी आत्मा जाणेछे के कीर्तिनाम कर्मना बंधनथी जगत्मां कीर्ति मसरेछे. अने अपकीर्तिनाम कर्मीदयथी अपकीर्ति मसरे छे-माटे ते कीर्ति अने अपकीर्ति बन्ने पौद्गलिकछे. कीइनी कीर्ति मस-रवाथी ते धर्मी कहेवातो नथी. तेम अपकीर्ति. मसरवाथी ते अधर्मी कही शकातो नथी. अंतरंग शुद्धात्म वृत्तिथी धर्मी कहेवायछे. अने अंतरंग अश्रद्धात्म वृत्तिथी अधर्मी जाणवी. मान पूजा आदि वास-

(808)

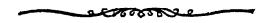
नाओथी पण आत्मा भिन्नछे. कारण के मान अने अपमान एइ बहिरात्मा दशावाळाने एटले जेणे दुनीयादारीमां सुखदुःखनी बुद्धि धारण करीछे तेवा जीवने वर्तेछे, पण जेणे शरीरथी मिन्न आत्मा निराकार ज्योतिमय जाण्योछे तेवा अंतरात्म दशावाळा जीवने माननी वासना रहेती नथी. शुद्धात्मा सदा मानवंतछे. पुद्गलरूप देह कंइ मान्य योग्य नथी. वळी कोइ अपमान करे तो समजे के-देहनुं अपमान के तेनी अंदर रहेला आत्मानुं अपमान नथी देह तो जडछे अने आत्मा तो अदृश्यछे, तेथी तेनुं अपमान थइ शकतुं नथी. माटे ज्ञानयोगी महात्माने मान अपमान वे सरखांछे. वळी ज्ञान योगीनी कोइ निंदा करे. वा कोइ वंदन करे तोपण ते समभावमां वर्ते छे. कारणके ज्ञानी जाणे छे के-मारो आत्मा अलक्ष्यछे. पोताना स्वभावे शुद्ध निर्लेपछे. एम उपयोगमां वर्ततो कोइना उपर राग वा कोइना उपर द्वेष करतो नथी. कनक अने पाषाणने पण ज्ञानी आत्मा सरला जाणेछे, कनक अने पाषाण पृथ्वीकायनां दळीयां पौद्गलिकछे. अने ते कनक पाषाणरूप अचित्त पुद्गल स्कंधरूपीछे. अने हुं आत्मा तो अरूपीछुं. कनक पाषाण पुद्गल स्कंध जडछे अने हुं आत्मा तो ज्ञान गुणमयछं, मारी अने एनी भिन्न जातिछे. वळी कनक पाषाणमां सुख नथी. तो ते उपर केम दृष्टि आपुं ? एम समजी ज्ञानी आत्मार्थी समभावमां रहेळे. अने शुद्धा-त्म खरूपमां उपयोग दृष्टि आपेछे.

संसारना संसर्गमां आवतो पण ज्ञानी आत्मा जलमां कमलनी पेठे भिन्नपणे वर्तेळे, हर्ष शोक धारण करतो नथी. एम प्रमादस्थानतुं निवारण करतो विरतित्रत अंगीकार करतो अंतर्थी द्रव्यक्षेत्र का-ळमावथी आत्म स्वरूप विचारतो अने तेम आत्माना गुणपर्यायने भिन्नाभिन्नपणे विचारतो मति अने श्रुतज्ञानना क्षयोपश्चमे वीर्य श-

कि फोरवतो संयम श्रेणि आरोहण करतो घातीकर्मनो क्षय करी यात्रत् अघातीकर्मनो क्षय करी पंचम गति जे मुक्तिस्थान तेमां सादि अनंतमा भांगं विराजे छे. त्यां मुक्तिस्थानमां शरीरनो त्रीजो भाग टाळी वे भागनी अवगाहना रहेके. म्रक्तियां खापी सेवकभाव नथी, मुक्तिमां गएल आत्मा पश्चात् आवतो नथी, अने तेथी जन्म जरा मरणनां दुःख पामतो नथी, आ प्रमाणे कर्मना नाग्ने मुक्ति पासेनी पासेछे किंतु आत्मध्यानरूप पुरुषार्थमां प्रमाद थवाथी पुनः पुनः संसारमां परिश्रमण करवुं पडेछे मन, वचन अने कायाना योगो स्थिर करी आत्म स्वरूपमां स्थिर थवुं अने वाह्य मार्गमां द्वति देतां आगळ वध्या करवुं. तेम करवाथी आनंदनी खुमारी मगट यशे अने स्थिरता योगे चारित्र मोइनीयनो नाश थशे, अने आत्मा मतिज्ञान अने श्रुतज्ञातना क्षयोपश्चमये गे मत्यक ग्रुण स्थानकनी हदे विचित्र अनुभव मगढ करतो देखारो अने आत्मतत्त्वनो निर्धार भास थरो. आ अचळ सिद्धांतनी श्रद्धा तथा तेनो आदर जे आत्मा अल्पभवमां मुक्ति जवानोछे तेने पाप्त थायछे. अने परमपद प्राप्तिनी तीव्रेच्छा पगट थया विना तेना उपर लक्ष्य लागतं नथी अने ते पति लक्ष्य ला-ग्या विना आत्म कल्याण नथीज. जे भव्यने जे वस्तुनी इच्छा होयछे ते मति तेनो उद्यम वर्तेछे. सर्व करतां शुद्ध स्वरूपनी इच्छा श्रेष्ठ गुणावहा जाणवी. हवे ते आत्मग्रुणनी पाप्तिकरवा मन शुद्ध करवं जोइए. मननी शुद्धता थया विना सिचिदानंद पति वल्लण थतं नथी, मथमतो मन इंद्रियोना विषयमां भटकतुं होयछे तेने पाछुं वाळबुं अने आत्मरमणमां जोडबुं एम थवाथी राग देषादिक श्र-त्रओ तेनी मेळे नाश पामशे. आम वर्तन करवाथी गुणोनी प्राप्ति थायछे कोइ भव्यो बोलवामां एवं बोले के-जाणे महा तत्त्वज्ञान

उधर्म.

माप्त थयुं पण अंतरमां कंइ होतुं नथी, माटे वर्तन आत्म स्त्रभावमां भवुं जोइए, एम करवाथी अनुक्रमे आत्मा कर्माष्टकनो नाज करी मुक्तिपद पामेछे. अतीत काळे अनंत जीवो मुक्ति गया जायछे अने जशे इति सप्तम विषय संपूर्ण.



संसारमां आत्मा क्यारथछि-- ?

संसारमां आत्मा अनादिकाळथीछे. जेनी आदि होयछे ते उप्तात्तिमान पदार्थ होयछे. अने जे उत्पत्तिमान होयछे ते कार्यरूप कहेवायछे, अने जे पदार्थ कार्यरूप होय ते समवाय निमित्तआदि कारणोनी सामग्रीद्वारा उत्पन्न थायछे अने तेथी ते कार्यरूप पदार्थ आनित्य कहेवायछे. अने जे पदार्थ अनित्य होयछे ते विनाश पामे छे. आत्माने कोहए उत्पन्न कर्यो नथी अने तेथी ते अनादि कहेवायछे.

जे पदार्थनी आदि नथी तेनो अंतपण नथी. ते प्रमाणे आत्मा अनादि छे अने अनंत छे. जे वस्तुनो कोइ बनावनार नथी ते वस्तु नित्य कहेवायछे. तेम आत्मा तेनो बनावनार कोइ नथी तेथी आत्मा नित्य कहेवायछे. जे नित्य बस्तु होयछे ते त्रण कालमां नाश पामती नथी. तेम आत्मा पण नित्यछे तेथी त्रणे कालमां नाश पामती नथी. तेम आत्मा पण नित्यछे तेथी त्रणे कालमां नाश पामतो नथी, जे वस्तु उत्पन्न थायछे ते कारण पूर्वक होयछे, जेम घटवस्तु मृत्तिका दंड चक्र कुलाळादि पूर्वक छे. अने जे बस्तुनो कोइ उत्पन्न कर्त्ता नथी. ते कारण विना स्वयं सिद्ध होयछे जेम आकाश ते प्रमाणे आत्मा पण कारण विनानोछे. अ-र्थात् ते कोइनाथी बन्यो नथी.

ईश्वरबादी-सर्व जीवोने इश्वरे बनाव्याछे तो जीवोनो कर्ता इश्वर कारणी भूत मानवो जोइए.

तत्त्ववादी-जीवोनो कर्चा इत्यर नयी, इत्यर अरूपीछे. रागद्वेष र-हीतछे, संसारनी खटपट रहीतछे. तेवा इत्यरने जीवो बना-ववानुं शुं प्रयोजन ते बतावो अने ज्यारे इत्यरे जीवो नहोता बनाव्या ते पूर्वे इत्यर शुं करतो हतो वळी बतावो के जी-वोनुं उपादान कारण कोण अने जीवरूप कार्यनुं निमित्त कारण कोण ?

नथम सामान्य माध्यस्थ बुद्धिथी विचारतां पण मालुम पढेछे के रागद्वेष रहीत एवा प्रभु वा जे ईश्वर सिद्ध तेमने जीवो बनाव-वानं कंड प्रयोजन नथी. एकने सुखी बनाववी अने एकप्री-वने दुः ली बनाववो एवं अन्यायनुं कार्य ईश्वर करतो नथी. जीवो बनाव्या विना पूर्वे ईश्वरने गमतुं नहोतुं ते पण कंइ कही शकातुं नथी, अने जीवो बनाव्या पूर्वे ईश्वर कतृत्व शक्ति रहीत हतो के केम ते कही शकातुं नथी। कर्तृत्व शक्ति ईश्वरनी अना।देनी मानो तो जीवो पण अनादि ठर्या. त्यारे वदतोव्याचातद्पण माप्त थयुं. कतृत्व इक्ति ईश्वरनी जो अनादि न मानो तो शक्तिनी आनित्यताए ईश्वर पण अनित्य ठयीं बळी जीवोनी पूर्वे ईश्वर छे ते पण सिद्ध यतुं नथी. वळी जीवोतुं उपादान कारण पण ईश्वर कही शकातो नयी. कारणके उपादान कारणथी कार्य भिन्न नथी। यथा तंतवः पटस्य जेम पटनं उपादान कारण तंतु ते पटरूपन छे तेम जो जीवोतं उपादान कारण ईश्वर मानीए तो सर्व जीवोथी अभिन्न ईन्बर ठर्यो. अने ज्यारे सर्व जीवमय ईन्बर ठर्यो त्यारे राजा पण ईश्वर पापी पण ईश्वर चोर पण ईश्वर विडाल पण ईश्वर सर्व पण ई भर पोतानी मेळे ई भर उपाधिमय बत्यो के हुं भजन करतुं. को हुं

बंधन, कोनी मुनित, ते पण असत्य उर्धु, तप जप दान किया सर्व असत्य उरी. माटे जीवोनुं उपादान कारण ईवर सिद्ध थनो नथी। तेम निर्मित्त कारण पण ईवर कही शकातो नथी, कथा कथा म-साला लानीने ईवरे जीव बनाव्यो जो कहेशो के पंचश्रतरूप मसालाथी जीव बनाव्यों तो ते वात पण आगाश कुमुमवत् अस-त्य उरेले. कारण के पंचश्रततो जडले. अने आत्मा तो ज्ञान गुणी छ माटे ते पंचश्रतनुं कार्य नथी। माटे जीवनुं उपादान कारण पंच-श्रुत कदी उरतां नथी। अने निर्मित्त कारण जीवनो ईवर उरती नधीं. माटे जीव अकारण होवाथी नित्य सिद्ध उर्धी। अने तथी ते अनादिकालयी छ एम सिद्ध उर्थी। श्री केवलकानी वीरप्रश्रुए जीवो अमादिकालना ले एम सत्य कथ्युंले. हवे ब्रह्ममांथी जीवोनी उत्प-ित माननाराओ प्रति प्रश्न पूर्वक तमनी भूल दूर करायले.

शिष्य—हें सद्ग्रो कोइ एम कहे छेके आत्मा वा इदमेक एकाप्र आसीत् अर्थ आ दुनीयामां मथम ब्रह्म एकज हतुं अने तेमां थी आ सर्व मपंच बन्यो छे आ वातमां शुं सत्य समायुं छे. ते कृपा करीने कहे शो ?

सन्द् गुरु हे सौम्य अवण कर. ब्रह्ममांथी जीवो माया विगेरे सर्व प्रपंच बन्यो एम मानवुं युक्तिहीन छे. ते नीचे मुजब. ब्रह्मथी दुनीयानो प्रपंच भिन्न मानशो तो एकति भिन्न मर्पचरूप बस्तु ब्रह्मथकी उत्पन्न थायछे तेम मानवुं मंडूक जटावत् अस-त्य ठरेछे, कारण के जेम घटथकी एकांत भिन्न पटनी उत्प-चि जोवामां आवती नथी. एम प्रत्यक्ष विरोध आवेछे, बळी ब्रह्मथकी एकांत अभिन्न जगत्रूप प्रपंच मानको तो ते पण युक्ति विकस्न आकाश कुमुमबत् असत्य हरेछे.

ब्रह्मथी एकांत अभिन्न जगत परंच ब्रह्मस्वरूप वर्यो, त्यारे माता, स्त्री, पुत्र, सर्प, सिंह, आदि सर्वे ब्रह्मरूप उर्धे, त्यारे तेना थी भिन्न वा तेथी मुक्त यवाशेज नहि, वळी अमो ब्रह्मवादीने पुछी ए छीए के-ब्रह्म जे ते जगत प्रपंचन उपादान कारण छे के निमित्त कारण ? मथम पक्षमां जो ब्रह्मने उपादान कारण मानवामां आवे तो कारण जेवुं होय तेवुं कार्य थाय जेम पटनुं उपादान कारण तंतु रकत होय तो पट पण रकत थायछे. तेम जो ब्रह्म सत्छे अने उपादान कारणछे तो उत्पन्न थनार जगत प्रपंचरूप कार्य सत् थवुं जोइए. अने ते कदी नाश पण पामे नहि, पण जगत म-पंच सत् नथी एम मत्यक्ष विरोधापत्ति माप्त थती देखायके वळी ब्रह्मने रूपी वा अरूपी मानतां विरोध दर्शविछे. प्रथम पक्ष ब्रह्मने रूरी मानतां आगम विरोध आवेछे. द्वितीय विकल्पमां ब्रह्मने अ-रूपी मानतां ब्रह्मयी उत्पन्न थनार जगत मपंच रूप कार्य अरूपी थर्व जोइए. पण घटपटादि वस्तुरूपी देखायछे ए ५ण महाविरोध व्यविके. वळी ब्रह्मने नित्यमान ता ब्रह्मथी उत्पन्न थनार जगत मपंच पण नित्यपणे उपलब्ध थयो जोइए पण जगत मपंच तेथी उलटो विनाश पामतो देखायले. तेथी तेम मानतां पण विरोध प्राप्त थायछे, माटे जगत उपादान कारणपणे मानेलुं ब्रह्म नित्यपणे पण कहीशकात् नथी. ब्रह्मने अनित्य मानतां आगम दिरोध आवेछे वळी ब्रह्मने एक अने ते सर्वत्र व्यापकछे एम मानशोती जीवोनो बंध मोक्ष मानवो असत् ठरेछे. तेम सुख दुःख पण असत् ठरके. इत्यादि विकल्पोथी ब्रह्मनी सिद्धि एग थती नथी. तो वळी ब्रह्म-मांथी जीवो उत्पन्न थया तेम मानवं ते तो सर्वया असत्य ठरेछे. प्रश्न-आनंदं ब्रह्मगो विद्वान् नविभेति कृतश्चन-ब्रह्मना आनंदने जाणनार पुरुष कशायी मय पामती नथी. एम दहर आर-

वशस्त्रक्रप्..

ण्यक तथा तैत्तिरीय श्वातिमां क्रांगुंछे तेनुं केम-?

उत्तर-ब्रह्म शब्दार्थनुं सम्यग् क्षान न यवाथी तस्त्रनी प्राप्ति यती नथी. केटलाक वादिओं ब्रह्म विषे सर्व जीवोनों ख्य यायछे. अने वळी ब्रह्ममांथी सर्व जीवों उत्पन्न थायछे एम समजी तत्त्व पामी शकता नथी कारणके—सम्यग् क्षान्विना सम्यग् क्रिया थइ शकती नथी. अने ते विना भवांत्र थतो नथी. अर्थात् कर्मनो नाश्च करी मुक्तिपद पमातुं नथी. पण आत्मारूप ब्रह्मनो भावार्थ ज्ञानथी सम्यक समजनार कशायी भय पामतो नथी. माटे सम्यग्दिष्टपणुं प्राप्त थतां एक्षांत इट टळेछे.

प्रश्न-श्लोक भिद्यते हृदयग्रंथीः छिद्यंते सर्व शंसयाः क्षीयंते चास्य कर्माणि, तस्मिन् दृष्टे परावरे. १ ब्रह्मने साक्षात्कार जाणवाथी हृदय ग्रंथी भेदायछे. अने सर्व संशयो छेदायछे. कर्मो नाश पामेछे. ते ब्रह्मने देखतां-आम मुंडको पिनषद् विगेरेथी जणायछेतोब्रह्मने असत्य केम कहेवाय?

उत्तर-हेभव्यजीव हजी अमारु कथन तमाराथी समजायुंनथी—
ब्रह्मशब्दने। अर्थ ज्ञानवान् आत्मा अनेते ज्ञानीजीव प्रतिश्वरीर
भिन्नभिन्न-तेमज कर्मरहीत ज्ञानीजीवा—व्यक्तिथी भिन्नभिन्नछे
तेवारुपे अमे। ब्रह्मने सत्य मानीएछीए—पणजे एक
ब्रह्म अने तेमांथी जगत् पेदाथवुं तेवा ब्रह्मशब्दना अर्थने
अमे। सत्यरुपे मानतानथी, तेनासंबंधे अत्रसंभाषण थायछे
—अत्रसमजवानुंके—सर्वत्र ब्रह्मछे, ब्रह्मथकीअन्य के।इपदार्थ नथी
एम मानवुं ते ज्ञानविरुद्धछे-अने एम के।इमानेते। तेमां अन्यनुं
जोरनथी—पण समजवानुंके—उपरना श्लोकथी द्वैतपणानी
एटछे वे तत्त्व—जीव अने अजीव तेनी सिद्धि थायछे—अस्य

कर्माणि क्षीयंते—अानां कर्म नाज्ञपामेछे आनां एटले आत्माना आत्मानी साथे ज्ञानावरणीयादी अष्टकर्म अनादिकाळथी क्षीर नीरवत् लाग्यांछे. ते कर्म, आत्मानुं स्वरूप स्याद्वादपणे देखी आत्म स्वभावमां रमवाथी नाज्ञपामेछे आत्मा अने कर्म एम बे वस्तुनी सिद्धि थइ, एक आत्मद्रव्यनी द्वितीय कर्मरूप पुद्गल द्रव्यनी अनायासे सिद्धि थइ, कर्मजड अने, अजीवछे, तेथी जीवतत्त्व एम बे तत्त्वज्ञानी प्रभुश्रीमहावीरस्वामीए कथ्यां छे तेनी सिद्धि थइ कदापि सामो मश्र एम करवामां आवे के कर्म पण ब्र-स्था भिन्न नथी अने ते ब्रह्मस्वरूप छे तो उत्तर तरीके कहेवामां आवश्चे के कर्म ज्यारे ब्रह्मस्वरूप ठर्यु त्यारे कर्मनो नाज्ञ थतां

वळी विचारोके कर्म छे ते ब्रह्मयकी भिन्न छे आभिन्न? प्रथम पक्षमां ब्रह्मयकी कर्मएकांत भिन्न मानतां पटथी एकांत भिन्न घटनी पेठे वे पदार्थ ब्रह्म अने कर्म भिन्न छे तेनी सिद्धि थइ, द्वितीयपक्षमां ब्रह्मथी कर्म अभिन्न छे एम मानतां ब्रह्म अने कर्म एक स्वरूप थइ जहां अने कर्मनो नाश पण थशे नहि.

वळी विचारों के कर्मसत् छे के असत् छे. कर्मअसत् मानवामां आवे तो सत्ब्रह्म अने असत् कर्मनो संयोग थाय निह, कारण के सत्नी साथे जे वस्तुरूपे ना होय तेनो संयोग घटे निह. अने बेनो संयोग मानवामां आवशे तो बे पदार्थ भिन्न स्वभाववाळा भिन्न ठर्या, त्यारे एक एव ब्रह्म आवाक्यनो नाश थयो एम अवश्य सिद्ध ठरेछे. स्याद्वादपणाथी तो ते सर्व जिन दर्शनमां यथार्थ घटेछे अने आत्मादानी सिद्धि थायछे अने कर्मनी सिद्धि थायछे अने कर्मनी सिद्धि थायछे. आत्मा झानादिके करी सत्छे अने कर्मरूप पुद्रलनी अपेक्षाए असत् छे. पण पुद्गल द्वय पोताना स्वरूपे सत् छे. आत्मा अने कर्मनो संयोग अनादिका-

用数规模等。

क्रथी छे. आत्मा अने कर्म चे शीरनीरवत् परिणामीछे, आत्मा इसारे स्वस्वभावमां रमण करें छे. त्यारे कर्मरूप पुदमलो आत्माना भरेकोथी विखरेछे, अने आत्मामां रहेछं अनंतज्ञान आविभीवे मकाशेले. अने आत्मा परमपद पामतां अचल थायले. जन्म जरा सत्युनो नाश करी अजरामर पद पामेछे तेषां नपुनराष्ट्रिः शिव अ-र्थात् मोक्ष पामेल। जीवो संसारमां पाछा आवी जन्म धारण करता त्रथी. वळी सर्व जीवो ब्रह्मना अंशछे एम मानीएतो पुण्य पाप बंध मोक्ष आदि घटी शकतुं नथी कारण के-सर्वस्य ब्रह्मस्वरूपत्वात सर्व पदार्थने ब्रह्मस्वरूप मान्याथी धर्म अधर्म मुक्ति विगेरे असत्य ठ-रेक्टे. तेषां आ वाक्य प्रयोग पष्टीना बहु वचननोक्टे, तेथी आत्मा अनंतक्टे एम प्रतिपादन कर्युक्टे. ने फरीथी संसारमां आवता नथी। एम कहेवाथी प्रलय काळ थया बाद केटलाक म्रुक्तिमांथी संसारमां जीव पाछा आवेछे तथा दयानंद सरस्वति ने आर्प समाजनो प्रकाशकछे ते स्वकल्पनाथी एम मानेछेके मुक्तियांथी जीव संसारमां पाछो आवे छे. एम ते वादियो तुं मानवं असत्य ठरेके. अने ते मिथ्या ज्ञानके एम सिद्ध कर्यु. बन्नी नी-चेनी वेदश्वतियो पण सम्यग्ज्ञान विना असमंजस भासेछे.

तथाच

इदं सर्वे यदयमात्मा, सर्वे खल्विदं ब्रह्म ॥ अयमात्मा ब्रह्म, अहं ब्रह्मास्मि ॥

इत्यादि वेद श्रुतियोपण सम्यग्ज्ञान विना प्रमाणीभूत नथी. सर्वे एटले सर्व खड़ एटले निश्रयथी आ ब्रह्मले. घट, पट, दंड, चक्र, हुक्ष, सर्प, जगत् सर्व ब्रह्मले तो सिद्ध थयुं के ह्वी पण ब्रह्म स्वरूप. माता पण ब्रह्मस्वरूप. पुत्री पण ब्रह्मस्वरूप.पोते वक्ता पण ब्रह्मस्वरूप त्यारे कोने नमस्कार करवो ? कोनुं स्मरण करवुं? अने ब्रह्मस्वरूप करवानुं शुं प्रयोजन ? तेनी सिद्धि टरती नथी. श्वा पृष्ट

परमात्मदर्शन.

(414)

ब्रह्मस्वरूप, अने विष्णु पण ब्रह्मस्वरूप. सर्प पण ब्रह्मतो पत्येकने नमस्कार करवो जोइए. पण ब्रह्मवादी पण सर्वने ब्रह्मस्वरूप मानी भेदभाव राखेछे ते आकाश जेवडी मूल गणाय, माटे ब्रह्मने एक मानतां पूर्वीक्त दूवण पाप्त थायछे. सम्यग्दछि तेवोज अर्थ सम्य-ग्पणे ग्रहण करेछे. आ सर्व जगत अनंतजीवोथी परिपूर्ण व्याप्तछे, अने जे आ शरीरमां छे ते आत्माछे, अने आत्मा ज्ञानमयछे. दुनीयानी सर्व वस्तुओ ज्ञानमां विषयीभूत थायछे. अनंतन्नेयनो ज्ञाता अनंत ज्ञानमय आत्माछे तेने ब्रह्म कहो वा चैतन्य कहो. वा परमा-त्मा कहो. नामभेट पण अर्थतो एकनो एकछे-सिद्ध परमात्माओ सद्दश शरीरमां रहेलो आत्मा पण सर्व रूद्धिमयछे पण कर्मावरणथी सर्व रुद्धि तिरोभावेछे-आत्मा अज्ञछे. अविनाशीछे. अनाटि अनंत, अक्षय, अक्षर, अनक्षर, अचल, अटल, अमल, अगम्य, अरूपी, अकर्मा, अबंधक, अनुदय, अनुदरीक, अयोगी, अभोगी, अरोगी. अभेटी, अवेटी. अछेटी. अछेपी. अखेटी, अकषाइ, अछेशी, अञ्चरीरी, अणाहारी, अन्याबाध, अनवगाही, अगुरूलघुपरिणामी, अवाणी, अयोनि, असंसारी, अमर, अपर, अपरंपर, ज्ञानगुणापे-क्षाए व्यापक अनाश्रित, अकंप, अनाश्रव, अशोकी, असंगी अनाहारी लोकालोक ज्ञायक, अनंत सुखमय, आदि गुणोथी विराजमान मत्येक शरीरमां रहेला आत्माओ छे. किंतु कर्मनायोगे सर्व रूद्धि ढंकाणी छे, आ शरीरमां पण कर्मथी बंधाएल हे आत्मातुंछे. जेवा सिद्ध भगवान छे तेवो तुं छे. एम सम्यग् अर्थ ग्रही पयत करायतो ग्रु-क्तिपद पामी शकाय. पण सम्यग्ज्ञान विना संसारी जीवो मोहमा-यामां मस्तान थइ संसारमां परिश्रमण करेछे. माटे सत्य तत्त्वनी प्राप्ति करवी. एज मोक्षमार्ग जाणवी. श्री सर्वज्ञ पशुए धर्मास्तिकाय, अधर्मास्तिकाय, आकाशास्तिकाय, पुद्गलास्तिकाय, जीव द्रव्य

(118)

उषास्थिति.

अने काळ आ पह्द्रव्य कथन वर्गीछे. केवलज्ञानमां जेवुं जाण्युं तथा वे.वल दर्शनमां जेवुं सामान्योपयोगथी देख्युं. ते प्रमाणे पदा-थीं चुं प्रतिषादन कर्युंछे. तेनुं ज्ञान थवाथी सत्य आत्मतत्त्वनी प्राप्ति थायछे. मिथ्याज्ञानथी मिथ्यात्वनी दृद्धि थायछे.-यत उक्तं

श्लोक.

निमध्यात्वसमः शतुः निमध्यात्वसमंविषं ॥ निमध्यात्वसमोरोगोः, निमध्यात्वसमंतमः ॥ १ ॥ दिषदिषतमो रोगैः, दुःखमेकत्र दीयते ॥ मिध्यात्वेन दुरंतेन, जंतोर्जन्मनिजन्मनि ॥ २ ॥ वरं ज्वालाकुले क्षिप्तो, देहिनात्मा हुताशने ॥ नतु मिध्यात्वसंयुक्तं, जीवितव्यं कदाचन ॥ ३ ॥

मिथ्यात्व समान कोइ शत्रु नथी. कारणके मनुष्यरूप शत्रुओ वाह्यरुद्धि वा वाह्यपाणनो नाश करेछे. अने मिथ्यात्वरूप शत्रु तो आत्मानी अनंतिरुद्धिनो नाश करेछे. अने मिथ्यात्व समान कोइ मोदुं विष नथी. अने मिथ्यात समान कोइ रोग नथी. अने मिथ्यात मरत्रुं ते साह किंतु मिथ्यातपणाथी जीववुं साह नथी. वळी उपरना वीजा श्लोकमां जणाव्युं के—शत्रु विषरोग तथी तो एकवार दुःत प्रमायछे अने दुःत्वे करी जेनो नाश थायछे एवा मिथ्यात्वथी तो भवोभव दुःत्वनी परंपरा भाग्न थायछे, माटे सम्यग्ज्ञाननी प्राप्ति माटे मयन करवो, श्रीवीरमञ्जूष्ठ जीवो अनादिकाळनाछे एम केवळ- इत्तुथी जाणी मरूपणा करीछे ते सत्य मानवी. श्रद्धा करवी.

९ नवमविषय.

आत्मा निर्मलपद (मोक्ष) शायी पामे;

ज्ञान दर्शन चारित्राणि मोक्षमार्गः ज्ञान दर्शन अने चारित्र मोक्षनो मार्गछे. श्रीतच्चार्थस्त्रमां ज्ञान दर्शन चारित्रनुं विशेषतः मिलपादन कर्युछे. त्यांथी जिज्ञासुजनोए तेनुं स्वरूप गुरुगमद्वारा धारवुं. अत्र ए त्रणनो विशेष विस्तार करवाथी ग्रंथ गौरवता दृद्धि पामे माटे कर्यो नथी. पूर्वे ज्ञाननुं सामान्यतः वर्णन कर्युछे. दर्शननुं पण वर्णन कर्युछे. चारित्रनुं पण सामान्य स्वरूप आगळ करेवाशे. अष्टकर्भना समूहनो जे नाश करे तेने चारित्र करेछे. चारित्रना वे मकारछे. व्यवहार चारित्र द्वितीय निश्चय चारित्र तेमां व्यवहार चारित्रना वे भेदछे. १ देशविरतिरूप-द्वितीय सर्व विरतिरूप.

तेमां श्रावकनां वारत्रत अंगीकार करवां. तथा तेतुं पालन करवुं तेने देशविरति चारित्र कहेछे.

सर्वथी पंचमहात्रतनो शास्त्राज्ञापूर्वक स्वीकार करतो अने वीतराग आज्ञा प्रमाणे वर्तन करवुं तेने सर्वथी चारित्र कहेछे-सर्व विरतिरूप भागवती दीक्षाथी कर्मनो नाश थायछे-शास्त्रोमां दीक्षातुं बहु माहात्म्यछे कहुंछे के-तथाच

श्लोक.

सर्वेषामपि पापानां, प्रवच्या शुद्धिकारिका ॥ जिनोदिता तनः सेव, कर्तव्या शुद्धिमिच्छता ॥१॥ ददति ब्राह्मगादिभ्य, एके पाप विशुद्धये ॥ गोदानं स्वर्गदानंच, भूमिदानान्यनेकथा ॥ ६॥ आत्मशुद्धचर्थमेवान्ये, कारयंति व्रतानिष ॥ जुह्नत्यमी पश्रंस्तत्र, अश्वादीश्च सद्धशः ॥३॥ अमेध्यभुग् गवामेके, पृष्ठभागं स्पृशंतिच ॥ गवां मूत्रं पिबंत्यन्ये, अन्ये पंचगवं तथा ॥ ४ ॥ शुद्धयर्थ स्नांति तीर्थेषु, प्रविशंत्यन्ये द्वताशने ॥ तथापि नैवशुष्यंति, विनादीक्षां जिनोदितां ॥५॥ किंच शौचं विनाशुद्धिं, जीयते न कदाचन ॥ सत्त्वाहिंसादिकं तच, यतः प्राहुर्मनीषिणः ॥ ६॥ सर्वजीवदयाशीचं, शौचं सत्यप्रभाषणं ॥ अचौर्य ब्रह्मचर्यच, शौचं संतोष एवच ॥ ७॥ कषायनिश्रहः शोचं, शोचमिंदियनिश्रहः ॥ प्रमादवर्जनं शौचं, ध्यानं शौचं तथोत्तमं ॥ ८॥ दुष्टयोगजयः शौचं, शौचं वरविवेकिता ॥ तपो द्वादशधाचैवं, शौचमाहुर्मनीषिणः ॥ ९ ॥ सर्वज्ञाक्तदीक्षायां, एतत् सर्वदयादिकं ॥ शौचं संपूर्ण मेवास्ति, सदांतरात्मशुद्धिकृत् ॥१०॥

भावार्थ-सर्व पापोनी शुद्धिकारिका दीक्षाछे माटे जिनेश्वरे कथेली दीक्षा आत्मशुद्धि इच्छनारे अंगीकार करवी दीक्षा अंगीकार करवाथी सर्वथा प्रकारे कर्पनो नाश थायछे.

केचित् जीवो ब्राह्मण विगेरेने स्वर्णदान गोदान भूमीदान वि-गेरे आपेछे अने वेदलाक आत्मानी शुद्धिने माटे व्रतो करेछे अने करावेछे. अने होममां पशुओने होमेछे. बे.टलाक आत्मकल्याण माटे गायनुं अमेध्य भक्षण करेछे, तथा तेना पृष्ट भागने स्पर्शेछे अने वळी गायनुं मूत्र पीवेछे, तथा पंचगवनुं भक्षण करेछे. बे.टलाक आत्मशुद्धि माटे गंगा यसुना आदि तीथोंमां स्नान करेछे. बे.टलाक अप्रिमां प्वेश करेछे, तोपण तं अज्ञानपणाथी आत्मशुद्धि पाप्त करता नथी. पण ज्यारे वीतराग सर्वज्ञे कथेली भागवती दीक्षा अंगीकार करवामां आवेछे त्यारे आत्मा निर्मल थाय छे.

वळी ते भागवतीदीक्षामां शौचविना शुद्धि थती नथी. हवे ते शौच दर्शावेछे. सर्वजीवदयाशौचं-सर्व जीवोनी दया करवी तेने शौच कहेछे. दया विना धर्म होतो नथी. अहिंसा परमोधर्मः अहिंसा मोटो धर्मछे. अने शास्त्रमां पण कहुंछे के-

नय तिहुअणेवि पावं, अत्रं पाणाइवायओ गरूयं ॥ जं सन्वविय जीवा, सुहेसिणो दुस्कभीरूय ॥ १॥

त्रणलोकमां हिंसा करतां मोटुं कोइ पाप न**ी. सर्वे जीव** सुख इच्*डेडे.* अने दुःखयी वीवे*डे*.

श्लोक.

नसादीक्षा नसाभिक्षा, नतद् दानं नतत्त्रः ॥
नतत् ज्ञानं नतद्ध्यानं, दयायत्र न विद्यते ॥ १ ॥
भावार्थ-एवी कोइ दीक्षा, भिक्षा, दान, तप के ध्यान नथी
के-जेमां दया नहीं होयः

श्लोक.

अहिंसैव मता मुख्या, स्वर्गमोक्ष प्रसाधनी ॥ अस्याः संरक्षणार्थेच, न्याय्यं सत्यादिपालनं उद्यम.

स्वर्ग अने मोक्ष आपनारी दयाज (अहिंसा) दयाज ग्रुख्य-पणे मनायली छे. अने एने राखवा माटेज सत्यादिक तुं पालन व्याजवी गणाय छे. वळी आचारांग सूत्रमां कहुं छे के-तथाच पाटः

सेबेमि जेअइया जेय पहुपना जे आगमिस्सा अरहता भग-वंतो ते सब्वे एव माइख्खंति, एवंभासंति, एवंपन्नवंति, एवंपर्व्वति, सब्वेपाणा, सब्वेभूया, सब्वेजीवा, सब्वेस ता, नहंतब्बा, नअज्ञावेय-ब्वा, नपरितावेयब्बा, नउद्देयब्बा, एसयम्मे सुद्रे निइए सासए समिचलोपं खेयनेहिं प्वेइयं.

आचारांगसूत्र भावार्थ

हुं कहुं छुं के जे तीर्थकर भगवान थइ गया अने जे हाल वर्ते छे, अने जे आवता काळमां थशे ते सर्व आ रीते कहे छे जणावे छे तथा वर्गवे छे के सर्वनाण, सर्वभूत, सर्वजीव, अने सर्व सच्चने हणवा निह, तेमना उपर हकुमत चलाववी निह. तेमने क- बजे करवा निह, तेओने मारी नाखवा निह, अने तेओने हेरान करवा निह, आवो पवित्र अने नित्य धर्म लोकोना दु:खने जाणनार भगवाने बताव्यो छे.

अने वळी कहां छे के.-

जयंचरे जयंचिठे, जयमासे जयंसए ॥

जयं भुजंतो भासंतो, पावं कम्मं न बंधइ ॥ १ ॥

श्री शय्यंशभस्रि कहेछे के यतनाथी चालवुं. जीवनी दया सचवाय तेम उभा रहेवुं. यतनाथी वेसवुं, अने यतनाथी स्रृं, अने यतनाथी बोलवुं, एम करतां पाप कर्म बंधाशे नहि. वळी कहुंछेके–

गाथा.

मल मइल पंक मइला. धूली मइला न ते नरा मइला

जे पावपंक मइला, ते मइला जीवलोयांमे ॥ १ ॥ खणमित्तं सलिलेहिं, सरीरदेसस्स शुक्षिजणगंजं कामंगंति निसिद्धं, महेसिणंतं नणु सिणाणं ॥२॥

भावाथी=मलथी मेला, कादवथी मेला थएला, अने घूलथी मेला थएला माणसो मेला नहि गणाय. पण जे पापरूप वंकथी मेला थएल होय रे जीवो आ लोकमां मेला जाणवा-

वळी स्नानमां जलवडे क्षणभर शरीरना बहिर्भागनी शुब्धि थायछे, अने जे जल स्नान कामनुं अंग गणायछे ते जलथी मह-र्षियोने स्नान करवानो निषेधछे—

उक्तंच श्लोक.

स्नानं मददर्पकरं, कामांगं प्रथमं स्मृतं ॥ तस्मात कामं परित्यज्य, नैव स्नांति दमे रताः १

स्नान ए मद अने विषयाभिलाषनुं कारण होवाथी कामनुं पर् हेळुं अंग गणायछे. माटे कामने त्याग करनार अमे इंद्रियोने दमवा तत्मर थएला यतिजनो बीलक्कल स्नान नथी करता. केटलाक लोको समज्या विना एम बोले के के जैनना मुनियो स्नान करता नथी. तेमने कहेवानुं के जैनना साधु शास्त्राज्ञा मुजब वर्ते के तेथी विषया-भिलाषजनक स्नाननुं तेमने कंइ मयोजन नथी. ब्रह्मचारी सदामुचिः ब्रह्मचारी पुरुष सदा पवित्रके. तेने दातण स्नाननी कंइ जरूर नथी वळी श्रीकृष्ण, पांडु पुत्रने नीचे मुजब उपदेश आपेके.

श्लोक.

आत्मानदी संयमतोयपूर्णा, सत्यावहा शीलतटा दयोिमः तत्राभिषेकं कुरु पांडुपुत्र, नवारिणा शुद्ध्यति चांतरात्मा १

उच्च स्थिति.

भावार्थ-आत्मारूपी नदीछे तेमां संयमरूपी पाणीपरिपूर्ण भरे-लक्छे, त्यां सत्यरूप शीलरूप तेना तटले, त्यां दयारूप तरंगोछे माटे हे पांडुपुत्र तेमां स्नान कर. कारण के शरीरनी अंदर रहेलो अरूपी आत्मा कंइ पाणीथी शुद्ध थतो नथी हवे त्यारे पवित्र कोण कहेवाय ते जणावेछे.

गाथा.

अखंडिय वयनियमा, गुत्ता ग्रत्तिंदिया जियकसायाः अइशुद्ध बंभचेरा, सुइणो इसिणो सयानेयाः १

भावार्थ-अंगीकार करेलां व्रत अने नियमने अखंडित राख-नारा अने जेणे पोतानी इन्द्रियो वश करी छे तथा वळी क्रोध, मान, माया, लोभ, ए चार कषायोने जीतनारा तथा निर्मल ब्रह्मचर्य पाळ-नार मुनियो (ऋषियो) सदा पवित्र जाणवा.

तथा वळी कहां छे वे ---

श्लोक.

नोदकक्किन्नगात्रोऽपि, स्नात इत्यभिधीयतेः स स्नातो योदमस्नातः स बाह्याभ्यंतरः शुचिः १

भावार्थ-पाणीयी भींजायल शरीरवाळो कंइ न्हाएलो निह कहेवाय. किंतु जे पोतानी पांच इंद्रियोनो वश करनारो थइ अभ्यं-तर अने बाह्यथी पवित्र होय तेज न्हाएलो कहेवाय. वळी कहुंछेके-श्लोक.

चित्तमंतर्गतं दुष्टं, तीर्थस्नानैर्न शुद्धचितः शतशोऽपिजलैधीतं, सुराभांडमिवाशुचिः १

परमात्मदर्शन.

(1239.)

भावार्थ-अंतरतुं दुष्ट चित्त कंइ तीर्थ स्नानथी शुद्ध थतुं नथी केमके मदिरानुं वासण सेंकडो पाणीथी घोइए तोपण ते अपवित्र ज रहेछे. माटे सारांश के-जलथी मात्र स्नान कर्याथी पवित्रता माप्त थती नथी. परंतु दयारूप शौचथी पवित्रपणुं माप्त थायछे. माटे दीक्षा अंगीकार करी प्रथम अहिंसा व्रतनुं पाछन करनुं जो-इए. कोड पण जीवनी हिंसा करवी नहि, म्रनिने वीस वशानी दया होयछे. अने श्रावकने सवावशानी दया होयछे. मांसतं भक्षण करनार, मांस वेचनार, जीवो, पापी जाणवा संसारनो त्याग करनारा मुनीश्वरो अहिंसा व्रतनुं पाळन करी शिव पाम्या अने पामशे. जीवनी हिंसा करवाथी थएल दारुण दुःख यशोधर चरि-त्रथी जाणवुं. हवे दीक्षा अंगीकार करी बीजुं सत्य बोलवुं, मृषा-वाद एटळे जुटुं करी बोलवुं नहिं. तदूप सत्यव्रतनुं परिपालन क-रवुं. त्रीजुं महात्रत अंगीकार करी कोइनी नजीवी वस्तु पण कहा विना छेवी नहीं. पोतानी वा पारकी सर्व स्त्री वर्गनो त्याग करवो. मनमां पण भोग भोगववानी इच्छा करवी नहीं. स्त्रीना साम्रुं स-राग दृष्टिथी जोवुं नहि. नव प्रकारे ब्रह्मचर्य व्रतनी गुप्ति पाळवी अने मैथुननो सर्वथा त्याग करवो तेने चोथुं ब्रह्मचर्यव्रत कहेछे. सर्व त्रतो नदीओ समान छे अने ब्रह्मचर्यत्रत समुद्र समानछे, ब्र-ह्मचारी पुरूषोनी कीर्ति वधेछे. ज्यां जायछे त्यां तेने मान मळेछे. देवताओ पण ब्रह्मचारी पुरूषोने साहाय्य करेछे. मंत्रनी सिद्धि पण शीलवत पाळनारने तुरत फळेछे. देवताओ, यक्षो, राक्षसो पण ब्रह्मचारी मुनिने नमस्कार करेछे. ब्रह्मचारी मुनीश्वरने वचन सिद्धि संपाप्त थापछे, ब्रह्मचारी पुरूषनो संकल्प सिद्ध थापछे. कोइ मनुष्य सुवर्णनां मोटां देरासर करावे अने कोइ ब्रह्मचर्यव्रत अंगीकार करे तो पण ब्रह्मचारी पुरूषनी बरोबर मुवर्णनां देरासर

ब्रह्मचर्य.

करावज्ञारने फल थतुं नथी. चारित्रनुं मूळ ब्रह्मचर्यव्रतछे ज्यां ब्रह्मचर्यत्रत नथी त्यां चारित्रनी शुद्धि क्यांथी अर्थात् ब्रह्मचर्यविना चारित्र नथी. ग्रहस्य पुरूष पण पोतानी स्त्री विना अन्य स्त्रीनो त्याग करेक्रे. ब्रह्मचर्षमां घणा गुण समायाक्रे, सुदर्शनशेठने शुळी पण सिंहासन रूपे थइ तेमां ब्रह्मचर्यनुं माहात्म्य जाणवं. नवनारद ब्रह्मचर्यना प्रतापयी सत्य सुखलीला पाम्याः वळी पारकी स्त्रीना उपर राग करनार रावणने छक्ष्मणे मार्यो, अने रावण मरीनरकमां गयो. अने सीता सतीनो यश जगतुमां गवायो. विषय छंपटी जीवो सदाकाल आकुल व्याकुल दुःखी रहेके. लंपटी जीवो आ भवमां पण दुःख पामेछे. अने परभवमां पण दुःख पामेछे. छंपटी जीवोनी जगत्मां अपकीर्तिथायछे अने विषयछंपटी जीवो पकडाय छे तो सरकार तेनो मोटो दंड करेछे. अने जगत्मां तेनुं अपमान थायछे. विषय लंपटी जीवो एवा तो आंधळा होयछे के-तेमने धर्म वा अधर्मनी समजण पडती नथी. माटे भव्य जीवोए ब्रह्मच-र्यवत्रत्वं सम्यक् परिपालन करवुं. वारंवार मनुष्य जन्म मळनार नथी. स्त्रीतं शरीर सात धातुथी भरेखुंछे तेना शरीरमां लोही मांस, हाडकां, भेद, मज्जा, मूत्र, विष्टा भरेलीछे. नाकपांथी लींट वहा करें छे. आंखमां पीयाना थोक बाजे छे. केशमां जुओ, लीखो-ना समृह पड्या करेछे. शरीरद्वारोधी अशुचि वहा करेछे. बळी जुबान अवस्था उतर्या बाद ब्रह्मावस्था थायछे. त्यारे द्यारीर खराब लागेले. शरीरनो रंग उतरी जायले. अलबत तेना साम्रं पण जीवातुं मन थतुं नथी एवी स्त्रीना शरीरमां शो सारछे के तेना उपर राग थाया वळिल्ला जाति कपटथी भरेलीले. भत्-हरि जेवा राजाने मुकी तेनी राणी चाकरनी साथे संबंधवाळी थड हती. ते बात ज्यारे भर्त्वहरिराजाए जाणी त्यारे मनमां घणी

लेद थयो अने विचारवा लाग्यो के-अहो जे पिंगलाने हुंपटराणी तरीके मानतो हतो अने जे मारी पाणाप्रिया हती. अने हुं जेना उपर पूर्ण विश्वास राखतो हतो ते पिंगलाराणी पण अंते मारी थइ नहि. अने तेणीए कामना आवेशथी नीचनी साथे संबंध कर्यो माटे तेने धिकार थाओ. अहो जगत्ना जीवो कामावेशथी पुण्य पाप गणता नथी. एवा कामने पण धिकार पडो अने आ संसा-रमां हुं जेने सारभूत मानतो हतो एवी पिंगळा पण मारी थइ निह. अहो ज्ञानीओए संसारने असार कह्योछे तेमां जरा मात्रपण असत्य नथी. एम चिंतवी तापसी दीक्षा अंगीकार करी पर्वतनी गुफामां चाल्यो गयो, अने तेमणे भर्तृहरि शतकनी रचना करी. माटे सं नारमां सारभूत धर्म विना अन्य कशुं जणातुं नथी. माटे भव्यजीवोए पण सांसारिक मोहमायाथी दूर रही आत्मिक धर्मा-राधनमां तत्पर थइ धर्माराधन करवुं, अने स्त्रीविषयाभिलाषनो त्याग करवो. शास्त्रमां विषयने विषनी उपमा आपीछे त्यारे वळी एक महात्मा कहेळे के, विषयने विषनी उपमा आपवी ते योग्य नथी. कारण के, विष तो एक भवमां भक्षतां प्राण हरी दुःख आपे छे अने विषयो तो अनेक भव पर्यंत परिभ्रमण करावी दुःख आपेछे. माटे विषना करतां पण मोटी उपमा आपवी जोइए. विष-यथी थतं सुख स्वप्तसुख समान मिध्या करपना मात्रछे.

तथाच श्लोक.

स्वप्ने दृष्टं यथापुंसः क्षणमात्रं सुखायते प्रबुद्धस्य नतत्किंचित् एवं विषयजं सुखं. १

स्वममां देखेलो पदार्थ पुरुषने क्षणमात्र ग्रुख आपेले अने ज्यारे ते मनुष्य जागेले त्यारे कंइपण देखातुं नथी ए प्रमाणे विष-

(272)

वहास्व रूप.

षतुं सुल क्षणमात्र आभास मात्रछे अंते वस्तुतः विचारतां कंइ सुल नथी. वळी विषयी पुरूषोनी केवी स्थिति थायछे ते जणावेछे.

विषयेषु विषीदंतो, न पश्यंति हिताहितं श्रुण्वंति न हितं वाक्यं, अंध विधिरसंनिभाः

विषयोमां विषाद पामेळा जीवो हित वा अहितने देखता नथी. तेम वळी हितवाक्य कोइ कहे तो ते सांभळता नथी. खरे खरविषयळाळचु जीवो अंध अने बहेरा सरखाछे. अने वळी कहेछेके, श्लोक.

विषयेषु रतोजीवः, कर्म बध्नाति दारुणं तेनासो क्वेशमाप्राति, भ्राम्यन् भीमे भवोदरे २ विषयोमां आसक्त थएल जीव दारूण कर्म बांधेछे अने तेथी ते जीवो भयंकर संसारमां परिश्रमण करतो क्वेश पामेछे वळी विषयमां मोह पामेला जीवो श्रं करेछे ते कहेछे.

श्लोक.

अहो मोइस्य माहात्म्यं, विद्वांसोऽपियतो नराः मुद्यंति धर्मकृत्येषु. रताः कामार्थयोर्देढं १

अहो मोहनुं प्रावल्य केवुं छे के जे विद्वान मनुष्यो पण काम अने अर्थमां आसक्त थया छता धर्मकृत्यमां मुंझायछे. आवुं मोहनुं जोर तोडी श्रीजंबुकुमार कोटी धन, स्त्री, परिवारनो त्याग करी दीक्षा अंगीकार करी. तेमज धन्नाकुमार तथा शाळीभद्रे मोहनो नाश कर्यो. श्री स्थुळीभद्र के जे पाटळीपुरमां शकटाळ मंत्रीना पुत्र हता अने जे बार वर्ष वेदयाना घेर रहा हता. तेमणे स्त्रीनो त्याग करी दीक्षा अंगीकार करी. अने वेदयाने गृहे चातुर्मास कर्युं त्यां वेश्याए पोतानुं शरीर देखाय अने विषयाभिलाष थाय तेम नाच कर्यों, कामोत्पादक अनेक प्रकारनां गायनो गायां. तो पण मुनिवर्यश्री स्थुलीभद्र जरा चलायमान थया नहीं अने विष-यमां रागी एवी वेश्याने पण वैरागी बनावी. अने ते वेश्याने श्रा-वकनां बार व्रत उच्चराव्यां. अहो आश्चर्यनी वात छे के, कामनो नाश करवा महामुनियो पर्वतनी गुफाओमां तथा एकांत जग्याओ मां गया, केमके त्यां काम आवी शके नहि माटे. त्यारे स्थुलिभद्र मुनिवर तो कामना गृहमां प्रवेशी कामनो नाश कर्यों. अहो केटलुं तेमनुं सामर्थ्य ? एवी रीते भव्यजीवोए उत्तम चरित्र श्रवण करी विषय, काम, मोहनो नाश करवा, अने ते प्रति जरा मात्र पण इच्छा करवी नहीं अने मन, वचन, कायाथी शुद्ध ब्रह्मचर्य व्रत पाळवुं.

हवे पांचमुं सर्वतः परिग्रह परिमाण विरमण वत कहे छे. श्री
म्रुनीश्वर महाराजा धनधान्यादिक नव विध परिग्रहनो त्याग करे
छे, कारण के विकल्प संकल्पनुं कारण परिग्रह छे. परिग्रह थी क्रोध,
मान, माया, लोभनी उप्तत्ति थायछे. जेम वहाण अतिशय भारथी
समुद्रमां बुढे छे परिग्रहनी दृद्धिथी रागद्देषनी दृद्धि थायछे. परिग्रहथी दुनीयामां मनुष्य एटली बधी गुंचवणमां आवी पढे छे के
तेने जरामात्र पण शांति मळती नथी. वळी धनधान्यादिकनी दृद्धि
थी मोटाइ बधे छे. मनमां मान आवे छे. वळी अदेखाइ पण
मगट थायछे. वळी परिग्रहनी प्राप्तिना कारणथी माणातिपात, असत्य, चोरी, आदि पापस्थान को नुं सेवन करी कर्मार्जन करी जीव
अधोगतिमां अवतरी त्यां छेदन भेदन ताडन तर्जन शोक, वियोग
धुधा, त्वा, आदि विविध दुःखो भोगवे छे. वळी परिग्रहथी अज्ञानी जीव धर्म साधन करी शकतो नथी परिग्रह मेळववामां केवळ

(174)

दुःखज समायुंछे. वळी परिग्रह धन उपर ममता भाव राखी मतुघ्य मरण पामी सर्प, उंदर, गीरोलीना अवतार पामेछे. वळी परिग्रहनी ममताथी मातिपता भाइ परस्पर लडी मरेछे. वळी परिग्रह
धनरूप दृद्धि पामेछे त्यारे तेने साचववानी पण चिंता रहेछे.
रखेने चोर विगेरे लड़ जाय प्वी चिंता तेना मनमां रहेवाथी
सुखे करी उंघपण आवती नथी, परिग्रहथी आरंभ, समारंभ करी
कर्मीपार्जन जीव करेछे. परिग्रहधारी खरेखर जडवस्तुने पोतानी
मानी छेतरायछे. माटे वैरागी आत्मार्थी जीवो परिग्रहनो त्याग
करी दीक्षा ग्रही पंचमहात्रत अंगीकार करेछे. अने पुत्र स्त्री मातिपता
विगेरे संसारी कुंदुंबनो संबंध छोडेछे अने स्वस्थ चित्ते हुं एकलो
छुं. आत्माथी अन्य मारू नथी अने हुं कोइनो नथी एम अदीन
मना थइ आत्माने शिखामण आपेछे. सद्गुरूने धारण करेछे.
संयमनी रक्षा अर्थे वस्न, पात्र, पुस्तक, रजोहरण, मुखविक्षका, धारण
करेछे. संयमनां उपकरण राखवाथी परिग्रह कहेवातो नथी.कहुंछे के
मुच्छापरिग्रहोवुत्तो, नायपुत्तेण ताइणा;

श्री ज्ञानपुत्र वीरमग्रुए मूच्छाने परिग्रह ग्रह्मोछे माटे हट कदाग्रह करवो नहीं. एम ग्रुनीश्वर परिग्रहनो त्याम करी निर्विकल्प
मन करी आत्मज्ञानमां मग्न रहेछे, अने ग्रुनीश्वर विचारे के आ
बाह्म परिग्रह त्यागी ग्रुनि आत्मानी रूद्धि तरफ लक्ष आपी जुवेछे
तो त्यां अनंतज्ञान, अनंत दर्शन, अनंत चारित्र, आदि रूद्धि भरेली
छे अने ते रूद्धि अविनाशीछे. पोतानाथी कदी जुदी पडवानी
नथी अने ए रूधि प्राप्त थवाथी सहज शांति अनुभवायछे, एम
आत्मा ए जाण्युं त्यारे आ बाह्म जड रूधिघरूप परिग्रहनो त्याम
कर्यो. अने आत्मिक रूधि मेळववा पयत्न करवा लाग्या, ध्यानादिक्तनो अभ्यास करवा लाग्या, ए पांचमुं परिग्रह विरमण वत दी-

क्षा अंगीकार करी मुनिवर्यो मनवचन अने कायाथी परिम्रह धा-रण करवो नहीं परिम्रह धारण करावचो नहीं. अने परिम्रह धारण करता होय तेनी अनुमोदना करवी नहीं.

छठं रात्रीभोजन विरमणवत कहेछे. रात्रीना समयमां म्रनीश्वर अञ्चनपान, खादिम अने स्वादिम ए चार प्रकारना आहा-रनो त्याग करेके. श्रीवीरप्रभूए रात्रीभोजनमां महा कथ्योछे. माटे आत्मार्थी जीव रात्रीभोजन करे नहि. शास्त्र, वर्धमान देशना, आदि ग्रंथोमां तथा सुत्रोमां रात्रीभोजन करवाथी महादोष बताव्याछे, वळी अन्य दर्शनीओना शास्त्रमां पण रात्रीभोजन करवाथी दोष बताव्याछे. माटे म्रानिवर्यी दीक्षा ग्रही रात्रीभोजननो त्याग करेछे. ए रीते पंच महाव्रत अने छठुं रात्रीभोजन विरमणवतनं अत्रतो संक्षेपथी स्वरूप देखाडयुं. आ प्रवाणे मूळ व्रत अंगीकार करे, अने चरण सित्तरी करण सित्तरीरूप उत्तर भेदनुं आराधन निर्प्रथ मुनिवर्य करे. श्रीसिद्धसेन दिवाकरसूरिकृत प्रवचन सारोद्धारमां चारित्रना गूळ भेद उत्तरभेदनुं तथा चारित्रना उपकरणोन्नं विशेषतः वर्णन कर्युंछे त्यांथी जिज्ञास्रए विशेष अधिकार जाणबो. इवे दीक्षा अंगीकार करी कषायना निग्रहरूप शौच म्रनीश्वर धारण करेछे. क्षमाथी क्रोधनो पराजय करेछे. अने नम्रताभावथी माननो पराजय करेछे अने सरखताथी मायानो नाभ करेखे. अने संतोषथी लोभनो नाश करेछे. वळी पांच इंद्रियोना विषयो जीतवारूप शौच मुनी-श्वर धारण करेछे. प्रमादनो त्याग करवो ते रूपशौचने दीक्षा अंगीकार करी धारण करेछे.प्रमाद्थकी चौद पूर्वी पण संसारमां पडया माटे आलस्य, निद्रा, विकथा, पारकी निंदा आदि प्रमादनो नाज करी मुनीश्वर अप्रमत्तपणे रहेछे. वळी मुनीश्वर ध्यानरूप शौच जे

(276)

ब्रह्मस्वरूप.

सर्व शौचोमां उत्तमछे तेने धारण करेछे. धर्मध्यान अने शुक्कध्यान ए वे ध्यान आत्मकल्याणकारिछे. तेमां शुक्कध्यान प्रिक्ति पदाताछे. मन वचन अने कायाना दुष्ट योगनो जय करवो तेने शौच कहेछे वळी हेय, ब्रेय अने उपादेयनो विवेक तेने उत्तम विवेक कहेछे. ते शौचने दीक्षा अंगीकार करी मुनिवर्यो धारण करेछे. बार मकारे तप करवो ते पण शौच जाणवो, श्री सर्वज्ञ कथित दीक्षामां दयाविक सर्व कृत्य शौचरूप शरीरनी अंदर रहेछा आत्मानी शुद्धि करनारछे. निश्चय चारित्र आत्मस्वभावमयछे एटले आत्माथी भिन्न नथी ते चारित्रनी प्राप्ति माटे व्यवहार चारित्रकारणीभूतछे.

आ संसारमां केटलाक जीवो धर्मन्नं नाम पण जाणता नथी अने तदनुकुछ प्रयत्न पण करता नथी. संसारमां मोटा कहेवाणा एटले पोताने धन्य मानेछे. पण पोते जीवादिक तत्त्व जाणता नथी अने सांसारिक कार्योमां अहनिक्ष गुंथाया रहेछे, पण धर्मी-राधन परायण थता नथी. धर्मनुं आराधन करी आत्माने कर्मवं-धनथी छोडाववो एज उत्तम पुरूषोनुं लक्षण छे. बाकी धन, पुत्र, लक्ष्मीनी दृध्धिथी पोतानी दृध्धि मानी अहंभावमां वर्तवुं ते तो अधम पुरूषोतं लक्षणछे. श्री भरतराजा, राम, पांडवो विगेरेए अंते आ संसारने असार समजी आत्महितमां प्रवृत्ति करी तेम भव्य जीवोए पण अधुना सारमां सार दीक्षानुं अवलंबन करवुं जोइए. दीक्षा ग्रह्मा विना आश्रवमार्गनो रोध थतो नथी. आ सं-सारने ज्ञानी पुरूषोए बळता आग्ने समान कह्योंछे, बाजीगरनी बाजी जेवुं आ संसारतुं स्वरूप जाणी विवेकी मनुष्य चारित्रमार्ग ग्रहण करेछे. मारु मारु मानता एवा अनेक जीवो मायाना वश ज्ञानलक्ष्य सत्य आत्मस्वरूप भूली यमराज वश थया अने थाय**छे**। जेम समुद्रमां पाणीना अनेक तरंगो उत्पन्न थायछे अने पश्चात विखय

पामेछे तेनी पेठे अनादिकालथी आसंसारसमुद्रमां देव मनुष्य तिर्यच अने नारकी तरंगे करी जीव अनेकशः शरीर छोडतो अने अनेकशः शरीर धारण करतो वर्तेछे. पण अज्ञान दशाथी पामर जीवनी मुक्ति थइ नहीं. पण ज्यारे आत्मानुं स्वरूप जाणवामां आवेछे त्यारे आत्मा संयममार्गयोगे धर्मना आविर्माव अर्थे प्रयत्न करेछे, ज्यारे चारित्रमोहनीय प्रकृतिनो क्षय थायछे त्यारे चारित्र आत्मामां मगदे छे. कोइ जीव चारित्र मोहनीयने उपश्मावेछे. कोइ चारित्र मोहनीयने नो क्षयोपश्म करेछे. कोइ जीव क्षायिकसमिततयोगे आठमा गुणठाणाथी क्षपकश्रेण आरोहण करी चारित्र मोहनीयकर्मनी मनुतिने अगीयारमा गुणठाणे उपश्मावेछे अने त्यांथी पाछा पढे छे. अने यावत मिथ्यात्व गुणठाणा सुधी आवेछे.

कोइ उपराम समिकत पामी आठमागुणठाणाथी उपरामश्रेणिए चढेछे अने कोइ क्षायिक समिकत पामी आठमा गुणठाणाथी उपराम श्रेणि चढी अगीयारमे गुणठाणे जइ मरे तो अनुत्तर विमानमां जायछे. अने कोइ उतरता गुणठाणे पण मरण पामेछे. अनंतानुवंधी क्रोथ, मान, माया अने लोभ तेमज समिकत मोहनीय अने मिश्रमोहनीय अने मिश्यालमोहनीयनो क्षायिक समिकत पाम्यो होय ते जीवने बढायुक्षायिक समिकत जाणवुं. आयुष्य बंधनी अपेक्षाए आवं क्षायिक समिकत कहुंछे, तत्त्ववात बहुश्रुतवा केवली जाणे. ते अशुद्ध क्षायिक समिकत कहुंछे, तत्त्ववात बहुश्रुतवा केवली जाणे. ते अशुद्ध क्षायिक समिकत कहुंछे, तत्त्ववात बहुश्रुतवा केवली जाणे. ते अशुद्ध क्षायिक समिकत कहुंछे, तत्त्ववात बहुश्रुतवा केवली जाणे. ते अशुद्ध क्षायिक समिकत जीव उपराम श्रेण करे एम कहे-वायछे. क्षायिक समिकत जीव दशमा गुणठाणे यथाख्यात चारित्र पामी बारमा गुणठाणे ज्ञानावरणीय,दर्शनावरणीय,अने अंतरायकर्मनो क्षायिकभाव करी अनंतज्ञान,अनंतदर्शन,अनंतवीर्यअने क्षायिकभावना

पंचलिश पामेछे. ते नीचे मुजब, अनंतदानलिश, अनंतलाभलिश, अनंतनोगलिश, अनंतलपभोगलिश अने अनंतनीर्यलिश संगप्त थायछे. अंतरायकर्म क्षय थयुंछे एवा परमपरमेश्वर पुरुष सदा मुखी छे. मुख्यपणे तो ते लिश्योनी माप्ति आत्मस्वभावेछे. केमके तेनी क्षायिकभावे माप्तिछे. अने जे अनंत सामर्थ्य आत्मामां अनादिथी मिक्तिरूपे हतुं ते व्यक्तिरूपे थइ मकाशेछे, अने आत्माना अनंतगणोनो आविभीवतेरूप दान, आत्मा पोते पोताने आप्युं ते दानलिश जाणवी. तेमज अनंत आत्म सामर्थ्यनी संमाप्तिमां किंचित मात्र वियोगनुं कारण रहुं नथी. तेथी अनंतलाभ लिश्य कहेवायछे.

वळी अनंत आत्मसामध्येनी संपाप्ति संपूर्णपणे परमानंद स्वरूपे अनुभवायछे. तेमां किंचित् मात्रपणे वियोगनुं कारण रहुं नथी तेथी अनंतभोगलन्धि जाणवी.

तथा अनंत आत्म सामर्थ्य संपूर्णपणे परमानंद स्वरूपे समये समये परिणमेछे तोपण तेमां किंचित मात्र पण वियोगतुं कारण रहुं नथी. तेथी अनंत उपभोगलिध कहेवा योग्यछे. तेमज अनंत आत्मसामर्थ्यनी माप्ति संपूर्णपणे थया छतां ते आत्मसामर्थ्यना योगयी आत्मक्षक्ति थाके के तेनुं सामर्थ्य न झीली शके, वहन न करी शके, एम छेज नहीं सदाकाल ते सामर्थ्यछे तेमां जरा मात्र पण न्यूनाधिकपणुं थवानुं नथी. एवी जे वीर्य शक्ति त्रिकाल संपूर्णपणे वर्तेछे ते अनंतवीर्यलिध कहेवा योग्यछे.

सायिकभावनी दृष्टिथी जातां उपर कहा ममाणे ते लिब्धनो परमपुरुषने उपयोग होयछे. वळी ए पांचलिब्ध हेतु विशेषथी सम्जावा अर्थे जुदी पाडीछे नहीं तो अनंतवीर्यलिब्धमां पण ते पांचेनो समावेश थई शकेछे. एम तेरमा गुणटाणे शायिकभावनी नवलिब्ध मोगवतो परमपुरुष शैलेशीकरण करी चडदमा गुणटाणे अधा-

तीकर्मनी ते गुणठाणे खवाववा योग्य जे प्रकृतियो बाकी रही हती.
ते चउदमा गुणठाणे खपावी सिद्धिश्विलानी उपर एक योजनना चो-बीश भाग करीए तेना त्रेवीस भाग नीचे मूंकी चोवीसमा भागे अवगाहनाए संयुक्त ते मोक्षस्थानमां आदिअनंतमे भांगे बिराजमान थायछे, चारित्रथी पूर्वोक्त मोक्षस्थाननी मासि थायछे.

अथ द्शमविषय.

१० कर्मने। कर्ता तथा भोक्ता आत्मा, कर्मनो नाश शी रीते करे ?

प्रत्युत्तर—आत्मा स्वह्नपां रमग करे तो कर्मनो नाश थायछे, परस्वभावमां रमण करतो आत्मा कर्म बांधेछे अने, स्वस्वमावमां रमण करतो कर्मनो नाश करेछे, अनंतजीवोए भूतकाळमां कर्मनो नाश कर्यो अने अनंतजीवो भविष्यकाळे करशे, जीव वे प्रकारनाछे. १ भन्यजीव २ अभन्यजीव.

जेनामां मोक्ष जवानी योग्यताछे तेने भव्यजीव कहेछे. अने जेनामां विलक्षक मोक्ष जवानी योग्यता नथी तेने अभव्यजीव कहेछे. अभव्य जीव कदी मोक्ष पामी शकतो नथी.

आत्मा कर्मनो नाश शी रीते करे तेनुं घणुंख है विवेचन पूर्वे मायः कथ्युंछे तेथी अत्र स्थळे विशेष विवेचन कर्युं नथी. हवे वि-चारोके-मोक्षतस्व बंधविना संभवे नहीं. अने जेवडे बंध ते कर्म एम आत्मा अने कर्मनो संबंध जेवो जिनदर्शनमां घटेछे. तेवो अन्यत्र घटतो नथी. कर्मथी मुक्त आत्मा सिद्धस्थानमां सादि अनंतभंगीए रहे छे, त्यां परमात्मपणे समये समये अनंतम्रुखनो भोक्ता आत्मा बनेछे. कोइ दर्शनी दुःखात्यंतामावरूप मुक्तिमानेछे पण तेम नथी. आत्माने कर्मनायोगे दुःख थायछे. ते विमाविकछे

एटले विभाविक वस्तु स्वरूप जे दुःख ते आत्माथी द्र थायछे. अने आत्मामां सुखले ते स्वभाविक छे. स्वभाविक वस्तु कदी टलती नथी. तेम आत्मामां जे सुखले ते स्वभाविक छे एटले आत्मानो सुख युद्धगुणले अने आत्मागुणीले. माटे तेनाथी द्र थतो नथी. कोइ मादी जडस्वरूप मुक्ति मानेले मुक्तदशामां आत्माने कोइपण मस्तुं भान नथी. आम ते वादीनुं मानवुं ते अज्ञान विशिष्ठले. कारणके—जडस्बरूप मुक्ति होत तो कोइ मुक्ति पामवानी जरामात्र पण इच्ला करे नहीं. परंतु स्याद्वाद सत्यदृष्टिथी समजो के मुक्तिपद पामेलो आत्मा केवलज्ञानथी दरेक पदार्थने जाणेले. समस्त वस्तुनं ज्ञान सिद्धात्मामां समये समये पवर्तेले, वली सामान्य उपयोगरूप केवलदर्शनथी सिद्धात्मा सर्वजगत्ने देखेले. अने मुक्तात्मा अव्यामाधगुणथी अनंत मुख भोगवेले, माटे जडस्बरूप मुक्ति नथी. ज्ञान स्वरूप जे आत्मा ते जडरूप वनी जाय तो ते मुक्ति कहेवाय नहीं, वली आत्मा ज्ञानगुणथी मित्र थाय नहिं. कारणके—आत्मानो स्व-भाविक ज्ञानगुणले. ते ज्ञानगुणआत्माथी त्रिकाले पण जुदो पढे नहीं.

यादी जो म्रिक्तमां आत्माने ज्ञानगुणवाळो मानीए तो मुक्तात्मा ज्ञानथी सर्व जगत्जीवोने थतुं दुःख जाणे, त्यारे ते दुःख मुक्तात्माने थाय, माटे ज्ञानगुण मुक्तिमां मानवो अयुक्तछे.

सुगुरू-हे सत्य तत्त्वाकांक्षी भव्य-जरा विचार करशो तो मालुम पडशे के-मुक्तात्माने अनंतज्ञानथी तेमां किंचित विरोध आवतो नथी. जेम दृष्टांत-कोइ मनुष्य कोइस्थाने पढेलुं तालपु-ट्विष जाणे अने तेने देखे तेथी तेने कंइ दुःख थतुं नथी, तेम सिद्धपरमात्मा केवली भगवान्ने पण जगत्ना जीवोने दुःखी जाणवाथी ते दुःख पोताने लागतुं नथी. तेम जगत्ना जीवोमां शातावेदनी जोब थीते शातावेदनीय कंइ सिद्धपश्चना आत्माने लागती नथी-कारणके वस्तुओ थकी पोतानी आत्मा न्यारोक्टे, तेथी ते विरोध सिद्धभगवान्मां घटतो नथी.

आरांका-सिद्धात्माओ अनंत सुख समये समये भोगवेछे ते केवल ज्ञानथी के, केवलदर्शन गुणथी-

समाधान-सिद्धात्माओ केवलज्ञानथी सर्व वस्तु जाणेछे अने केवलदर्शनथी सर्व पदार्थोंने देखेछे. अने सिद्धात्माओ सुख भोगवेछे ते अन्याबाध नामना गुणथी भोगवेछे तेथी पूर्वोक्त विरोधनो सर्वथा नाज्ञ थायछे.

ते उपरथी सिध्य स्पष्ट भासेछे के जडस्वरूप मुक्ति नथी परंतु शुद्ध चैतन्य स्वरूप मुक्तिछे.

कोइवादी आकाशनी पठे सर्वत्र व्यापिनी मुक्ति मानेछे ते पण यथार्थ घटना बिहर छे. कारणक, मुक्तआत्मा आकाशनी पेठे सर्वत्रव्यापक नथी. सर्वत्रव्यापक आत्माने मानतां बंध मोक्ष व्यवस्था घटती नथी. जेम आकाश नर्वत्र व्यापक छे तो ते कोइनाथी बंधाय पण नहीं अने बंधावाना अभावे मोक्ष पण घटे नहीं. तेम आत्माने कर्मपण सर्वत्र व्यापक मानवाथी बंधाय नहीं अने बंधामावे मोक्ष पण कहेवाय निह एम दोष स्पष्ट भासेछे, माटे सर्वत्र व्यापिनी मुक्ति सिद्ध ठरती नथी. सर्वव्यापिनी मुक्ति मानतां प्रथम सर्वत्रव्यापक आत्मा मानवो पडशे. अने सर्वत्रव्यापक एवा आत्माने बंध मोक्ष घटतो नथी. वळी सर्वत्रव्यापिनी मुक्ति मानवामां अनेक विरोध आवेछे, माटे त्रिशलातनये श्री सर्वज्ञमहावीरे परुपेली मुक्ति यथातथ्य सत्य छे. अने ते प्रमाणे मानवामां कोइ जानतनो विरोध आवतो नथी.

वळी कोइ मतवादी मुक्तिमां स्वामी सेवक भाव स्वीकारेछे ते पण युक्तिहीनछे. कर्म खप्याथी सर्व आत्माओ मुक्तिमां सरखा

मोक्ष.

छे. सर्व आत्माओ पोतपोताना स्वरूपे परमानंद मुखविलासी छे. सर्व सिद्धात्माओमां कवलज्ञान अने केवलदर्शन छे. कोइ नातुं मोढुं नथी. अष्टकर्म खप्याथी अष्टगुण सिद्धना जीवोमां प्रगट्या छे. पोताना गुणना कर्ता पत्येक सिद्ध भगवान छे. विभावदशाथी रहित स्वस्वभावभोगी थयाछे माटे परनुं कर्तापणुं लेश मात्र नथी. वळी सिद्धना जीवोने शरीर नथी, लेश्या नथी, मन नथी, काया नथी, एक पुद्गल परमाणु सरखो पण सिद्धना जीवोमां रह्यो नथी अलेशी, अशरीरी, अचल, सिद्धना जीवोछे.

एम माने छे के, मुक्तिमां केटलाक वर्ष पर्यंत रहीने जीव पाछो संसारमां आवेछे. पण ते योग्य नथी. कारणके कर्मनो नाश थतां सिद्ध स्वरुपता प्रगटे छे ते अवस्था सादि अनंतमें भांगेछे. एटले सिद्धमां गयानी आदि छे पण अनंत नथी अर्थात सिद्ध थया पछी संसारमां संसारमां आववानुं कारण कर्म छे ते कर्मनोतो प्रथमथीज नाज्ञ करी मुक्ति गयाछे माटे संसारमां अवतार छेवानुं काम विलक्क नथी. बळी कोइ कहेरोके, सिद्धना आत्माओने नवां कर्प लागे ते पण ज्ञानहीन वचनछे कारणके, कर्म लागवानुं कारण आत्माने राग अने द्वेष छे अने रागद्वेषनो सर्वथा नाश करी सिद्धात्मा थया छे माटे नवां कर्म पण सिद्ध परमात्माने लागतां नथी. सदाकाल श्रद्ध स्वरूपे निज भोगवेछे, तेथी सिद्धना आत्माओ कदापि काले संसारमां पाछा जन्म धारण करता नथी. सिद्धना जीव अनवतारी छे. कोइ एम कहेशेके. ज्यारे ते परमात्मा थया अने सिद्ध शिला-नी उपर सिद्ध क्षेत्रमां रह्याछे अने त्यांथी पाछा दुनीयामां आववा-ना नथी. अने जगतना लोकोने दुःखमांथी बचावता नथी त्यारे दोमणे शो परोपकार कर्यों कहेवायः तेना उत्तरमां समजवातं के

धुक्तात्मा वे मकारनाछे. एक केवलज्ञान संपादन करी आयुष्य विशेषे रहेला अने बीजा चउदमुं गुणस्थानक स्पर्शी सिद्ध स्थानकमां
गयेला. हवे तेरमा गुणस्थाककवर्ती केवलज्ञानी महात्माओ भाषा
वर्गणाना पुद्गलयोगे उपदेश आपी तत्त्वस्वरूप समजावी जगज्जीवोत्तुं कल्याण करेछे. अने सिद्धमां गया बाद सिद्धस्वरूपे थतां:
जगत जीवो सिद्धनुं ध्यान करी स्वस्वरूप मगटावेछे एटले तेमां
पण कल्याण प्राप्तिमां जगज्जीवोप्रति सिध्य परमात्मा निमित्त कारणीभूत छे, ते विना द्रव्यद्यारूप उपकार करवा अर्थे ते सिध्य परमात्मानी स्वाभाविक शक्ति नथी कारणक ते वीतराग थयाछे,
सर्वजीवना कल्याणमां उपादान कारणनी अपेक्षाएतो पोतेज
कारणछे. अन्य तो तेमां निमित्त कारण छे. आ वात सुक्षमदृष्टिथी
सद्गुरू पासे समजतां यथातथ्य समजाशे.

कोई जीव तो इंद्र आदि देवतारूपे थवुं तेनेज मुक्ति मानेछे. कारण के तेनाथी आगळ सूक्ष्म ज्ञानदृष्टिथी जोवायुं निह तेज कारण छे, जेम के इशुक्रीस्त आदि मतवाळा एम मानेछे के परमेश्वर मुवर्णना सिंहासन खपर बेटोछे अने तेना मस्तके मुकुट विगेरेछे एम कहेवाथी समजायछे के ते देवयोनि पैकी कोई देवने परमेश्वर मानी विश्वासयोगे एममाने छे. कारण के पूर्व भवनो रागी अने संबंधी कोई देव आ ममाण करी शके अने तेथी आंतिमां फसावुं पढे. एम ख़ीस्ति धर्ममां होय तो ते अममाण कही शकाय नहीं, माटे सर्वीशे परिपूर्ण अनुभवगम्य जिनदर्शनमां जे मुक्तिस्वरूपछे ते सत्यछे.

म्रुक्तिमां अनंत सिद्धोनी अवगाहना भेगी होयछे. शिष्य-हे ग्रुरो ! अवगाहनानुं शुं स्वरूपछे अने ते अवगाहनारूनी के के अरुपी ? गुरू हे विनेयशिष्य! आत्मा ज्यारे शरीर त्यागीने मुक्तिमां जाय छे त्यारे शरीरना त्रण भाग करीए तेमांथी एक भाग त्यागीए. डै प्रमाणमान आकाशमदेशमां आत्मा असंख्य प्रदेशथी व्या-पीने रहे छे त अवगाहना जाणवी. अने ते अवगाहना अरूपी छे.

शिष्य-एक सिद्धक्षेत्रमां अनंत आत्माओ केम करी समाय ?

गुरू-एक ओरडामां एक दीपक करीए छीए तो पण तेनी ज्योति समायछे. तेम हजारो दीपक कर्या होय तो ते दीपकोनी ज्योति (प्रकाश) पण सम यछे. तेमां कंइ हरकत पडती नथी. वळी दीपकना प्रकाशनां पुद्रल्ख्पीछे तो पण समाइ जायछे तो अरूपी एवा अनंत आत्माओ सिद्धक्षेत्रमां समाय तेमां किंचित् पण विरोध जणातो नथी.

शिष्य-त्यारे सिद्धात्मा त्यांथी अलोकमां केम जइ शकतो नथी;— गुरू-सिद्धात्मा अक्रियले. गमनागमन क्रियाथी विराम पाम्याले तथी उपर जइ शकता नथी. कारण के अक्रियपणुंके अने अलोकमां धर्मास्तिकाय पण नथी. माटे सिद्धत्मा जइ शकता नथी. धर्मास्तिकाय तो फक्त गमनमां मवर्तेला पदार्थीने सा-हाय्य आपी शकेले.

शिष्य-त्यारे आ आधिष्याधिष्ठपाधिमय जगतमां शुं सारछे. शाथी अनंत दुःख नाश पामे ?

गुरू-शिवपद आराध्य, जगत्मां समजवुं. अने तेज साध्य करवा छायकछे. ते पदनी संपाप्तिथीज सर्व अखंड शाश्वत सुखनी प्राप्ति थायछे. श्री गुणस्थानक क्रमारोहमां कह्युं छे. यथा श्लोक.

यदाराध्यं चयत्साध्यं, यद्धवेयं यचदुर्लभं; विदानंदमयं तत्तः संप्राप्तं परमं पदं.

भावार्थ-ने शिवपद अ राध्य, साध्य, ध्येय, दुर्लभक्ते. ते पद ने ज्ञानीओए शुक्रध्यानथी प्राप्त कर्युके.

आत्मा तेज ब्रह्मस्वरूपछे. आत्माज शिवस्वरूपछे, आत्माज परमात्मरूपछे. सिद्धत्वपणुं आत्मानो शुद्ध पर्यायछे, सम्यम् मोक्ष स्वरूप वीतगाग वचनोथी प्रतीत थायछे, ज्यारे वंधतत्वनौ नाम थायछे. त्यारे मोक्षतत्त्वनी उत्पत्ति थायछे. मोक्षतत्त्वथी आत्मा भिन नथी मोक्षमयी आत्माछे. ज्ञान, दर्शन अने चारित्रथी मोक्ष प्राप्तिछे. ज्ञान, दर्शन अने चारित्रथी मोक्ष प्राप्तिछे. ज्ञान, दर्शन अने चारित्र गुणमय आत्माछे.

अज्ञानी जीव आत्मानो शुद्ध स्वभाव नहीं जाणतो छतो राग द्वेषादि करेछे, त्यारे ज्ञानी जीव आत्मस्वभाव जाणतो छतो. राग देषनो त्याग करी कर्मथी रहीत थइ मोक्षपद माप्त करेछे. ज्ञानी आत्माना स्वरूपमां सदाकाल रमण करी अखंडानंदानुभव माप्त करेछे. जेम इंसने मान सरोवरमां रितछे तेम आत्मज्ञानीने आत्मस्वरूपमां रित होयछे. जेम चकोर चंद्रमांज भीति धारण करेछे. तेम आत्म- ज्ञानी आत्मस्वभावरमणतामां भीति धारण करेछे. सीतानी जेम राममां भीति तेम आत्मार्थीनी आत्मस्वरूपमां मीति रमणता भासनता वर्तछे. आत्मज्ञानीने ज्ञासकर्त्ता श्रमण कथेछे. श्रीआनंद्घनजी महाराज पण कहेछे के-

आतमज्ञानी श्रमणकहावे, बीजा तो द्रव्यालिंगीरे वळी श्रीयशोविजयजी उपाध्याय कहेछेके, समाधिशतकर्मां— यथा

केवल आतम बोधहे, परमारथ शिवःपंथ तामे जिनकं मगनता, सोहि भाव निश्रंथ

परमार्थ शिवनो पंथ केवल आत्मज्ञान छे तेमां जे भच्यात्मामे मग्नताछे ते भाव निर्प्रेथ जाणवा. निक्षेप भेद्रथी निर्प्रेथ चार मू

में बारव रूप

कारताखे. १ माम निर्मंथ. २ स्थापना निर्मंथ. ३ द्रव्य निर्मंथ. ४ भावनिर्मंथ. पूर्वोक्त ज्ञार निर्मंथमां भाव निर्मंथसर्वतः मोक्षसाधक जाणवा. कारणके, भावनिर्मंथपणानी प्राप्ति विना कदापि काले मो- भणदनी प्राप्ति थती नथी. सर्वपर वस्तु विषयोथी मनने खेंसी आत्मस्वरूपना ध्यानमां मनने स्थिर करे. श्वासोश्वासे आत्मातुं स्मरण करी भव्य जीवो कर्म खपावी परमात्मपद प्राप्त करेछे. क्वानी पुरुष आत्ममांज स्थिरता करे. अने आत्मभावना सदाकालः भावी अनंत सुखमय पोताने लेखे नीचे प्रमाणे आत्मभावना भावे.

गाथा.

एगो में सासर्थ अप्पा, नाण दंसणं संजुओ, सेसामे बाहिराभावा, सन्वे संजोग लक्कणा,

भावार्थ-एक मारो आत्मा शाश्वत छे. त्रिकालमां पण आ-त्मानो नाश थतो नथी. वळी आत्मानुं स्वरूप दर्शावेछे. ज्ञानदर्शन संयुत: ज्ञान अने दर्शनादि अनंतगुणमय आत्माछे.

आत्माथी दृश्यमान सर्व पदार्थो भिन्नछे. सर्व पौद्गलिक पदा-थीं संयोग विनाशी धर्मवाळाछे. ते पौद्गलिक पदार्थमां मारापणुं कंड नथी. रूपीपदार्थथी भिन्न हुं आत्मा शुद्धचैतन्यमय लक्षण ल-क्षितछुं. आत्मानो प्रकाश करवाने अन्य पदार्थनी जरूर नथी. आत्मा पोदानी मेळे पोताना स्वरूपनो प्रकाश करेछे. कंचुकना त्यागथी जेम सर्प नष्ट थतो नथी. तेम शरीर नाशथी आत्मा नष्ट थतो नथी. त्रिकालमां आत्मा पोताना शुद्ध स्वरूपथी भ्रष्ट थतो नथी.

मूर्ख मूढ मनुष्य शुक्तिमां रजतनी भ्रांति धारण करी जेम मिथ्यामयास धारण करेछे तेम बहिरात्मा, परपुद्गलवस्तुमां आ-रमस बुढिथी भ्रांति धारण करी मिथ्या चतुर्गति भ्रमणरूप हैश रमात्र समेछे.

(139)

सहज स्वाभाविक आत्मिक गुणानंतमी आविभीवतारूम सिद्ध-तातुं हेतु सम्यग्ज्ञानछे. सम्यग्ज्ञाननी पाप्ति विना भूवसंतिनी उच्छेद थतो नथी. तेम सम्यगृदर्शननी प्राप्ति विना सम्यग्रहान कही शकाउं नथी. अनेकांत स्याद्वाद सत्तामय आत्मस्वरूपादि पदार्थोनुं यथार्थ भासनपणुं, श्रद्धानपणुं थाय त्यारे समिकत कथायछे अने समिकत पूर्वक जे जाणपणुं ते सम्यग्ज्ञान कहेवायछे. सम्यग्ज्ञाननी पाप्ति रूपमूर्य जे भव्यजनना हृदयमां प्रगटचोछे तेने मिथ्यातरूप अंधकार आच्छादन करी शकतुं नयी. ज्ञानरूप सूर्योदयथी सर्व पदार्थीनो भास थायछे त्यारे मोक्षमय आत्मा स्वयमेव प्रकाशेछे. अने कर्मनी नाश थायछे. नवतत्त्वमां जीवतत्त्व आदेयछे, संवर निर्जरा मोक्ष ए त्रण तत्त्व उपादेयछे, पुद्गल द्रव्य अजीवछे. पुण्य पाप पुद्गल स्कंधोछे. ते पुद्गल स्कंधोने आत्मा पोताना स्वरूपमां रमतो दृर करेछे. ज्यारे आत्माना असंख्यमदेशोनी साथे कर्मरूप पुद्गल स्कंधोनो एक परमाणु सरखो पण रहेतो नथी. त्यारे आत्मा निरा-वर्ण निर्ममपद प्राप्त करी सादि अनंत स्थिति पामे छे. एक समयमां गुणस्थानातीत थएल आत्मा आकाश प्रदेशनी समश्रेणिए अन्यम-देशोने स्पर्ध्याविना सिद्धिस्थानमां विराजेछे. त्यां सिद्धमां किंचित् दुःख नथी. दुःख सर्व पुद्गलना संयोगथीछे. निर्मल परमात्माने परमाणु मात्रनो संबंध नथी. तेथी त्यां छेश पण दुःख नथी. आधि च्याधि अने उपाधि ए त्रण प्रकारनां दुःखथी रहित आत्मा अनंत स्रुखमय वर्तेछे. सर्वथा प्रकारे दुःखनो अभाव स्रुक्तिस्थानमां छे. अनंत सिद्धजीवो लोकना अग्रभागे विराज्याछे. अने तेओ सदा-काल आत्मस्वभावमां रमण करेछे. अनंत ज्ञानदर्शन चारित्ररूप रत्नत्रयीनी लहेरमां स्वगुण भोगवेछे, त्यांथी कदापिकाळे संसारमां पाछा आवी जन्म मरण धारण करता नथी. सर्व जगत्ने ज्ञानथी

सिद्ध.

जाणेछे पण तेथी ते सिद्धना जीवो सदाकाल न्यारा पवर्तेछे. 🖫 🛪 — सिद्ध भगवान् कोइ दुःखीने देखी दया मनमां लावे के नहीं ? **उत्तर**—सिद्ध भगवानने मन नथी. दुःखी मनुष्यादि सर्वने जाणेछे पण तेओ कर्मथी रहीत थवाथी अक्रिय थयाछे. तेथी कार्य करता नथी. अने दःखी दुःख द्र करवा संसारमां आवता नथी. सर्व जीव पोताना करेलां थुभाथुभ कर्मथी सुखी दुःखी थायछे, कोइनं दुःख द्र करवा कोइ समर्थ नथी. करेलां कर्म पोतानेज भोगववां ज पडेछे. केटलाएक मतवादी एम कहेले के, सिद्ध परमात्मा अन्य जीवोनां दु:ख दुर करवा संसारमां अवतार छेछे एम तेमनुं कथनछे. निरंजन निराकार परमात्मा गमनागमननी क्रिया रहित थयाछे. कर्मनो नाश करवाथी, माटे परमात्मा अवतार ग्रहण करेछे एम जे कोइ कहेछे ते अज्ञानी जाणवी. सिद्धना जीवो पोतानी अवगाहना लेड सदाकाल अनंत सखमां मन्न रहेले. निश्चय चारित्र सिद्धना जीवोमां स्थिरतारूप समये समये अनंत छे. सिद्धता विना सांसारिक दशामां परस्वभावसां रमणता करवाथी किंचित् पण सुख नथी कहुंछेके-

हुं एनो ए माहरो, ए हुं एणी बुद्धिः चैतन जडता अनुभवे, न विमासे शुद्धिः आतम।।१॥

सांसारिकभाव एज हुं छुं, अने ते माराछे. आ वाह्य पदार्थी तेज हुं एवी बुध्धिथी चेतन जड़नो संगी थड़ जड़ता अनुभवेछे अने पोताना आत्मानी शुद्धि विमासतो नथी. एदी संसार दशामां राग, द्वेष, कलह, ममतानो संगी थएलो जीव कंड़ पण सुख पामी शकतो नथी. कोइपण जीव वाह्य पदार्थीथी सुख पाम्यो नथी. अने पामवानो नथी, आ ममाणे आत्मार्थी पुरुषो समजी हट नि.

ायथी आत्मध्यान स्थिरतारूप समाधिमां लीन थायछे. कोइ यो-गिध्यानारूढ थतां तेना ध्यानमांथी यन भटकी जइ आडं अवछं शाल्युं जायछे छे तेने शिक्षा आपतां योगी कहेछेके-

श्लोक.

मनः कुत्रोद्योगः सपदि वदमेगम्यपदवीं ॥ नरेवा नार्यावा गमनमुभयत्राप्यनुचितम् ॥ यतस्ते क्कीवत्वं प्रतिपदमहो हास्यजनकं ॥ जनस्तोमं मागा स्त्वमनुसरिह ब्रह्मपदवीम् ॥ १ ॥

हे मन तारी क्यां जवानी इच्छाछे. तारे ज्यां जवानुं होय ते मने कथन कर. नरमां जवुं छे के नारी विषयमां जवुंछे. नर वा नारी ए वे टेकाणे जवुं पण अयोग्यछे. कारण के तारु हीवत्वपणुं छे माटे पदपदमित नर वा नारीना विषयमां तारु गमन हास्य उत्पन्न करावनारछे. पुछिंग वा स्त्री जातिमां तुं नपुंसक थइने जाय छे ते योग्य नथी माटे मनुष्यना समूहमां मा भटक, तुं नपुंसक तेवुं ब्रह्म पण नपुंसकछे माटे तुं ब्रह्मपदने अनुसर अथवा ब्रह्मपदमां छीन था। वळीपरमात्मतत्त्व रमणतामां योगी छीन थइ समाधिभावने पामेछे। परभात्मतत्त्व आनंदरूपछे ते दर्शांवेछे। परमानंद पंवविंशत्यां

श्लोक.

आनंदरूपं परमात्मतत्त्वं, समस्तसंकरुपविकरपमुक्तं; स्वभावळीना निवसंतिनित्यं,जानाति योगी स्वयमेवतत्त्वं परमारहाद संपन्नं, रागद्वेषविवर्जितम् ॥ सोऽहंतुदेहमध्येऽस्मिन्, योजानातिसपंदितः ॥ २॥

विद्

भावार्थ-परमात्मतत्त्व स्त्राभाविक सदाकाल आनंदक्षि.
वळी शुद्ध निश्चयनयथी जोतां परमात्मतत्त्व केवा मकारतुंछे ते जणावे छे के-समस्त मकारना संकल्प अने विकल्पथी रिहतेछे,
एवा परमात्मतत्त्वमां सहज स्वरुपमां लीन थएला भव्यो सदाकाल
वसेछे, एवं परमात्मतत्त्व योगी पोतानी मेळे अनायासे जाणेछे.
उत्कृष्ट आल्हादथी संपन्न अने रागदेषरित आत्मा आ शरीरमां
वस्योछे तेज हुं परमात्माछुं एम जे जाणेछे ते पंडित जाणवो. परमात्मस्वरूप एवो आत्मा संसारमां परिश्लमण करेछे तेतुं शुं कारण
छे ते दर्शावेछे.

गाथा.

आया नाणसहावी, दंसणसीलोविसुद्धसहरूवो ॥ सो संसारे भगइ, एसो दोसो खु मोहस्स १

आत्मा ज्ञानस्वभावी अने अनंत दर्शनगुणमयछे वळी ते निअयथी विशुध्य तथा अनंत सुख्वान् छतां संसारमां परिभ्रमण
करेछे तेमां मोहनो दोषछे. माटे आत्मार्थी भव्य जीव मोहनो जय
करे. मनमां विचारे के आ दुनीयामांनी सर्व जड वस्तुओ मारी
नथी अने हुं तेनो नथी एम भावतां मोहरियुनो जय करी शकाय
छे. त्यारे हवे मारु शुं एम जिज्ञासा शिष्यने थतां गुरू महाराज
कहे छे के—

श्लोक.

शुद्धात्मद्रव्यमेवाहं, शुद्धज्ञानग्रणो मम नान्योऽहंसिद्धबुद्धोऽहं, निर्लेपोनिष्कियः सदा ॥१॥

सकल पुर्गलना आश्लेषथी रहीत ज्ञान, दर्शन, चारित्र, वीर्य, अन्यावाधादि अनंत ग्रुगपर्यायमयअसंख्य प्रदेशीशुध्य आत्मद्रव्य हुं छुं. सूर्य चंद्रादिकनी सहाय विना मारो शुध्य हान-रूप प्रकाश समये समये वर्तछे. त्रण लोकना पदार्थनी उत्पाद्व्यय श्रीव्यतानी अनंतता मारा शुध्यज्ञानमां क्षेय स्वरूपे परिणमी समये समये भासेछे, ते ज्ञानगुण मारोछे. हुं ज्ञाननुं पात्र छुं. धर्मास्ति-कायादिकथी हुं भिन्न छुं. तनु-धनादिक पदार्थी माराथी भिन्नछे. स्वद्रव्यादिकथी युक्त रत्नत्रयीनो स्वामी आत्मा तेज हुंछुं. आवुं भेद ज्ञानरूप अस्त्र मोहनो नाश करेछे माटे सर्व परभावथी भिन्न एवा आत्मामां रमणता करवी. वळी जे भेदज्ञानीछे ते औदियिक भावमां लेपातो नथी. जेम आकाश कादवथी लेवातुं नथी तेम अत्र समजवुं.

वळी अध्यात्म बिंदु ग्रंथमां कहांु छे के-श्लोक.

स्वत्वेनस्वं परमापिवर त्वेनजानन्समस्ता न्यद्रव्येभ्यो विरमणिमिति चिन्मयत्वं प्रपन्नः स्वात्मन्येवाभिरातिमुपनयन् स्वात्मशीली स्वदर्शी॥ त्येवंकत्ती कथमपिभवेत् कर्मणो नैषजीवः॥ १॥

जेणे आत्मामां आत्मपणुं जाण्युंछे. अने पुद्गलादिकमां पर-पणुं जाणी समस्त अन्य पदार्थोथी विराम पाम्योछे अने ज्ञानमय-पणाने पाम्योछे. पोताना आत्मामां आनंद पामी स्वस्वरूपनो दशीं थयोछे एवा आत्मा शी रीते कर्मनो कर्त्ता बनी शके? अर्थात् एवी अध्यात्मदशामां रमण करनार जीव कर्मनो कर्त्ता बनतो नथी. पण पोताना आत्मस्वभावनो कर्त्ता थायछे. आत्माना स्वरूपमां रमण करनार योगीश्वरने जे छुख थायछे ते अनविध छुख जाणवुं. पर-स्वभावथी रहित एवा छुनीश्वरने जगत् तृणवत् जाणवुं. अर्थात्

सिद्ध.

श्वनिश्वरने जगत् निस्सार लागेछे. अने आत्मस्वरुपमांज सार ला-गेछे. कहुं छे के-ज्ञानसारमां देवचंद्रकृत टीकामां

गाथा.

तिणसंथारानिसिन्नो, मुणिवरो भठरागमयमोहो ॥ जंपावइ मुत्तिसुदं, कत्तो तं चक्रवट्टीवि ॥ १ ॥

भावार्थ-नष्ट पाम्याछे राग, द्वेष, मद, मोह, ते जेना एवा
मुनिवर्य तणना संथारमां बेठा छता जे सुख पामेछे ते सुख चक्रवर्तिने पण क्यांथी होय, अर्थात् मुनिवर्यने आत्मस्वभावे रमण
करतां जे सुख थायछे ते सुखनो छेश मात्र चक्रवर्तिने नथी. परभावमां रमण करनार चक्रवर्ति सुरपतिने आत्मिक मुख माप्त थतुं
नथी. कहुं छे के-ज्ञानसारमां देवचंद्रकृत टीकामां.

गाथा.

जेपरभावे रत्ता, मत्ताविसयेखपाव बहुलेख ॥ आसापासनिबद्धा, भमंति चनगइ महारन्ने ॥

जे भव्यो परभावमां मग्न पंचेंद्रियना विषयोगां जे मत्त थया छे, अने आशापाशथी जे बंधायाछे ते चतुर्गतिरूप महाअरण्यमां परिश्रमण करेछे, परभावमां आसक्त जीवो समये समये सात वा आठ कर्म ग्रहण करी पुनः पुनः पुनर्जन्म धारण करेछे. माटे पर-भावमां रमवुं ते आत्माने योग्य नथी. जडवस्तुमां किंचित् पण सुल नथी. परमां थतो रागभाव तेने परिहरी पोताना आत्मामां जे खोज करेछे ते परम सुख पामेछे. यथा समाधिशतक~

रागादिकजनपरिहरी, करे सहजग्रणखोज; घटमें भी प्रगटे तदा, चिदानंदकी मोज '' १ ॥ वळी भव्यपुरुषोए समजवु के—अहं अने ममपणुं पोताना आत्मामां नथी. ज्ञान, दर्शन, चारित्ररूप रत्नत्रयीनो स्वामी हुं छुं अन्य किंचित् वस्तु मारी नथी. आत्मिक धन तेज मारुछे. अन्य मारु नथी. आत्मस्वरूप जडमां करूप तो जन्मनी दृष्टिंध थायछे. अने आत्मस्वरूप आत्मामांज धारी निश्चय करे, स्वस्वभावमां रमे तो मोक्षनी माप्ति थायछे. यथा समाधिशतक— आपभावना देहमें, देहंतरगति हेत ॥ आपबुद्धि जो आपमें, सोविदेहपददेत ॥ १ ॥

भावार्थ-सारमां सार के-आत्मना स्वद्रव्यादिक चतुष्ट्यमां आत्मत्वपणुं धारण करी एक चित्तंथी आत्मध्यान करे ते संसार चक्रमांथी छूडेछे. आत्मा पोतेज परमात्मरूप बनेछे. ते बतावेछे.

समाधिशतक.

भविशिवपददे आपकुं, आपहि सन्मुखहोइ ॥ तातेंग्ररुहे आतमा, अपनो ओर न कोइ ॥ १ ॥

आत्मा पोते पोताना सन्मुख थायछे, त्यारे पोते पोताने ज्ञिन्यद आपेछे. ते माटे निश्चय नयथी जोतां आत्मा पोते पोतानो मुक्त छे, आत्मानो अन्य कोइ मुक्त नथी. निश्चयनयथी पोतानो मुक्त आत्मा छे, पण तेवुं समजीने व्यवहारथी परमोपकारक सद्गुक्तुं आलंबन मूकवुं निह. पोतानी साध्यद्शामां सद्गुक्तुं आलंबन पृष्ठिनिमित्त कारणछे. सद्गुक्ता आलंबनथी आत्मानी शुध्धपरिणति थायछे. राग द्वेषमां परिणमवुं ते परपरिणति छे. बहि-रात्मा परपरिणतिने पोतानी करी मानेछे. संयम अंगीकार करीने पण जे भिक्ष रागद्वेष परिणामयुत परपरिणतिमां राचेछे, मरचेछे ते द्वयसायु जाणवो. क्रह्युंछेके —

आरमस्यभाष.

परपरिणतिपोतानीमाने, कियागर्वे गहेलो । उनकं जिनकहो केम कहीए, सो मूरखमे पहेलो--परम जैनभावे ज्ञाने सबमांहि, शिवसाधन सहहीए; नाम भेखसुं काम न सीजे, भाव उदासी रहीए--परम ज्ञान सकलनय साधन साधो, किया ज्ञानकी दासी; किया करत धरत हे ममता, आइ गलेमे फांसी--परम

इत्यादि समजी स्वस्वभावमां रमण करवं. एज सारमां सार आत्महित कर्तव्यनी परोकाष्ठा जाणवी. सर्व पुद्गलभावमांथी प्रीति हठावी एक आत्मामां प्रीति जोडवी. सर्व जगत् पपंच दुःखमय छे एम आत्मार्थीए सतत अंतःकरणमां भावना भाववी. पथम बाल जीवने बाह्य वस्तुमां सुख ज्यां त्यां लागेछे अने अंतर्मां उतरवुं ते महा दुःख लागेछे, पण ज्यारे द्रव्यानुयोगनुं ज्ञान थायछे अने आत्मस्वरूपमां सुख लागेछे अने बाह्य जगत्मां दुःख भासेछे. अमृतरस भोज्ञनना करतां पण ज्ञानीने आत्मस्वभावमां अनंतगुणु विशेष सुख लागेछे. अमृतरसभोजननुं सुख क्षणिक छे अने आत्मसुख तो नित्यछे मादे ते अनुपमेय छे. आत्मसुखनुं वर्णन करोडो जिह्याथी लाखो वर्ष सुधी वर्णन थतां पण कदािष पुरु थतुं नथी. आत्मिक सुख अवर्ण्य छे.

अनुभवज्ञाननी ज्यारे पाप्ति थायछे त्यारे आत्मिकसुखनी सत्य निश्चय मतीति थायछे. अनुभवज्ञान विना सत्य सुखनी प्र-तीति यती नथी श्री चिदानंदजी महाराज पण अनुभवज्ञान विषे आनंदमां आवि बद्दारा विवेचन करेछे. यथा.

परमारमद्भीन.

(sam)

पद.

अवधु पियो अनुभवरसप्याला, कहत प्रेममतिवाला अ० अंतर सप्त धातरस भेदी। परमेप्रेम जपजावे प्रविभाव अवस्था प्रगटी, अजवरूप दर्शावे. अ० नखिशिख रहत खुमारी जाकी, सजल सघनघन जेंसी; जिण ए प्याला पिये तिणकुं, और बात हे केंसी. अ० अमृत होय हलाहल जाकुं, रोगशोगनवी ज्यापे; रहत सदा घरगाय नशासें, बंधन ममता कापे. अ० सत संतोष हैयामां धारे, जनमनां काज सुधारे; दीनभाव हीरदे नहि आणे, अपनो बिरुद संभारे अ० भावदया रणयंभ रोपके, अनहद तुर बजावे; निदानंद अतुली बलराजा, जीतअरि घर आवे. अ०

वर्जी तेमन श्री आनंदघननी महाराजपण कहें छेके— आतम पियाला पीओ मतवाला, चिन्ही अध्यातम वासा; आनंदघन चेतन व्हें खेले, देखे लोक लोक तमासाः आशा ओरनकी क्या कीजे.

अनुभवगम्य एवं आत्मिक सुख बाह्येदियथी करी जणातुं नथी. बहिरात्मी प्राणीओ आत्मिकसुखनो गंध पण अनुभवी श्च-कता नथी. साकरनो स्वाद जेम विषनो कीडो जाणी शकतो नथीं तेम अहानी जीव आत्मिकसुखनो छेश पण जाणी शकतो नथीं. शाश्वत एवं आत्मिक सुख साध्य जाणी तेनी प्राप्ति अर्थे सदाका-छ चारित्र धर्मनी आराधना हानी सुनिवयो एकाम विकास कि

अनुभव,

रेखे, ज्यांसुधी बाह्य पौट्गालिक सुखनी इच्छा हृदयमां प्रगटेखे त्यां सुधी समाकितनी प्राप्ति थती नथी. हानीओ बाह्यभावने स्वमवत् भाति समान जाणी सत्यआत्मिक सुखने म टे प्रयत्न करेखे. पृरपुद्गलवस्तुमां आत्मिकधर्म नथी. स्वस्वरूपमां रमणता करवी तेमांज ल्यलीनता करवी, मनवचन अने कायाना योगनी पृष्टित प्रवस्तुमां थायछे ते निवारवी, अने बहिर्वाचा अने अंतर्वीचानो स्थान करी भव्यो सुक्ति पामे माटे आत्मिकधर्मने स्वरूप पाप्त करवे जोइए. हानथी आत्मिकधर्मनो पूर्ण राग प्रगटेछे ते संबंधी कहे छे.

॥ दुहा. ॥

लाग्यो चोल मजीवनो, रंग ते कब न जाय; धर्म रंग लाग्यो थको, कदी न दूरे थाय ॥ १३९ ॥

भावार्थ-ज्ञानदर्शन चारित्र सहित आत्मानुं स्वरूप समजतां परपुद्गल वस्तु उपरथी राग उत्तरी जायछे, अने आत्माना स्व-रूपपर राग थायछे. आत्मा विना कोइपण वस्तु विय लागती नथी. आत्माना गुण पर्यायमांज रंगावानो राग थायछे. एम आत्मानी ज्ञानदृष्टि स्वस्वरूपने योग्य गणेछे ने परवस्तुने हेय गणेछे. आवी दशा थतां आत्मा पग्वस्तुओमां अहंममत्व भावथी छुटेछे. विरति सन्मुख थएलो आत्मा गुणस्थानकपर चढेछे. दशमा गुणठाणाए राग पण छुटी जायछे अने तेरमा गुणठाणाए केवलज्ञान दर्शन चारित्रनो भोगी बनेछे अने तेरमा गुणठाणाए केवलज्ञान दर्शन चारित्रनो भोगी बनेछ अने अन्ते सिद्धनुद्ध बनेछे. आवी परमात्मदशानुं स्वरूप देखाडनार सद्गुरू महाराजछे. माटे सर्व उपकारीमां गुरूप एवा गुरूना उपर प्रीति धारण करवी जोइप्र ते दर्शावेछे.

(\$85)

परमात्सदर्शन.

" दुहा. ⁾

पुत्र षुत्रीदारा घैकी, अधिको ग्रम् प्यारः प्राणाधिक ग्रमेम जास, ते भवजल तरनार ॥१४०॥ एकज देव ग्रम् पिता, तेमां नहीं संदेहः धर्मग्रम् ते एकछे, अन्य मुनि ग्रणगेहः ॥१४१॥ धर्मग्रम्नी चाहना, धर्मग्रम्नी भक्तिः धर्मग्रम् हृदय वदो, सेवो निजनिज शक्ति ॥१५२॥ सेवे शाश्वव संपदा, देखे दळदर दूर॥ वंदे वंद्यपणुं वरे, गिरूआः ग्रम् जरूरः ॥१४३॥

भावार्थ: - पुत्र पुत्री अने स्त्री उपर मनुष्यने घणो प्यार होयछे तेना करता पण अत्यंतराग सद्गुरूपर थवो जोइए. पोताना प्राण करता पण सद्गुरू उपर अत्यंत मेमधारण करे. हदयमां गुरू शब्द स्मरणनो मंत्र जाप करे. गुरूनी आज्ञा शिर्षपर धारण करे. एवो भव्यजीव जन्म जरा मरणथी पूर्ण समुद्र तरी शकेछे, अने मुक्ति पुरी प्राप्त करेछे. भव्यजीवोए समजवानुं के पिता एक होयछे सद्देव पण एक होयछे, तथा समाकतमदधमांचार्य सद्गुरू पण एक होयछे. समाकितमदधर्माचार्य मुनिनो जे उपगार छे तेना तुल्य अन्य मुनिओनो उपगार नथी. अन्य मुनिओनो यथायोग्य भक्ति विनय साचववोः धर्म गुरूना सिवाय आचार्य उपाध्वाय पण आत्माना मुख्य उपगारी नथी, मादे धर्मगुरू उपर विनश्चा भक्ति प्रीति धारवी. अने तेमनुं बहुमान करवुं. स्वकीय शक्तिः भक्ति प्रीति धारवी. अने तेमनुं बहुमान करवुं. स्वकीय शक्तिः धर्मगुरूनुं आराधन करवुं. धर्मगुरूनी सेवाथी त्विरित शाश्वतः विवसंपदानी माप्ति थायछे, सद्गुरूने देखवाथी दारिद

(840)

भारमदृष्टिः

द्र थायछे. सद्गुरूने वांदवाथी आत्मामां वंद्यपणुं प्रगटेछे. गुरूनी गुरूता अलौकिकछे. गुरूनी गुरूता वर्णी शकाय तेम नथी. भन्य जीवो गुरूनी सेवा करतां गुरूनी गुरूता प्राप्त करेछे. श्री सद्गुरू कथित अनंतगुणधामभूत चेतनमां सदाकाल रमवुं ते दर्शावेछे.

दुहा.

अज अविनाशी जीवछे, अखंड आनंद पूर;

अंतर्देष्टि देखतां, चेतन नहींछे दूर. 1188811 चेतनगत तुज धर्म देख, बाहिर क्यां कर ख्याल; बाहिर्दृष्टि देखतां, भवनी अरहट्ट माल. 1188711 ध्यान धारणा धीरीने, देखे। आत्मस्वरूपः बहिरूपाधि त्यागतां, शिवशाश्वतचिद्रप ॥१५६॥ मृढ बन्यो मानवीकहे, ओ जाणे जगमूढ ॥ आतम ज्ञानी सुख लहे, ए अंतरनुं गृहः ॥१८७॥ रागदेव परिणामनी, ग्रंथित्यां छेदाय ॥ शून्यद्ञा पुद्गलतणी, सहजे शांति पाय. ॥१४८॥ भावार्थ-अज अने अविनाशी एवो आत्माछे. अनादि कालथीछे माटे ते अन कहेवायछे. अने अनंतछे माटे आविनाशी कहेवायछे. अलंड अने आनंदथी परिपूर्ण आत्माछे यत्र आनंदछे तत्र आत्माछे. आनंदनो ज्ञातातथा आनंदनो भोक्ता आत्माजछे. अंतर्देष्टिरूप ज्ञानदर्शनथी देखतां आत्मा शरीरमांज रहेलोछे. पोतानाथी द्र नथी अत्मानी शोधलोळ माटे परदेश

ज्वा जरुर नथी। शरीरमांज व्यापी रहेली आत्मा ज्ञानदृष्टियी

शोधतां जणायछे. बाह्यदृष्टिथी देखतां जडवस्तु जणायछे. अने जड-वस्तुमां आत्मपणुं नथी. जडवस्तुथी भिन्न अरूपी आत्मानी निर्धार करी स्वस्वभावमां रमवुं योग्यछे. जडवस्तुनो धर्म परिहरीने आ-त्मानो धर्म देखवो जोइए. मनवाणी अने कायाना वेपार्मा आत्म धर्म नथी. आत्मानो धर्म त्रियोगनी क्रियाथी तथा लेड्याथी पण भिन्नछे. धारणा तथा ध्यानरूप संयम अवलंबीने हे भव्यजीव आ-त्मानं स्वरूप देख. संयममां विघ्नभूत बहिरूपाधि परिहरीने स्वस्व-रूपमां रमतां शाश्वतकल्याण ज्ञानमय आत्मा थायछे. आत्मज्ञानी आत्मामां रंगायछे त्यारे तेने बाह्यवस्त भ्रांतिमय लागेछे. तेथी तेने बाह्य वा वेपारमां आचारमां प्रेम रहेतो नथी तेथी जगत छोको आत्मज्ञानीने (उन्मत्त) गांडो वनी गयो एम जाणेछे, त्यारे आ-त्मज्ञानी एम जाणेछे के जगतूना लोको आंधळाछे. पोतानी रूद्धि आत्मामां नहीं देखतां जडवस्त्रमां राचीमाची रहेछे. अरे तेवा अ ज्ञानी जीवो जन्मजरा मरणनां दु:ख पामे तेमां शुं आश्चर्य ? एवं ज्ञानीने अज्ञानीनी दृष्टिमां भेद पडेछे, अने एक बीजाने भिन्न दृष्टि-थी देखेछे. आत्मज्ञानी अनंत ज्ञान दर्शन चारित्रनो धामभूत आ-त्माने मानतो आत्मामांज स्थिरउपयोगथी रमणता करी क्षणेक्षणे अनंतानंद भोगवेछे. आवी शुद्धदशामां रागद्वेषना परिणामनी ब्रंथी छेदायछे, अने रागद्वेषना अभावे शुन्यपणुं वर्तायछे. अने आत्मानी सहजज्ञांति प्रगट थायछे ज्ञानीने आवी सहज शांतिदशामां जे भान वर्तेछे ते जणावेछे:-

" दुहा. "

भासे एकज आतमा, सोऽइं सोऽइं ध्यानः तत्त्वमसि आकारमां, चिदानंद भगवान् ॥१४९॥

आस्मद्शा.

आत्मदशा तेवी थइ, थिरता निज ग्रणमांहिः वश वर्त्य मन मांकडं, दुःख देखे नहि क्यांहि.१५०

भावार्थः—उत्कृष्टिनिर्मलध्यानदशामां शुद्ध आत्मस्त्ररूप भासे छे. सोऽहं शब्दथी आत्मध्यान करायछे. आत्मा तेज हुं इत्येवंसोऽहं शब्दनो परमार्थछे ते ज्ञानदर्शन चारित्रमय तेज तुं आत्माछे. बीजो नथी. एम तत्त्वमिस शब्दनो परमार्थछे. सोऽहं अने तत्त्वमिस वान्यथी अनेकांतधर्ममय चेतननुं ध्यान धरतां आत्मा केवलज्ञान अने श्लायिक सुख मगटावेछे, अने त्रण जगतमां पूज्य थायछे. सोऽहं अने तत्त्वमिसना ध्यानमां पोतानो आत्माज चिदानंद भगन्वान्रूप भासेछे. निर्मलध्यानमां शुद्ध आत्मदशा थतां आत्माना गुणोमां स्थिरता थायछे अने मनमर्कटनी चंचलतारूप संकल्पविकलप बंध पडेछे. अर्थात् मन वशमां थायछे. ताहशीध्यानदशामां दुःखना ओघ विलय पामेछे. कोइ ठेकाणे तेने ते काले दुःख देखातुं नथी. भव्यजीत्रोए निर्मलध्यानदशामां स्वजीवन गाळखं जोइए. अंतर्दिष्ट थया विना जे जीवो बाह्य आचारमां धर्म मानेछे अने आत्माना धर्म तरफ लक्ष राखता नथी ते पोते धर्म पामी शक्ता नथी, ने बीजाने धर्म पमाडी शक्ता नथी.

" दहा "

रागे वाद्या जीवडा, आप मतीला मंड;
भूते ढोंगी पापीया, लेइ साधुनं झूंड.
शप्त खांने पीनं पहेरनं, वेशे माने धर्म;
सत्य धर्म निव दाखंवे, बांधे उलटां कर्म.
सत्य देव निव ओळले, दे मिथ्या उपदेश;
पेटमरु कदाग्रही, कुगुरू पामे क्रेश.

मनमाया मूके नहीं, पहेरे त्यागी वेषः भगवा वस्त्रे भोळवे, लोको देशो देशः १५४ धननी आशा राखता, ठगे ठगारा लोकः टीलां टपके धर्म क्यां, आत्म विना सह फोक. १५५

भावार्थ-अहंममत्वमां तल्लीन वनेला केटलाक, आत्मा अने परमात्मानुं स्वरूप नहि जाणनार ढोंगी पापिजीवो साधनं हुन्ह लेइ गामोग।म फरी धन उघरावी दुनियाने ठगेले, पण वस्तुतः जोतां विचारा ते ठगायछे. केटलाकतो खावामां; पीवामां अने वस्रवेषमांज एकांते व्यवहार निश्चयनय अवबोध्या विना धर्म माने छे. धर्मन्ने शुं स्वरुप छे ते सापेक्षद्दष्टिथी पोते जाणी शकता नशी तो अन्यने श्री रीते जणावी शके. धर्मना नामे होंग करी मिध्या उपदेश आपी पोते बुडेछे. अने अन्य जनोने पण संसाराब्धिमां बुडाडेछे. अष्टादश दोषरहित सत्य देवने ते जाणी शकता नथी. सत्यज्ञानना अभावे स्वच्छंदताथी पनमां जेम आवे तेम मिथ्या उपदेश आपेंछे. एतादश उदरपूर्तिस्वार्थसाधक अज्ञान कुगुरूओ बहिरात्मभावथी भवपरंपरा ग्रही क्वेश पामेळे. मनमां रहेळं मिथ्या वस्तुओनुं ममत्व मूके नहि अने त्यागीनो वेष पहेर्यो तेथी र्धुं थयुं. बाह्यत्याग अने अन्तर् त्याग ए वे त्यागनी जरूछे. उपरना फक्त बाह्य त्यागथी त्यागीपणुं कहेवातुं नथी. तेमज ज्ञानगभितवैराग्य विना केटलाक परिग्रहादिक उपाधिमां रक्त होय छतां ब्राह्मत्यामनो अनादर करी अन्तर् त्यागी केहरावे ते पण अनेकान्तनय विरुद्ध छे. माटे ब्राह्मथी फक्त देखाता त्यागी भगवां वस्त्र पहेरी क्रपंथनी जालमां लोकोने फसावेछे. धननी आशा धारक कुगुरूओ अलीक-क उग जाणवा. आत्मज्ञान थया विना उपरना टीलांटपका मायाथी

(848)

सत्य बोधः

करव।मां आवेतो तेथी कंइ आत्मानी रूद्धि प्राप्त थती नथी, तेमज जन्मजरा मरणना बंधनमांथी छूटातुं नथी. सातनय अने चारनिक्षेप पूर्वक आत्मज्ञान थायतो मिथ्यात देवगुरू धर्मना असद् विचारोनो नाश थाय. सत्यज्ञान थतां आत्मज्ञानिनी कवी दशा थायछे ते जणावेछे.

" दोहा. "

फोक करीने लेखने, सघळो दुनिया खेल; योगाम्यासी थइ खरे, टाळे सघळो मेल. १५६ टेळे कर्मनो मेल सहु, करतां निजग्रण खोज; निजघटमा प्रगट तदा, चिदानन्दनी मोज. १५७ अन्तर ऋदि ज्ञानथी, प्रगटपणे निरखाय; बाहिर रुद्धि बापडा, भोळा जन भरमाय १५८ तन्तु धन योवन कारमुं, विद्युत्तना चमकार; परभव साथ न आवतुं, मोह्या मृह गमार. १५९ राची रूद्धि कारणे, जीव हणे केइ लाख; जीवन तेनुं धूळसम,:जाणो छेवट राख. १६०

भावार्थ-आत्मज्ञानिसन्त मांसारिक मोहक पदार्थोनी रचनाने मिथ्या जाणेछे. मोहक जड पदार्थोमां आत्मत्व लेश मात्र नथी. एवं सत्य निश्चय करी योगाभ्यासमां पट्टत्त थायछे. यम, नियम, आसन, माणायाम, मत्याहार, धारणा, ध्यान अने समाथिथी अ-ष्टकर्मरूप मलिनतानो नाश करेछे, ध्यान अने समाथिद्वारा शोध करतां आत्मा पोतेज परमात्मा बनेछे, परमात्मा बनतां अनन्तसुण

परमात्मदर्शन,

(444)

अ।विर्भाव थायछे, केवलज्ञानथी सर्व रूदि पत्यक्ष देखायछे एम आत्मज्ञानिमां परिपूर्ण निश्चय थायछे. आत्मज्ञानी विचारेछे के अ-ज्ञानि पामर जीवोज उपाधिमय सुवर्णादिक बाह्यरुद्धिमां आसक्त होपछे. एवं सत्य अने असत्यतो ज्ञानी निर्णय करेछे. जडवस्तुओ जेवीके तनु धन यौवनपणुं आदिने विद्युतना चमका-रानी पेठे क्षणिक गणेछे, परभव तेमांतुं कंइ साथे आवतुं नथी. अहो मोहमप्रमूर्खजीवो ! जडवस्तुओमां राची रहेछे. जे वस्तुओपर राग धारण करेछे ते वस्तुओ मृत्युबाद कदी साथे आवती नथी. ज्यारे आ प्रमाणे छे तो आत्मानी रूदिविना बाह्य जड रूदिमां वेस मूढनी पेठे राचीमाची रहुं. अलवत तेमां मूर्च्छा धारवी ते योग्य नथो एम ज्ञानी निश्चय करेछे, अज्ञानी पामर जीव बाह्य लक्ष्मीनी प्राप्ति माटे अनेक प्रकारना हिंसक व्यापारोमां लक्ष जीवोनी नाक्ष करेछे. अज्ञानी जीव मत्स्य, सूकर, पश्च, पंखीना जीवोनो आ जी-विका माटे नाश करेछे. तादशअज्ञानिजीवोज्ञं जीववुं पाप माटे जाणबुं. एतादश पापी जीवो मृत्यु पामी नरकादि दुर्गतिमां जायछे. तेवा पापी जीवोत्रुं जीवन धूळ करतां अनिष्ट पृथ्वीमां भारभूत जा-णवुं. तेवा पापिजीवो उपर[े] करुणादृष्टिथी जोवुं योग्यके. उपदेशा दिकथी पापियोनो उद्धार करवो जोइए. राखमां पडेेछं घृत यथा नकामुं छे तद्वत् पापिजीवोत्तं आयुष्य स्वपरापेक्षाए तेवी पापदशा वर्ते तावत पर्येत नकाम्रं जाणवुं. बाह्यमांज मुखनी बुद्धि धारण क-रनाराओनी अग्रभ महत्ति दर्शावेछे.

" दुहा. "

असत्य वाणी बोलीने, जन वंचे धन हेत; अशुभ कर्म पोठी भरी, जन्म जन्म दुःख लेतः १६१ बोरी चाडी चुंगली, परिनन्दा अपमान;

अनधिकारी.

स्वार्थिक जन संसारमां, नरक गति मेमान आत्म प्रशंसा दाखवे, करे घणो अभिमानः धर्म मर्म पामे नहीं, पापी जन नादान. रह३ परापकर्षे चित्तडं, परने देवे आळ; पापारंभ करे मुदा, देवे कोधे गाळ. १६४ पाप पुण्य समजे नहि, ले नहि सद्गुरु बोधः नास्तिक वादी जीवडा, करे शुं चेतन शोध-मत एकान्ते जे प्रहे, ते अज्ञानी जीव; भ्रमण करे भवमां अरे, ले नहि शाश्वत शिव. १६६ भावार्थ-अज्ञानी मोही जीव, असत्य वचन वदीने धनादिक माटे मनुष्योने छेतरेछे, चोरी, चाडी, चुगली करेछे. पापाचरणो-थी पापकर्म ग्रहण करेछे, परजीवोनी निन्दा करेछे, परतुं अपमान करेछे. स्वार्थिक मनुष्य संसारमां अनेक जन्म दुःख परंपरा पामे छे, बाह्यदृष्टिधारकजीव स्वकीय प्रशंसा करेछे. अज्ञानी बाह्य धन सत्तादिकथी मनमां अत्यंताभिमान धारण करेछे, बाह्यदृष्टिजीव ज-इमांज धर्म मानेछे तेथी आत्मधर्मनो मर्म समजतो नथी. मनुष्यजन्म पामी जे आत्मतत्त्वनी शोध करतो नथी अने मोहक पदार्थीमांज अहंममत्व धारण करेछे एवो जीव मोक्षथी पराङ्मल रहेछे, आ-त्मधर्मनी पाप्ति दुर्लभक्टे, नवतत्त्वनुं सूत्मज्ञान थया विना आत्म ज्ञान थतुं नथी, बाह्यदृश्जीव अन्यने नीचो पाडवा मयत्र करेछे. तेमज कृत्याकृत्य विवेक पराङ्मख थइ परजीवने आळ चढावेछे. परजडवस्तुमां ममत्वथीवंधाइ अनेक पकारना पापारंभ करेछे. क्रोधथी परने गाली देखे, अज्ञानी जीव पाप पुण्यमां समजतो नयी. तेमजमोहांध बनवाथी सद्गुरूनो उपदेश श्रवण करतो नथी. सद्गुरूपदेश श्रवण करनारने श्रेष्ठ मानतो नथी, मिध्यात्वमां अंध थएला जीनो आत्मानी शोध करी शकता नथी. नास्तिकवादी एकान्तमत धारण करेछे. एगंतो होइ मिछत्तं, एकांतपणाथी मिध्यात्वछे. मिश्यात्वी (अज्ञानी) मिध्यात्वना योगे भवमां परिश्रमण करेछे, सम्यग्दृष्टि थया विना सम्यक्चारित्रमार्ग माप्त थतो नथी. सम्यग्दृष्टिजीव सम्यक् चारित्र पामी शिवसुख संपत्ति माप्त करेछे. मिध्यात्वीजीव सम्यक् चारित्र पामी शिवसुख संपत्ति माप्त करेछे. मिध्यात्वीजीव वस्तुने यथार्थपणे जाणतो नथी. ईश्वरने मानेछे तोपण ते विपरीत पणे जाणीने मानेछे ते प्रसंगतः जणावेछे, तेमां कोइक तो ईश्वर जगत्नो बनावनार मानेछे तेनो मत प्रथम दर्शावेछे.

॥ दुहाः ॥

कर्ता ईश्वर मानता, जगमां केइक लोक;

सुखदुःख इश्वर आपतो, ए पण वाणी फोक १६९ भावार्थ-जगत्मां केटलाक मनुष्यो जगत्नो बनावनार ईश्वर माने छे, केटलाक मनुष्यो खुदाने जगत्नो बनावनार मालीक माने छे, त्यारे खीस्तियो ते खुदानी मान्यता नहीं स्वीकारतां इश्वनो परमेश्वर जगत्नो बनावनार छे एम स्वीकारे छे. खीस्तिलो कोनी आवी मान्यताथी विरुद्ध पडी केटलाक हिंदुस्थानना हिंदुओ ब्रह्माने जगन्तो बनावनार माने छे त्यारे केटलाक ते पक्षथी विरुद्ध विष्णुभगन्वान जगतनो बनावनार छे एम माने छे. त्यारे केटलाक ते पक्षथी विरुद्ध विष्णुभग्वान जगतनो बनावनार छे एम माने छे. त्यारे केटलाक ते पक्षथी विरुद्ध विष्णुभग्वान जगतनो बनावनार छे एम माने छे. त्यारे केटलाक ते पक्षथी विरुद्ध विष्णुभग्वान जगतनो बनावनार छे एम माने छे. त्यारे केटलाक ते पक्षथी कर्म पडी जगत् बन्धुं छे एवं स्वीकारे छे. खीस्तियो दुनिया सातहनार वर्ष लगभगनी बने ली माने छे. त्यारे मुसस्मानो हेथी विशेषवर्ष करे छे. ब्रह्मा जगत्कर्तावादी हेथी भिन्न रीते करे छे. शक्ति पंचान केथी भिन्नपणुं स्वीकारे छे. आर्यसमाजीओ जगत् अनादि छे इस

मानीने पुनः जगत्नो बनावनार ईश्वर सर्वथी भिन्नरीत्या कथेछे, स्त्रीस्ति ग्रुसल्मान अने हिंदुओ जगतनो बनावनार भिन्न भिन्न स्वी-कारेके, सर्व पोतपोताचा पक्षने सत्य मानी अन्यपक्षनुं खंडन करेके. म्रुसल्मानो पूनर्जन्म स्वीकारता नथी. पशुपंखीमां खुदानीरु (जीव) छे एम माने छे त्यारे स्त्रीस्तिधर्मवाळाओ तो पुनर्जन्म मानता नथी. तेमज पशुपंखीमां आत्मा नथी एम माने छे. पशुपंखीने मार्यामां स्त्रीस्तियो दोष मानता नथी. हिंदुधर्म पाळनाराओ पुनर्जन्म मानेछे तेमज पशुपंखीमां आत्मा मानेछे अने पशुपंखी मार्यामां पाप गणेछे. जैनधर्म पाळनाराओ पुनर्जन्म मानेछे अने एवे न्द्रियादिक सर्व जी-वोनी दया पाळवी तेने मुख्य धर्म स्वीकारेछे. हिंदुओमां वेटलाक वेदनो बनावनार ईश्वरछे एम मानेछे. त्यारे वेटलाक कहेछेके वेदनो वनावनार कोइ नथी एम पौरुषेय अने अपौरुषेयनो विवाद चाली रहोछे. वेटलाक हिंदुओ कर्मकाण्डने मुख्यधर्मः तरीके गणेछे. त्यारे केटलाक ज्ञानकाण्डने मुख्य गणेले. वेदमाननाराओ पैकी केटलाक जगत स्वम समान भ्रांतिरूप मानी तेनो कर्ता ईश्वरछे एम मानता नथी. त्यारे वे.टलाक जगत्नो कर्ता ईश्वरछे एम मानेछे. ज्ञानका-ण्डमां पण अद्वेतवाद माननाराओ जगत अनादि मानेछे. अर्थात तेनो बनावनार कोइ मानता नथी. जे वस्तुनी आदि नथी अर्थात अनादिछे तेनो वनावनार कोइ नथी जेनो कोइ बनावनारछे ते वस्तु अनादि कहेवाती नथी ज्यारे जगत् अनादिकालथी छे एम मान्युं तो ईश्वर कर्तस्ववाद रहेतो नथी. वेद पश्चात उपनिषदो बनी एम मानवामा पावेछे. पश्चात् व्यासऋषि हेमणे तथा भग-बद्गीता तथा अष्टादश पुराण बनाव्यां एवं केचित् मानेछे. आर्थ-समाजीओ अढार पुराण व्यासजीनां बनावेलां मानता नथी. आधु-निक बनेलां माने छे. एम पुराणो संबंधी चर्चा चाली रही छे. सना-

तनपक्षवाळा तथा आर्यसमाजीओने भगवद्गीता मान्यछे. तेमां पण केटलाक श्लोको मिक्षत भगवद्गीतामां छ एम आर्यसमाजीओ मानेछे. भगवद्गीतामां पण हैश्वर जीवोने सुखदुःखनो न्याय आपतो नथी. एवं मान्युंछे. तथा जगत्कर्तापणुं ईश्वरमां नथी एवं स्वीकार्युंछे. शिष्य ने सद्गुरो भगवद्गीताना कया अध्यायमां तेम दर्शान्युंछे

ते जणावशो-सद्गुरु-स्वच्छ चित्तथी श्रवण करः भगवद्गीता अध्याय पंचम १४ चर्तुदश श्लोक ॥ श्लोकः

न कर्तृत्वं न कर्माणि, लोकस्य सृजित प्रभुः न कर्मफल संयोगं, स्वभावस्तु प्रवर्तते ॥ १४ ॥ नादत्ते कस्यचित् पापं, नचैव सुकृतं विभुः अज्ञानेनाऽऽवृतं ज्ञानं, तेन मुद्धन्ति जंतवः ॥ १५ ॥

प्रभ्न, ईश्वर परमात्मा लोकनां कर्मोने बनावता नथी तथा लोकतुं (जगत्नुं) कर्तल पण ईश्वरमां नथी. अर्थात् दुनियाने ईश्वर परमास्मा रचता नथी. तेमज जीवोने पुण्य पापनो संयोग करावनार ईश्वर नथी. तेमज पुण्यपापनुं फल आपनार पण ईश्वर नथी त्यारे जगत् कर्म विगेरेनुं शुं समजनुं तेना पत्युत्तरमां जणावेछे के जीवोने कर्मना स्वभावथी सुखदुःख थया करेछे. जगत् अनाहिकालथी छे एम तेनो स्वभावछे. जेवां जीवो कर्म करेछे तेवां फल स्वभाव ममाणे भोगवेछे. ईश्वरने तेमां लेवा देवा नथी. तेम छतां जीवो ईश्वरने कर्त्ता मानी सुंझायछे. पत्ररमा श्लोकमां स्पष्ट जणावे छेके. ईश्वर कोइनां पाप पुण्य ग्रहण करतो नथी कोइ जीवे पाप कर्यु होयतो ते टाळवा समर्थ नथी. उपनिषद्मां कर्बु छे के—

श्लोक.

कृत कर्मक्षयो नास्ति, कल्पकोटीशतैरिपः अवश्यमेव भोक्तव्यं, कृतं कर्म शुभाशुभं. ॥ १।

कोटी कल्पशते पण पुण्य पापरूप जे कर्म वर्योछे ते भोगगव्या विना छुटको नथी. त्यारे ईश्वर जीवोनुं पाप पोते शी रीते
प्रहण करे, ईश्वर जीवोना पापपुण्य छेतो नथी. जीवो शुभ कर्म
अने अशुभ कर्म करी स्वयं कर्मना उदयथी तेनुं फल भोगवेछे,
ईश्वर पेदा करेछे. ईश्वर संहरेछे एम अज्ञानथी आच्छादित दृष्टिवाळा जीवो मानीने ग्रंझायछे, जगत् कर्ता ईश्वर आ प्रमाणे जोतां
सिद्ध थतो नथी. अन्यत्र पण भगवद्गीतामां ईश्वर अने प्रकृति
(जगत्) अनादिकालथी छे एम कृष्छे ज्यारे वे अनादिकालथी
छे त्यारे प्रकृतिनो कर्ता ईश्वर शी रीते सिद्ध दरेः अर्थात् सिद्ध दर्भेकः
रतो नथी. तत् पादः भगवद्गीता अध्याय १३ त्रयोदश—

प्रकृतिं पुरुषं चैव, विद्धयनादी छभावपि; विकाशंश्वरणांश्चेव, विद्धि प्रकृतिसंभवान् ॥ १९॥

पुरुष (परमात्मा) मकृति (जगत् आवे अनादिकाळथीछे एम जाण. सत्व रजो अने तमोगुण तथा विकारो मकृतिज छे एम जाण आ उपरथी पण सिद्ध थायछे के अनादिकाळथी आत्मा अने कर्मछे. तेम जगत् पण अनादिकाळथी छे. अद्वैतवादी ब्रह्मसत्यं जगत् मिथ्या एक अद्वितीय ब्रह्मज माने छे. ते जमत्नो कर्त्ता इश्वर अन्य मानतो नथी आ जगत् देखायछे ते भ्रांति मात्र छे. त्यारे तेनो बनावनार ईश्वर केम कहेवायः एम अद्वैतवादियो माने छे. जैनदर्शन जगत्ने जगत् स्वरूपे सत् माने छे. पण जगत् अनादिथीछे. सत्वात्

सत्पणाथी जे वस्तु सत् होयछे ते अनादिथी छे. जेम षड्द्रव्यः जिनदर्शनमां षड्द्रव्य सत्छे. हवे मूळ विषय जगत् कर्ता ईश्वर संवधी निराकरणनोछे. वेदांत ग्रंथाधारे जोतां पण केटलेक स्थाने ईश्वर कर्तत्व स्वीकार्युछे. अने केटलेक ठेकाणे जगत्नो बनावनार ईश्वर नथी एम स्वीकार्युछे. अन्य दर्शनपण जिन दर्शनना सिद्धां-सनो केटलाक अंशे अनुसरेछे. हवे जिनदर्शनमां जगत्कर्त्व ईश्वर संबंधी केवी मान्यता छे ते बतावेछे.

" दहा. " ईश्वरना वे भेदछे, जीव सिद्ध वे जाण; कर्ता निज निज कर्मना, जीवी मनमां आण ॥१६८॥ निजने सुखदुःख आपतो, जीवज करी नवकर्मः कर्त्ता भोक्ता जीवछे, ईश्वर कर्त्ता मर्म. 11289H चेतन ईश्वर जाणीए, नय व्यवहार प्रमाण अशुद्ध नय ईश्वर कथ्यो, सापेक्षा मन आण- ॥१७०॥ कर्त्ता परपरिणामथी, चेतन ईश्वर जोय; श्रद्ध निश्चय नयथकी, कर्म करे नहि सोयः ॥१७१॥ सुल कर्त्ता निज भावथी, दुःल कर्ता परभाव; परपरिणातिना नादाथी, कर्त्ता निजयण दावः ॥१७२॥ सापेक्षा समजे नहीं, पक्ष ग्रहे एकात; इंश्वर कर्त्ता मानता, निरपेक्षाथी आन्त, 1150511 कर्म मेल जेने नहीं, निराकार भगवानः कयुं प्रयोजन इशने, कर निश्चयथी ज्ञानः ॥१७४॥

(६६५) सापेक्षाय ईश्वर कर्तृत्व.

परमत्रेश शिव सिक्डमां, इच्छा नहीं अभिमानः **श्रं ते कर्ता सृष्टिनो, माने भूली भान** 112031 डपादान जेवुं अहो, तादृश कार्य कहाय; निसकार ईश्वरथकी, जडसृष्टि न रचाय. H309H उपावान कारणथकी, जाणो कार्य अभेद; उपादाम ईश्वर कहीं, सृष्टिरूप ते खेद-निमित्त हेतु इसजो, उत्पत्तिमां होय: *ईश्वर*शक्ति नित्यके, अनित्यते अवलोय. उपादान कारण विना, निमित्तथी शुं थाय; उपादान कोने कहो, ज्ञाने सत्य जणाय. कार्य पूर्व तो होयछे, कारणनो सद्भाव; अवादाम कारण विना, बने न एह बनाव. **उपादानथी भिन्न**छे, निमित्त कारण भाइ; भिन्न भिन्न शक्तितणी, न्यांथी एक सगाइ- ॥१८१॥ सृष्टितुं कारण कदा, ईश्वर नहीं कल्पायः नहि तो रासभ पण कहो, सद्युक्तिघर न्याय ॥१८२॥ पृथ्वयादिक परमाणुओ, प्रही सृष्टि निर्मायः ईश्वरमां यदि मानीए, चेतन क्यांथी आय. काश्ट**३**।। परमाणु समुदावथी, जडनुं कार्यज थाय; नेतन तेथी भिन्नछे, अरणि वन्हि न्याय.

पुत्रल द्रव्य अनादिछे, तथा जीव पण जाणः निश्चक्यी वे भिन्नछे, भिन्नशक्ति पण आण ॥१८५॥ जडमां चेतन परिणमे, जाणो नय व्यवहारः अवेकान्तमत ज्ञान वण, लहो न सम्यक्सार. ॥१८६॥ काल अनादि द्रव्य पर्, कर्त्ता ईश्वर केमः ईश्वरशक्ति नित्यवा, अनित्य शुं त्यां एमः ॥१८७॥ कर्तृत्वशक्ति नित्य तो, नित्य जगत् निर्माय, कर्त्ता शक्ति अनित्य तो, क्षणमां विणशी जाय ॥१८८॥ कर्तृत्वराक्ति यादशी, तादश कार्यज यायः बित्यानित्य विकल्पशी, वे पक्षे दूषाय-1195311 ईश्वर साकारी कहो, तोपण दोषित याप, पूर्वापर विचारतां, दोषो बहुला आय. नैयायिकवादी कहे, कर्ता ईश्वर सत्यः पण सक्तिथी लेखतां, लागे तेह असत्य ।।१९३॥ ईश्वर इच्छाथी कदा, सृष्टि नहीं निर्मायः निमित्र इच्छा जो कहो, केम स्वभाव न थाय. ॥१९॥। का विनिगयना त्यां लहो, करो कदाबह दूर; स्वभावप्रकिथी ग्रहो, तो नहि दोष जरूर ।। १९६॥ उपादान मध्ये रही, तिरोभाव जे शक्ति, तेनी श्राविभीवता, परिपूर्ण निजन्यकिः गाः १ 💵 (Rev.)

ईश्वरजगत्कर्तृस्वनिराकरण,

श्रद्धशक्तिछे वस्तुमां, वर्ते काल अनादिः, आविर्भाव कराववा, निमित्तहेतु उपाधि-आविर्भाव जे धर्मनो, कार्यरूप ते थाय; घटनुं कारण मृत्तिका, अनन्य कार्य कहाय.॥१९६॥ घटनो नारा कर्याथकी, होय न कारण नारा; कारण नित्यपणे रहे, मृत्तिकारूप खास. काल स्वभावने नियति, कर्म जद्यम ए पश्चः कार्य प्रति कारण सदा, धरो न मनमां खंच ।।१९८॥ राग दोष जेने नथी, ते ईश्वर कहेवाय: तेने इच्छा जो कहो, तो ईश्वरता जाय-कृत्य कृत्य ईश्वर थया, तेथी शुं इच्छाय: इच्छा ज्यां त्यां रागद्वेष, रागदोष दुःख पाय.॥२००॥ रागदोष सद्चारिणी, इच्छा भवनुं मल; ईश्वरने इच्छा कहो, इहा मोह प्रतिकुल. इच्छा नहीं त्यां सुलशुं[,] कहेशे जन जो कोय; शर्म अनंतु समाधिमां, इच्छा त्यां नहि होय. । १९०२॥ जडवस्तुज ईश्वरथकी बने नहि कोइ काल: जडः स्वभाव न इशमां, धर मनमांहि ख्यालः ॥ १०३॥ ईश्वर शक्ति अनन्तछे, जडनी शक्तिज लेशः सृष्टि बनेछे इराथी, युक्ति लहो ए वेश.

ईश्वर कर्त्ता वादिनं, वदवुं युक्ति हीनः जह ईश्वरना धर्म बे, बर्ते निशदिन भिन्नः भिन्न धर्म बेना सदा, भिन्नधर्मी पण दोयः निराकार साकार एक, रूपी अरूपी जोय ।।२०६॥ नेतन शक्ति अनन्त छे, पुद्रगलशक्ति अनन्तः नेतनशक्ति ज्ञातृता, जडता पुद्रलतंतः ॥२०७॥ निजस्वभावे शक्ति त्यां, कोइ नहीं प्रतंत्रः निश्चयनयथी जाणीए, ज्ञानी एम वदंत. ॥२०८॥ अनन्त शक्ति अस्तित।, निज द्रव्ये वर्तायः पर अपेक्षाए ग्रही, नास्तिता एम थाय. अनन्त शक्ति अस्तिता, नास्तिताज अवलोयः षद्द्रव्ये व्यापी सदा, निश्चयथी ए जोय. ॥२१०॥ चेतनथी जह जो बने, तो खरशृंग जणायः स्वप्न सुखलडी सत्यरूप, सत्य विचारा न्याय.॥२९१॥ अनन्त शक्ति इशनी, ईश्वरमांहि समायः कूपनी छाया कूपमां, तद्रत् जाणो न्याय ।।२१२॥ जडनी शक्ति अनन्त छे, पुद्ग्रल धर्मे जोयः वर्गादिक तेमां रह्या, अन्य न कर्त्ता कोय- ॥२८३॥ आत्मापेक्षायी अहो, जड़नी शक्तिज लेशः सावेशा अवबोधीने, छहा न मनमां क्वेश ॥२१४॥

ई*भरकर्तृत्वनिशकर*ण

तालपूर विष लेक्सथी, इस्ती प्राण हणाय; निजनिजना धर्मे वड्डं, अनेकान्तमतन्याय. ईश्वरथी सृष्टि बने, कदी नहीं कहेवाय: समज समजे सानमां, सद्युक्ति मन लाय. ॥२२६। जीव कही चेतन कही, अर्थ एकनो एक: ईश्वरसम छे आतमा, कर्त्ता इश न टेक लक्ष चोराशी योनिमां, अटता जीव अनन्तः; कर्माष्टकना योगथी, पामे दुःख अनन्तः काल अनादिथी ग्रही, जीवे कर्मनी राश; बांधे छोडे कर्मने, करतो परनी आहा. भवितव्यतायोगथी, थावे कर्म विनाशः अविचल आत्मस्वरूपनो, सहेजे थाय विकासः॥११०॥ इश्रु विभु परत्रह्म छे, परमेश्वर सुल्धाम; सोध्हं सोध्हं पद लह्यं, तेने करुं प्रणाम-जीवो कर्म सपणथकी, अनन्त ईश्वर यायः एकाऽनेक सिद्धात्मनी, ज्ञानी कुंची पाय; कर्म लप्यायी सारिला, समजे ज्ञानी विवेकः व्यक्ति स्वरूपे भिन्नता, ग्रणव्यपेक्षा एक. ॥११ ६॥ रागदांष जेने नथी, नहि स्मता परभाव; अवस्त आत्मस्त्ररूपमा, रमता श्रद्ध स्त्रभाव ॥१११७॥

परम श्रभुसम ध्यानथी, स्वकीय नेतन धारः ध्याता ध्याने ध्येयरूप, सिद्ध बुद्ध निर्धार. ॥११९॥ तादक ईश्वर सिद्धने, वन्दु वार हजारः तेना सम्बग् ज्ञानथी, लहिये भवजलपार ॥११६॥ सम्यग् ज्ञानिकयाथकी, मोक्ष न होय परोक्षः आस्मद्वान ध्यानादिथी, त्वरित पामो मोक्ष-॥११९॥

भावार्थ-ईन्द्रना ने भेदछे. अष्टकर्मसहित संसारि जीन ते पन अपेक्षाए ईश्वरछे, अष्टकर्मनो संपूर्ण नाश करी जे शक्ति पाम्या हे सिद्ध परमात्मा ईश्वर कहेवायछे, जीवो कर्मरूप स्टिशना कर्मा पर-परिणतियोगे जाणवा, शाता अने अशाता वेदनीय वर्ध क्रकी आ-त्माच पोताने सुसा दुःस आपेछे. कर्मस्र हिनो कर्ता तथा तेनी भोक्त व्यवस्प ईंपर जाणवो. जीवरूप ईंपर संसारिक्रअवस्थामां कर्मसङ्ख्यो कर्चा जाणवो. स्टष्टिकर्चृत्व जीवरुप ईश्वरवे परभाव स्मणकानी अवेक्षाच चटेछे एम रहस्य अनुमेक्षा करवा योग्यछे. जीवरूप ईबार, कर्मरूप स्टिशनो कत्ती व्यवहारनयथी जाणवी. अशुद्धनयथी जीवरूप ईश्वर परवस्तुनो कत्ती निवित्तपणे जाणवी. हे भव्य आवी अपेक्षायी ईश्वर कर्तत्वरहस्य हृद्यमां थारण कर. भूक निध्यनपथी कर्मरूप स्टिनो कर्चा ईश्वर नथी. आत्मिक सहज मुखनो कर्ता अशुद्ध स्वभावधी आत्याले. द्वःतनो कर्त्वा परस्वभावथी आत्माछे. ज्यारे संपूर्ण अशुद्ध परिणति (परपरिणति) को आत्मध्यानकी नाम थायछे त्यारे आत्माना अनंतग्रुणनो आ-ला स्वयं कर्ता थायछे.

क भवना सामेक्षता समजता नथी. अने एकांत मध प्रदेश

(३३४) ईश्वर सगद कर्तृत्व निराकरण

करेछे ते शुद्ध परमात्मारूप ईश्वरने जडवरतुनो कर्त्ता मानी श्रां-तिभां पढेछे. कर्मरूप मलिनता जेनामां नथी एवा सिद्धबुद्ध परमा-त्माने शुं प्रयोजनछे के छष्टिनी रचना करे. हे भव्य पश्चपात त्यजी माध्यस्थ दृष्टियी अववोध.

परमत्रश्च, परमब्रह्मरूप ईश्वरमां रजोगुण, तभो गुणादि नथी. इच्छा नथी, अभिमान नथी, वेदांतमा पण कछुं के न च स पुनरावर्तते श्वक्तिमां गएला आत्माओ शुद्रबुद्ध यह पश्चात् संसा-रमां जन्म लेता नथी. रागद्रेषरहित सिद्ध (ईश्वर) जडस्रष्टिनो कत्ती कदा बनी शकतो नथी. जडस्रष्टि रचनानो सिद्धबुद्धभां स्व-भाव नथी ते माटे.

प्रश्न-सिद्ध परमात्मा जडसृष्टिना कर्ची नथी मानता त्यारे अन्य कोइ सृष्टिना कर्ची छे के नहीं

उत्तर-सिद्ध परमात्मा-ज्ञान, दर्शन, चारित्र, वीर्य, सुख आदि आत्माना अनंत शृद्ध गुणरूप सृष्टिना कत्ती छे. सायिकमाने आत्माना शृध्यरूप सृष्टिना कर्त्ती सादि अनंतमा मंगेछे. पर् रमाणु आदि जडसृष्टित्व स्वभावना बीलकुल कर्त्ती नथी. जे आत्माना शृध्य क्षायिक धर्मना कर्त्ती थया ते कर्मरूप सृष्टिना कर्त्ती कर्दा थता नथी.

माटे विवेकदृष्टिथी भव्यात्मन सत्यतत्त्व विचार,

यादक उपादान कारण होयछे तादक कार्यनी उत्पत्ति थायछे, जिम मृत्तिकारूप उपादान कारण जेवुं होयछे तेवुं घटरूप कार्य बनेछे. उपादान कारण कार्यरूप बनेछे. घटकार्यमां कुंभकार नििमत्त कारणछे. घटरूप कार्यमां उपादानकारण मृत्तिकाछे. अने
निमित्तकारण कुंभकार. दंडचक वगेरेछे. तेम जो कर्मरहित परमात्माए जगत् बनाच्युं एम कोइ माने तो तेमां उपादान अने निमित्त

कारण कोण? निराकार ईश्वरने जगतनुं उपादान कारण मानतां जगत्रूप ईश्वर बन्यो. ए पण महादूषण आवेछे. सिध्धान्त एवो छे के निराकारथी साकारनी उत्पत्ति थती नथी. माटे निराकारथी जडस्रष्टि रचाती नथी एम सिध्ध ठरेछे.

वळी नियम एवोछे के उपादान कारणथी कार्यनो अभेदछे, जेम मृत्तिकारूप उपादानथी घटरूप कार्यनो अभेदछे. मृत्तिकाथी घट भिन्न नथी. तेवीज रीतिथी निराकार ईश्वरथी जड सृष्टि मान-वामां आवे तो जगत्रूपज ईश्वर बन्यो, सृष्टिरूप कार्यथी ईश्वरनो अभेद थयो माटे जडसृष्टिरूप ईश्वर मानवामां आवे तो अनेक दू-पणरूप खेदनी प्राप्ति थायछे,

सष्टिकार्यमां ईश्वरने निमित्त हेतु मानतां वे किकल्प उत्पन्न थायछे, ईश्वरनी शक्ति नित्यछे के अनित्यछे ? उपादान कारण विना फक्त निमित्तकारणथी कोइ कार्य वनतुं नथी. कार्यनी पूर्वे उपादान तथा निमित्तनो सद्भावछे. उपादान विना निमित्तभूत ईश्वरथी स्रष्टि-रूप कार्य वनी शके नहीं, ईश्वरनी इच्छा निमित्त हेतु कोइ माने तो ते पण योग्य नथी, कारण के ईश्वरनेइच्छा होती नथी. अपूर्णने इच्छा होयछे. कृतकृत्य परमात्माने अंशमात्र पण इच्छा होती नथी. प्रमाण युक्ति अनुभवथी विरूद्ध स्रष्टिहेतु ईश्वर कल्पातो नथी. तेम छतां यदि ईश्वर मानवामां आवे तो रासभने केम मानवामां न आवे ? पृथिवीआदि परमाणुओनुं ग्रहण करीने ईश्वर सृष्टि रवेछे एम जो मानवामां आवे तो जीवो क्यांथी आव्या. जीवो अनादिकालनाछे एम कहेवामां आवे तो सृष्टिपण अनादिकालथीछे एवं केम मानता नथी. अनादिकालना जीवो सृष्टि विना अन्यत्र रही शकता नथी माटे सृष्टि पण अनादिकालथी छे एम स्पष्ट भासेछे.परमाणुओना कार्यथी वेतन (आत्मा) भिन्नछे माटे अर्णिमां वन्हि रहेछे तेवीरीते आत्मा

पण देहमां रहे छे पण पंचभूतथी भिन्न छे. जड अने चेतन ए बे वस्तु आ भमाणे विचारतां अनादिकालथी छे एम सिद्ध थाय छे. जीव अने जडनी परस्पर शक्तियो पण भिन्न छे. जडवस्तुमां चेतन कर्मनावशे परिणमे छे ते व्यवहारनयथी जाण छुं. निश्चयथी जडमां चेतन परि-णमतो नथी, आ प्रमाणे अनेकान्तनयज्ञान थया विना तत्त्व छुं यथार्थ भासन थतुं नथी.

धर्मीस्तिकाय, अधर्मीस्तिकाय, पुद्रलास्तिकाय, आकाशास्तिकाय, काल अने जीव एम षड्द्रव्यथी जगत् कहेवायछे. अनादिकालथी षड्द्रव्यछे. ते षड्द्रव्य, द्रव्यार्थिकनयथी नित्यछे अने
पर्यायर्थिकनयथी अनित्यछे. ते षड्द्रव्यथी भिन्न कोइ वस्तु नथी।
तो षड्द्रव्यनो कर्त्ता ईश्वर केम मानी शकाय. अर्थात् न मानी शकाय.
हवे वे विकल्प करवामां आवेछे. जगत्कर्तृत्व शक्ति ईश्वरमां नित्य
छे के अनित्यछे ? जगत्कर्तृत शक्ति नित्य मानवामां आवे तो ईश्वर
सदाकाल जगत् बनाव्या करशे. एवं महादोष आवेछे, तेमज जगत्कर्तृत्व शक्ति अनित्य मानवामां आवे तो जगत्तृत्व शक्ति क्षणमां
अनित्य होवाथी विणशी जतां सृष्टि पण क्षणमां नाश पामी जाय.
पण तेम प्रत्यक्ष अनुभव विरूद्धछे माटे वे पक्षथी ईश्वरशक्ति जगत्
कर्तृत्वमां सिद्ध थती नथी. एम नित्यानित्य पक्षथी ईश्वरशक्ति
दूर थायछे.

जगत् कर्ता ईश्वरने साकारी मानवामां आवे तो अनेकदोषो उत्पन्न थायछे. साकार ईश्वर एकदेशावस्थित होवाथी सर्वत्र सृष्टि बनावी शके नहीं साकारकुंभकारवत् साकारकुंभकारनी पेठे कर्म विना देह होय नहीं. अने देहवडे ईश्वर साकार देवतानी पेठे क-हेवाय तो कर्म सहित ठर्यो. सकर्माईश्वर ठरवाथी अन्य जीवोनी पेठे कर्मना परतंत्र रहा, अने स्वतंत्र थयो नहीं. त्यारे ते जगत् बनाव-

परमात्मदृशीन.

(241)

वामां कयं समर्थ बाय.

नैयायिक कहें के सृष्टिनों कर्ता ईश्वर सत्य छे पण ते पूर्वी-क्त युक्तिथी विचारतां सत्य नथी. ईश्वरनी इच्छाथी जगत् उत्पन थयुं एम मानवामां आवे तो अनादिका**ल**ी जड अने चेतन बे पदार्थ छे. एम अनादिस्वभाव केम न मानवामां आवे, अर्थात् त्यां एकत्र पक्षपातिनी युक्ति कइ छे के अनादिकालनो स्वभाव न मानवामां आवे अने इच्छाज मानवामां आवे. इच्छा मोहरूप छे. ईश्वरने इच्छा कहोतो साधारण मनुष्यनी पेठे ईश्वर पण मोही **ठर्यो** त्यारे तेनुं ईश्वरपणुं रहेतुं नश्री. माटे ईश्वरनामां इच्छा मानवी ते शसशृंगवत् असत्य छे. आत्मानी परमात्मदशामां ज्ञान, दर्शन, चा-रित्र, वीर्य, सुखादि गुणो उपादान कारणछे. तेनो परिपूर्ण आवि-र्भाव तेज परमात्मपणुं जाणवुं. अनन्तधर्मनी शुद्धि प्रगटाववा निमित्त हेतुनी जरूरछे, आत्माना धर्मनो आविर्भाव तेज कार्य जाणबुं. घटतं कारण जेम मृत्तिका अनन्य कारण कहेवायछे तेम परमात्म दशारूप कार्यमां ज्ञान, दर्शन, चारित्ररूप अनन्य कारण उपादानछे. घटनो नाश थवाथी मृत्तिकानो नाश थतो नथी. अर्थात कारण सदाकाल वर्तेछे. अत्र काल, स्वभाव, नियति, कर्म, अने उग्रम पंच कारणथी कार्योत्पत्ति थायछे. पंच कारणमांथी एक कारणनी उत्था-पना करतां मिथ्यात पाप्त थायछे. आ बाबतमां छेशमात्र पण शंका करवी योग्य नथी.

राग अने द्वेषनो सर्वथा जेणे क्षय कर्योछे ते ईश्वर परमात्मा कहेवायछे. एवा शुद्ध परमात्माने जो इच्छा कहेवामां आवे तो ईश्वरतानो नाश थायछे. सर्व प्रकारनी इच्छानो जेणे नाश कर्योछे एवा ईश्वरने जगत करवानी इच्छा क्यांथी होय. अलवत कदी होय नहीं, रामद्वेषसहचारिणी इच्छाज संसारनं मूलछे. अने तेबी इच्छा

इंश्वर, कर्तृस्व निराकरण,

ईश्वरने कहेवी ते मोहचेष्टित जाणवुं. अहो अज्ञाननी केटली शक्ति.

कोइ एम कहे के—ज्यां इच्छा नथी त्यां शुं सुख ? अलबत कंइ नहीं. आवी रीते बोलनारे समजबुं के योगीन्द्रमहात्मा समाधिमां अनन्त सुख वेदेळे, पण ते समये तेने इच्छा नथी माटे इच्छा होय त्यां सुख एवी व्याप्ति घटती नथी.

दस्यजडवस्तु कदापि ईश्वरथी बनी शके नहीं. ईश्वरमां जडस्व-भाव नथी. जडदस्तुनो कत्ती वान्याय आपनार ईश्वर नथी. हे भव्य हृदयमां अवधार.

कोइ एम कहेशे के-ईश्वरनी शक्ति अनन्तछे अने जडपदार्थनी शक्ति अल्पछे माटे ईश्वरथी सृष्टि बनेछे. आ युक्ति एण बेश नथी ते जणावेछे. ईश्वरनी शक्ति चैतन्यभावे अनन्तछे तेम जडनी शक्ति जडभावे अनन्तछे. ईश्वरना धर्म अनन्तछे जेम जडतत्त्वना धर्म एण अनन्तछे. आत्मा अने जड बे तत्त्व भिन्नधर्मीछे. जडपुद्गल द्रव्य साकारछे अने आत्मतत्त्व निराकारछे. मत्येक तत्त्व स्वस्वभावे स्वतंत्रछे. वस्तुतः कोइ द्रव्य परतंत्र नथी. मत्येक द्रव्यमां अनन्त अस्तिधर्म अने परनी अपेक्षाए अनन्तनास्तिधर्म रह्योछे. अस्तिधर्म अने नास्तिकधर्मनी अनन्तता षड्दव्यमां व्यापी रहीछे. अन्य द्रव्यनो कर्त्ती अन्यद्रव्य वस्तुतः नथी.

चेतनथी जो जडनी उत्पत्ति उपादानपणे थाय तो खरशृंगनी पण उत्पत्ति थायः पण खरने शृंग थतांज नथी ते प्रमाणे ईश्वररूप चैतन्य मूर्तिमांथी जडवस्तु थती नथीः त्यारे ईश्वरमांथी जगत् थयुं एवं प्रस्राप करवो ते अंधश्रद्धानी बुद्धि विना अन्य समजातुं नथीः स्वम्न मुखडीथी पेट भराय तो ईश्वरमांथी जडनी उत्पत्ति थायः

आ प्रमाणे सिद्धांत वदवाथी पश्च थशे के अही ज्यारे परमा-त्माथी जगत्नी उत्पत्ति थती नथी, त्यारे तेमनी अनन्त शक्ति शा कामनी ? तेना पत्युत्तरमां जणावेछे के ईश्वरनी ज्ञानादिक अनन्त शक्तियो ईश्वरमांज समायछे. ऋपनी छाया ऋपमां समायछे ते पमाणे अत्र न्याय समजवो. जडद्रव्योनी अनन्त शक्ति जडमां व्यापी रहीछे. पुद्रलद्रव्यना वर्णादिकनी शक्ति पुद्रलद्रव्यने त्यजी अन्यत्र जती नथी. पुद्रलद्रव्यनो निश्रयथी अन्यद्रव्य कर्त्ता शीरीते होइ शके,

आत्मद्रव्यनी अपेक्षाए पुद्रलद्रव्यनी शक्ति अल्प गणायके.
पण वस्तुतः जेम आत्मद्रव्यनी आत्मस्त्ररूपे अनन्ति शक्ति तथा
पुद्रलद्रव्यनी शक्ति पण तेना स्वरूपे अनन्तके. सापेक्षा अवबोधतां
कोइपण मकारनी हानि आवती नथी. तालप्रविषकेशथी हस्तिना
माणनो नाश थायके, एक लेशमात्र तालप्रविषधी हस्तिनो माण
नाश थाय त्यारे कहोके पुद्रलनी शक्ति केटलीकेः आत्मानी शक्ति
अपेक्षाए मोटीके तेमज पुद्रलनी शक्ति पुद्रलनी अपेक्षाए मोटीके.
आ उपरथी सिद्ध थायके के शुद्धबुद्धपरमात्माथी सृष्टि बनी शके
नहीं, माध्यस्थद्दृष्टिवाला पुरुषो सहजमां तत्त्व अवबोधी शकेके.
ईश्वर सर्वज्ञ परभावरूप सृष्टिनो कर्त्ता नथी. एवी प्रतिज्ञा युक्तिमतीके.

चोराज्ञीलक्षजीवयोनिमां जीवो परिश्रमण करेछे. अज्ञान राग देष प्रयोगे जीव संसारमां परिश्रमण करेछे कर्मथीज संसारमां परि-श्रमण थायछे. कर्यो कर्म प्रमाणे सुख दुःख थायछे त्यारे ज्ञामाटे हे ईश्वर तें मने दुःख आप्युं एम असत् वदवुं जोइए. अनादिका-लथी जीवनी साथे कर्मनो संबंधछे. भावकर्म रागद्वेषयोगे जीव द्रव्यकर्मने ग्रहण करेछे. तेने भोगवी विखेरेछे. पश्चकारणनी सामग्री मळे त्यारे कर्मनो नाज थायछे. कर्म नाज थतां अविचल आत्म स्वरूपनो सहेजे विकाज थायछे.

इश्र, विश्व, परमञ्रह्म, परमेश्वर, सुख्याम ब्रह्मनी स्थिति शुद्ध

ईश्वर.

भावमां वर्ते छे. परभावमां न्याय माटे पण प्रवर्तती नथी. सोऽहं पद प्राप्त कर्युं तेने हुं प्रणाम करुछुं. परमात्मपदने सोऽहंपद कहे छे. सोऽहंपदनुं ध्यान धर्याथी परमात्मपद मळे छे. जे जे जीवो कर्मनो नाश करे छे ते ते जीवो परमात्माओ थाय छे. सिद्धस्थानमां एक सिद्ध छे तेम अनेक सिद्ध परमात्माओ छे. संपूर्ण कर्मक्षयथी हु-क्तिस्थानमां सर्वे सिद्धात्माओ समान छे. ज्ञाननी अपेक्षाए व्यापक छे असंख्य प्रदेश रूप व्यक्तिनी अपेक्षाए व्याप्य छे. शंकराचार्य तथा उपनिषदोनी केट छीक अपेक्षाए आत्मानुं व्यापक पणुं जैनमत अंगी-कार करे छे. तेमज रामानुजमता पेक्षाए आत्मानुं व्याप्य पणुं पण जैनमतमां समाइ जाय छे. व्यक्तिनी अपेक्षाए सिद्धात्माओ भिन्नभिन्न छे अने ज्ञानादिक गणनी अपेक्षाए एक रूप (एक) छे.

जे सिद्ध परमात्माओने रागद्वेष नथी. परभावमां रमण करता नथी. आत्माना ज्ञानादिक अनन्त ग्रुणमां जे समये समये रम्या करेछे. एवा परमप्रभुना ध्यानथी आत्मा पण परमात्मा थायछे. ध्याता ध्येयना ध्याने स्वशुद्ध ध्येयरूप प्राप्त करेछे. परमशुद्धपरमात्माने वारंवार नमस्कार करुछं. परमात्माना सम्यग्ज्ञानथी अज्ञानादि दुःखनो नाज्ञ थायछे. सम्यग् ज्ञानथी सहज शुद्ध स्वरूप मय चिदानन्द समुद्रनी रहेरो मगटेछे. सम्यग् ज्ञान क्रियाथी मुक्ति परोक्ष नथी. अर्थात् मुक्ति पत्यक्षछे. मुक्तद्या जे जे अंशे थायछे ते ते अंशे मुक्तिनां सुख मगटेछे. वे.टलाक अद्देतवादियो अद्देतवाद्यो विद्या यथार्थ स्वरूप न समजवाथी ब्रह्ममांथी सृष्टि उत्पन्न थाउछे अने ब्रह्ममां समाइ जायछे. इत्यादि एकांतवाद स्वीकारीने भूल करेछे. जैनदर्शन अपेक्षाए अद्देतब्रह्मवाद स्वीकारीने भूल करेछे. जैनदर्शन अपेक्षाए अद्देतब्रह्मवाद स्वीकारेछे पण जे नयोनी सापेक्षा विना ब्रह्म मानी भूलो साये करेछे ते संबंधी कंडक कहेवामां आवेछे.

परमारमदर्भन

(204)

" दोहा. "	
ब्रह्मथकी सृष्टि बनी, सहु छ ब्रह्म स्वरूपः	
व्यापक ते सर्वत्र छे, चिदानन्द ग्रणरूपः	२२८
मायाना बहु जोखी, भूल्यो ब्रह्मनुं भानः	
एकरूप सर्वत्र छुं, अद्वैतवादि ज्ञान.	२२९
शुद्ध ब्रह्मना अंश छे, जीव अनन्ता लेखः	
पर्मात्ममाहि ते भळे, देतपणे नाव देख-	२३०
अदैतवादि वचन छे, माने ब्रह्मनुंज्ञानः	
द्वैतपणुं माने नहीं, ब्रह्मध्यान मस्तानः	२३१
नीह सत्यने ढांकीये, सत्य न ढांक्युं जायः	
छावडीए रवि ढांकतां, कदी नहीं ढंकाय.	२३२
जड चेतनता भेदथी, दैतपणुं प्रगटायः	
कथं एक हि आत्मा, सुख दुःख विघटाय-	२३३
जहतारूपे जह अहो, जहनो कदा न नाशः	
असत् कहो शा कारण, ज्ञानी बहु शाबाश.	२३४
जीवाजीव बे तत्त्व छे, ज्ञाने दोय जणाय;	
मिथ्या एक प्रहे सुधा, सन्यक् धर्म न थाय.	२३५
ज्ञानी ज्ञानथकी ग्रहे, वस्तु सत्य स्वरूपः	
द्वैतपणुं अंगीकरे, पडे न भवजल रूप.	२३६
एक एवं हि आतमा, भूते तेह जणाय;	
जले प्रतिबिम्ब चन्द्रनुं, तद्रत् जाणो न्याय.	२३७

बहावाद निराकरण.

सत्ताने अंगीकरी, माने अद्वैत एम; संब्रहनय एकान्तथी, तरे भवोद्धि केम. प्रथम विषम दृष्टान्तथी, साध्यसिद्धि शुं थाय; प्रतिबिम्बरूपितणुं, अरूपि शुं ते पाय. २३९ प्रतिबिम्ब पुद्गलतणुं, जल चन्द्रे दृष्टान्तः जीव अरूपी वस्तुमां, प्रतिबिम्ब नहि भ्रान्त-२४० प्रतिबिंबथी जाणशो, प्रतिबिंबक छे भिन्न; प्रतिबिंबकना भावथी, प्रतिबिंब छे खिन्नः घ४१ प्रतिबिंबित चन्द्रनुं, भिन्नपणुं त्यां छेक; कथं साध्यनी सिद्धि छे, छे नहीं चेतन एक. व्यापक आतम एकनुं, अंशपणुं नहीं होय; भिन्न भिन्न जीवांशथी, आतम एक न जीय. २४३ आतम एकथी सर्वने, शर्म दुःख समकाल; सुख दुःख आच्छ।दक कहो, दैतपणुं त्यां भाळ.२४४ घटाकाश जपाधिथी, प्रहो गगननो भेद; तेवी उपाधि अत्र नहीं, सुख दुःख वारक वेद.२४५ समकाले सुख दुःखनो, जीवोने प्रतिभासः अधिक न्यून प्राप्तितणा, मळे नहीं अवकाशः २४६ मळे नहीं अवकाश तो, तेनुं कारण कोणः भिन्न भिन्न चेतन विना, घटे नहि कंइ और १४७

परमात्मदर्भन .

व्यक्तिथी सहु भिन्न छे, सत्ता ए सहु एकः आत्मतत्त्व अवबोधथी, मानो एकाऽनेकः द्रश्रद सर्वत्रज व्यापक कहो, युक्ति घटे नीई कोइ सम्मतितकें जाणशो, कद्युं विचारी जोइ-488 सर्वत्रज व्यापक कहो, पिण्डे किम बंधायः देहे ब्यापी जो कहो, अन्यापक पद पाय-240 व्यापक नहि बंधाय छे, गगन पङ्कनी पेर; सर्वत्र सुख दुःखनी, प्राप्तितणुं छे झेर-247 सर्वत्र व्यापक कहो, कदा नहीं बंधाय; मानो तो छे अन्नता, सदंयुक्ति न जणाय. अञ्यापक छे आतमा, तेमां नहीं संदेह; व्याप्यने व्यापक बोधथी, थाशो निःसंदेह. शैलेशीकरणे करी, व्यापक आतम लोक; असंख्य शुद्ध प्रदेशथी, जाणी भविजन शोक. १५४ अञ्यापक ज्यापक लहो, चेतन ग्रणनी खाण; अनेकान्त अवबोधथी, पामो शिवपुर ठाण-सादि आदि भंगें करी, व्यापक चेतन जाणः स्याद्वाद दृष्टि थकी, साचुं मनमां आण-

२६५

(200)

ब्रह्मदाद निशक्सण. केवलब्राने आतमा, व्यापक सहुमां जोय; स्वपर प्रकाञ्चक आतमा, प्रदीप पेठे होय-र्थ७ तिमिरारि प्रगटे तदा, तमना शो छे भारः ब्रानदीपक उद्योतथी, रहे नहि अंधकार. १५८ अद्वेत स्वरूपी आतमा, जडथी भिन्न विचार; द्वैतपणुं पण तेहमां, एक अनेकाधारः १५९ अक्षररूपे आतमा, अनक्षर ग्रणवानः; आत्माऽसङ्ख्य प्रदेशमां, स्थिरता शुद्ध वलाण १६० भास्यो आपोआपमां, टळ्यं महा अज्ञानः अपूर्व वीर्यज उल्लस्यं, यदा थयं निज भानः 258 जह इन्द्रियो शुं करे, तेनाथी हुं भिन्न; जहस्वरूपे तेह छे, क्षणिक नाशी दीन. श्रुह २ मन वाणी मारां नहीं, जडनुं छे ते काज; तेनी संगे राचतां, नहीं रहे मुज लाज. २६३ इसुं रमुं कोनाथकी, कोनापर ममभावः मृगुजलोपम वस्तुमां, शो ममतानो दाव-**3**£8 नहीं मारु जड वस्तुमां, राचुं शुं संसारः

ज्ञाची शाने माटे में, लीधो मही अवतार.

फोगट फंदामां पड्यो, जरा न शर्म जणाय;	
	२६ ६
सवळे पन्थे चालतां, मनमां शुं खमचाय.	-44
नथी तनु ते तुं सद्ग, शरीर माटीघाटः	
पींपळपानपरे खरे, चेत चेत ते माट-	२६७
सहुने देखं ज्ञानथी, सहु म्हाराथी दूरः	
प्रतिबंध कोनो नहीं, सिंह इव हुं श्रूर.	१ ६८
रागदोष निन्दा कथा, तेन्रं भाग्युं जोरः	
स्वाभिमुख यइ चेतना, प्रगटयो अनुभव तोर-	२६९
शत्रुथी छेदाउ नहीं, नहि शस्त्रे भेदाउ ?	
शत्रुमित्र सम भावना, भ्रमणा क्यांथी पाउ?	२७०
कर्मवशे सहु प्राणिया, भ्रमण करे निर्धारः	
पुत्र मित्र ललनापणे, सगपणनो आचार.	१७१
सगपण साचुं निह कदी, स्वारिययो संसार;	
	२७१
सर्व जीव छे सिद्ध सम, निर्मल अविचल देव	'= 7
त्रिकरण योगे तेहनी, मित्रभावना सेव-	१७३
द्रव्यार्थिकथी नित्य छे, कदी न होवे नाश;	
असंख्यप्रदेशिव्यक्तिथी, ध्रुव स्वरूपी खास- श	98

क्षणिकचेतनवाद निराकरण, (\$40)

*************	~~~~~
प्रवंजनम अभ्यासथी, जीव नित्यता सिद्धः	
बाल युवा वृद्धा विषे, ज्ञाता एक प्रसिद्धः	इल्ध
क्षणे क्षणे बद्लायतो, चेतन होय अनेक;	
पाप पुण्य कोने घटे, तेनो करो विवेकः	३७६
सणिक वस्तुना ज्ञानथी, श्लणिक वाद सुजाण	
वक्ता क्षणिक नहीं थयो, नित्यरूप मन आण	र७७
कोइक वस्तुनो कदी, केवल नाश न होय.	
वेतन नाश कह्या थकी, अन्यावस्था जोय.	२७८
अन्यावस्था को नहीं, माटे चेतन नित्य.	
प्रत्यभिज्ञा सुहेतुथी, नित्यज जाणो चित्त.	२७९
पर्याये पलटाय छे, आतमना पर्याय.	,
अनित्य माटे आतमा, अनेकान्तमतन्याय.	२८०
शुभाशुभ आश्रव ग्रही, धरतो नाना देह.	
शाताशाता भागवे, नय व्यवहारे एह.	२८१
पुण्य पापना नाद्याथी, प्रगटे निजगुण भोग.	
सूर्याच्छादक अभ्रनो, टळे महासंयोग.	२८२
कर्मसंग टळ्या थकी, पामे जीव शिवठाण.	
पुरुषेत्रम परमातमा, सिद्ध बुद्ध भगवान	२८३

वरमात्मद् शेन.

(| \$44)

**************************************	~~~~
अगम्य आत्मस्वभावनुं, अवलम्बन करनारः आश्रव त्यागी संवरी, भवोदिध तरनार.	રદ્ધ
जोने इच्छे योगिजन, अनन्यसुखनुं धाम.	(3/9
नमुं नमुं ते आतमा, अनन्तगुण विश्राम.	२८५
अवलम्बन शुभ आत्मनुं, करतां नाशे दोष, प्रगटे अनुभव ज्योति त्यां, चेतन वीर्ये पोष.	२८६
निजपद जिनपद साम्यता, भेदभावनो नाश. पूर्ण व्यक्तिमय आतमा, राजाने कुण दास.	२८७
सर्व सिद्धनी तुल्यता, जीव अनन्ता माय. कोकोने नडता नही, अरूपपद महिमाय.	२८८
विषमज्वरना जोरथी, होय अरुचि अन्न. अभव्य आदि जीवने, आत्मरूचि नहिमन.	२८९
सम्यग् ज्ञान प्रभावथी, बहिरातम पद नाश. अन्तरात्मगुण भावना, प्रगटे शिवपुर वास.	२९०
परप्रवृत्ति हेतुओ, समूल त्यां छेदाय. अन्तर परमप्रभुपगुं, सहजे उदये आय.	२९१
हुं कर्त्ता परमावनो, बुद्धि भवनुं मूल. अन्तरात्मपद योगथी, थाय तेह निर्मल.	२९२

(३८२)

भारमतस्वसाध्यके.

कोटिवर्षनुं स्वप्नपण, जागंतां लय थाय.	
आत्मज्ञान उद्योतथी, सहजरूप प्रगटाय.	२९३
चेतनबुद्धि देहमां, जाणो देहाःयास.	
छूटे देहाध्यासतो, कर्म कलंक विनाश.	२९४
कर्त्ता निह हुं कर्मनो, भोक्ता निह हुं तास.	
शुद्धदशा प्रगटयाथकी, विघटे भवभयवास.	२९५
चेतनधर्म मोक्ष छे, तुंछे मोक्षस्वरूपः	
भोगी रत्नत्रयितणो, क्षायिकशिवसुखभूप.	२९६
सागरमांहि व्हेरियो, उपजेने विणशाय;	
चेतनगुण जे ज्ञान छे, ज्ञेयपणे पलटाय.	२९७
शुद्ध बुद्ध निर्मल प्रभु, स्वयंज्योति गुणधामः	
चिदानन्द चेतन विभु, अनन्तगुणनुं ग्रम.	२९८
निश्चय अत्रज आवतां, साक्षर एक स्वरूपः	
योगत्रिकने संवरी, शिवनगरी था भूप.	२९९
रागादिक महावैरियो, ज्यां तेनो नहि गन्धः	
आत्मलक्ष्यवृत्ति थतां, परपरिणाति थइ वंधः	३००
देइनिष्ठ पण ध्यानथी, वर्ते देहातीतः	
वंदन वारंबार तास, त्रियोगे हो नित्य.	३०१

(\$4\$)

पुद्रल सुल ते ऐंडवत्, दुनिया स्वप्न समानः	
श्रद्धज्ञान ते आत्मनुं, बाकी वाचा ज्ञान.	३०२
जेनुं ज्ञान थया थकी, शान्तदशा प्रगटायः	
धर्म रह्यो त्या जाणीए, निश्चयथी सुलदाय-	३०३
नैगम संग्रह नय कहा, त्रीजो नय व्यवहार;	
ऋजुसूत्र नोथो कह्यो, पञ्चमशब्द विचार	इ०४
समभिरूढ छडो गणो, सप्तम एवंभूतः	
सप्तनयोथी धर्मरूप, सत्यज प्रगटे युक्त.	३०५
सातनयाथा वस्तुरूप, परिपूर्ण परस्कायः	
नय एकान्तकदाप्रहे, मिध्यात्वी कहेवाय.	३०६
सातनयोना बोधथी, सम्यक् अनुभव साथ;	
आत्मतत्त्वने पारखी तरशे भवजूल पाथ.	२०७
ऋजुसूत्र आवेशथी, प्रगटयुं दर्शन बुद्धः	
प्रहे एकान्त एकनय, थाय निह ते शुद्ध.	३०८
जीवादिक नवतत्वपर, नय साते योजाय;	
सद्ग्रह सेवा योगथी, सहजे ते बोधाय-	३०९
स्यादिस्त भंगज कह्यो, अनेकान्त मत कंदः	210
अस्तित्व सद्भ वस्तुमां, ज्ञानी एम वदन्त.	३१०

(३८४) अस्तिनारितस्वरूप.

स्वद्रव्य स्वक्षेत्रथी, निजकाले निजभाव: अस्तितत्व बहु भंगथी, निजद्रव्ये चित्त लावः ३११ जीवादिक नवतत्वमां, प्रथमज अस्तिहिभंगः कदी नहि जे वस्तु जग, प्रगटनहिधरि अंग. ३१६ भर्माधर्माकाशकाल, पुद्गल पंचम जोय; जीवद्रव्य छद्धं कह्यं, अस्ति भंग अवलोय. 383 भूत भविष्यत् संप्रति, त्रिकाले वर्तायः षड्द्रब्योमां जाणिये, अस्तिभंग स्थिरतायः **३१**8 समये समये अस्तिता, अनंतग्रणनी जाणः चेतनद्रव्ये वर्तती, सिद्धान्ते व्याख्यानः 384 द्रव्ये द्रव्ये अस्तिता, भिन्न भिन्न कहेवाय; द्रव्यज गुण पर्यायनी, अस्तिताज निजमांय. पुदगलना पर्याय जे, घटपटरूपे लेख; तदाकारछे अस्तिता, सादि सान्तथी देख-३१७ द्रव्यार्थिक नय जाणिये, अनाद्यनंतज भंग; पुद्गलमां व्यापी रह्यो, सादिसान्त ग्रण चंगः ३१८ स्यान्नास्ति बीजो कहुं, भंग अति सुखकार; षडुद्रव्योमां व्यापियो, सापेक्षाये धार. 339

परमात्मक्षेत्र.

(264)

परद्रव्य परक्षेत्रथी, परकालज परभावः नास्तिता तेनी सदा, निजमं वर्ते दाव. प्रही अपेक्षा परतणी, घटे नास्तिता आयः परभावे षड्दव्यमां, नास्तित्व स्थिरताय-3 27 परद्रव्योनी अस्तिता, तेज नास्तिता रूपः प्रणमे निजनिज द्रव्यमां, सापेक्षाए अनुप. ३११ पूछे पृच्छक अत्र एम, घटे न वे एक ठाम; तमः तेज प्रतिपक्षिन्नं, घटे न एकज धाम 393 नैकस्मिन् ए सूत्रथी, रहे न वे एकत्र; अस्ति नास्ति एकत्र निह, भाखो सद्युरु अत्र ३१४ सापेक्षाए सहु घंटे, तथा सर्व समजाय; पिता पुत्रत्व एकमां, बन्ने धर्म सुहायः 3 74 चेतनतुं अस्तित्वते, परमां नास्ति स्वरूपः परमां नास्ति नहीं रहे, विघटे वस्तु अनुप ३२६ विना अपेक्षा अस्तिता, नास्तिता नहीं जोय; नैकस्मिन ऐ सूत्रतो, स्यादादे अवलोय ३१७ जे समयेछे अस्तिता, नास्तिपणुं ते काल; एकसमयमां वर्तना, षड्द्रच्योमां भालः **ै३ २८** अस्ति नास्ति त्रीजो कद्यो, भंग समय सिरताज षद्दब्यामां व्यापियो, जिनदर्शन साम्राज्य

(Reg):

ससमंदी.

अस्ति शब्द जन्नारतां, समयो बहे असंस्यः	
नास्ति शब्दोनारमां, तथा कहे भगवंत.	330
एकज समये अवाच्यछे, कदी न कोइ कहंत;	
अवक्तव्यज भंगछे, बोथो सूत्रे ल्हंत	338
अस्तिधर्म अनन्तछेज, वाणी अगोचर थायः	
पश्चमभंग ते उपजे, अनेकान्त शोभायः	३३२
नास्तिधर्म अनन्तता, वस्तुमध्ये रहंतः	
अवाच्य वाणीथी कहाो, छठो भंग कहंत.	३३३
अस्तिनास्ति वे छे सदा, अवक्तव्य ते होय;	
सप्तमभगज सर्वमां, समय समय अवलायः	इंड्रे ४
गुरुगमज्ञानअवाप्तिथी, भंगज सप्त स्वरूपः	221
जाणी आत्मस्वभावमां, अपहरीए भवधूपः	३३५
अतिगहनछे तत्त्वबोध, विरलाजन समजंत; सज्जन भवसागर तरे, करी कर्मनो अन्त.	३३६
सप्तमंगीछे सिद्धमां, अनन्तरणमां जोयः	444
अनेकान्तनय जाणतां, शुद्धं समकित होय	३३७
नवतत्त्व षड्दव्यनुं, सत्यज्ञान जो थायः	14.
तो जाणो ज्ञानिपणुं, सहेजे शिवपद पाय	३३८
समिकतादि मोहिनी, तेनो उपशम भावः	, y , y
श्वयोपराम शायिकपणे, प्रगटे समकितदाव.	339
756	

निजयण स्थिरता चरणथी, थाता यण उद्योतः स्वषंशुद्ध परमातमा, प्रगट निर्मल ज्योतः विश्व यणस्थानक स्पर्शन थतां, सहजे यण प्रगटायः परिपूर्ण निजव्यक्तियी, अविचलपदवी पायः ३४१ पदस्थानक अववोधथी, समकित प्रगटे चंगः षद्स्थानक धारो सदा, यण प्रगट निज अंगः ३४१ अस्ति चेतनद्रव्यनी, चेतनद्रव्य अनन्त संसारीने सिद्ध दोय, ज्ञानी एम चदन्तः ३४३ नित्यज चेतन द्रव्यक्ते कत्ती हत्ती जोयः क्रिथकी मुकाय शिव, तेनां कारण होय. ३४४

शिष्य उवाच

नथी हश्य ते दृष्टिथी, स्पर्शे प्रद्यो न जायः अस्मिद्रव्यनी अस्तिता, अनुभवे न जणायः ३४५ मानो देहज आतमा, अथवा श्वासोश्वासः पंचतत्त्वनुं प्रतळुं, अन्य कयो आभास ? ६६६ घटपट यथा जणायछे. तथा न चेतनद्रव्यः भाटे चेतन नास्तिता, मिध्या माने भव्यः ३४७ यदि नथीजो आतमा, तपजप संयम फोकः पुण्यवापनी कल्पना, भूले भोळा छोकः ६६६६

भार**मसरवसाध्यके.**

तांका मोटी जीवनी, टाळो सद्युरुदेव; मित्रहीन हुं जीवळुं, कापो क्रमति टेवः	ૅર્ફેઇલ
सद्गुरुः जवाच	
उत्शंगुलवृत्ति यजी, प्रहो सुयुक्ति दीप;	
समजो चेतन अस्तिता, यथाऽस्ति मौक्तिक छी	प.३५०
पश्चभूतथी भिन्नछे, अरूप निर्मल शुद्ध	
देहे व्याप्यो जीवछे. मळ्युं जदकमां दुधः	३५१
हुं सुली हुं दुःखी एम, बुद्धि देहनी नांय;	
मृत कलेवरमां कदी, जरा न चेष्टा त्यांयः	३५१
कठीन शीतत्वादि गुण, पंचभूतना जाय;	
चैतन्यादि त्यां नहीं, सूक्ष्मपणे अवलोय.	३५३
अरूप चेतन चक्षुथी, प्रद्यो कदा निह जाय;	
पुद्गलस्कंधो स्पर्शथी, प्रह्या सदा जोवाय.	३५४
श्वासोश्वास ते स्पर्श्यी, सदा अहो प्रहवायः	
बाहिर् जातो आवतो, ते चेतन शुं थाय.	३५५
ज्ञातृताश्रय जीव छे, पुद्गल नहीं कदाय;	
नहीं तो घटपट वस्तुमां, ज्ञातृशाक्ति प्रहाय.	३५६
मद्यांगे मदशक्तिवत्, पश्चभूत संयोगः	
वैतन्यशक्ति उद्भवे, ते युक्ति पण फोक.	इए७

परमारमदर्भन

(264)

	~~~~
भिन्न भिन्न मद्यांगमां, मदशक्ति अवभासः	
भूत भूत प्रत्येकमां, ज्ञानतणो नहि वास.	३५८
बुद्धयादिक आधार जे, तेहिज चेतन ऐवः	
आदि शब्दथकी प्रहो, सुल दुःल कार्यीहेल.	
बुद्धचादिक आश्रित जिहां, त्यां गुणपात्र जणा	य;
रूपादिवत् जाणीए, चेतन सिद्धि छपाय.	३६०
गुण निराश्रय नहीं कदा, आश्रय छे घटरूपः	
बुद्धचादिक आश्रय तथा, आनन्दघन चिद्रूप.	३६१
शिष्य जवाच.	
बुद्धवादिक आधार तो, इन्द्रियो कहेवायः	
चेतननी शी कल्पना, करवी सद्युरुराय.	३६२
गुरुः जवाच.	
उपहत इन्द्रियो थकी, विषयस्मृति न घटायः	
आश्रयनाशे स्मृतितणी, उत्पत्ति केम थाय?	३६३
कर्णेन्द्रियना नाशथी, स्मरणतणी नहि क्षोद;	
समृत्याश्रय ते आतमा, मानो सत्यज बोध.	¥६४
अनुभव्युं जे इन्द्रिये, तेनो थातां नाशः	
स्मृति इन्द्रियो अन्यमां, ते पण मिध्याभास.	इ६५
थातां एमज चैत्रने, यया अनुभव जिहः	
स्मृत्युत्पत्ति मैत्रन, घट न युक्तिज तेह.	388

### ( 440 )

### आत्मसिद्धि-षट्र**धानक**,

### शिष्य उवाच.

भेले न थावा इन्द्रियों, बुद्धि आश्रय काँइ; बुद्धि आश्रय देह छे, कहुं विचारी जाइ. ३६७ शरीरनाशे बुद्धिना, नाहाज थातां दीठ; भस्मीभृत शरीर तो, चेतन थाय अदीठ. ३६८

### सद्गुरु ज्वाच.

बाल युवादिक भेद त्रण, तनुना एइ प्रसिद्धः बालदेहथी भोगव्यं, स्मृति ते तेणे लीघ. ३६९ तरुण तनुमां तेहनी, स्मृति कदा निह थायः बालशिरोरे भागव्यं, कथं युवान जणाय. ३७० मतक शरीरे बुद्धिनी, स्फूर्ति कथं न थायः माटे बुद्धयाश्रय कहो, चेतन स्मृती आय. ३७१

### शिष्य जवाच.

बुद्धयाश्रय निह देह तो, श्वासोश्वास जणाय; श्वास नहीं त्यां सुख दुःख, कदा न निरख्युं जाय. ३७२ श्वासोश्वास भिन्नता, निह ते एक स्वरूपः बुद्धयाश्रय तेने कहा, ए पण जडता क्य. ३७३ एकज श्वासोश्वासथी, कीघो अनुभव जेह; अन्त्रश्वास स्मर्ता नहीं, बुद्धयाश्रय निह एह. ३७४ बुद्धयाश्रय जो श्वासतो, त्वक्थी ते स्पर्शाय; त्वचा प्रहेछे श्वासने, केम न बुद्धि प्रहाय. ३७५ सोऽयं प्रतीतियोगथी, बुद्धयाश्रय जे होय; आस्मतत्त्व ते जाणीए, नहि त्यां:शंका काय. ३७६ शिष्य जवाच.

देहादिकथी भिन्न जो, माने चेतनसय; भिन्न करी देखाडीए, असिम्यानने न्याय. ३७७ गुरु: जवाच

वायुरूपी पण नेत्रथी, निरम्पो कदा न जाय; जीव अरूपी चश्चथी, कथं अहो निरसाय. ३७८ बैर्घ जवाच.

श्राणकसंतित ज्ञाननी, तेतो चेतन मानः
प्रवृत्तिरूप विज्ञाननो, आलय उपादान.
एकरूप नहीं ज्ञाननुं, क्षणे क्षणे बदलायः
ज्ञानसन्तित आतमा, मानो सवळो न्याय.
श्राणक सन्तित ज्ञाननी, मानंतां नहि दोषः
श्राणक उत्तर ज्ञानमां, पूर्व ज्ञाननो पोष.
रुदः
रुदः ज्वाच.

ज्ञान क्षणिकनी सन्तति, चेतन नाहि कहवायः; क्षणिक सन्तिति मानतां, पुण्य पाप कुण पाय ? ३८२

### ( 292 )

### आत्मसिद्धि-षट्स्थानक.

***************************************
उपादान कारणतणो, कदा विनाश न थाय,
आलयनो जो नाशतो, वृत्ति क्यां प्रगटाय. ३८३
आलयने ध्रुव मानीए, तो ते चेतनरूपः
मानंतां दोषज नथा, करवी समजी चूप. ३८४
आलयने प्रवृत्तिमां, मानो जो यदि भेदः
<b>चपादान कारणतणो</b> , थाशे त्यां विच्छेद. ३८५
बने नहीं घट वस्तुथी, सूत्रतणा समुदायः
कारण कार्यज भिन्नता, त्यां शुं कार्यज थाय. ३८६
चैत्रमैत्र इव भेद त्यां, कारण कार्यज भावः
स्मृतिभंग त्यां होयछे, घेट शुं शुक्ति दाव? ३८७
क्षणिक सन्तति ज्ञानमां, कारणकायाभेदः
मानो तो क्षणवादनो, थाशे निश्चय छेद. ३८८
छत्तरज्ञानदशा विष, पूर्व ज्ञान जो होय.
स्थिरबुद्धि तेथी थइ, बुद्धि नाश क्यां जोय. ३८८
आलयनी जे स्थिरता, तेतो आतम मानः
बन्धमोक्ष सहु तो घटे, चेतन ग्रणछे ज्ञान ३८९
पूर्वजन्मना स्मरणथी, पुनर्जन्मता सिडः
पुण्य पाप फल भोगवे, चेतन नित्य प्रसिद्ध. ३९१
चेतन नित्यज होय तो, कर्म न लागे कोयः
अनित्य माटे आतमा, क्षण क्षण नाशी होय. ३९२

### परमात्मदर्शन.

***************************************	**********
आ क्षणमां जे आतमा, ते क्षण विणशी जाय	;
पुण्य पाप सुल दुःलनी, घटना कहो शी थाय.	398.
अन्य केरने अन्यने, पुण्य पापनो बन्धः	
अन्यतणो जो मोक्षतो, ए सहु मिथ्याधंघ.	३९४
को कर्त्ता भोक्ता अहा, सहुथी अवळो न्याय;	
नित्य आतमा मानतां, कर्चा भोक्ता थाय.	३९५
अभ्रसंग दरे थतां, निर्मलरिव प्रकाशः	
नित्य आतमा मानतां, होवे दोष विनाशः	₹9€
जेनी संयोगे करी, उत्पत्ति नहीं थाय;	
नाश होय निह तेहनो, माटे नित्य सदाय.	३९७
अहंकृतिने क्रोधनी, केशरी फणिधरमांय;	
भासे तरतमता घणी, पूर्ववासना त्यांय.	396
पूर्ववासना योगथी, नित्य आतमा सिड्दः	
क्षणिकचेतन बुद्धिने, देशवटो एम दीध.	<b>३</b> ९९
<b>ज्याशंका शिष्य जवाच</b> .	
जीव न कत्ती कर्मनी, कर्मज कत्ती कर्मः	
चेतम कत्ती कमनो, धर्म जीवनो मर्म-	264
सदा असंगी आतमा, जलपंकजनी पर	0.40
कर्ताने भोकापणुं, भासे प्रकृति घर	Jag
क्ताम नाध्यापकः नारा नरमा नरम	-0 C

( <del>139</del>:)

### आत्मसिद्धि-षट्स्थानक.

altaid after a	······································
गिथी, कर्मतणोछे धंधः	<b>.</b>
ो संपजे, माटे जीव अवंध.	४०३
र्गुरुः जवाच–समाधान.	
परिणम्यां, चेतन पुद्रल दोयः	
योगथी, कर्त्ती कर्मनो होय.	४०३
निहि, तर्हि प्रहे को कर्मः	
न प्रेरणा, भिन्नपणे वे धर्मः	808
ा, यातां कर्म ग्रहाय;	
गेरणा, ग्रहीलचेष्टान्याय.	804
कर्मनो, जुओ विचारी वित्तः	
प्रेरणा, समजो न्याय पवित्रः	४०६
नो, चेतनछे व्यवहारः	
धर्मनो, कर्त्ता चेतन धार;	800
नहीं, एवो जीव स्वभावः	
तयोगथी, कत्ती कर्म विभाव.	८०८
नीरवे, भिन्न करेछे हंस;	
हिं इंस त्या, करे कर्मनो ध्वंस.	४०९
जाणीए, जेह विभाविक धर्म;	
जिधमें छे, जाणा अनुभव मर्म.	880
	संपजे, माटे जीव अवंधः  रगुरुः जवाच—समाधानः  परिणम्यां, चेतन पुद्गल दोयः  परिणम्यां, कर्ता कर्मनो होयः  नहि, तर्हि प्रहे को कर्मः  र प्रेरणा, भिन्नपणे वे धर्मः  र प्रेरणा, प्रहीलचेष्टान्यायः  कर्मनो, जुओ विचारी चित्तः  प्रेरणा, समजो न्याय पवित्रः  पर्मनो, कर्ता चेतन धारः  नहीं, एवो जीव स्वभावः  वोगथी, कर्ता कर्म विभावः  तीरवे, भिन्न करेले हंसः  हंस त्या, करे कर्मनो ध्वंसः  जाणीए, जेह विभाविक धर्मः

परमात्मवर्जन .	( <b>१९५</b> %)
अशुक्रपरिणतिथी कर्या, कर्मतणोछे अन्तः	
सहजशुद्धनिजधर्मथी, भाषेछे भगवन्त.	888
सदा असंगी आतमा, निश्चयसत्ता धार;	
कर्ता भोकाःकर्मना, वर्ते ते व्यवहार-	४ <b>१२</b>
जन्मजराने मृत्युनां, दुःखनुं कारण क्रमीः	
शाताऽशाता कर्मथी, कर्मजालनी मर्म.	८ १३
रंग्युं बीज कपासनुं, लाक्षारस संयोगः	
रूमां लागी रक्तता, कर्मफलोनो भोग.	388
कर्माष्टक नाशे यदा, तो चेतननी शुद्धिः	
आत्मस्वभावे आत्मनी, पामे तात्त्विकरूद्धि.	८१५
शिष्य <b>उवाच,</b> शंकां	
अनादिकालथी संगति, कर्म जीवनी जोय	;
नाश कहो शुं कर्मनो, कारण त्यांशुं होय-	888
सद्गुरु: जवाच-समाधान.	
कालअनादि परिणम्यो, चेतन मिध्या भ्रान्त	<b>5</b> .
छूटे चेतन खाणमां, रजः कनक दृष्टान्त.	850
ईश्वर इच्छायोगथी, सुल दुःल क्यांथी होय-	
ईश्वरनी जो बेरणा, दोषी ईश्वर जोय;	850

ध्रह

( 385 )

#### षट्स्थानक.

शाथी ईश्वर घेरणा, ईश्वरना अन्यायः म्यायी अपराधी सह, ईश्वर पोते याय. **ઝ**શ્ शिष्य उवाच शंका कर्म करेछे प्राणिया, सामग्री अनुसारः स्रुख दुःख ईश्वर आपतो, जीव अकर्ताधारः 8**२**० गुरुः जवाच. इस्य करे ते भोगवे, पोते सुखने दुःखः खावे तेहं धरायछे. प्रभु न भागे भूख. ध२१ **क्षेपे निजकर वन्हिमां, ज्वलतो देखे हाथ.** स्वयंहि कर्त्ता जीवछे, कथं प्रेरणा नाथ; પ્રર अवळी ब्रद्धियोगथी, विषमक्षणथी नाशः प्राणोनो जाणो अहो, ईश्वर न्याय न खास-अश्र स्वयमेव ज्यां सुख दुःख, चेतन कर्मे पाय; इश्वर प्रेरण कल्पना, सुख्रांदुःख कर्मे थाय. ยรห सदा असंगी आतमा, निश्चय सत्ता लेख: **ब्यवहारे** सुख दुःखनी, कर्ता चेतन देख. ४२५ जीव अकर्त्ता कर्मना, नाशे सत्य जणायः बेह्न जाणो तयथकी, शुद्धधर्म प्रगटाय.

#### प्रमारमद्र्यंत्र.

( 230 )

### शिष्य जवाच.

न्याययुक्ति दृष्टांतथी, कत्ती कर्मनो जोय; समजे जड थुं कर्मके, फलपरिणामी होय. ४१७

### उवाच गुरुः.

कर्ता भोक्ता जीवछे, पण तेनो निह मोक्षः बीत्यो काल अनन्त पण, इज न मुक्ति पोष. ४२९ पुण्यतणुं फल भोगवे, मानव स्वर्ग मझारः धापतणुं फल भोगवे, दुर्गतिमां अवतार. ४३० पापपुण्य फल भोगवे, चतुर्गतिमां जायः समये समये कर्मसंच, कर्मरहित निह क्यांयः ४३१

# जवाच समाधानं सद्गुरुः

अशुद्धपरिणतियोगथी, फलदं कर्म प्रमाण; तथा निवृत्ति धर्मथी, सिद्ध ठरे निर्वाणः ४३२ काल अनंतो वितीयो, जीवतणो परभाव, आत्मरमणता योगथी, प्रगटे मुक्ति प्रभाव. ४३३ संयोगे वियोगछेज, देहादिक दृष्टान्त; कर्मवियोगे आसनी, मुक्ति सुवालय कान्त. ४३५

#### आत्मिसिद्धि-पट्स्थानक.

### शिष्य शंका.

मोक्षतणी जे आस्तिता, तेतो समजी जाय;
अनन्तभवनां कर्मनो, ध्वंस न क्यारे थाय. ४३५
भिन्न भिन्न दर्शन कथे, मुक्ति अनेक उपाय;
सत्य असत्य तेमां कयुं, निर्णय वित्त न थाय. ४३६
को वेषे कइ जातिमां, कया पन्थमां मोक्ष;
भिन्नश्चय तेनो नाहि बने, तो शी करवी होंश. ४३७
भव प्रथम के मुक्तिवा, प्रथम जीव के सिद्ध;
इत्यादिक मन चिंतता, मोक्ष न होय प्रसिद्ध. ४३८

### जवाच सद्गुरु: _{चोपाइ},

ज्ञानिक्रयां में सोपाय, सूत्रे भावे श्री जिनरायः अभिकणाथी, गंजीबळे, तथा ध्यानथी कल्मष टळे. ४३९ जेने लाग्यो जन्मथा रोग, औषधयोगे थाय निरोगः कीधां अनन्तभवनां कर्म, नष्ट थतां प्रगटे शिवशर्म. ४४० अंधारु जग व्यापी जाय, थातां सूर्योदय विणसायः सत्य ज्ञान त्यां शोछे भार, कर्मतणो तुं हृदये धार. ४४१ ज्ञानावरणीयादिक आठ, कर्मतणो छे सूत्रे पाठः सुख्य मोहिनी सहुमां होय, यथा प्रजामां नृपात जोय.

मोहिनी नाशे सर्व हणाय, नृप हार्याथी प्रजा पलाय; कर्म टळयाथी शिवसुल गेह, सत्यपंथमां शो संदेह. ४४३ मतदर्शनना असत्यराग, अंधा श्रद्धा ज्ञाने त्याग. जातिलिंगमां माने मोक्ष, तेथीज मुक्ति होय परोक्ष ४४४ सत्यतत्त्वनी श्रद्धा थाय, समवायिपंचज प्रगटाय: अरूप चेतन जागे ज्यात, त्रिभुवनमां ज्ञाने जद्यात. ४४५ भवमुक्तिनी नहींछे आदि, भवाइथी ते दोय अनादि; अनेकान्त पन्थज समजाय, श्रद्धाथी सहु मळे उपाय. ४४६ केवलज्ञानी वाणी ग्रंथ, युरुगम समजी ल्यो शिबपंथ; एकशब्दनो भावज साच, एम कहे तीर्थकर वाच ४४७ जीव मोक्षादि शब्दज एक, साची माटे करी विवेक: जेनो बंधिह तेनो मोक्ष, जरा नहि त्यां लागे दोष ४४८

### शिष्य उवाच.

" दुहा. "

अपे पर्स्थानक कहां, करुणाथी ग्ररुदेवः अद्धार्थी में सहह्यां, टळी अनादि क्रटेवः आज लगी अज्ञानथी, यह न तत्त्व प्रतीतः नमन करुश्री सद्गुरु, कीथो शिष्य पवित्रः

#### ( 800 )

#### प्रभारमद्शीनः

धर्मरत आजे प्रह्यं, देख्यं परमिनधानः शरण शरण त्हारः प्रभु, कोई न तुज समान. ध्यार काल अनादिथी भम्यो, पण आव्यो नहीं अन्तः सम्यक्तस्व जणावियं, नमुं प्रभो ग्रणवन्त. ४५% शिष्य उवाच शंकां.

अनन्तजीवो सिक्ता, शिवमां केम समाय; निराकरण तेनुं करो, जेथी शङ्का जाय. ४५३

### जवाच गुरुः

सिद्धिशिलानी उपरे, शाश्वतछे शिवठाणः कर्म खप्याथी जीव त्यां, थावे श्री भगवान् ४५४ एकदीपकनी ज्योतिमां, अनेकदीपकज्योतः सिद्धअरूपी मावता, दोष न किश्चित् द्योत. ४५५ चोषाः

विषयवासना विषसम खास, त्यागो बहिरातमपदवास; शाश्वतपदनी वाञ्छा होय, तो अधिकारी धर्मे जोय ४५६ दुःखनो आत्यंतिकविनाश, मुक्ति वैशेषिकनी खास; मनने नित्यज माने तेह, मुक्तिमां जीव साथे तेह. ४५७ बुद्धचादिक नवनो ज्यां नाश, मुक्तिज एवी त्यांशुंआश; दृन्दावन जंबुक अवतार, तेथी सारो मानव बार, ४५६

#### परमास्मद्शैनः

वदे वेदान्ती मुक्ति स्वरूप, जाणों जग व्यापक चिद्री; घटन ब्यापक चैतनराय,त्यां शुं शिवनी आश रखायध्य माने मुक्तिज आर्य समाज, भाडे पाम्यो जीवजराजः मुक्तिथी जीव पाछो फरे, मुक्ति एवी शुंदुःख हरे. ४६० कर्म खायाथी नहि संसार, कथं जीव पामे अवतारः जन्म मरण ज्यां वारवार, शान्ति तेनी नहीं लगार ४६९ एक कहे छ मुक्ति स्वरूप, मोटो अधारानो कूप; आं जे ईश्वरनी पास, चित्त घरो ईश्वर विश्वास धदर विश्वासी ईश्वरना दास, मुक्तिफोजमां भळतां सास; इशु भलो ईश्वरनो पुत्र, ते चलवे छे जगनुं सूत्र, ए६३ श्रीरधारी मुक्तिज ज्यांय, जनम मरणना फेरा त्यांय; मुक्ति तेवीज कदीन होय, साक्षरवादी प्रहेन कीय धर्ध अंधो वनमां फरतो फरे, पण चाली पहोंचे नाई घरे ज्ञानचक्ष हृदये प्रगटाय, मुक्ति पन्थ त्यारे देखाय. ४६५ कोइक राता छे व्यवहार, ज्ञाने राता कोइकथार: एकएकर्नु खंडन करे, पक्षापक्षेज लडी मरे. एकान्तनयोशी पक्षापक्ष, सत्यज्ञ माने वे नय दक्षः न्य एकेके दर्शन थयां सापेक्षे ज्ञानिए प्रद्यां. ४६७

#### षष्ट्रयानकः

सरिताओ सागरमां भछे, जिन दर्शनमां सर्वे मळे; दर्शनमांभजनाजिनवाच,अनेकान्त वाणी जगसाच्यहर कर्माष्टकनो थावे नाहा, आविभीवे ग्रणनो भासः जन्म मरणना फेरा टळे, चेतन क्षायिक धर्म मळे. ४६९ समये समये सिद्ध अनन्त, सुख सहेजे विलसे शिवकंतः पूर्वमयोगे उंचा जाय, शाश्वत शिवपुरमां विरमाय. ४७० उर्घ्व अधःतिन्छी नहि जाय, किया रहित माटे स्थिर थाया ताडक् विभुने करु प्रणाम, क्यारे पामुं सुखमुं धाम, ४७१ सादि अनंतिज स्थिति वरी, सिक्टनमुं ते भाषज धरी; केबळज्ञाने जाणे सहु, तेवुं पद प्रेमे हुं चहुं- ४७९ चेतन परमातममां भेद, व्यवहारे जोतां ए खेदः मेंह्भावनोज्यां निहिलेश,निश्चयनयथी जोतां बेश ४७३ उत्तमदृष्टि आत्मस्वरूप, वहेतां प्रगटे सुखिद्धाः मणोगणो वांचो सह प्रन्थ, चेतनहाष्टि शिवपुर पन्थ ४७% उत्तम दृष्टि कोइक लहें, शिवपुरमांहि सिको बहें। ज्ञानादिक गुण लेखे होय, समभावे निरखे सङ्घ कोय४७५ शत्रुमित्रमां समता भाव, शुद्धधर्मनो प्रगटे दावः देह छतां पण देहातीत, दशा ताहशी त्यां शुंभीत. ४७६

#### परमारमद्रशेन.

( 808 )

नमुं नमुं ते वरनिर्प्रथ, जेनी दृष्टि शिवपुर पन्थ; पामुं एवो सद्युरु संग, तो पामुं निजयुणनो रंग४७७ तादज जावे तपतां ताप, साधु संगे दहीए पाप; माटे मानो सद्युरु आण, पामो शाश्वतपद निर्वाण.४७८ धन्य धन्य महारो अवतार, ज्योरे लहिशं शिवपुर सार; दावानळ छे आ संसार, पामुं क्यारे तेनो पार. ४७९ चिंतन एवं चित्ते थशे, दोषो त्यारे अळगा थशे; आत्मध्यानमां जे क्षण जाय, क्षण ते भवमां लेखे थाय४८० देहे दंहे व्यापी रह्यो, महिमा जेनो जाय न कह्यो; नामी अनामी जेने कहुं, तेने ते देखे छे छहुं. ४८१ न्हि ज्यां शब्दअने ज्यां गंध देखे नहि नास्तिकजनअन्ध लीधां छोडयां केइक देह, पण पोते तो नित्यज तेह ४८२ जेनी आदि नहीं ने नाश, अजरामर माटे ते खास; योंगी पण भोंगी कहेवाय, नमुं नमुं ते वेतनराय.४८३ जेनं ध्यान धरंतां सुख, जन्म मृत्युनां जावे दुःख; जेना गुण छे अपरंपार, नहि ज्यां जाति लिंग प्रकार.४८४ रुण पर्यायतणो आधार, एकरूप त्रिकाले धार; क्रमवर्ति जाणो पर्यायः सहभावी ते ग्रण प्रहाय ४८५

( seas )

जातमसिद्धि-पट्स्थानक,

पड् इब्योमां वर्तन एम, चिंतन करतां लहिये क्षेम; श्यक्कध्यान पण तेथी होय,निश्चय शास्त्रे भारूयं जोय४८६ षड् द्रव्योमां सर्व समाय, भाषे सूत्रे श्री जिनसय; सृक्ष्मपण जो थावे ज्ञान, स्वरूपभवे पामे शिव स्थान ४८७ निश्चयदृष्टि चित्ते वहे, व्यवहारे वर्ती ग्रण लहे; एकान्ते चाले ब्यवहार, पामे नहीं ते भवनो पार.४८८ सर्वज्ञे भाख्या नय दोय, होय न जुडो तेमां कोय; निश्चयनो हेतु व्यवहार, कारण कार्यपणुं त्यां धार.४८९ आवश्यादिक जे व्यवहार, करीये लहिये भवजल पार; जन मन् रंजन किरिया करे, भाव विना ते भवमां फरे.४९० भाव विना किरिया छे फोक, करीए समजी हरिये शोक; आंडुं अवळुं मनडुं फरे, धर्मकिया ते शानी करे. ४९१ चित्त न ठरतुं एकज ठाम, माटे किरियानुं शुं काम; निश्चय एम न करशो कोय, उद्यम अवलंबो सुख होय४९२ निज गुण रक्षण साचो धर्म, निजगुण विध्वंसनजअधर्मः आत्म प्रवृत्ति धर्में वळे, निज ऋकि तो निजने मळे ४९३ किया बाह्यनी चेतन करे, कर्म ग्रही भव फरतो फरे; पाप कियाछे भव जंजाळ, किया धर्मनी मंगलमाळ४९४

#### परमारमद्रशन

( 804)

आर्त्त रौद्र किरियानो त्याग, तेथी नहि शिवसुखनो लाग; मुक्तिप्रापक मन्मा जाण, तब्देत अमृत सुख खाण- ४९५ आत्मज्ञानथी छे निह देह, चेतनधर्मी ग्रणगणगेह; अरिहंतादिक पदवी जेह, तेनो धर्ता चेतन एह. ४९६ जेजे इच्छे रुचि अनुसार, तेते फळपामे निर्धार; भवाभिनंदी भवमां फरे, आत्मानंदी शर्मज वरे. ४९७ अव्यय निर्मळ चेतनगति, अनुपम मुक्ति स्त्रीनो पति; कर तुं तारो स्वयंत्रकाश, पोतानो धर तुं विश्वास. ४९८ त्हारावण सारो जग कयो, त्हारावण निर्मळ को भयो; नहि नहि त्हारा कोय समान,धर निर्मळ पोतानुं ध्यान ९९ त्हारा निर्मळगुणनो लेश, पामंतां नारोछे क्लेश; योगीजन तो देखे तहने, मोह न आवे तेनी कने.५०० योगी देखे आपोआप, तेने क्यांथी लागे पाप; ध्यानयुकामां योगी वास, कर्म न आवे तेनी पास. ५०१ सीथी न्यारो योगी योग, नहि पामे ते मोही लोकः जागे योगीज उंघे सहु, शुं योगीनी वातज कहुं. ५०१ योगी सोहं चेतनराय, बोले देखे ते कहेवाय; परमातमने जीवनो भेद, भागे नाशे भवनो खेद, ५०३

(808)

षष्टस्थानक,

धन्य धन्य मानुं अवतार, स्वरूप किंचित् भास्युं सार; अकलगति तुं चेतनदेव, कर पोतानी पोते सेव. ५०४ दानी दे तुं निजयुणदान, भानी तुं दे निजयुणभानः त्हारं सुख छे अञ्याबाध, साधनथी तुं तेने साध्य ५०५ समतारसनी हुं भण्डार, आत्म धर्मने हुं धरनारः नाइं नाहं तृष्णादास, नाहं नाहं पुदूलवास. श्री जिनवरभाषित वे धर्म, हेतु ते छे शाश्वतशर्म; यथाशक्ति तेनो स्वीकार, करिये समजी धर्मप्रकार-५०७ निंदो धर्मीने मा कोय, निंदानां कडवां फल होय; श्रावक थइने तपजप करे, निंदा करतो भवमां फरे. ५०८ समजे नहि अंतरनो मर्भ, टीलां टपके शानो धर्मः शुद्धस्वरूपे निश्चय धार, धन्य धन्य तेनो अवतार ५०९ कुलमां उपन्यो श्रावक नाम, तेथी शुं थावे तिजकामः नाममात्रथी कार्यज सरे, धनपति भिक्षा खातो परे.५१० श्रावकव्रत नहि पोते घरे, दे शीलामण साधुघरे; गुरुनो प्रत्यनीक चंडाल, तेथी जन्म भलो ज्ञृगाल ५११ अहो विषम कलिकाले जाय, श्रावकना ग्रणधारी काय; निंदक मानी मुनियो क्लेश, तेने शुं लागे उपदेश, ५११

भण्योगण्यो पण श्रावक कोय, ग्रुक्थी अधिको नहिं तेहोयः मेरु सरसव समछे फेर, अंतर अजवाळुं अंधेर. **उत्तरझयणे तेनी साख, गुणना माटे कर अभिलाष**; दृष्टिरामे शानोज धर्म, देषे वाद्यो बांधे कर्म. धर्मग्रहनीज आज्ञा धार, तरवानुं ते तीर्थ विचारः तेथी पामी भवनो पार, सार सार तेछे सुलकार. ५१५ साधुवतनोछे अभिलाष, माने सद्धरुनो हुं दासः अक्षुदादिक गुणनुं नाम, साचुं तेनुं श्रावक नाम.५१६ पंचमहात्रत पंचाचार, धर्मध्यानमां वर्ते सारः भवश्रमणभय आज्ञा जिन, वर्त्ते मन जेनुं निशदीनः ५१७ बाह्योपाधि विषवत् त्यजी, सहजसमाधि ज्ञाने भजीः जेने बोध्युं आत्मस्वरूप,नमुं नमुं प्रभु ग्रुरु श्री अनुप्पर्द पार्श्वमणि संयोगे लोह, भंजे कनकता तेह अबोह; जेना बोधे टक्रे सदाय, गुरुनी गुरुता प्राप्तिथाय. ५१९ एवा गुरुने सेवो भाइ, तीर्थ तीर्थ ते जग सुखदाइ; वाणी जेनी बहु गंभीर, चेतन योगी ध्यानी धीर.५२० धर्मगुरु मुज माणाधार, सदा शुद्ध तेनो जपकार; गुरुनी सेवा भक्ति मळे,तो भव कल्मकष सहै जे टळे. ५११

### ( ४०८ ) आत्मासिद्धि-पर्स्थानक.

युरुप कीधो जे उपदेश, पामीन तेनो लवलेश; गुरुनी भक्ति वर्णन करी, लागी गुरुभक्ति मुज खरी. ५२१ धर्मगुरुओज थया करो, ज्ञानामृतनो वहो झरो; श्रीसंखेश्वर पार्श्वरूपाळ, निशदीन करशो मंगळमाळ ५१३ धरणेन्द्र पद्मावती सहाय, पामी पूरो ग्रंथ कराय; परमात्मदर्शन निर्मळ ग्रंथ, पंचशती जाणो शिवपंथ. ५१४ गाम लोदराए करी मास, मातस्क्रिस्थी कर्यो प्रयास; महेसाणामां पूरो थयो, शुद्धस्वभावे चेतन रह्यों ५२५

### " दुहा. "

धर्मचन्द स्रुत जीवणलाल, स्रुरतवासी जीवदयाल; सकल संघना माटे कयों, ज्ञाताभवपाथोधि तयों. ५२६ श्री सुखसागर एकजी बेदा, पामी आनन्द होय हमेश; बुद्धिसागर रचना सार, मंगल सिद्धि जयजयकार. ५२७ संवत ओगणीश चपरे, साठतणी शुभसाल; अषाड शुकला पंचमी, रचतां मंगलमाल. ५१८

ॐ शान्तिः शान्तिः शान्तिः

# **परमात्मदर्शन.** अश्रुक्ति श्रुक्ति पत्रकः

पृष्ठ	स्रीटी	अशुद्धि	ग्रंदि
३	१२	भव्यत्मा	भव्यात्मा
.8	२३	अववोघ	अवबोध.
Ę	२४	मुखन	सुखने
9	१३	सगयस्चक	समयत्र्चक
१३	8	साभ्यता	साम्यता
१५	३	षष्ठं	षष्ठ
१५	१५	निद्राधीन	निद्राधिन
१५	२१	अने	० नथी
१५	<b>२२</b> ं	तेने	तेणे
१६	•	रुषिसभा	ऋषिसभा
१६	२२	त्वाय	त्वाच
७१	9	संसय	संभय
१७	२१	तीर्थर्न	तीर्थनी
१७	<b>२२</b>	सद्गुरू	सद्गुरु
१८	१६	य ॥	यथा
१८	१८	ताहक	ताहक्
२०	<b>38</b>	भे पुं	भेगुं
२०	१८	बच्यु	बञ्जु
२१	9	स्थीति	स्थिति
२४	•	बृद्धि	बुद्धि
२४	15	अनादिकु पीर	अनादि ऊषीर
३१	ч	क्रम किया	कर्म किया

( )

38	कीटी	<b>প</b> দ্মবি	शुद्धि
32	१०	क्रिका	क्रिया
३२	१७	पुरय	पुण्य
३६	<b>१</b> ३	केवलझान	केवलज्ञान
\$6	१६	नाग	नाम
80	२१	थाय छे	थवाय छे
४२	२	अग्रि	आम्र
४२	१७	वे	के
88	ય	जेगे	जेणे
8 ∌	<b>\$8</b>	<b>बार्</b> ण	तर्ण
४५	ષ	बच	तस्व
४५	१५	<b>सुज्ञो</b> भीत	सुशोभित
४६	२४	श्रुद्धान्त:करण	शुद्धान्तः करण
ષષ્ઠ	6	पकडी	पकडी
ष्ष	38	पेटी:	पेंटी
६.	१९	<b>नु</b> रू	गुरू
६२	28	सद्गुरु	सद्गुरु
६४	१६	अन्तकरण	अन्तः करण
EL	१४	थमशाप्ति	धर्मनाप्ति
49	Śß	द्रव्य	द्रव्य
६९	१९	स-ाय	समय
७०	?	द्रव्यर्थिक	द्रव्यार्थिक
90	२३	सर्खा	सर्खा
७६	3	<del>जो</del> रि	नोर
૮૦	१५	<b>पु</b> र्ग् छ	<b>रुद्</b> गल
CZ	₹	द्रव्य गुणोपचार	द्रव्ये पर्यायोपचार

(·**)

कीश	भगुदि	<b>318</b>
१४	<b>रहा</b> ;	<b>दर्श</b>
२०	पेडें [ः]	पेठे
3	व्याधि	व्यापि
६	स्याद्वाद	स्योदाद
9	रागद्वष	रागद्वेष
१२	लंध्ये	लेंध्य
Ę	सेंय	संबि
C	दु ख	<b>दु</b> रस्व
9	आत्म	भौतीं
१३		पांचे
4		ता
१४	श्रॉ	श्री
<b>₹</b> ₹	वस्र	वस्र
१२		<b>जीवोना</b>
4	मूर्क	मूकी
86		स्री
९	.41	चितवनायी
		परिप <del>प</del> चेता
		ध्यान
		भ्रांति
		निधान
		तेथी
	प् न	एम् :
		हेतुस्ता
१८	गतवन्तुः	गतमस्त
	, , , , , , , , , , , , , , , , , , ,	१४ हहाः १० पेठें १ व्याधि ६ स्याद्वाद्व १२ संय १२ संय १२ संय १२ संय १३ भानित १३ संय १३ संय १३ संय १३ संय १३ संय

( ***** )

SE	कीरी	મશુદ્ધિ	গুৰি
१२०	?	<b>ाधगता</b>	धिगता
१२०	१०	सर्वत्रा	सर्वत्र
१२५	4	विचार	विचारे
१२५	€	तारा	तारो
१२५	१०	रा वीश	राखीश
१२६	₹	किचित्नि	किंचिनि
१२७	१०	तिष्टंति	तिष्ठंति
१२७	88	तिष्टंति	तिष्ठंति
१२८	१७	।पृ सी	पृथ्वी
१२९	Q	देश	देशे
११९	9	श्च	શું
१२९	१३	सर्व	सर्व
१३१	35	मनुण्यो	मनुष्यो
? ₹ ?	?6 .	होतु	होतुं
१३३	३	सरुवप	स्वरूप
१३७	6	कश	केश
1,80	<b>L</b>	मुस्केळ	<b>मु</b> श्केल
<b>\$80</b>	<b>१२</b> ह	औदारिका	<b>औदारिक</b>
<b>ś8</b> 0	१२	तेषस	तैजस
180	१५	चाल्या	चाल्यो
181	३	सुद्धा	थुद्रा
\$85	4	विणु	बण
<b>१</b> 8१	૭	<b>इ</b> तिमं	वृत्तिमां
385	१६	नेतु	नेतुं मन
385	\$10	ननी	नची

(4)

<b>TE</b>	स्रीरी	अशुद्धि	श्रुद्धि
१४१	१७	भाक्ता	भोक्ता
१४२	२२	मुनिश्वर	<b>मुनीश्वर</b>
48\$	3	शरीरीनु	<b>शरीरी</b> नुं
१४३	Ę	सधा	सुधा
188	6	सुभडो	सुभटो
188	९	पारो	पासे
<b>188</b>	९	हायछे	होयछे
<b>\$</b> 88	૧ૂ રૂ	ता	तो
<b>\$88</b>	२२	ता -	तो
१४५	२४	अनुष्टान	अनुष्ठान
१४६	१०	×	केवलज्ञान
१५३	6	आही	ओही
१५३	२०	अंगुलन	अंगुलना
१५७	₹	आत्मत्व	आत्मतस्य
१५७	२२	<b>अं</b> ड	<b>श्लंद</b> ू
१६०	36	आत्तध्यान	आर्त्तध्यान
१६१	?	वा	वो
१६१	१०	करीन	क्रीने
१६२	9	•	तो
१६२	<	रंग	रंग
१६३	२४	सुरव	सुख
१६६	૪	योग	योग
१६७	Ę	अभिलाषि	अभिलाषि ,
१६८	१०	कहारे	क्षुंछे
१६८	₹ <b>₹</b>	विषयाणा	विषयाणां

(	€"	)

			( 3)
মূত্র	छीटी	अञ्चि	<b>গুৰি</b>
१६९	११	षार्ध	वार्ष
०७१	१०	विराजीग	विराजित
१७१	१८	लोंक	लोक
१७१	38	रु।	रूपं
१७३	१७	हे	<b>એ</b>
१७३	१७	कुं	न
80'P	१०	कंरुं	करुं
१७४	१९	व्याघि [ः]	व्याधि
१७४	२१	याज्य	त्याज्य
३७५	₹	हे	छे
१७५	ş	कु	न
१७६	ş	वा	वा
१७६	3	छं	o
308	33	श्राद	श्रद्धा
<b>१८</b> १	9	अत्म	आत्म
१८५	१२	ध्याप	ध्यान
926	9	आत्म	आत्मा
१८७	१०	निष्क्रिम	निष्क्रिय
१८७	₹ €	"	<b>"</b>
१८७	१९	स्वरू -ा	स्वरूप
१८७	२ ३	निदृष्टि	निश्चयदृष्टि
१९१	१८	त्पा	त्वा
१९४	કં દ્વ	दुर्दशाप्प	दुष्पाप्य
१९५	२२	त गिर	तवंगर
१९८	Ę	धर्मी	ધર્મી

( , )

ås	छोटी	<b>अशु</b> क्षि	श्रुद्धि
१९८	१०	सिहलद्वीप	सिंहलद्वीप
१९९	१६	पण	पण
२००	9.8	<b>चं</b>	नु
२०५	२५	गत	•
२०७	Ę	चारिश्र	चारित्र
२०७	२०	कृत्सुमां	कुत्य
२०९	9	राकाइ	रोकाइ
२१०	ş	राग	राग
२१०	१८	•	ु <b>छे</b>
<b>२११</b>	२५	શુ	•
२१२	3	•	શુ
२१३	१५	गिहेमु	गिहेसु
२१४	C,	ममा -ा	त्रमाण
२१६	१६	सद्भाव	सद्भाव
२१८	8	द्शनापयोम	दर्शनोपयोग
२१८	५ <b>६</b>	नाणवा	जाणवा
२२१	3	व्याक्ति	व्यक्ति
२२२	•	मायश्रित छेवुं	अन्यमतनो जैनदर्जना
<b>553</b>	•		समावेश नास्तित्स्न
<b>२२३</b>	8	नारितत्व	
२२४	२५	• • • • • • • • • • • • • • • • • • • •	एकेकथी
२२९	९	वछवत्तर	बलवत्तर
२३०	१६	का	कारण
२३१	१९	देननी	देवनी
२३२	२५	जन	जिन्
२३२	११	सामिल्र	सोमिले

(0)

द्रष्ठ	कीरी	<b>મ</b> દ્યાં હૈ	ग्रंदि
२३६	33	भावने	भाव ते
२३६	१९	<b>छार</b> ण	कारण
२३८	?	<b>छ</b> त्पत्तो	<b>उ</b> त्पत्ती
२४१	8	तिङ्ग	तीरूण
२५३	१५	बेन।	वेनना
२५९	Ģ	फवलाहर	कवलाहार
२६२	१६	द्वेषी	द्वेषने
२६३	ş	स य	सत्य
२६६	v	नयी	नथी
२६३	१९	आयुण्य कर्म	आयुष्य कर्म
२६३	२४	तारतम्य	तारतम्यता
२६४	?	माहनीय	मोहनीय
२६४	१७	आत्मनी	आत्मानी
२७६	१०	मधान	<b>प्रधान</b>
२७६	२५	जोद्धाओ	यो द्वाओ
२७७	88.	- ममर	नगर
२७७	38	जी <b>बो</b> नो	जीवोने
२७८	0	धम	धर्म
२७८	8	সা	आ
२७८	6	<b>चतु</b> रिन्द्रि	चतुरिंद्रय
२७८	११	धशा	दशा
२७८	\$8	मोहना	मोह
२७८	१७	पास	पास
२७९	?	रोवरबु छुं	रोवरावुं छुं
२७९	१७	का है। मोह	क्तरी है
२८०	?	मोह	मोहे
२८०	ષ	र जा	राना
२८०	१५	जीव	जीव

( \$ )

			<b>\</b> - /
रह	स्रीटी	क शुःदि	<u> श</u> ुद्धि
२८०	२३	<b>ब</b> द	<b>वृद्धि</b>
२८१	२५	विष्टा	विष्ठा
<b>२८</b> २	१५	कृसंप	कुसंप
२८४	२१	मुख	सुख
२८४	३२	तेओ	तेमां
२८४	<b>२</b> २	म्नभावेछे	भगावेछे
२८४	२५	बौध	बौद्ध
२८६	8	संसार	संसार
२८७	१	जावो	जीवो
२८७	२०	लाग्या	लाग्यो
266	१२	थाडी	થોડી
२८८	१३	न .	ने
२८८	8 8	दयाना	द्यानां
२८८	१५	वर्षावत <b>ां</b>	वर्षावतो
२८८	२४	जोवोने	जीवोने
366	<b>२</b> 8	<b>बेचु</b> छुं	खेंचुंछुं
२८९	8	•	के
२९०	१०	सम्यक्	सम्यग्
<b>२</b> ९१	१५	नाश े	नाश
२९२	Ø	<b>मतिष्टा</b>	<b>मतिष्ठा</b>
२९३	२१	स्माद्वाद	स्याद्वाद
<b>3</b> 53	२४	<b>मारा</b> ।	माराथी
२९५	Ą	वांइ	कांइ
२९८	१०	तरीक	तरीके
२९८	१२	वरणोय	परणीय <b>य</b> रणीय
३०३	१२	<del>-</del>	<b>मसव</b>
₹0.6	२	पचम	पश्चम
₹०५	8	खामी-	रन्यन स्वामी.
	•	>+4 :8 <b>0</b>	रवाला.

( 90 )

स्रीदी	अशुद्धि	স্থাৰী
१३	येगे-	योगे
१५		सिद्धान्त
१६		वस्तु
९	-	ठर्यो
१३	_	स्वरूप
१०	ब्रह्मचर्य	ब्रह्मचर्य
इं ७	तत्ज्ञानं	तज्ज्ञानं -
9	स्र दे	स्दें ्
९	कारणक	कारणके
१५	सिद्धत्मा	सिद्धात्मा
8	कवी	केवी
?	आविभीव	आविर्भावे
36	एकात	एकान्त
? ३	मल	मूल
२०	स्वरूपमा	स्वरूपमां
१३	निमित	निष <del>ित्र</del>
હ્	दृश्य	दृश्य
6	उपनिषदा	<b>उपनिषदो</b>
१	सहु छ	सहु छे.
8	त्या	र्या
ş	उत्शंगल	<b>उत्शृं</b> त्व <i>ल</i>
\$ \$		मूल धर्म
१६	त्या	त्येां
<b>१</b> १	अना । दि	अमादि
6	चिंतता	चिंततां
		१३ येगे- १६ वस्तु १६ वस्तु १६ वस्तु १० तत् ज्ञानं १७ कनी १४ कनी १४ कनी १४ कनी १८ एकात १३ मल २० स्वरूपमा १३ निमित ६ दृश्य १३ ल्या १३ ल्या १३ ल्या १३ ल्या

ज्यां ईश्वरमां इहस्य छपाइ होय त्यां दीर्घ वांचवी बीजी जे अशुद्धि छग्नस्थ दृष्टिथी सुधारतां रही गइ होय ते सुधारीने वांचवी

## योगनिष्ठ मुनि बुद्धिसागरजी कृत प्रन्थोनी यादी.

### अने ते मळवानां ठेकाणां-

ં પુસ્તકનું નામ,

મળવાનું ઠેકાછું.

૧ જૈન ધર્મ અને 'બ્રોસ્તિ } ધી જૈત ફ્રેન્ડલી સાસાઇડી-મું બઇ. ધર્મના મુકાબલા.

ર-૩ શ્રી રવિસાગરછ ો વડાેંદરા મામાની પાળ શા કેશવલાલ અને શાેકવિનાશક₊∫ **લા**લચ'દને ત્યા.

૪ ષડ્દ્રવ્ય વિચાર. } પાદરા શા. માહનલાલભાઇ હીમચંદ્ર પ વચનામૃત. ∮ વકીલ.

કુ અધ્યાત્મ શાંતિ.–શા. રતનચંદ લાધાજી કાવીઠા બારસદ પાસે.

હ ચિ'તામણિ. ૮ કન્યાવિકય નિષેધ. ૯ પૂજા સંગ્રહ.

૧૦ સુદ્ધિપ્રકાશ ગાયન સ'મહ.–શા. મણિલાલ વાડીલાલ સાણ'દ.

**૧૧** સુદ્ધિપ્રકા**શ ગાયન સંગહ**ે અમદાવાદ સંભવ જિનમ'ડલ**.** ભાગ **બી**જો, }

૧૨ સમાધિશતક—શેઠ. જગાભાઇ દલપતભાઈ, સુ. અમદાવાદ.

૧૩ તત્ત્વવિચાર. } જ્ઞાન પ્રસારક મ'ડલ. સુ'બાઈ.ઝ**ેરી ખ**જાર.

**૧**૫ આત્મ પ્રકાશ, } શા. વીરચંદ કૃષ્ણાજી, સુ. માણસા. યુના–વેતાલપેલ.

૧૬ ભજન સંથહ ભાગ પહેલા. ૧૭ ભજન સંથહ ભાગ બીજો. ૧૮ ભજન સંગઢ ભાગ ત્રીજો. ૧૯ ભજન સંથહ ભાગ ચાથા. જેન બે હીંગ નાગારીસગ્**ઢ.** ૨૦ અધ્યાત્મજ્ઞાન વ્યાપ્યાનમાળ. ( १२ )

**૨૧** આત્મપ્રદીપ∙ ૨૨ અધ્યાતમગીતા•

**રર** અધ્યાત્મગાતા. **ર**૩ આત્મસ્વરૂપ.

રડ અતુભવ પ^રધીશી.

ર૪ અનુભવ પ્રત્યાસા

રૂપ પરસાત્મ દર્શન. ૨૬ પરસાત્મ જ્યાતિ.

રહ ગુરૂબાધ.

અમદાવાદ જૈનવાળર બાહીં ગ

નાગારીશરાહ-

૧૮ પ્રાચીન ન્યાય થ્ર'થ ઉદ્ધાર. ૄ ઝવેરી ભાેગીલાલ તારાચ'દ. સ'સ્કૃત સ્યાદ્ધાદ મુક્તાવલી. ૄ અમદાવાદ ડાશીવાડાનીપાળ.

રહ તત્ત્વબિંદ ( યાને સંક્ષિપ્ત ) સિદ્ધાંત રતન. જૈન બાહીં'ગ નાગા**રી**શરાહ અમદાવાદ-

૩૧ વર્તમાનકાલ સુધા∛ઃ−( ભ∙ ત્રીજા ભાગમાં )

૩૨ परमभ्रह्म निरा**ક**રણ-( ભજન સ⁺. ४ ચાથામાં )

33 अध्यात्म वचनामृत ग्रन्थ ( लेळन संश्रह्ण लाग चार्या )

### નહીં છપાવેલા ત્રંથાની યાદી.

૩૪ તત્વ પરીક્ષા વિચાર

<u>રૂપ ધ્યાન વિચાર</u>

૩૬ સુખસાંગર

૩૭ શુરૂમાહાત્મ્ય.

૩૮ શ્રીમ'ત સરકારગાયકવાડ સયાજરાવની આગળ આપેલું ભાષ**ણ** 

३५ पत्र सदुपदेशः



